

॥ श्री ॥

विद्याभवन सप्तभाषा ग्रन्थमाला

३२



॥ श्री ॥

प्राकृत-व्याकरण



लेखक -

आचार्य श्री मधुसूदनप्रसाद मिश्र

अध्यक्ष, अनुसन्धान विभाग, अरेराज

तथा

सदस्य, बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना ।



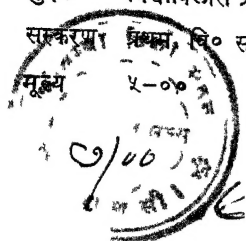
चौखम्बा विद्याभवन, चौक, वाराणसी



प्रकाशक चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

मुद्रक विद्याविलास प्रेस, वाराणसी

संस्करण प्रथम, वि० संवत् २०१७



(पुनर्मुद्रणादिका सर्वेधिकारा प्रकाशकाधीना)
The Chowkhamba Vidya Bhawan,
Chowk, Varanasi

(INDIA)

1960

Phone	Branch	3076
	H Office	3140

भूमिका

(श्री भुवनारायण त्रिपाठी शास्त्री

सभापति, जिला कांग्रेस समिति, मोतिहारी

तथा श्री सोमेश्वरनाथसञ्जालक मण्डल, अरेराज)

संस्कृत भाषा की अपेक्षा प्राकृत भाषा अधिक कोमल तथा मधुर होती है। 'परुसा सक्कञ्च बधा पाउअ बधो वि होइ सुउमारो । पुरिसमहि-
लाण जेत्तिअ मिहन्तर तेत्तिअमिमाण' अथात् संस्कृत भाषा परुष (कठोर) तथा प्राकृत भाषा सुकुमार होती है। और इन दोनों भाषाओं में परस्पर उतना ही भेद है जितना एक पुरुष और स्त्री में ।

भाषा के अनुसार आज तक के समय को तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं—संस्कृत, प्राकृत और आजकल की भाषाएँ, यथा—हिन्दी, मराठी, गुजराती और बँगला आदि । संस्कृत भाषा में हिन्दुओं के प्राचीनतम ग्रन्थ वेदों से लेकर काव्यों तक के ग्रन्थ सम्मिलित हैं । प्राकृत भाषा में बौद्धों तथा जैनियों के धार्मिक ग्रन्थ एवं कुछ काव्य ग्रन्थ भी हैं । इस भाषा का विकास ईसा से ६०० वर्ष पहले हो चुका था ।

प्राकृत भाषा की उत्पत्ति के निर्णय के पूर्व यह विचारना आवश्यक है कि 'किसी भी नई भाषा के जन्म की क्यों आवश्यकता पड़ती है ?' यदि हम लोग इस प्रश्न पर गौर से विचार करें तो यह स्पष्ट मालूम हो जायगा कि मनुष्य कष्टसाध्य प्रयत्न करना नहीं चाहता । वह जिद्दा, कण्ठ, तालु आदि स्थानों से अधिक प्रयत्न द्वारा शब्दों का उच्चारण करना पसन्द नहीं करता । यही कारण है कि धीरे-धीरे भाषा में कुछ विकृतिर्यों उत्पन्न होती जाती है । कुछ दिनों के बाद उसी का एक स्वरूप बन जाता है, वही प्रधान बोलचाल की भाषा बन बैठती है और उसी में काव्य आदि की रचना प्रारम्भ हो जाती है । वैदिक

काल से लेकर आज तक की परिवर्तित भाषाओं पर ध्यान देने से इस बात की पूर्ण पुष्टि हो जाती है। नीचे कुछ दृष्टान्त दिये जाते हैं—

संस्कृत के 'ग्राम' तथा 'मध्य' दो शब्दों के मिलने से 'ग्राममध्य' एक शब्द बना। अब इसी शब्द का उच्चारण करते समय एक अशिक्षित आदमी, जिसे उच्चारण का ज्ञान नहीं है और जो स्वभाव से ही कष्टसाध्य उच्चारण करना नहीं चाहता, जीभ को कष्ट से बचाने के लिए एक प्रिलक्षण ही शब्द स्वरूप का जनक हो जायगा। वह उक्त शब्द के मध्य के स्थान में 'मज्झ', 'माझ', 'माध', 'माह', 'मह', 'मा' और 'मे' तथा ग्राम शब्द के स्थान में 'गाम' और 'गाव' कहेगा। इस प्रकार ग्राममध्य के स्थान में 'गाम मे' और 'गाव मे' बन गया। इसी प्रकार 'कुम्भकार' के स्थान में 'कुम्भार', 'कुहार' और 'कोंहार' शब्द बन गये। इनके अतिरिक्त मुख = मुह, अर्प = अप्प (हि०—आप), यष्टि = लट्टी, लाठी, द्वादश = बारह आदि अनेक शब्द हैं। कभी कभी तो शब्दों का परिवर्तन इतना हो जाता है कि उनका पता लगाने में बड़े बड़े शब्दशास्त्रियों को भी चक्कर खाना पड़ता है। जैसे अंग्रेजों के समय में राजकीय कोषागार के प्रहरी 'हू कम्स देअर' (Who comes there) के स्थान में 'हुकुमदर' कहते थे। तात्पर्य यह कि किसी किसी शब्द के शुद्ध रूप का पता लगाना असम्भव सा हो जाता है। अस्तु।

प्राकृत भाषा की उत्पत्ति के विषय में भारतीय वैयाकरणों तथा आलङ्कारिकों का कथन है कि इस भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। संस्कृत ही इसकी जननी है। प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति 'प्रकृति' से की जाती है। प्रकृति शब्द का अर्थ बीज अथवा मूल तत्त्व है। इस शब्द का निर्वचन है—'प्रक्रियते यया सा प्रकृति' अर्थात् जिससे दूसरे पदार्थों की उत्पत्ति हो। 'मूलप्रकृतिरविकृति' (साङ्ख्य) अर्थात् मूल प्रकृति अविकृत रहती है। सारांश यह हुआ कि 'प्रकृति' उसे कहते हैं जो दूसरे पदार्थों का उत्पादक तथा स्वयं अविकृत हो। यहाँ

आचार्यों के मत में सस्कृत ही प्रकृति है। प्राकृत के प्रसिद्ध वैयाकरण हेमचन्द्र अपने प्राकृत व्याकरण के आठवें अध्याय के प्रथम सूत्र में कहते हैं कि—‘प्रकृति सस्कृतम् । तत्र भव तत आगत वा प्राकृतम् ।’ अर्थात् मूल सस्कृत है और सस्कृत में जिसका उद्भव है अथवा जिसका प्रादुर्भाव सस्कृत से हुआ है उसे ‘प्राकृत’ कहते हैं। वररुचि ने प्राकृत का व्याकरण लिखते हुए प्राकृत प्रकाश में लिखा है कि ‘शेष सस्कृतात्’ (२०९।१८) अर्थात् बताये हुए नियमों के अतिरिक्त शेष सस्कृत से आये हुए हैं। इसी प्रकार मार्कण्डेय ‘प्राकृतसर्वस्व’ के प्रथम पाद के प्रथम सूत्र में लिखते हैं—‘प्रकृति सस्कृत, तत्र भव प्राकृतमुच्यते।’ अर्थात् सस्कृत मूल भाषा है और उससे जन्म लेनेवाली भाषा को प्राकृत कहते हैं। दशरूपक के टीकाकार धनिक परिच्छेद २, श्लोक ६० की व्याख्या करते हुए लिखते हैं—‘प्रकृते आगत प्राकृतम् । प्रकृति सस्कृतम् ।’ यही मत ‘कर्पूरमञ्जरी’ के टीकाकार वासुदेव, ‘प्राकृतप्रकाश’ के रचयिता चण्ड और ‘षड्भाषाचन्द्रिका’ के लेखक लक्ष्मीधर को भी अभिमत है। ‘प्रकृते सस्कृतायास्तु विकृति प्राकृती मता ।’ (लक्ष्मीधर पृ० ४, श्लोक २५) अर्थात् मूल भाषा सस्कृत से प्राकृत की उत्पत्ति हुई है। इस प्रकार सब भारतीय विद्वानों ने भिन्न भिन्न शब्दों में इन्हीं मतों की पुष्टि की है। आधुनिक विद्वानों में डा० रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर तथा चिन्तामणि विनायक वैद्य जी को भी यह मत अभिप्रेत है।

परन्तु इसके विपरीत पश्चिमी विद्वान् पिशल आदि का विचार भी विचारणीय है। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् पिशल का, जिन्होंने प्राकृत के क्षेत्र में बड़े ही परिश्रम और पाण्डित्य से काम करके हम लोगों का बड़ा ही उपकार किया है, कथन है कि—सस्कृत शिष्ट समाज की भाषा थी और प्राकृत अशिक्षित जनों की। प्राकृत भाषा वह थी जिसे साधारण जन बोला करते थे और उसी का सस्कार से सम्पन्न रूप ‘सस्कृत’ कहा गया। जैसे किसी लकड़ी का एक टुकड़ा पहले अपनी प्राकृतिक अवस्था

मे पडा हुआ रहता है, किन्तु जब उसे सस्कारो द्वारा काट, छॉट एव खराद कर मेज, कुर्सी आदि बनाते हैं तो वही अपना सस्कृत रूप धारण कर लेता है। इसी प्रकार जो अपरिष्कृत भाषा अपनी प्राकृतिक अवस्था में पडी हुई जन साधारण द्वारा उच्चरित होती थी, वही प्राकृत थी और उसी की शुद्ध एव परि कृत आकृति सस्कृत भाषा कही जाने लगी। इसके प्रमाण में इनका कहना है कि यदि प्राकृत सस्कृत से निकली हुई होती तो उसके कुल शब्द सस्कृत से सिद्ध हो जाते, किन्तु अनुसन्धान द्वारा विदित होता है कि सिद्ध होते नहीं हैं। इसलिए प्राकृत की उत्पत्ति केवल सस्कृत से मानना युक्तिसङ्गत नहीं। पिशल के इसी मत का समर्थन सभी पश्चिमी विद्वान् करते हैं।

पाली भी प्राकृत के अन्दर ही मानी जाती है। इसे 'प्राचीन प्राकृत' कहते हैं। भगवान् बुद्ध ने इसी भाषा में अपने धर्म का प्रचार किया था। आजकल बौद्धों के धार्मिक ग्रन्थ तथा अनेक शिला लेख आदि भी इसी भाषा में पाये जाते हैं। पाली और प्राकृत में कुछ अन्तर पड गया है, इसलिए अब पाली को अन्य भाषा मानते हैं और प्राकृत कहने से पाली को अलग समझते हैं। प्राकृत के वैयाकरणों तथा अलङ्कार शास्त्रज्ञों ने पाली को पृथक् मान कर प्राकृत व्याकरण आदि लिखते समय इसका कुछ भी उल्लेख नहीं किया है।

प्राकृत के भेदों में 'महाराष्ट्री' उत्तम तथा प्रधान प्राकृत के रूप में समझी जाती है। दण्डी ने 'काव्यादर्श' के प्रथम परिच्छेद के चौतीसवें श्लोक में लिखा है—'महाराष्ट्राश्रया भाषा प्रकृष्ट प्राकृत विदुः।' अर्थात् महाराष्ट्री भाषा श्रेष्ठ प्राकृत समझी जाती है। कतिपय भारतीय विद्वानों ने प्राकृत शब्द का प्रयोग केवल महाराष्ट्री ही के लिए किया है। जैसे हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत के व्याकरण में महाराष्ट्री के लिए प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है। 'शेष प्राकृतवत्' (हिम० ४ २८६)। प्राकृत के व्याकरण ग्रन्थों में महाराष्ट्री को ही प्रधानता दी गई है। वररुचि ने नव परिच्छेदों

मे चार सौ चौबीस सूत्रों द्वारा महाराष्ट्री का विचार किया है। अन्य तीन प्राकृतों का विचार एक एक परिच्छेद में क्रम से १४, १७ और ३२ सूत्रों द्वारा किया है। इसी प्रकार सब वैयाकरणों ने पहले महाराष्ट्री का उल्लेख किया है। महाराष्ट्री में प्रवरसेन विरचित सेतुबन्ध नामक ग्रन्थ प्रसिद्ध है। इस पुस्तक के सबन्ध में बाण ने हर्षचरित में लिखा है—

‘कीर्ति प्रवरसेनस्य प्रयाता कुमुदोज्ज्वला ।

सागरस्य पर पार कपिसेनेव सेतुना ॥’

अर्थात् कुमुद के समान उज्ज्वल प्रवरसेन का यश सेतुबन्ध के द्वारा समुद्र के पार तक विरयात हो गया जैसे वानरों की सेना सेतु (पुल) के द्वारा समुद्र पार कर विरयात हो गई थी। सेतुबन्ध संस्कृत नाम है। प्राकृत में इसे रावणवहो या दहमुहवहो कहते हैं। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्री में हाल की सतसई तथा वज्रालता और गडडवहो आदि काव्य ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।

प्राकृत के कितने भेद और उपभेद हैं, इस सबन्ध में भी एक मत नहीं है। वररुचि के अनुसार प्राकृत के चार भेद हैं। महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी और पैंशाची। इन्हीं चारों का उल्लेख प्राकृत प्रकाश में हुआ है। हेमचन्द्र ने इन चारों के अतिरिक्त आर्ष, चूलिकापैंशाची और अपभ्रंश को भी प्राकृत ही के अन्तर्गत माना है। अर्थात् महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, पैंशाची, आर्ष, चूलिकापैंशाची और अपभ्रंश ये सात भेद उन्हें अभिप्रेत हैं। त्रिविक्रम हेमचन्द्र की तरह उपर्युक्त भेदों में से आर्ष के अतिरिक्त छ को मानते और उन्हीं का उल्लेख करते हैं। इन वैयाकरणों के अतिरिक्त मार्कण्डेय, जो वररुचि के अनुयायी हैं, प्राकृत के प्रधानतः चार विभाग करते हैं—भाषा, विभाषा, अपभ्रंश और पैंशाच। अब इनके उपभेदों के साथ प्राकृत को सोलह भागों में विभक्त करते हैं। वे सोलह भेद इस प्रकार हैं—भाषा के पाँच भेद—महाराष्ट्री, शौरसेनी, प्राच्या, आवन्ती और मागधी (मार्क० १-५), विभाषा के पाँच भेद—शाकरी, चाण्डाली, शाबरी, आभीरिका और टक्की, अपभ्रंश

के तीन भेद—नागर, ब्राह्म और उपनागर, पैशाच के तीन भेद—कैश्य, शौरसेन और पाञ्चाल । इस तरह प्राकृत के सोलह भेद हुए ।

मार्कण्डेय (१४) की वृत्ति लिखते हुए किसी ने भाषा के आठ, विभाषा के छ, अपभ्रंश के सत्ताईस और पैशाच के ग्यारह भेद माने हैं । इनके मत से प्राकृत के बावन भेद हुए । परन्तु मार्कण्डेय स्वयं इतने भेदों को नहीं मानते । वे अर्द्धमागधी को मागधी के तथा बाह्लीकी को आवन्ती के अन्तर्गत मानते हैं । दाक्षिणात्य का कोई लक्षण नहीं मिलने से उसे भाषा के भीतर नहीं मानते । इस प्रकार उक्त वृत्तिकार द्वारा बतलाये आठ प्रकारों वाली भाषा का खण्डन कर छ प्रकार की विभाषा में औढी को शावरी में अन्तर्भावित मानते तथा द्राविडी की जगह ढक्की भाषा का प्रतिपादन करते हैं क्योंकि द्राविडी ढक्क देश की भाषा के भीतर आ जाती है ।

‘ढक्कदेशीयभाषाया दृश्यते द्राविडी तथा ।

अत्रैवाय विशेषोऽस्ति द्रविडेनादृता परम् ॥’ (मार्क० १ ६)

एव प्रकारेण मार्कण्डेय ने सत्ताईस प्रकार के अपभ्रंश तथा ग्यारह प्रकार के पैशाच का एक का दूसरे में अन्तर्भाव मानकर क्रम से तीन तीन भेद माने हैं । इस तरह बावन प्रकार के बदले उसके केवल सोलह ही भेद स्थिर किये हैं । दण्डी ने ‘काव्यादर्श’ में चार प्रकार की भाषा बतलाई है—संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और मिश्र ।

‘तदेतद् वाङ्मय भूय संस्कृत प्राकृत तथा ।

अपभ्रंशश्च मिश्रश्चेत्याहुरार्याश्चतुर्विधम् ॥’ (काव्या० १ ३६)

इनके अनुसार संस्कृत से देवताओं की भाषा, प्राकृत से तद्भव, तत्सम और देशी भाषा, अपभ्रंश से आभीर आदि जातिविशेष की भाषा और मिश्र से मिली हुई भाषाओं का बोध होता है । शास्त्र में संस्कृत से इतर सब भाषाएँ अपभ्रंश कहलाती हैं । इनके अनुसार प्राकृत के महाराष्ट्री, शौरसेनी, गौडी, लाटी और भूतभाषा (पैशाची) ये पाँच भेद हैं । प्राकृत के ये और भी अन्य भेद मानते हैं । दूसरे कई आचार्यों

ने प्राकृत के अन्य भी कई भेद बतलाये हैं, परन्तु सब ने महाराष्ट्री, शौरसेनी और मागधी को बिना किसी दलील के स्वीकार किया है। वास्तव में ये ही तीनों प्रधान हैं और काव्य नाटकों में इन्हीं तीनों का समावेश है। अतः ये ही तीन प्रधान प्राकृत हैं।

संस्कृत साहित्य में ऐसा कोई भी नाटक नहीं है जो केवल संस्कृत ही में हो और उसमें प्राकृत न हो। नाटकों में कुलीन, श्रेष्ठ तथा शिक्षित पुरुष संस्कृत भाषा का व्यवहार करते हैं तथा कुलीन और शिक्षिता स्त्री शौरसेनी में गद्य तथा महाराष्ट्री में पद्य का व्यवहार करती हैं। मतलब यह कि साधारण बात चीत तो शौरसेनी में और कुछ गान आदि महाराष्ट्री में करती हैं। शौरसेनी गद्य की तथा महाराष्ट्री पद्य की भाषा है। किसी भी नाटक अथवा प्राकृत के काव्यग्रन्थ में गद्य महाराष्ट्री में और पद्य शौरसेनी में दृष्टिगोचर नहीं होते। नाटकों में निम्न लोगों की तथा नीच वर्णों की बोली मागधी भाषा में पाई जाती है। नाटकों में प्रयुक्त प्राकृत के महाराष्ट्री, शौरसेनी और मागधी ये तीन प्रकार ही प्रधान हैं और इन्हीं का व्यवहार अधिकता से पाया जाता है। इनके अतिरिक्त और भी आवन्ती, ढक्क, शाबरी, प्राच्या और चाण्डाली भाषाये देखने में आती हैं, परन्तु कई आचार्यों के मत से आवन्ती और प्राच्या शौरसेनी के तथा ढक्क, शाबरी और चाण्डाली मागधी के अन्तर्गत हैं। केवल विक्रमोर्वशीय में कुछ पद्य अपभ्रंश के भी आये हैं। इसके विषय में कुछ लोगों का कहना है कि अपभ्रंश के वे पद्य पीछे से जोड़े गये हैं।

महाराष्ट्री भाषा का नाम महाराष्ट्र के नाम पर पड़ा। महाराष्ट्र की भाषा महाराष्ट्री कहलाई। इसमें अक्षरों का लोप बहुत होता है, इसलिए इसका व्यवहार पद्य के लिए उत्तम माना गया। इसमें अक्षरों का इतना लोप होता है कि भाषा की जटिलता बढ जाती है इसलिए इसका गद्य समझना बड़ा कठिन होता है। इस भाषा के विषय में ऊपर लिखा जा चुका है।

शौरसेनी भाषा का नाटको में प्रयुक्त गद्यभाषाओं में प्रथम स्थान है। शूरसेनों की भाषा का नाम शौरसेनी पडा। शूरसेनों की राजधानी मथुरा थी और मथुरा के आस पास बोली जाने वाली भाषा शौरसेनी कहलाती थी।

मागधी से वररुचि के अनुसार मगध देश की भाषा समझी जाती है। 'मागधाना भाषा मागधी' (वर० ११ १ वृत्ति)। पटने के समीप-वर्ती स्थलों को मगध कहते थे। आज भी बिहार राज्य में बोली जाने-वाली भोजपुरी आदि भाषाओं का मागधी से बहुत कुछ सामीप्य है। मार्कण्डेय का कथन है कि राजस, भिक्षु, क्षपणक और चेटी आदि की भाषा का नाम मागधी है—'राजसभिक्षुक्षपणकचेटाद्या मागधी प्राहु' (मा० १२ १ वृ०)। भरत के अनुसार अन्त पुर में रहने वालों की भाषा मागधी है। इनके अनुसार नपुसक, स्नातक और कञ्चुकी अन्त पुर में नियुक्त होते थे। दशरूपक के अनुसार पिशाच और अत्यन्त नीच लोग पैशाची और मागधी बोलते हैं—'पिशाचात्यन्तनीचादो पैशाच मागध तथा।'।

अवन्ति देश की भाषा आवन्ती कहलाती है। अवन्ति देश में चेदि, मालव, उज्जयिनी आदि देश सम्मिलित थे—'चेदिमालवो-ज्जयिन्यादिरवन्तीदेश' तद्भावा आवन्ती दाण्डिकादि भाषा' (मार्क० ११।१ की वृत्ति)। आवन्ती महाराष्ट्री और शौरसेनी के साकर्य से सिद्ध होती है। 'भरत' के अनुसार नाटकों में यह सदा मध्यम पात्रों द्वारा प्रयुक्त होती है। मार्कण्डेय के अनुसार यह भाषा का एक भेद है।

प्राच्या मार्कण्डेय के अनुसार विदूषक और विट आदि हँसोड़ पात्रों की भाषा है। भरत नाट्यशास्त्र के अनुसार विदूषक आदि की भाषा प्राच्या है—'प्राच्या विदूषकादीनाम्।' पृथ्वीधर ने मृच्छकटिक की टीका में इसी मत का समर्थन करते हुए लिखा है कि—'प्राच्यभाषापाठको विदूषक' अर्थात् विदूषक प्राच्य भाषा का पाठक होता है।

ढक्क भाषा पृथ्वीधर के अनुसार मृच्छकटिक में माथुर और द्यूतकर की बोली है। ढक्क शब्द से जान पड़ता है कि यह ढाका के आस पास की भाषा थी।

चाण्डालों की भाषा चाण्डाली तथा शबरी की भाषा शाबरी कहलाती थी। अस्तु।

शूद्रक के मृच्छकटिक में प्राकृत के नाना प्रकार देखने में आते हैं। अन्य नाटकों में महाराष्ट्री, शौरसेनी और मागधी ये तीन ही भाषाय पाई जाती हैं। किसी किसी नाटक में एक पात्र चाण्डाल भी है जो चाण्डाली बोलता है। मृच्छकटिक में अन्य प्राकृत के अतिरिक्त ढक्क और आवन्ती भी आती है। माथुर तथा द्यूतकर ढक्क और वीरक तथा चन्दनक आवन्ती भाषा बोलते हैं। विदूषक की भाषा किसी किसी के विचार से प्राच्या है। कर्णपूरक और वीरक के पद्य महाराष्ट्री में हैं। नटी, मैत्रेय, वसन्तसेना, चेटी, रदनिका, मदनिका, कर्णपूरक आदि के गद्य की भाषा शौरसेनी है। शकार, चेट, चारुदत्त का लडका और भिक्षु की बोली, मागधी में है।

प्राकृत भाषा में कर्पूरमञ्जरी नामक एक ही सट्टक है। इसमें महाराष्ट्री और शौरसेनी दो ही भाषाये हैं। जितने पद्य हैं, वे सब महाराष्ट्री में और जितने गद्य हैं सब शौरसेनी में लिखे गये हैं। कहीं-कहीं इन दोनों की खिचड़ी भी दिखाई पड़ती है। जैसे—‘गेण्हअ के’ स्थान पर ‘वेत्तूण’ का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार अनेक स्थलों पर ऐसे उदाहरण मिलते हैं। मालूम नहीं, यह कवि का प्रमाद है या छापेखानों की भूल। कर्पूरमञ्जरी के अनेक संस्करण निकल चुके हैं पर तु प्राकृत भाषा की दृष्टि से ‘हारवार्ड ओरिण्टल सीरीज’ द्वारा संपादित तथा चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी से प्रकाशित संस्करण सर्वोत्तम है।

संस्कृत नाटकों में प्राकृत की दृष्टि से मृच्छकटिक के अतिरिक्त विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञानशाकुन्तल, वेणीसहार, मुद्राराक्षस, उत्तरराम-चरित आदि प्रसिद्ध नाटक हैं।

नाटकों में सूत्रधार का पाठ सबसे पहले आता है। सूत्रधार की भाषा संस्कृत है, परन्तु महाकवि भास प्रणीत 'चारुदत्त' में यह शौरसेनी में बोलता है। 'मृच्छकटिक' में भी नटी के साथ बातचीत करते समय सूत्रधार ने शौरसेनी का ही व्यवहार किया है।

नटी की भाषा सब नाटकों में शौरसेनी ही है। पर यह स्मरण रहे कि शौरसेनी गद्य की भाषा है। इसलिए नटी को जहाँ गाने की आवश्यकता पड़ी है, वहाँ गान महाराष्ट्री भाषा में है। यथा शाकुन्तल में—'नटी गायति—

ईसीसि चुम्बिआइ भमरेहि सुउमारकेसरसिहाइ।

ओदसअन्ति दअमाणा पमदाओ सिरीसकुसुमाणि ॥'

पारिपार्श्वक की भाषा संस्कृत में ही पाई जाती है। इसका पाठ विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र, वेणीसहार तथा माधवभट्ट रचित सुभद्राहरण आदि नाटकों में आया है।

विदूषक की बोली सब नाटकों में एक सी ही है। इसकी भाषा हेमचन्द्र और त्रिक्रम के अनुसार शौरसेनी तथा मार्कण्डेय के अनुसार प्राच्या है। इसका पाठ मृच्छकटिक, अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र आदि नाटकों में आया है। मालविकाग्निमित्र में इसका पाठ प्रधान रूप से आया है और प्रत्येक अङ्क में है।

सूत की बोली संस्कृत में पाई जाती है। जहाँ जहाँ सूत का पाठ है, वहाँ वह संस्कृत ही बोलता पाया जाता है। अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, प्रतिमा, वेणीसहार तथा कसवध आदि नाटकों में सूत का पाठ पाया जाता है।

राजा की भाषा अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, प्रतिमा, सुद्रा राजस, मालविकाग्निमित्र, वेणीसहार, कर्णसुन्दरी तथा कसवध आदि नाटकों में संस्कृत ही पाई जाती है। केवल विक्रमोर्वशीय के चौथे अङ्क में पुरुरवा नामक राजा ने उर्वशी के लिए विक्षिप्त हो कर हस, भौंरे तथा

चक्रवाक आदि न वातचीत करते हुए महाराष्ट्री और अपभ्रंश का भी प्रयोग किया है। चौथे अङ्क के ६, ११, १४, १९, २०, २४, २८, २९, ३५, ३६, ४१, ५३, ५४, ५९, ६३, ६८, ७१ और ७५ सरयावाले श्लोकों को महाराष्ट्री तथा १२, ४३, ४५, ४८ और ५० सरयावाले श्लोकों को अपभ्रंश भाषा में कहते हैं। यथा—

राजा—‘मर्मररणिअमणोहण्ण, कुसुमिअतरुवरपल्लविण्ण ।

दइआविरहुम्माइअओ, काणण भमइ गइदओ ॥’

[मर्मररणितमनोहरे कुसुमिततरुवरपल्लविते ।

दयिताविरहोन्मादित कानने भ्रमति गजेन्द्र ॥]

(विक्र० ४।३५)

‘हउ पइ पुळ्ळिमि अरन्वहि गअवरु, लल्लिअपहारे णामिअतरुवर ।

दूरविणिज्जिअ ससहरुक्कन्ती, दिट्ठी पिअ पइ समुह-जन्ती ॥’

[अह त्वा पृच्छामि आचक्ष्य गजवर, ललितप्रहारेण नाशिततरुवर ।

दूरविनिज्जित शशधर कान्तिर्दृष्टा प्रिया त्वया समुख यान्ती ॥]

पिछले पृष्ठ के वर्णित दोनों श्लोक क्रमशः महाराष्ट्री और अपभ्रंश भाषा के हैं।

कञ्चुकी की बोली संस्कृत भाषा में पाई जाती है। इसका पाठ अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, उत्तररामचरित, प्रतिमा, सुदाराक्षस, मालविकाग्निमित्र तथा वेणी सहार आदि नाटकों में आया है।

गतीहारी, चेटी, तापसी आदि की बोली शौरसेनी में है। ये पात्र प्रायः सभी नाटकों में आये हैं। दौवारिक की भाषा भी शौरसेनी ही पाई जाती है। परन्तु कसवध में हेमाङ्गद नाम के एक दौवारिक ने एक स्थान पर एक श्लोक संस्कृत में भी कहा है। सुभद्राहरण, अभिज्ञानशाकुन्तल आदि अनेक नाटकों में दौवारिक का पाठ है।

अभिज्ञानशाकुन्तल में रक्षियों (सिपाहियों), धीवर और शकुन्तला के पुत्र की, चारुदत्त में शकार की, मृच्छकटिक में शकार, चेट, चारुदत्त के पुत्र, सवाहक और भिच्छु की, वेणीसहार में राक्षस

और राक्षसी की तथा कसवध मे कुब्जक और रजक की बोली मागधी भाषा मे है। मागधी गद्य और पद्य दोनों की ही भाषा है। यद्यपि उच्च कुल की एव शिक्षित नारियाँ गद्य पद्य मे क्रमशः शौरसेनी, महाराष्ट्री का ही व्यवहार करती है, तो भी कई नाटको मे नारी का पाठ संस्कृत भाषा मे भी मिलता है। जैसे उत्तररामचरित में तापसी, आत्रेयी, वासन्ती, तमसा, मुरला, अरुन्धती, पृथिवी, भागीरथी और गङ्गा की, कर्णसुन्दरी मे सखी और नायिका के पद्य की, कसवध मे दूती विलासवती, देवकी और केवल कुछ स्थलों पर कुब्जा की बोली संस्कृत भाषा मे पाई जाती है। प्रतिमा मे भट एक स्थान पर शौरसेनी तथा दूसरे पर संस्कृत का प्रयोग करता है। किसी किसी नाटक मे ऐसा भी देखा जाता है कि जब कोई पात्र किसी दूसरे का अनुकरण करता है, तो वह अपनी भाषा छोड़कर अनुकार्य व्यक्ति की ही भाषा बोलता है। जैसे मुद्राराक्षस मे संस्कृत का बोलने वाला विराध आहितुण्डिक का अनुकरण करने पर शौरसेनी भी बोलता है। बेणी सहार मे मुनिवेषधारी राक्षस संस्कृत भाषा का भी व्यवहार करता है।

मृच्छकटिक मे स्थावरक और रोहसेन नामक चाण्डालों तथा मुद्राराक्षस मे आये चाण्डालों की बोली चाण्डाली कहलाती है। इन सब के अतिरिक्त जिन पात्रों की चर्चा नहीं की गई है, उनके साथ वे ही साधारण नियम लागू है।

साहित्यदर्पण मे श्रेष्ठ चेट और राजपुत्रों की भाषा अर्द्धमागधी बतलाई गई है। परन्तु किसी नाटककार ने किसी भी पात्र के लिए इस भाषा का व्यवहार नहीं किया है। चेट का पाठ मृच्छकटिक मे आया है, जो मागधी मे है। इसी प्रकार राजपुत्रों की भाषा भी अर्द्धमागधी में नहीं है—‘चेटाना राजपुत्राणां श्रेष्ठानाञ्चार्द्धमागधी’ (साहि० ६, १६०)।

साहित्यदर्पण में विश्वनाथ ने भाषा विभाग का वर्णन करते हुए लिखा है कि शिक्षित मध्यम तथा उच्च वर्ग के मनुष्यों की भाषा संस्कृत

तथा मध्यम और उत्तम वर्ग की स्त्रियों की भाषा शौरसेनी है। योद्धा और नागरिकों की भाषा दाक्षिणात्या है। परन्तु यह भाषा भी प्रयुक्त हुई दृष्टिगोचर नहीं होती। विश्वनाथ ने बालकों की बोली का विधान करते हुए लिखा है कि बालक कभी कभी संस्कृत भी बोलते हैं। परन्तु किसी भी नाटक में कोई बालक संस्कृत बोलता नहीं पाया जाता। कवियों ने उपर्युक्त नियम का बिल्कुल पालन नहीं किया है।

ऐश्वर्य से पागल, दरिद्र, भिन्न एवं वत्सल धारण करने वाले पुरुषों की भाषा प्राकृत बतलाई गई है। पर उत्तम सन्यासियों के लिए संस्कृत का विधान है। कभी कभी वेश्या के लिए भी संस्कृत भाषा के व्यवहार का विधान है।

साहित्यदर्पण के अनुसार व्यापक नियम यह है कि जिस पात्र के देश की जो भाषा है, वह उसी को बोलता है और कार्यवश उत्तम आदि पात्र भाषा का परिवर्तन भी करते हैं—

‘यद्देश्य नीचपात्र तु तद्देश्य तस्य भाषितम् ।

कार्यतश्चोत्तमादीनां काव्यो भाषा विपर्यय ॥’

भाषा का परिवर्तन करना मुद्राराक्षस जादि नाटकों में पाया जाता है।

स्त्री, सखी, बालवेश्या, धूर्त तथा अप्सराये अपनी चतुरता प्रदर्शित करने के लिए बीच में संस्कृत बोल सकती है—

‘योषित् सखी बालवेश्यान्तिवाप्सरसा तथा ।

वैदग्ध्यार्थं प्रदातव्यं संस्कृतं चान्तराऽन्तरा ॥’

कर्णसुन्दरी में सखी और नायिका, कसवध में दौवारिक और कुब्जा तथा सुभद्राहरण में नटी भी विदग्धता दिखलाने के लिए संस्कृत भाषा बोलती है।

मालविकाग्निमित्र में परिव्राजिका कार्यवश संस्कृत बोलती है।

वाह्लीक भाषा जो उत्तर देशवासियों के लिए और द्राविडी जो द्रविड देशवासियों के लिए कही गई है, उनका नाटकों में कही भी अस्तित्व देखने में नहीं आता—‘वाह्लीकभाषोदीच्याना द्राविडी द्रविडादिषु’ (साहि० ६, १६२)।

एक बात और उल्लेखनीय है। प्रायः देखा जाता है कि एक ही घर में पुरुष सस्कृत, स्त्री शौरसेनी और लडका मागधी बोलता है। इसका क्या कारण है ? लडके तो ऐसे होते नहीं कि बचपन में ही कोई स्वतन्त्र भाषा सीख ले। जो भाषा उनकी माता तथा घरवाले बोलते हैं, वही भाषा वे सीखेंगे और बोलेंगे। माता की भाषा से भिन्न भाषा कभी भी उनसे उच्चारित नहीं हो सकती। फिर नाटकों में ऐसी विचित्रता क्यों देखने में आती है ? शकुन्तला में दुष्यन्त आदि सस्कृत में, शकुन्तला तथा उसकी सखियाँ शौरसेनी में बोलती हैं। तब दुष्यन्त का लडका मागधी कैसे सीख गया ? इसी प्रकार मृच्छकटिक में चारुदत्त का लडका भी मागधी बोलता है। इस प्रकार नाटकों के सहारे ठीक विचार नहीं किया जा सकता, क्योंकि बोली दूसरी होने पर भी विशेष स्थल के लिए अन्य बोली बोलनी पड़ती है। किन्तु यह भी देखने में आता है कि लडकों की बोली स्वभावतः ही मागधी होती है। आजकल के लडके भी प्रायः मागधी ही बोलते हैं। जैसे —‘ए ताता ताल लोपेया द ।’ इसकी हिन्दी ‘ऐ चाचा, चार रुपया दो’ होगी। इस प्रकार सब लडके के स्थान में ल का प्रयोग करते हैं। अतः इस सम्बन्ध में उक्त सन्देह अनावश्यक है।

पहले प्राकृत की उत्पत्ति के विषय में मैंने अपनी सम्मति न देकर केवल भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों के मत का ही उल्लेख किया है। अब अपनी सम्मति देना आवश्यक समझ अपना निर्णय दे रहा हूँ।

मेरे विचार से प्राकृत की उत्पत्ति सस्कृत ही से जान पड़ती है क्योंकि भाषा विज्ञान की ओर दृष्टि डालने से मालूम होता है कि मनुष्य कष्टसाध्य प्रयत्न न कर सुखोच्चार्य शब्द की ओर ही झुलक जाता है। अतः जो अशिक्षित जन सस्कृत बोलने की चेष्टा तो करते थे, किन्तु बोल नहीं पाते थे उन्हीं के उच्चारण दोष से बिगड़ बिगड़ कर एक अन्य भाषा बन गई। सारांश यह कि सस्कृत ही का अशुद्ध स्वरूप प्राकृत है। इसके विरोध में कुछ लोगों का यह कहना

कि प्राकृत के सब शब्द सस्कृत से ही सिद्ध नहीं होते इसलिये उसकी जननी सस्कृत नहीं है। यह कहना ठीक प्रतीत नहीं होता क्योंकि आज भी कुछ शब्द ऐसे देखने में आते हैं जिनका मूल मालूम है, पर उनमें इतना परिवर्तन हो गया है कि उनके मूल शब्द का अनुमान भी नहीं होता। जैसे—‘हू कम्स देअर’ के स्थान में ‘हुकुमदर’ या ‘हुकुम सदर’, ‘सिगनल’ के स्थान में ‘सिक-दर’, ‘कृष्णाष्टमी’ के स्थान में ‘किसुन आँठी’ (यह बोली नेपाल की तराई के पास सुनने में आती है) ‘इजलास’ के स्थान में ‘गिलाम’ और ‘सेवासमिति’ के स्थान में ‘सेवा सपाठी’ कहते हुए लोग देखने में आते हैं। इन उदाहरणों से यह अनुमान किया जाता है कि सस्कृत ही प्राकृत की जननी है। कुछ शब्द जो सिद्ध नहीं होते इसका कारण यह है कि उनमें बहुत परिवर्तन हो गया है। जब प्राकृत के प्रायः सभी शब्दों के मूल का पता सस्कृत से लग जाता है तब थोड़े शब्दों के न मिलने के कारण प्राकृत को स्वनन्तर मानना ठीक नहीं है।

विक्रमोर्वशीय में अपभ्रंश के जो पद्य आये हैं, उनके विषय में कुछ लोगों का कथन है कि वास्तव में ये पद्य पहले के नहीं हैं, बाद में जोड़े गये हैं। इसके प्रमाण में वे कहते हैं कि राजा उत्तम पात्रों में गिना जाता है। उत्तम पात्रों की बोली सस्कृत है। इसके अतिरिक्त एक ही पद्य की कई बार आवृत्ति की गई है, जिससे ज्ञात होता है कि ये पीछे से जोड़े गये हैं। परन्तु यह बात नहीं है। यद्यपि राजा उत्तम पात्रों में हैं और इसकी बोली सस्कृत है तो भी कार्यवश वह अन्य भाषाओं को भी बोल सकता है। आज भी हम सम्यक् समाज में यदि शिष्ट भाषा का प्रयोग करते हैं तो आवश्यकता पड़ने पर साधारण जनों से ग्राम्य बोलियों में भी बात करना नहीं छोड़ते। पुरुरवा ने अपनी प्रिया के लिए आकुल होकर हाथी, भौरे, चक्रवाक आदि से कहा था। उन्होंने समझा होगा कि बिना महाराष्ट्री तथा अपभ्रंश में बोले वे लोग समझेंगे नहीं, और नहीं समझने के कारण कदाचित्

उत्तर नहीं दे सकेंगे। इसलिये लाचारीवश ही उन्होंने प्राकृत का आश्रय लिया होगा, इसमें सदेह नहीं। एक ही बात की आवृत्ति भी साधारण बात है। जब किसी को उत्तर नहीं मिलता तो वह पुन पुन उसी प्रश्न को दुहराता ही है। इसलिए मेरे विचार से ये पद्य पीछे के नहीं हैं।

प्राकृत के वैयाकरणों के दो वर्ग हैं—एक त्रिविक्रम का और दूसरा मार्कण्डेय का। त्रिविक्रम के अनुयायी हेमचन्द्र, लक्ष्मीधर और सिंह राज हैं। लक्ष्मीधर ने त्रिविक्रम के सूत्रों पर अपनी वृत्ति लिखी है जैसे पाणिनि के सूत्रों पर वामन, माधव आदि कितने ही वृत्तिकारों की वृत्तियाँ रची गई हैं। लक्ष्मीधर के ग्रन्थ का नाम षड्भाषा चन्द्रिका है। मार्कण्डेय के अनुयायी वररुचि हैं। पहले लिखा जा चुका है कि किम् ग्रन्थ में किन किन प्रकार की प्राकृतों का वर्णन मिलता है।

सप्त वैयाकरणों ने महाराष्ट्री को प्रधान मान कर सर्वप्रथम उसी का निरूपण किया है अतः यहाँ भी प्रस्तुत प्राकृत व्याकरण के विद्वान् लेखक ने पहले महाराष्ट्री के ही लक्षण दिये हैं। उसके बाद शौरसेनी, मागधी, पैंशाची और अपभ्रंश के भी विशेष विशेष नियम बतला दिये गये हैं, जिनसे शब्दों के निर्वचन के विषय में जानकारी प्राप्त कर लेना अतिशय सरल हो गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ मेरी ही प्रेरणा से श्रीसोमेश्वरनाथ सचालक मण्डल, अरेराज (चम्पारन) के अनुसन्धान विभाग की ओर से पूर्ण परिश्रम एवं खोज के साथ निर्मित हुआ है। इसके लेखक ने इस ग्रन्थ को अरेराज जैसे साधनहीन स्थान में, जहाँ न कोई अच्छा पुस्तकालय ही है और न सुयोग्य परामर्शदाता ही, अकेले जुटकर इस ग्रन्थ का इस रूप में निर्माण किया है। एतदर्थ विद्वान् लेखक को इस सम्बन्ध में जितनी भी बधाई दी जाय, थोड़ी होगी।

संभव है इस पुस्तक में कुछ लोगो को अपूर्णता दिखलाई दे, किन्तु जितना भर लिखा जा चुका है, उतने से ही हिन्दी द्वारा प्राकृत पढ़ने वाले छात्रों का अतिशय उपकार होगा, इसमें तनिक भी संदेह नहीं ।

मुझे अपने छात्र-जीवन में हिन्दी में एक प्राकृत व्याकरण की आवश्यकता प्रतीत हुई थी । आज उस इच्छा की पूर्ति से मुझे बड़ी प्रसन्नता है । इस ग्रन्थ के लिखने में लखक को उत्साहित करनेवालों में मेरे अतिरिक्त तिरहुत प्रमण्डल के आयुक्त श्री श्रीधर वासुदेव सोहोनी तथा चम्पारन के कर्मठ साहित्यिक श्री गणेश चौबे रहे हैं । अतः ये दोनों ही महानुभाव मेरे लिए धन्यवादार्ह हैं ।

ग्रन्थों के न मिलने से जो कठिनाइयाँ आई, उन्हें गहुत कुछ मिहार रिसर्च सोसाइटी पटना, धर्मसमाज संस्कृत महाविद्यालय मुजफ्फरपुर एवं सोमेश्वरनाथ संस्कृत महाविद्यालय अररौरा के पुस्तकालयों ने दूर किया है, अतः इन संस्थाओं के अध्यक्ष भी धन्यवादार्ह हैं ।

ध्रुवनारायण त्रिपाठी

विषय-प्रवेश

प्रथम अध्याय	पृ०
सज्ञा सन्धि विवेक	१
लिङ्गानुशासन	१७
द्वितीय अध्याय	
स्वर सन्धि विवेक	४८
तृतीय अध्याय	
व्यञ्जनसन्धि विवेक	१६
चतुर्थ अध्याय	
शब्दलिङ्ग विवेक	७८
पञ्चम अध्याय	
अव्यय प्रकरण	१०७
षष्ठ अध्याय	
तिङन्त विचार	११७
सप्तम अध्याय	
कुल्ल प्रिशिष्ट पद	११०
अष्टम अध्याय	
शौरसेनी	११२
नवम अध्याय	
मागधी	१२५
दशम अध्याय	
पैशाची	२१०
एकादश अध्याय	
अपभ्रंश	२०४
परिशिष्ट	
अक्षरानुक्रम शब्द सूची	२३१
सहायक ग्रन्थ सूची	२९८



प्रसिद्ध वैयाकरण हेमचन्द्र के अनुसार 'प्रकृति' (=संस्कृत) प्राकृत शब्द की निष्पत्ति मानी गई है। 'प्रकृति संस्कृतम् । भव तत आगत या प्राकृतम्।' अर्थान् जिसही उत्पत्ति स्त्रुन से हुई हो अथवा संस्कृत से निकलकर जो अलग निमित्त या हो वही प्राकृतः है ।

कुछ भाषा शास्त्री 'प्रकृत्या (स्वभावेन) सिद्ध प्राकृतम्' इस त्पत्ति के अनुसार स्वभावसिद्ध को ही 'प्राकृत' मानते हैं ।

* देखिए—हेम० ८ १ १ अथ प्राकृतम् और उसी सूत्र पर हर पाण्डुरङ्ग पण्डित का अंग्रेजी नोट—Hemachandra's stem of grammar consists of eight chapters, the st seven deal with Sanskrit grammar and the last apter with six dialects of Prakrit, viz , महाराष्ट्री, रसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची and अपभ्रंश The ord Prakrit is derived from प्रकृति which according the auther, means Sanskrit Hemachandra cla fies Prakrit words into तद्भव, तत्सम, and देशी He es not treat of तत्सम here as he has already done in the preceding chapters He does not speak देशी words here but discusses only तद्भव words of th types, सिद्ध and सा यमान ।

विवादग्रस्त* इन दोनो व्युत्पत्तियों को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद रहा है। किन्तु हम यहाँ हेमचन्द्रवाली व्युत्पत्ति को ही मानकर चलेंगे।

अब आगे चलकर हम नियम, उदाहरण, विशेष तथा पादटिप्पणी के सम्मिलित क्रमों से प्राकृत शब्दों की निर्हाक्त का प्रयास करेंगे।

(१) लोको में प्रचलित वर्णसमाग्न्या ही प्राकृत में भी गृहीत है, किन्तु नीचे लिखे ऋ, ॠ, लृ, ऐ, औ ये पाँच स्वर वर्ण और ड, ञ, श, ष, न, य ये छ व्यञ्जन प्राकृत में नहीं होते।[†] हाँ, अपने वर्णवाले अक्षरों से संयुक्त ड और ञ का व्यवहार देखने को मिलता है। जैसे—पड्डो (पड्ड), सड्डो (शड्ड), सड्डा (शड्डा), कञ्जुओ (कञ्जु), वञ्जन (वञ्जनम्)।

* इस सम्बन्ध में श्रीहृषीकेश शास्त्री भट्टाचार्य के संस्कृत इङ्गलिश प्राकृत व्याकरण (१८८३ ई०) के प्रिफेस की नीचे उद्धृत पटित्तियों का प्रकाश डालती है—Modern philologist have not yet satisfactorily solved the question whether these dialects are derived directly from the Sanskrit or (through) some of its corruptions It is contended by some that Pali was the medium through which all the Prakrit dialects come into existence

† हेमचन्द्र के अनुसार ऋ, ॠ, लृ, ऐ, औ ये छ स्वर और ड, ञ, श, ष, विसर्जनीय और ग्लुत प्राकृत के वर्णसमाग्न्या में नहीं होते। किन्हीं किन्हीं शब्दों में हेमचन्द्र के अनुसार ऐ और औ भी देखे जाते हैं। जैसे—कैअव (कैतवम्), सौअरिअ (सौन्दर्यम्) कौरवा (कौरवा)

(२) भिन्न वर्गवाले व्यञ्जन वर्णों का परस्पर सयोग नहीं होता अर्थात् त्+क, प्+क, क्+त, क्+य, क्+र, क्+ल, ल्+क और क्+व इनका परस्पर सयोग न होकर केवल 'क्' रूप ही होता है। उसी तरह ङ्+ग, ढ्+ग, ग्+न, ग्+य, ग्+र, र्+ग और ल्+ग का परस्पर सयोग न होकर केवल ग्ग रूप ही रहता है। जैसे—उक्कठा (उत्कण्ठा), अक्कवल (अक्कमलम्), एक्कचरो (नक्तञ्चर), जण्णवक्केण (याज्ञवल्क्येन), सक्को (शक्र), विक्कवो (वित्त्व), उक्का (उल्का), पिक्क (पक्कम्), खग्गो (खड्ग), अग्गिणी (अग्नीन्), जोग्गो (योग्य), कञ्जग्गहो (कचग्रह), मग्गो (मार्ग) बग्गा (बल्गा) ।

विशेष—इसी तरह दूसरे भिन्नवर्गीय वर्णों के बारे में भी जानना चाहिए। जैसे—सत्तावीसा (सप्त-विंशति), कण्णउर (कर्णपुरम्)

(३) वर्ग के पाँचवे अक्षरो का अपने वर्ग के अक्षरो के साथ भी कहीं-कहीं सयोग देखा जाता है, किन्तु सर्वत्र नहीं। यथा—अङ्को (अङ्क), इङ्गालो (अङ्गार), तालवेण्ट (तालवृन्तम्), वञ्जणीयम् (वञ्जनीयम्), फन्दन (स्पन्दनम्), उम्बर (उडुम्बरम्)

(४) प्राकृत में ऐसा व्यञ्जन नहीं मिलता जो (सस्कृत के यावत्, तावत्, ईषत् के तकार के समान) स्वर-रहित हो ।

(५) प्राकृत में प्रकृति, प्रत्यय, लिङ्ग, कारक, समाससज्ञा आदि सस्कृत के समान ही होते हैं ।

(६) प्राकृत में द्विवचन नहीं होता। इसी प्रकार सप्रदान कारक में आनेवाली चतुर्थी विभक्ति भी प्राकृत में नहीं होती है। हिन्दी और अंग्रेजी की तरह द्विवचन का काम बहुवचन

से और चतुर्थी का काम षष्ठी से पूरा कर लिया जाता है* ।
द्विवचन के बदले बहुवचन का उदाहरण जैसे—वच्छा चलन्ति
(वत्सौ चलत), चतुर्थी के बदले षष्ठी जैसे—विप्पस्स देहि
(त्रिप्राय देहि)

(७) समास में कभी कभी दीर्घ स्वर ह्रस्व स्वर के रूप में और ह्रस्व स्वर दीर्घ स्वर के रूप में बदलता हुआ देखा जाता है । दीर्घ का ह्रस्व जैसे—जहट्टिअ (यथा स्थितम्), अतावेइ (अन्तर्वेदी), ह्रस्व का दीर्घ जैसे—सत्तावीसा (सप्त-विंशति) ।

(८) कभी कभी दीर्घ और ह्रस्व के क्रमशः ह्रस्व और दीर्घ रूप समास में विकल्प से होते देखे जाते हैं । जैसे—
णइसोत्त, णईसोत्त (नदीस्रोत*), बहुमुह बहूमुह (बहुमुखम्),
पिआपिअ, पीआपीअ (प्रियाप्रियम्)

विशेष :—कभी कभी स्वरों के उक्त परिवर्तन नहीं भी देखे जाते हैं । जैसे—जुवइ अणो (युवतिजन)

(९) दो पदों में सान्निध्य रहने पर संस्कृत के लिए विहित कुल सन्धि-कार्य प्राकृत में विकल्प से किये जाते हैं । जैसे—
वास+इसी, वासेसी (व्यासषि), दहि+ईसरो, दहीसरो
(दधीश्वर*)

* देखिए वररुचिसूत्र द्विवचनस्य बहुवचनम् ६३३ और चतुर्थ्या षष्ठी ६६४ अर्द्धमागधी में चतुर्था देखी जाती है । जैसे—
अधम्माय कुञ्जइ (अधर्माय कृ यति), ससाराए सुख (ससाराय सुखम्), अट्ठाए दण्डो (अर्थाय दण्ड) इत्यादि ।

विशेषः—(क) एक पद में सन्धि कार्य नहीं होता। जैसे—

पाओ (पाद्), पई, वच्छाओ, मुद्गाए इत्यादि।

(ख) वही कही एक पद में भी शब्दों के स्वभाव-
वश सन्धि होती देखा जाती है। जैसे—काहिइ,
काही, बिइओ, बीओ।

(१०) 'इ' और 'उ' का विजातीय स्वर के साथ कभी
सन्धि-कार्य नहीं होता। जैसे—विअ (इव), महुई (मधूनि),
न वैरिवग्गे वि अवयासो॥ (न वैरिवग्गेऽप्यवकाश*), दणु
इन्दरुहिरलित्तो† (दनुजेन्द्ररुविरलित्त)

(११) सजातीय स्वर के साथ सन्धि हो जाती है। जैसे—
पुहवी+ईसो=पुहवीसो (पृथिवीश), कुलूद+आहिपो=कुलू-
दाहिपो (कुलूताविप)।

(१२) 'ए' और 'ओ' के आगे यदि कोई स्वर वर्ण हो तो
उनमें सन्धि नहीं होती है। जैसे—देवीए+एत्थ, एओ+एत्थ
(देव्या अत्र, एकोऽत्र), वहुआइ नहुल्लिहणे आवन्धन्तीएँ
कञ्चुअ अङ्गे (बध्ना नखोल्लेखने आवधन्त्या कञ्चुकमङ्गे), त
चेव मल्लिअ विसदण्ड विरसमालक्खिमो एणिह (तदेव मृदित-
विसदण्डविरसमालक्षयामह इदानीम्)

१ भीय परित्ताणमद पइएण मसिणो तुहाधिरुदस्स ।

(भीतपरित्राणमयी प्रतिज्ञामसेस्तवाधिरुदस्य ।)

मन्ने सकाविहुरे न वैरिवग्गे वि अवयासो ।

(मन्ये शङ्काविधुरे न वैरिवग्गेऽप्यवकाश* ॥)

† दणु इन्द रुहिरलित्तो सहइ उइन्दो नहण्पहावलि अरुणो ।

(दनुजेन्द्ररुविरलित्त शोभते उपेन्द्रो नखप्रभावल्लवरुण)

(१३) व्यञ्जनवदित स्वर से व्यञ्जन का लोप हो जाने पर जो स्वर बँचा रह जाता है उसे प्राकृत के वैयाकरण लोग 'उद्वृत्त' कहते हैं। कोई भी 'उद्वृत्त' स्वर किसी भी स्वर के साथ सन्धि कार्य को नहीं प्राप्त करता है। जैसे—गन्ध-उडि (गन्धकुटीम्), निशाचरो (निशाचर), रयणीचरो (रजनीचर*)

विशेषः—कही कही इस नियम के प्रतिकूल उद्वृत्त स्वर का दूसरे स्वर के साथ सन्धिकार्य विकल्प से होता है। और कही कही सन्धि अवश्य होती है। विकल्प से जैसे—सुउरिसो, सूरिसो (सुपुरुष*), नित्य जैसे—चक्काओ (चक्रवाक), सालाहणो (सातवाहन)

(१४) 'तिप्' आदि प्रत्ययो के स्वर किसी भी स्वर के साथ सन्धि कार्य प्राप्त नहीं करते हैं। जैसे—होइ इह (भवतीह)

(१५) किसी स्वर वर्ण के पर में रहने पर उसके पूर्व के स्वर (उद्वृत्त अथवा अनुद्वृत्त) का वैकल्पिक लुक् होता है। जैसे—तिअस (त्रिदश) के सकार के आगेवाले अकार (अनुद्वृत्त) का 'ईसो' (ईश) के ई के पर में रहने पर लुक् हो गया। अब स् और ई के मिल जाने से 'तिअसीसो' हुआ। वैकल्पिक होने के कारण 'तिअस ईसो' भी होता है। इसी प्रकार 'राउल' (उद्वृत्त अस्वर का लुक्) और राअ उल (राजकुलम्) भी जानना चाहिए ॥३॥

* तुलना कीजिए—अण्णावअण्णकण्ठो (आणावचनोत्कण्ठ)
अभि० शा०, २ अ), सलिलसेअसभमुग्गदो (सलिलसेकसभमोद्गत)
अभि० शा०, २ अ ।

विशेषः—(क) शौरसेनी आदि प्राकृत के अन्य भेदों में उक्त नियम लागू नहीं होता ।

(ख) प्राकृत प्रकाश के अनुसार किसी भी सयुक्ताक्षर के पूर्व में वर्तमान स्वर से पूर्ववर्ती स्वर का सब जगह लोप होता माना जाता है ।
जैसे—एत्थि (नास्ति)

(१६) शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का सर्वत्र लुक् होता है । जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
जाव	यावत्
तावक्क	तावत्
जसो†	यश
एह‡	नभ
सिर	शिर*

विशेषः—समास में उक्त नियम विकल्प से होता है ।

मभिवक् (लुक्) सज्जणो (अलुक्)

(१७) 'श्रत्' और 'उत्' इन दोनों के अन्त्य व्यञ्जन का लुक् नहीं होता । जैसे—सद्भा (श्रद्भा), उण्णय (उन्नयम्)

(१८) 'निर्' और 'दुर्' के अन्तिम व्यञ्जन र् का लुक् विकल्प से होता है । जैसे—निस्सह (लुगभाव), नीसह (लुक्), दुस्सहो (लुगभाव), दूसहो (लुक्) । स निस्सहम्, दुस्सह ।

* शौरसेनी में दाव होता है ।

† नसान्तप्रावृट्सरद् पुंसि । वर सू ४१८ नान्त, सान्त प्रावृष् और सरद् शब्दों का प्रयोग पुलिङ्ग में होता है ।

‡ न सिरोनभसी । वर० सू० ४१९ शिरस् और नभस् शब्दों के पुलिङ्ग में प्रयोग का निषेध है ।

(१६) स्वर वर्ण के पर मे रहने पर 'अन्तर्' 'निर्' और 'दुर्' के अन्त्य व्यञ्जन (रेफ) का लुक् नहीं होता । जैसे—अन्तरप्पा (अन्तरात्मा), अन्तरिदाः* (अन्तरिता), नि (णि) रुत्तर† (निरुत्तरम्) गिराबाध‡ (निराबाधम्), दुर्त्तर (दुरुत्तरम्) दुरागद§ (दुरागतम्) ।

विशेष :—कही कही 'निर्' के रेफ का लुक् देखा भी जाता है । जैसे—मुद्राराक्षस के पाँचवे अङ्क मे क्षणक कहता है 'ता जइ भाउराअणस्स मुद्दालाच्छिदोऽसि तदो गच्छ गीरात्थो, अण्णधा णिबत्तिअ णिउक्कण्ठः‡ चिह । (तद् यदि भागुरायणस्य मुद्रालाच्छितोऽसि तदा गच्छ विश्वम् । अन्यथा निवृत्य निरुक्कण्ठ तिष्ठ ।)

* तेन हि लदानिडवन्तरिदा सुणिस्स (तेन हि लताविट्पातरिता श्राग्ये ।) विक्र० अ० २ मे देवीवचन ।

† वअस्स, गिरुत्तरा एसा (वयस्य, निरुत्तरा एषा) विक्र० अ० ३ मे चित्रलेखावचन ।

‡ इमिणा दब्भोदएण गिराबाध एव्व दे सरीर भविस्सदि (अनेन दर्भोदकेन निराबाधमेव ते शरीर भविष्यति ।) अभि० शा०, अ० ३ मे गौतमीवचन ।

§ दुरागद दाणिं सवुत्त (दुरागतमिदानीं सवृत्तम्) विक्र० अ० २ मे देवीवचन ।

‡ वररुचि के (३१) मत से क्, ग्, ङ्, त्, द्, प्, प्, स यदि सयोग के आदि मे हो तो उनका लोप हो जाता है । और

✓ (२०) नियुत् शब्द को छोड़कर खीलिङ्ग में वर्तमान सभी व्यञ्जनान्त शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का आत्व होता है। जैसे—सरिञ्चा (सरित्), सपञ्चा (सपद्), वाञ्चाञ्ज (वाक्), अञ्छरा (अप्सर)

उन्हीं के अन्य सूत्र (३ ५०) के अनुसार आदि में नहीं रहनेवाले जो सयुक्त के शेष यथना आदेशभूत अक्षर हो उनका द्वित्व माना गया है। इस प्रकार उत्फण्टा में त् का लोप और क् का द्वित्व करके 'उक्कण्टा' बनता है। उत्पात का 'उपाग्रो' बनता है। यह प्रकार उत्तम है। प्राकृतप्रकाश में दूसरे भी लोपविधायक सूत्र देखे जाते हैं। जैसे—(१) उदुम्बरं दोर्लोपि । वर० २ ४ उदुम्बर शब्द में दु का लोप होता है। उमर (उदुम्बरम्) (२) कालायसे यस्य वा । वर० ३ ४ कालायस में य का लाप विकल्प से हाता है। कालास काला अस (कालायस) (३) भाजने जस्य । वर० ४ ४ भाजन शब्द में ज का वैकल्पिक लोप होता है। भाण, भाञ्जण (भाजनम्) (४) यावदादिषु बस्य । वर० ५ ४ यावत् प्रभृति शब्दों में 'व' का वैकल्पिक लोप होता है। जा, जाव, ता, ताव, पाराञ्चो, पारावञ्चो अनुत्तेन्तो, अनुवत्तेन्तो, जीञ्च, जीविञ्च, एञ्च एव, एञ्च एव, कुलञ्च, कुवलञ्च, (यावत्, तावत्, पारावत्, अनुवर्तमान, जीवितम् एव, एव, कुवलयम्)

* एत्तिञ्च जेव अत्थि मे वाञ्चाञ्छल (एताउदेवास्ति मे वाक्छलम्) मुद्रा० अ० १ में चन्दनदासवचन। एत्थि मे वाञ्चाविहवो (नास्ति मे वाग्विभव) विक्र० अ० २ में उर्वशीवचन।

† सहि, अञ्छरावावारपञ्जाएण तत्र भञ्चदो सुजस्स उवढाणे वट्ठती (सहि, अप्सरोव्यापारपर्यायेण तत्र भवत सूयस्पोपस्थाने वर्तमाना) विक्र० अ० ४ में चित्रलेखावचन।

विशेष—(क) यह नियम इसी अध्याय के नियम १६ का अपवाद है ।

(ख) विद्युत् शब्द का प्राकृत रूप विज्जू होता है ।

(ग) उक्त नियम से जो आ होता है, उसका उच्चारण कभी-कभी ईषत्स्पृष्टतर या के के समान भी होता है । सरिया, पाडिवया, सपया ।

(घ) अप्सरस् का एक रूप अच्छरसा भी होता है ।

(२१) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान रेफान्त शब्द के अन्तिम र् का आदेश होता है । जैसे—धुराः, गिराः, पुरा (धू, गी, पू)

(२२) 'लुध्' शब्द के अन्त्य व्यञ्जन का 'हा' आदेश होता है । जैसे—छुहा (लुत्)

(२३) 'शरत्' प्रभृति शब्दों के अन्तिम व्यञ्जन के स्थान में 'अ'† आदेश होता है । जैसे—सरअ,§ भिसअ (शरत्, भिषक्)

* दुव्वोज्झा वि अवलम्भिआ कज्जधुआ । राव० ४ ४४

† पासम्मि ठिआ तस्स य महूअगोरीओ महुअमहुरगिरा । (पार्श्वे स्थिता तस्य या मवूकगौर्यो मधूकमवुरगिर ।) कुमा० पा० १ ७५

‡ प्राकृत प्रकाश के 'शरदो द' वर० सू० ४ १० के अनुसार शरत् के अन्तिम व्यञ्जन का 'द्' आदेश होता है । इसके अनुसार शरत् के लिए 'सरअ' न होकर 'सरदो' रूप होता है ।

§ सीआ वाह विहाओ दहमुहवज्ज दिअहो उवगओ सरओ राव० १ १६

✓ (२४) 'दिश्' और 'प्रावृष्' शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनो के स्थान मे 'स' आदेश होता है । जैसे—दिसा,॥ पाउसो† (दिक्, प्रावृद्)

(२५) 'आयुष्' और 'आप्सरस्' के अन्त्य व्यञ्जनो का 'स' आदेश विकल्प से होता है । जैसे—दीहाउसो,‡ दीहाऊ, अच्छरसा,§ अच्छरा() (अप्सरा)

(२६) ककुम्भ् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन का ह् आदेश होता है । जैसे—कउहा (ककुप्)

✓ (२७) वयुष् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन के स्थान मे ह् आदेश विकल्प से होता है । जैसे—वणुह्, वणू□ (धनु)

✓ (२८) अन्त्य 'म्' का अनुस्वार होता है । जैसे—जलं, फलं, वच्छ, गिरि पेच्छ (जलम्, फलम्, वत्सम्, गिरिम्, प्रेक्षस्व) ।

फुरइ फुरिअट्टहास उद्धपडित्तिमिर मित्र दिसा-अक्क ।
रावण० १ ५

† दिसाण पाउस-किलत्ताण । (दिशा प्रावृट्कान्तानाम् ।) कुमा०
पा० १ ६

I दीहाऊ । व अदीहाउसमाणी सद् विवेइ-जणो । (दीर्घायुरपि
अदीर्घायुर्मान्नी सदा विवेकिजन ।) कुमा० पा० १ १०

§ जीय-विटत्तच्छरस । रावण० १३ ४७

() गत्रण-णिगत्र-भिण्ण-धण मेसि अच्छरेहि । रावण० ७ ४५

□ कुसुमधणू धणुह्धरो कउहा-मुह्-मण्डणम्मि चन्दमि ।
(कुसुमधनुर्धनुधर ककुम्भुपमण्डने चन्द्रे ।) कुमा० पा० १ ११

(२९) कही-कहीं अनन्त्य मकार का वैकल्पिक रूप से अनुस्वार होता है । जैसे—वणम्मि, वणमि (वने)

(३०) स्वर के पर मे रहने पर अनन्त्य मकार का अनुस्वार विकल्प से होता है । जैसे—फता अवहरइ, फलमवहरइ (फल-मवहरति)

विशेष—अनुस्वार के अभाव पक्ष मे म् का म् ही रह गया । लुक् का अप्रगट होने से लुक् (११६) नहीं हुआ ।

(३१) कभी-कभी 'म्' के अतिरिक्त दूसरे व्यञ्जनो के स्थान मे भी पाक्षिक मकार होता देखा जाता है । जैसे—वीसुक्क, पिह, सम्म, सकस, ज, त, (विष्वक्, पृथक्, सम्यक्, साक्षात्, यत्, तत्,)

(३२) व्यञ्जन वर्णों के पर मे रहने पर ङ् ग् ण् न् के स्थान मे अनुस्वार होता है । जैसे—पत्ती, परमुहो, कचुओ, वचण, समुहो, उक्कठा, कसो, असो (पडिक्क, पराङ्मुख, कञ्चुक, वञ्चनम्, षण्मुख, उत्कण्ठा, कस, अश)

(३३) वक्रप्रभृति† शब्दो मे कही प्रथम, कही द्वितीय तथा कही तृतीय स्वर के आगे अनुस्वार का आगम होता है ।

* वीसु वासा नीसित्त महि अले ऊस मालि तेअस्स (विष्वग्वर्षानि षिक्तमहीतले उल्लमालितेजस । कुमार पा० १ ३२

† वक्रव्यस्तवयस्याश्रु श्मश्रुपुच्छातिमुक्तकौ ,

गृष्टिर्मनस्विनी स्पर्शश्रुतप्रतिश्रुत तथा ।

निवसन दर्शनञ्चैव वक्रादिष्वेवमादय ॥

(प्राकृतकल्पलतिका के अनुसार वक्रादि गण । यह गण आकृति गण माना जाता है ।)

जैसे—वक (वक्रम्), तस (त्र्यसम्), असु (अश्रु), मसू (श्मश्रु) पुछ (पुच्छम्) गुछ (गुच्छम्), मुढा अथवा मुड (मूर्द्धा), फसो (स्पर्श*), बुधो (वृद्ध*), ककोडो (कर्कोट*), कुपल (कुट्मल अथवा कुड्मलम्), दसण (दर्शनम्) विछिओ (वृश्चिक), गिठी अथवा गुठी (गृष्टि) मजारो (मार्जार) ❀ वयसो (वयस्य*), मणसिणी (मनस्विनी), मणसिला (मन - शिला), पडिसुद (प्रतिश्रुतम्), पडिसुआ (प्रतिश्रुत्)† उवरि (उपरि), अहिसुको (अभिसुक्त) अणिउँतय, अइमुतय (अति-मुक्तकम्)‡

(३४) क्त्वा एव स्वादि के ण और सु के आगे विकल्प से अनुस्वार आता है ।

क्त्वा के आगे जैसे—

प्राकृत

संस्कृत

काउण (अनुस्वार), काउण (अनुस्वार का अभाव) क्त्वा स्वादि के ण के आगे जैसे—

वच्छेण (अनुस्वार), वच्छेण (अनु० का अभाव) वृत्तेण स्वादि के सु के आगे जैसे—

वच्छेसु (अनुस्वार), वच्छेसु (अनु० का अभाव) वृत्तेषु

* वक्र से मजारो तक प्रथम स्वर के आगे अनुस्वार का आगम हुआ है ।

† वयसो से पडिसुआ तक शब्दों में द्वितीय स्वर के आगे अनुस्वार का आगम होता है ।

‡ उवरि से अइमुतय तक शब्दों में तृतीय स्वर के आगे अनुस्वार का आगम होता है ।

(२५) विंशति प्रभृति* शब्दों के अनुस्वार का लुक् होता है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
वीसा	विंशति*
तीसा	त्रिंशत्
सक्कञ्च	संस्कृतम्
सक्कारो	संस्कार*
सत्तुञ्च	संस्तुतम्

(३६) मासादि गणों में अनुस्वार का लुक् विकल्प से होता है। जैसे—

(क) प्रथम स्वर के आगे अनुस्वार का लुक्—

प्राकृत	संस्कृत
मास, मस	मासम्
मासल, मसल	मासलम्
कि, कि,	किम्

* विंशत्यादि गण में विंशति, त्रिंशत्, संस्कृत, संस्कार और संस्तुत शब्द गृहीत हैं।

† मासादि गण के विषय में प्राकृतप्रकाश में यों लिखा गया है—‘यत्र क्वचित् वृत्तमङ्गभयात् त्यज्यमानं त्रियमाणश्च विन्दुर्भवति स मासादिषु द्रष्टव्य ।’ अर्थात् छन्दोमङ्ग के भय से जिस किसी शब्द में अनुस्वार छोड़ा जाता या गृहीत होता है, वह शब्द मासादि गण में माना जाता है।

प्राकृत	संस्कृत
कास, कस	कासम्
सीहो, सिघो	सिह*
पासू, पसू	पासु* (शु)

(ख) द्वितीय स्वर के आगे अनुस्वार का लुक्—

प्राकृत	संस्कृत
कह, कह	कथम्
एव, एव	एवम्
नूण, नूण	नूनम्

(ग) तृतीय स्वर के आगे अनुस्वार का लुक्—

प्राकृत	संस्कृत
इआणि, इआणि	इदानीम्
समुह, समुह	सम्मुखम्
केसुअ, किंअ	किशुकम्

(३७) वर्गों का यदि कोई अक्षर पर मे हो तो पूर्व के अनुस्वार के स्थान मे पर अक्षर के वर्ग का पञ्चम अक्षर विकल्प से होता है। क, ख, ग, घ के पर मे जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
पङ्को, पको	पङ्क
सङ्खो सखो	शङ्ख
अङ्गण, अगण	अङ्गनम्
लङ्गण, लघण	लङ्गनम्

च, छ, ज, झ के पर मे जैसे—

कञ्चुओ, कचुओ	कञ्चुक
लञ्छण, लछण	लाञ्छनम्
व्यञ्जिअ, वजिअ	व्यञ्जितम्
सञ्भा, सभा	सन्ध्या

ट, ठ, ड, ढ के पर मे जैसे—

कण्टओ, कटओ	कण्टक
उक्कण्ठा, उक्कठा	उत्कण्ठा
कण्ड, कड	काण्डम्
सण्डो, सढो	षण्ड

त, थ, द, ध के पर मे जैसे—

अन्तर, अतर	अन्तरम्
पन्थो, पथो	पन्था
चन्दो, चदो	चन्द्र
बन्धवो, बधवो	बान्धव

प, फ, ब, भ के पर मे रहने पर जैसे—

कम्पइ, कपइ	कम्पते
वम्फइ, वफइ	काङ्क्षति
क्लम्बो, कलबो	क्लम्ब
आरम्भो, आरभो	आरम्भ

विशेष :—(क) पर मे वर्ग का अक्षर नहीं रहने से किसुओ और सहरइ मे उक्त नियम लागू नहीं हुआ ।

(ख) प्राकृत के अन्य वैयाकरण उक्त नियम को वैकल्पिक न मान कर नित्य मानते हैं ।

लिङ्गानुशासन

✓ (३८) प्रावृष्, शरद् और तरणि शब्दों का पुल्लिङ्ग में प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे—पाउसो, * सरओ, † तरणी‡

(३९) दामन्, शिरस् और नभस् से वजित सकारान्त तथा नकारान्त शब्द पुल्लिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं।

सान्त जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
✓ जसो □	यश
✓ पओ ()	पय
तमो §	तम
तेओ △	तेज
सरो ×	सर

* जइआ गिहो पयहओ तइअ चिअ किर आसि पाउसो ।

कुमा० पा० ४ ७८

† दहमुह वज्ज दिअहो उग्रओ सरओ । रावण० १ १६

‡ न जत्थ दीसइ फुडो तरणी । कुमार० पा० १ २१

□ पारोहो व्व खुडिओ महेन्दस्स जसो । रावण० १ ४

() धीरअ सइ मुहल घण पअ-विज्जन्तअ । रावण० २ २४

§ राह रिह तमेण व चउदिस भाविअ । रावण० २ २३

△ देसिए १ ३१ की पादटिप्पणी ।

× अमुणा सरेण हसाण माणस त पि विमहरिअ । कुमा० पा

नान्त जैसे—

जम्मोः	जन्म
नम्मो†	नर्मे
कम्मो][कर्म
वम्मो□	वर्म

(४०) दामन्, शिरस् और नभस् शब्द नपुसक लिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—दाम() (दाम), सिर§ (शिर), नह× (नभ)

विशेषः—(क) यह नियम पूर्वे नियम (१ ३६) में प्रतिषिद्ध दामन् आदि तीनों शब्दों के लिङ्ग का बोधन करता है।

(ख) नीचे लिखे उदाहरणों में भी उक्त १ ३६ नियम प्रवृत्त नहीं होता है। अर्थान् नपुसकत्व हो जाता है। जैसे—

* सहलो जम्मो सभल च जीविअ ताण देव फणि चिन्ध ।
कुमा० पा० २ ५६

† इअ नम्म-पड्ड जल पाण रई । कुमा० पा० ४ ३३

□ काही सउहे गमण सभा-कम्म च काहीअ । कुमा० पा० ५,
८७

][अग्घिअवम्मा (राजितवर्माण) छज्जिअ सिरक्कया । कुमा०
पा० ६ ६३

() गलिअ घण लच्छि रअण रसणा दाम । रावण० १ १८

§ उण्णामिअ राणु सिर जाअ । रावण० ४ ५६

× थाण फिडिअ सिडिल पडन्त व णह । रावण० ४ ५४

वयः* (वय), सुमणां (सुमन), सम्म†
(शर्म), चम्म□ (चर्म)

(४१) अक्षि (अख) के समानार्थक शब्द तथा निम्न निर्दिष्ट वचनादि()गण के शब्द पुल्लिङ्ग में विरुलप से प्रयुक्त होते हैं । अक्षि शब्द का पाठ अञ्जल्यादि गण में भी किया गया है, इसलिए स्त्रीलिङ्ग में भी उसका प्रयोग होता है । जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
अच्छी§ (पुलिङ्ग)	अक्षिणी
अच्छीइ[] (नपुसक)	अक्षिणी
एसा अच्छी (स्त्रीलिङ्ग)	एतदक्षि
चक्खू (पुलिङ्ग)	चक्षुषी
चक्खूइ (नपुसक)	
णअणो (पुलिङ्ग)	नयनम्
णअण (नपुसक)	

* † सव्ववयाण मज्झिमवय व सुमणाण जाइ सुमण वा ।

कुमा० पा० १ २३

‡ सम्माण मुत्ति सम्म न पुहइ नयराण ज सेय । कुमा० पा० १ २३

□ चम्म जाण न अच्छी । कुमा० पा० १ २४

(वचनादि गण में वचन, कुल, माहात्मा दु ख, छ दस्, विजु आदि शब्द गृहीत हैं ।

§ अज वि सा सवइ ते अच्छी । (अद्यापि सा शपति तेऽक्षिणी)

[] नच्चावियाइ तेण्ह अच्छीइ (नर्तितानि तेनास्माकमक्षिणी)

△ शाकल्य शरद स्त्रीत्वे क्लीबे नान्तञ्च कुरिडन । पुक्लीबयोस्त-
थारयात नयनादि तथा परै । कल्पलतिका ।

विअसन्ति जत्थ नयणाकि पुण अन्नाण नयणाइ, कुमा० पा० १ २४

लोअणो (पुल्लिङ्ग) } *	लोचनम्
लोअण (नपुसक) }	
वअणो (पुल्लिङ्ग) } †	वचनम्
वअण (नपुसक) }	
कुलो (पुल्लिङ्ग) }	कुलम्
कुल (नपुसक) }	
माहणो } ‡	माहात्म्यम्
माहण }	

(४२) किसी किसी आचार्य के मत से पृष्ठ, अक्षि और प्रश्न शब्द विकल्प से स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—पुढी, पुठ (पृष्ठम्), अच्छी, अच्छ (अक्षि), पर्णहा, पर्णहो (प्रश्न) ।

(४३) गुणादि(०) शब्द नपुसक लिङ्ग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं। जैसे—गुण□ गुणो (गुण), देवाणि, देवा (देवा), खग्ग, खग्गो (खड्ग), मण्डलग्ग, मण्डलग्गो (मण्डलाग्र), कररुह, कररुहो (कररुह), रुक्खाइ, रुक्खा (वृक्षा)

(४४) इमान्त (इमन् प्रत्यय जिसके अन्त में आया हो)

* विहसतहिअो विहसेन्त लोअणो । कुमा० पा० ५ ८४

† गुरुणो वयणा वयणाइ । कुमा० पा० १ २५

‡ नेत्र और कमल शब्दों का वचनादि में ग्रहण नहीं है। क्योंकि वे संस्कृत के अनुसार ही हैं।

() गुणादि में गुण, देव, विन्दु, खड्ग, मण्डलाग्र, कररुह, और वृक्ष शब्द गृहीत हैं।

□ विहवेहि गुणाइ मगान्ति (विभवैर्गुणा मृग्यन्ते) हेम० १ ३४

और अञ्जल्यादि गण के शब्द विकल्प से स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं ।

इमान्त में जैसे—

प्राकृत

संस्कृत

एसा गरिमा, एसो गरिमा

एष गरिमा।

एसा महिमा, एसो महिमा।

एष महिमा

अञ्जल्यादि में जैसे—

✓ एसा अजली, एसो अजली।

एष अञ्जलि

चोरिआ (स्त्री०), चोरिआ (पु०)

चौर्यम्

निहो (स्त्री०), निहो (पु०)△

निधि

विही (स्त्री०), विही (पु०)

विधि

गठी (स्त्री०), गठी (पु०)

ग्रन्थि*

(४५) जब वाहु शब्द स्त्री लिङ्ग में प्रयुक्त होता है, तब उसके उकार के स्थान में आकार आदेश होता है । किन्तु जब

* अञ्जल्यादि गण में अञ्जलि, पृष्ठ, अक्षि, प्रश्न, चौर्य, कुक्षि, बलि, निधि, विधि, रश्मि और ग्रन्थि शब्द ग्रहीत हैं । रश्मि स्त्रिया वेति कल्पलतिका । कल्पलतिकाया काश्मीरोष्म सीम शब्दा पठिता ।

† एयाए महिमाए हरिओ महिमा मुर पुरीए ।

—कुमा० पा० १ २६

‡ जत्थञ्जलिणा कणय रयणाइ वि अञ्जलीइ देइ जणो ।

—वही । १ २७

△ कणय-निही अक्खीणो रयण-निही अक्खया तह वि ।

—वही । १ २७

पुल्लिङ्ग मे प्रयुक्त होता है तब आकार आदेश न होकर बाहु रूप ही रह जाता है । जैसे एसा बाहाः, एसो बाहू† । (एष बाहु)

(४६) सस्कृत व्याकरण के अनुसार जब किसी अकार के आगे विसर्ग आया हो, तो उस विसर्ग के स्थान मे ओ आदेश हो जाता है और ओ के पूर्व के व्यञ्जन सहित अ का लोप होता है । जैसे—सव्वओ (सर्वत), पुरओ (पुरत), अग्गओ (अग्रत), मग्गओ (मार्गत)

विशेष :—यह सार्वत्रिक नियम नहीं है कि शब्द अकारान्त ही हो । अत व्यञ्जनान्त शब्दो मे भी उक्त नियम लागू हो जाता है । जैसे—भवओ (भवत), भवन्तो (भवन्त), सन्तो (सन्त), कुदो (कुत)

(४७) माल्य शब्द के पर मे रहने पर निर् और स्था धातु के पर मे रहने पर प्रति के स्थान मे क्रमशः ओत् और परि आदेश विकल्प से होते है । जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
ओमल्ल अथवा ओमाल (ओ)	निर्माल्यम्
निम्मल (ओ का अभाव)	
परिद्धा (परि आदेश)	प्रतिष्ठा
पइद्धा (परि का अभाव)	

* तत्थ सिरि कुमर बालो बाहाए सव्वओ वि धरिअ धरो ।

—कुमा० पा० १ २८.

† बाहुसु सिला अल डिएसु गिसणो । —रावण० ३ १

परिद्धिअ (परि आदेश)	} प्रतिष्ठितम्
पइद्धिअ (परि का अभाव)	

(४८) त्यद् आदि* सर्वनामों से पर मे रहनेवाले अव्ययो तथा अव्ययो से पर मे रहनेवाले त्यदादि के आदि स्वर का लुक् विकल्प से होता है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
अम्हेव (त्यदादि से पर अव्यय के आदि स्वर का लुक्)	वयमेव
✓ अम्हे एव (लुक् का अभाव)	वयमेव
जइह (अव्यय से पर मे आने-वाले त्यदादि के आदि स्वर का लुक्)	} यच्चहम्
✓ जइ अह (लुक् का अभाव)	

(४९) पद से पर मे रहनेवाले अपि अव्यय के आदि अ का लुक् विकल्प से होता है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
त पि, तमवि	तमपि
कि पि, किमवि	किमपि
केण वि, केणावि ✓	केनापि
कह पि, कहमवि ✓	कथमपि
(५०) पद से पर मे रहनेवाले इति अव्यय के आदि इकार	

* त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवतु किम् ये ही त्यदादि सर्वनाम माने गये हैं।

का लुक् विकल्प से होता है और स्वर से पर मे रहनेवाले तकार का द्वित्व है। जैसे—

प्राकृत

कि ति

य ति

दिट्ठ ति

न जुत्त ति

संस्कृत

किमिति

यदिति

दृष्टमिति

न युक्तमिति

स्वर से पर रहने पर जैसे—

तह त्ति

पिओ त्ति

पुरिसो त्ति

तथेति

प्रिय इति

पुरुष इति

विशेष—पद से पर मे नहीं रहने के कारण नीचे लिखे उदाहरण मे न तो इति के आदि इ का लुक् हुआ और न तकार का द्वित्व ही। इअ* विअ गुहानिलयाए।

(५१)—जिन श्, ष्, स् से पूर्व अथवा पर मे रहनेवाले य्, र्, व्, श्, ष्, स् वर्णों का प्राकृत के नियमानुसार लोप हुआ हो उन शकार, षकार और सकारों के आदि स्वर का दीर्घ हो जाता है†। जैसे—

* देखिए—नियम १ ६६

† इस नियम को पूर्णत समझने के लिए हेमचन्द्र के अधोमन्याम् २ ७८ अनादौ शेषादेशयोद्वित्वम्। २ ८८ न दीर्घानुस्वारात्। २ ६२ आदि सूत्रों का मनन आवश्यक है।

प्राकृत

संस्कृत

पासइ (यलोप२ ७८, द्वि०२ ८६, = पस्सइ सलुक् २ ७७, दीर्घ) पश्यति	
कासवो (, , , , = कस्सवो , , ,) काश्यय	
वीसमइ (र लोप २ ७६, दीर्घ)	विश्राम्यति
वीसामो (, , ,)	विश्राम
सफासो (, , , द्वित्व २ ८६, सफस्सो सलुक् २ ७७, दीर्घ) सफासो	
आसो (व लोप २ ७६ , , , अस्सो , , ,) अश्च	
वीससइ (, , , विस्ससइ , , ,) विश्वसिति	
विसासो (, , , , विस्सासो , , ,) विश्वास	
दूसासणो (श लोप २ ७७, दीर्घ)	दुश्शासन.
मणासिला (श लोप २ ७७, दीर्घ)	मन शिला
सीसो (य लोप २ ७८ द्वित्व २ ८६ सिस्सो सलुक् २ ७७, दीर्घ) शिष्य	
पूसो (, , , , पुस्सो , , ,) पुण्य.	
मनूसो (, , , , मनुस्सो , , ,) मनुष्य	
कासओ (र लोप २ ७६ , , , कस्सओ , , ,) कर्षक	
वासा (, , , , वस्सा , , ,) वर्षा	
वीसु (व लोप २ ७६ उत्त्व १ ५२ द्वि, विस्सु , , ,) विष्वक्	
सास (य लोप २ ७८ , , , सस्स , , ,) सस्यम्	
कासइ (य लोप २ ७८, द्वित्व २ ८६, कस्सइ, सलुक् २ ७७, दीर्घ) कस्यचित्	
ऊसो (र लोप २ ७६, , , , उस्सो , , ,) उल्ल.	
विकासरो (व लोप , , , , विकस्सरो , , ,) विकस्वर	
नीसो (, , , , निस्सो , , ,) निस्व.	
नीसहो (स लोप २ ७७ दीर्घ)	निस्सह.

(५२)—समृद्ध्यादिगण के शब्दों में आदि अकार का दीर्घ विकल्प से होता है। जैसे—सामिद्धी, समिद्धी (समृद्धि), पाअड, पअड (प्रकटम्), पासिद्धी, पसिद्धी (प्रसिद्धि), पाडि-वआ, पडिवआ (प्रतिपदा), पासुत्त, पसुत्त (प्रसुप्तम्), पाडि-सिद्धी, पडिसिद्धी (प्रतिसिद्धि) सारिच्छो, सरिच्छो (सदृच्), माणसी, मणसी (मनस्वी), माणसिणी, मणसिणी (मनस्विनी), आहिआई,* अहिआई† (अभिजाति), पारोहो, परोहो (प्ररोह), पावासू, पवासू (प्रवासी), पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी (प्रतिस्पद्धी), आसो अस्सो (अश्व)।

विशेष—प्राकृतप्रकाश ने इस गण को आकृति गण माना है। ऊपर उदाहरणों में इसीलिए मनस्वी, प्ररोह और अश्व* की उक्त गण के भीतर सिद्धि मानी गई है।

(५३) दक्षिण शब्द में आदि अकार का, ह के पर में रहने पर, दीर्घ होता है। जैसे—दाहिणो (दक्षिण*)

विशेष—ह नहीं रहने पर दक्षिण का दक्खिणो यही रूप रह जाता है।

(५४) स्वप्न आदि शब्दों में आदि 'अ' का इकार होता है। जैसे—सिविणो (स्वप्न), इसि (इषत्), वेडिसो (वेतस),

* समृद्ध्यादि गण के शब्दों का परिगणन यो है—

समृद्धि, प्रतिसिद्धिश्च, प्रसिद्धि प्रकट तथा,
प्रसुप्तञ्च प्रतिस्पद्धीं प्रतिपच्च मनस्विनी।

अभिजाति, सदृच्ञश्च समृद्ध्यादिरय गण ॥—कल्पलतिका।

* आहिजाई यह पाठान्तर है।

† अहिजाई यह पाठान्तर है।

विलिञ्च (व्यलीकम्), विञ्चण (व्यजनम्), मुङ्गो (मृदङ्ग*),
क्विविणो (कृपण*), उत्तिमो (उत्तम), मिरिञ्च (मरियम्),
दिङ्गण* (दत्तम्) ।

विशेष—जहाँ दत्त के त्त के स्थान में एत्व नहीं हुआ हो,
वहाँ उक्त नियम में बहुल (प्राय*) का अधिकार
होने से इत्व नहीं होता है । जैसे—दत्त, देवदत्तो ।

(५५) मयट् प्रत्यय में आदि अ के स्थान में 'अइ' आदेश
विकल्प से होता है । अइ होने पर जैसे—विसमइओ, अइ के
अभाव में जैसे—विसमओ (विषमय*)

(५६) अभिज्ञा आदि शब्दों में एत्व करने पर ज्ञ के ही

* प्राकृत प्रकाश में—'इदीषत्पक्वस्वप्नवेतसव्यजनमृदङ्गा-
ङ्गारेषु' यह सूत्र है । इस सूत्र में 'वेति निवृत्तम्' ऐसा कहा गया है ।
इसि (ईषत्), पक्क (पक्व), सिमिणो (स्वप्न), वेडिसो (वेतस),
विञ्चणो (व्यजनम्), मिङ्गो (मृदङ्ग), इङ्गालो (अङ्गार) ।
किंतु प्राकृतमञ्जरी के अनुसार यह इत्व विकल्प से होता है । ईषत्
पक्क तथा स्वप्ना वेतसो व्यजन पुन । मृदङ्गश्च तथाङ्गार एषु शब्देषु
सतसु । अन इद्रा भवेदीषदीसि वा पुनरीस वा । पक्क पिक्वश्च पक्वश्च
तथान्येष्वपि दृश्यताम् । इत्वमीषत्वदे कैश्चिदीकारस्यापि चेज्यते । 'इसि
सुम्विअमित्यादि रूप तेन हि सिद्धयति । शौर-सेनी में अङ्गार और
वेतस के आदि अकार का इकार नहीं होता । आर्ष में स्वप्न शब्द के
आदि अकार का उकार भी होता है । जैसे—सुमिणो । इसके लिए
देखिए—हेम० १ ४६ ।

† जिनके ज्ञ का एत्व कर देने पर उत्त्व देखा जाता है, वे ही
अभिज्ञादि हैं । देखिए हेम० १ ५६

अकार का उत्प होना है। जैसे—अहिण्ण (अभिज्ञ), सव्वण्ण* (सर्वज्ञ), आगमण्ण (आगमज्ञ)।

विशेष—णत्वाभाव में अहिज्जो (अभिज्ञ) और सव्वज्जो (सर्वज्ञ) रूप होते हैं। अभिज्ञादि से भिन्न स्थल में नियम नहीं लगता। पण्णो (प्राज्ञ)।

(५७) शय्यां आदि शब्दों में आदि अकार का एकार आदेश होता है। जैसे—सेज्जां (शय्या), सुदे (सुन्दरम्), उक्करो (उत्तर), तेरहो (त्रयोदश), अच्छेर (आश्चर्यम्), पेरन्त (पर्यन्तम्), वेल्ली (वल्ली)

विशेष—कोई-कोई प्राकृत वैयाकरण शय्यादि गण में कन्दुक का भी पाठ मानते हैं। उनके मत से गेडुअ (कन्दुकम्) रूप होता है।

(५८) अपि वातु के आदि अ का ओ आदेश विकल्प से होता है। ओ जैसे—ओप्पेइ, ओ का अभाव जैसे—अप्पेइ

* पैशाची में सव्वण्ण न होकर सव्वज्जो और शौरसेनी में सव्वण्णो होता है।

† शय्यादि गण में निम्नलिखित शब्द ही माने गये हैं—

शय्या त्रयोदशाश्चर्य पर्यन्तोत्तरवल्ली,

सौन्दर्य चाते शय्यादिगण शेषन्तु पूर्ववत् ॥

‡ प्रसिद्ध वैयाकरण हेमचन्द्र ने एच्छय्यादौ १ ५७ और वल्ल्युत्तरपर्यन्ताश्चर्ये वा १ ५८ इन दो सूत्रों को बनाकर प्रथम सूत्र से नित्य एत्व करते हुए सेज्जा, सुन्देर, गेन्दुअ, एत्थ (अत्र) इन उदाहरणों की सिद्धि मानी है। दूसरे से वैकल्पिक एत्व करते हुए वेल्ली, वल्ली, उक्करो, उक्करो, पेरन्तो, पजन्तो, अच्छेर, अच्छरिअ, अच्छथर, अच्छरिज, अच्छरीअ उदाहरण दिये हैं।

(अर्पयति), एव ओ आदेश जैसे—ओपिअ, ओ का अभाव जैसे—अपिअ (अर्पितम्)

(५९) स्वप् धातु मे आदि अ के स्थान मे ओत् और उत् आदेश पर्याय (बारी बारी) से होते है । ओत् जैसे—सोवइ, उत् जैसे—सुवइ (स्वपिति) ।

(६०) नञ् के बाद मे आनेवाले पुनर् शब्द के अ के स्थान मे आ और आइ आदेश विकल्प से होते है । जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
ण उणा (आ)	न पुन
ण उणाइ (आइ)	
ण उण (पक्ष मे)	

(६१) अव्ययो मे और उत्त्वात्,* चामर, कालक, स्थापित प्रतिस्थापित, सस्थापित, प्राकृत, तालवृन्त हालिक, नाराच, बलाका कुमार, खादित, ब्राह्मण एव पूर्वाह्ण शब्दो मे आदि

* प्राकृत प्रकाश और कल्पलतिका मे उक्त उदाहरणो की सिद्धि के लिए 'अदातो यथादिषु वा' सूत्र मिलता है । कल्पलतिका मे यथादि गण मे शब्दो का परिगणना यो की गई है—

यथातथातालवृन्त प्राकृतात्त्वात्चामरम् ।
चाटुप्रहावप्रस्तारप्रवाहाहालिकस्तथा ॥
मार्जारश्च कुमारश्च मार्जारियुक्लोमिनि ।
सस्थापित खादितश्च मरालश्चैवमादय ॥

प्राकृतमञ्जरीकार यथादि गण की गणना इस प्रकार करते है—

यथा चामरदावाग्निप्रहारोत्त्वात्हालिका
तालवृन्ततथाचाट यथादि स्यादय गण ।

आकार का अकार विकल्प से होता है। यथा—जह, जहा (यथा), तह, तहा (तथा), अहव, अहवा (अथवा), उक्खअ, उक्खाअ (उत्खातम्), चमर, चामर (चामरम्), कलओ, कालओ (कालक), ठविअ, ठाविअ (स्थापितम्), परिठविअ, परिष्ठापि (प्रतिष्ठापितम्), सठविअ, सठाविअ (सस्थापितम्) पउअ, पाउअ (प्राकृतम्), तलवेण्ट, तालवेण्ट (तालवृन्तम्), हलिओ, हालिओ (हालिक), णराओ, णाराओ (नाराच), वलाआ, वलाआ (वलाका) कुमरो, कुमारो (कुमार*), खइअ, खाइअ (खादितम्), बम्हणो, बाम्हणो (ब्राह्मण), पुव्वण्हो, पुव्वाण्हो (पूर्वाह्ण)

(६२) घब् को निमित्त मानकर जहाँ आ रूप वृद्धि हुई हो, उस आदि आकार का अत्व विकल्प से होता है। जैसे—

प्राकृत

संस्कृत

पवहो }
पवाहो }

प्रवाह

❧ प्राकृत प्रकाश और कल्पलतिका के अनुसार प्रस्तार प्रहार, दावाग्नि, चाडु, मार्जार, मराल, प्रवाह इन शब्दों के आदि आकार का भी अत्व विकल्प से होता है। कल्पलतिका के अनुसार स्थापित, पाशुर तथा माधुर्य के आदि आकार का नित्य ही अत्व होता है। शौरसेनी आदि प्राकृत के अङ्गों में कहीं अत्व का निषेध देखा जाता है। क्रमशः यहाँ उदाहरण दिये जा रहे हैं।—पत्थरो, पत्थारो (प्रस्तार), पहरो, पहारो (प्रहार), दवग्गी, दावग्गी (दवाग्नि), चडु, चाडु (चाटु), मज्जारो, माज्जारो (मार्जार), मरलो, मरालो (मराल), पवहो, पवाहो (प्रवाह)।—ठविअ (स्थापितम्), पसुर (पाशुरम्), मधुरीअ (माधुर्यम्), जधा (यथा), तधा (तथा)।

पञ्चरो }
पञ्चरो }

प्रकार

विशेष—कुछ घबन्त शब्दों में यह नियम लागू नहीं होता। जैसे—रात्रो (राग) इत्यादि।

(६३) मास जैसे शब्दों में अनुस्वार रहने पर (देखिए नियम १ ३६) आदि आकार का अत्व होता है जैसे—मस (मांसम्) पसू (पाशु), पसनो (पासन), कस (कासम्), कसिओ (कासिक), वसिओ (वासिक), ससिद्धिओ (सांसिद्धिक), सजत्तिओ (सायात्रिक)

(६४) सदा आदि शब्दों में आकार का इकार आदेश विकल्प से होता है। इकार जैसे—सइ, तइ, जइ, गिसिओ। इकार का अभाव जैसे—सआ, तआ, जआ, गिसाओ (सदा, तदा, यदा, निशाचर)

(६५) यदि आर्या शब्द श्चु (सास) के अर्थ में प्रयुक्त हो तो 'र्य' के पूर्ववर्ती आकार के स्थान में ऊ होता है। जैसे—ऊजा (सास अर्थ), अजा (श्रेष्ठ अर्थ), (आर्या)।

(६६) मात्र प्रत्यय के आकार के स्थान में एकार विकल्प से होता है। एकार आदेश जैसे—एतिअमेत्त। एकाराभाव जैसे—एतिअमेत्त (एतावन्मात्रम्)।

विशेष—कही कही मात्र शब्द में भी आकार का एकार होता देखा जाता है। जैसे—भोअणमेत्त (भोजन मात्रम्)

(६७) सयोग से अव्यवहित पूर्ववर्ती दीर्घ का कभी कभी ह्रस्व रूप हो जाता है। जैसे—अव (आम्रम्), तव (ताम्रम्),

विरहग्गी (विरहग्नि), अस्स (आस्यम्), मुनिदो (मुनीन्द्रो)
तित्थ (तीर्थम्), गुम्ह्लावा (गुरूल्लापा), चुण्णो (चूर्ण), नरिन्दो
(नरेन्द्र), मिलिच्छो (म्लेच्छ), अहरुड्ड (अधरोष्ठम्), नीलुपल
(नीलोत्पलम्)

विशेष—सयोग पर मे नहीं रहने से आयास ईसरो,
ऊसरो आदि शब्दों में उक्त नियम लागू नहीं
होता है ।

(६८) आदि इकार का सयोग के पर में रहने पर एकार
विकल्प से होता है । एकार होने पर जैसे—पेण्ड, णेदा, सेदूर,
धम्मेल्ल, वेण्हू, पेठ्ठ, चेण्ह, वेल्ल । एकाराभाव में जैसे—पिण्ड,
णिदा, सिदूर, वम्मिल्ल, विण्हू, पिठ्ठ, चिण्ह, विल्ल (पिण्डम्
निद्रा, सिन्दूरम्, धम्मिल्ल, विष्णु, पृष्ठम्, चिह्नम्, विल्लम्)

विशेष—इस नियम के अनुसार पिण्डादि में जो एत्त
होता है, शौरसेनी आदि में नहीं होता । उसमें
पिण्ड, णिदा और वम्मिल्ल ये ही रूप होते हैं ।

(६९) जब इति शब्द किसी वाक्य के आदि में प्रयुक्त
होता है, तब तकारवाले इकार का अकार हो जाता है जैसे—

प्राकृत

इअ ज पिअवसाणे

इअ उअह अण्ह वअण

संस्कृत

इति यत् प्रियावसाने

इति पश्यतान्यथा वचनम्

विशेष—इति शब्द के वाक्यादि में प्रयुक्त नहीं रहने पर
अत्व नहीं होता । जैसे—पिओःॐ त्ति (प्रिय इति),
पुरिसो त्ति (पुरुष इति)

(७०) जहाँ निर के रेफ का लोप होता है, वहाँ नि के इकार का ईकार हो जाता है। जैसे—णीसहो (निस्सह) णीसासो (निश्वास)।

विशेष—रेफ के लोप का अभाव रहने पर उक्त ईकार नहीं होता। जैसे—णिरओ (निरय), णिस्सहो (नि सह)।

(७१) द्वि शब्द और नि उपसर्ग के इकार का उ आदेश होता है। किन्तु कहीं कहीं यह नियम नहीं भी लागू होता है। द्वि शब्द के विषय में कहीं विकल्प से उत्त्व होता और कहीं ओत्व भी देखा जाता है। द्वि शब्द के विषय में नित्य उत्त्व जैसे—दुवाई, दुवे, दुवअण (द्वौ, द्विवचनम्), द्वि शब्द में विकल्प से उत्त्व जैसे—दुउणो, दिउणो, दुइओ, दिउओ (द्विगुण, द्वितीय) द्वि शब्द के विषय में नियम की अप्रवृत्ति—दिओ, द्विरओ (द्विज, द्विरद), द्वि शब्द के विषय में ओत्व—दोवअण (द्विवचनम्)। नि उपसर्ग के विषय में इकार का उत्त्व जैसे—गुमज्जइ, गुमण्णो (निमज्जति, निमग्न), नि उपसर्ग के विषय में नियम की अप्रवृत्ति जैसे—णिवडइ (निपतति)

(७२) कृच् धातु के प्रयोग में द्विधा शब्द के इकार का ओत्व और उत्त्व होता है। जैसे—

प्राकृत

संस्कृत

दोहा इअ (ओकार) }
दुहा इअ (उकार) }

द्विधा कृतम्

दोहा किज्जदि (ओकार) }
 दुहा किज्जदि (उकार) } द्विधा क्रियते

विशेष—(क) कृच् का प्रयोग नहीं रहने से दिहा-गय (द्विधागतम्) में उक्त नियम नहीं लगा।

(ख) कही कही केवल (कृच् रहित) द्विधा में भी उत्त्व देखा जाता है। दुहा वि सो सुर-वहू-सत्थो (द्विधापि स सुरवधूसार्थः)

(७३) पानीय* गण के शब्दों में दीर्घ ईकार के स्थान में ह्रस्व इकार होता है। जैसे—पाणिञ्च (पानीयम्), अलिञ्च (अलीकम्), जिञ्चइ (जीवति), जिञ्चउ (जीवतु), विलिञ्च (व्रीडितम्), करिसो (करीष), सिरिसो (शिरीष), दुइञ्च (द्वितीयम्), तइञ्च (तृतीयम्), गहिर (गभीरम्), उवणिञ्च (उपनीतम्), आणिञ्च (आनीतम्), पलिविञ्च (प्रदीपितम्), ओसिञ्चन्तो (अवसीदन्), पसिञ्च (प्रसीद), गहिञ्च (गृहीतम्), वम्मिञ्चो (वल्मीक), तयाणि (तदानीम्)†

* कल्पलतिका के अनुसार पानीय गण में निम्नलिखित शब्द सगृहीत हैं—

पानीयव्रीडितालीकद्वितीय च तृतीयकम्,
 यथागृहीतमानीत गभीरञ्च करीषवत्
 इदानीं च तदानीं च पानीयादिगणो यथा।

प्राकृतमञ्जरी में इनसे भां कम सगृहीत हुए हैं—

पानोयव्रीडितालीकद्वितृतीयकरीषका
 गभीरञ्च तदानीञ्च पानीयादिरय गण।

† प्राकृतप्रकाश पानीयादि गण में उपनीत, आनीत, जीवति,

विशेष—बहुल का अधिकार आने से अर्थात् इस नियम के प्रायिक होने से पाणीञ्च, अलीञ्च, जीञ्च, करीसो, उवणोञ्चो ये रूप भी सिद्ध होते हैं।

(७४) तीर्थ शब्द के ईकार का ऊकार तब होता है, जब कि उसके आगे का 'र्थ' ह हो गया हो। ह होने पर ऊकार जैसे—तूइ। ह नहीं होने पर उत्वाभाव और ह्रस्व जैसे—तित्थ (तीथम्)

(७५) मुकुलादि गण मे आदि उकार के स्थान मे अकार आदेश होता है।

[प्राकृतप्रकाश मे मुकुलादि गण न कहकर मुकुटादि* गण कहा गया है। जैसे—अन्मुकुटादिषु]

मुकुलादि अथवा मुकुटादि के उदाहरण—मउल (मुकुलम्), गरुई (गुर्गी), मउड (मुकुटम्), जहुड्डिलो, जहिड्डिलो (युधिष्ठिर), सोअमल्ल (सौकुमार्यम्), गलोई (गुड्डुची)

विशेष—कही कही प्रथम उकार का आकार भी होता देखा जाता है। जैसे—विहाञ्चो (विद्रुत)

जीवतु, प्रदीपित प्रसीद, शिरीष, गृहीत, वल्मीक और अवसीदन् शब्दों का उल्लेख नहीं करता।

* मुकुटादि गण मे प्राकृतमञ्जरी के अनुसार निम्नलिखित शब्द हैं।

मुकुट मुकुल गुर्वी मुकुमारो युधिष्ठिर

अगुरुपरि शब्दौ च मुकुटादिरय गण।

† तुलना कीजिए—भाजपुरी का 'मउर' शब्द और संस्कृत का 'मौलि' शब्द।

(७६) यदि गुरु शब्द के आगे स्वार्थ में क प्रत्यय किया गया हो, तो उस गुरु शब्द के आदि उकार का अ आदेश विकल्प से होता है। जैसे—गरुओ, गुरुओ (गुरुक गुरु) स्वाथिक क के अभाव में गुरुओ (गुरुक । थोड़ा गुरु) होता है।

(७७) उत्साह और उच्छन्न शब्दों को छोड़कर वैसे ही अन्य शब्दों में 'त्स' और 'च्छ' के पर में रहने पर पूर्व के आदि उकार का दीर्घ उकार होता है जैसे—ऊसुओ (उत्सुक), ऊसओ (उत्सव), ऊसित्तो (उत्सित्त), ऊच्छुओ (उच्छुक । उद्गता शुका यस्मात् स)

विशेष—उच्छाहो (उत्साह*), उच्छरणो (उच्छन्न) में उक्त नियमानुसार दीर्घ उकार नहीं होता।

(७८) दुर् उपसर्ग के रेफ का लोप हो जाने पर ह्रस्व उ का दीर्घ ऊ विकल्प से होता है। उकार जैसे—दूसहो, दूहओ, ऊ का अभाव जैसे—दुसहो, दुहओ (दु सह, दुर्भग)

विशेष—दुस्सहो विरहो में रेफ का लोप नहीं रहने से वैकल्पिक उकार नहीं हुआ।

(७९) सयुक्त अक्षरों के पर में रहने पर पूर्ववर्ती प्रथम उकार का ओकर होता है। जैसे—

तुण्ड* (तुण्डम्), मुण्ड (मुण्डम्), पोक्खर (पुष्करम्), कोट्टिम (कुट्टिमम्), पोत्थअ (पुस्तकम्), लोद्धओ (लुब्धक), मोत्ता (मुक्ता) वोक्कन्त (व्युत्क्रान्तम्), कोन्तलो (कुन्तल)

* प्राकृत प्रकाश में 'उत् ओत्तुण्डरूपेषु' १० २० यह सूत्र है। कल्पलतिका के अनुसार तुण्डादिगण के शब्द यों परिगणित हैं— तुण्डकुट्टिमकुद्दालमुत्तामुद्गरलुब्धका । पुस्तकञ्चैवमन्येऽपि कुम्भीकुन्तल पुष्करा ।

विशेष—शौरसेनी में यह ओत्व नित्य नहीं होता ।

(८०) शब्द के आदि ऋकार का अकार होता है । जैसे—
घञ (घृतम्), तण (तृणम्), कञ (कृतम्) वसहो (वृषभ)
मञो (मृग अथवा मृत) वड्ढी आदि ।

(८१) कृपादिगण के शब्दों में आदि ऋकार का इत्व होता है । जैसे—किवा (कृपा), दिढ (दृष्टम्), सिढी (सृष्टि), भिऊ (भृगु), सिगारो (शृङ्गार), घुसिण (घुसृणम्), इड्ढी (ऋद्धि), किसारू (कृशानु) किई (कृति), किवणो (कृपण), भिगारो (भृङ्गार*), किसो (कृश), विश्रुओ (वृश्चिक), पिहिओ (वृहित), तिप्प (तृप्तम्), किच्च (कृत्यम्), हिअ (हृतम्), विसी (वृषि), सइ (सकृत्), हिअअ (हृदयम्), दिढी (दृष्टि), गिढी (गृष्टि), भिंगो (भृङ्ग), सियालो (शृगाल) गिड्ढी (वृद्धि), घिणा (घृणा), किच्छ (कृच्छम्), नियो (नृप), विहा (स्पृहा), गिड्ढी (गृद्धि), किसरो (कृशर), धिई (वृति), किनाण (कृपाणम्), किसिओ (कृषित), वित्त (वृत्तम्), वाहित्त (व्याहृतम्), इसी (ऋषि), वितिणहो (वितृष्ण), मिढ (मृष्टम्), सिढ (सृष्टम्), पित्थी

† कृपादिगण के उदाहरणों की सिद्धि के लिए प्राकृतप्रकाश में इट्ठ्यादिपु सूत्र आया है । ऋष्यादिगण के शब्दों की गणना कल्प लतिका में इस प्रकार की गई है—ऋष्यादिषु कृति कृत्या धृष्टो वृषभ वृश्चिक । वृषश्च पृथुलो गृध्रा मृगाङ्गो मसृण कृषि । सृष्टिर्दो भृतो गृष्टिवितृष्णकृतकृत्य । सज्ञायजकृष्णोऽयमृष्यादिगण ईदृश । प्राकृतमञ्जरीकार के मत से ऋष्यादिगण यो है—ऋषिर्दृष्टि कृशो घृष्टि कृपाशृङ्गारवृश्चिका, मृदङ्गो हृदय भृङ्ग शृगाल इति सृष्टय । विमृष्टश्च मृगस्तद्वद् भृत्यश्च कृशरस्तथा । आकृति प्रकृतिश्चैव स्यादस्या दिरय गण ।

(पृथ्वी), समिद्धी (समृद्धि), किवो (कृप), वित्ती (वृत्ति), उक्किट्ट (उत्कृष्टम्)

विशेष—कल्पलतिका के अनुसार नीचे लिखे शब्दों में ऋकार का नित्य ही इत्व होता है शेष में विकल्प से—भृङ्गभृङ्गारभृङ्गारा कृपाण कृपण कृपा । शृगालहृदये वृष्टिर्दष्टिवृहितमेव च । समृद्धि कृशरावृत्तिवृत्ति वृद्धिस्तु कृत्रिमम् । कृकराकुस्तथेत्यादौ नित्यमित्व ऋतो मतम् । विकल्प जैसे—विसो, वसो (वृष) किरहो, कण्हो (विष्णुवाची कृष्ण)

(८२) पृष्ठ शब्द जहाँ किसी समास आदि में उत्तर पद नहीं हो, वहाँ ऋ का इ विकल्प से होता है जैसे—पिट्ठ, पट्ट (पृष्ठम्)

विशेष—महिविट्ठ (महीपृष्ठम्) में उत्तरपद रहने से पृष्ठ शब्द का वैकल्पिक इत्व नहीं हुआ ।

(८३) ऋतु प्रभृति* शब्दों में आदि ऋ का उकार होता है । जैसे—उदू (ऋतु), पउत्ती (प्रवृत्ति), परामुट्टो (परामृष्ट), पाउसो (प्रावृट्), परहुओ (परभृत्), णिवुअ, णिवुद (निर्वृतम्), उसहो (ऋषभ), भाउओ (भ्रातृक), पहुदि (प्रभृति), सवुद

* कल्पलतिका में ऋत्वादि गण यो माना गया है—

ऋतुर्मृदङ्गो निभृत वृत परभृतो मृत । प्रावृट् प्रवृत्तिर्वृत्तातोमातृका भ्रातृकस्तथा । मृणालपृथिवीवृन्दावनजामातृका आप । वृन्दारकश्च प्रभृति पृष्ठ वृद्धादय परे ॥ अत्र लक्ष्यानुसारतोऽन्येऽपि शब्दा श्रेया । (यहाँ लक्ष्यो के अनुसार ऐसे ही दूसरे शब्दों को भी जानना चाहिए ।)

(सवृत्तम्), बुड्ढो (वृद्ध) मुडाल (मृणालम्), पाहुद (प्राभृतम्), पुड (पृष्ठम्), पुहइ, पुहवी (पृथिवी), पाउअ (प्रावृतम्) मुई (भृति), विउअ (विवृतम्), वुदावण (वृन्दावनम्), जामाउओ, जामाडुओ (जामातृक), पिउओ (पितृक), णिहुअ, णिहुद (निभृतम्), णिवुई (निर्वृति), बुड्ढी (वृद्धि), माउआ (मातृका), णिउअ (निवृतम्), वुत्तान्तो (वृत्तान्त), उजू (ऋजु), पुहुवी (पृथिवी), वुद (वृन्दम्), माऊ, माडु (माता)

विशेष—सगाङ्क शब्द मे मुअको और मअको दोनों रूप होंगे ।

(८४) समास आदि मे जो पद प्रधान न होकर गौण होता है, उसके अन्तिम ऋ के स्थान मे उकार होता है । जैसे—

प्राकृत

संस्कृत

माउ मण्डल }
माडु-मण्डल }

मातृमण्डलम्

माउ-हर }
माडु-हर }

मातृगृहम्

पिउ-वण

पितृवनम्

(८५) गौण (अप्रधान) मातृ शब्द के ऋकार का इकार विकल्प से होता है । जैसे—माइ-मण्डल, माइ-हर । पद मे—माउ (दु)-मण्डल, माउ (दु)-हर

विशेष—कभी-कभी प्रधान (अगौण) मातृ के ऋकार का भी इत्व हो जाता है । जैसे—माइणो (मातु)

(८६) व्यञ्जन से सम्पर्करहित ऋ का रि आदेश कहीं विकल्प

से और कही नित्य होता है। जैसे—रिद्धी (ऋद्धि), रिण, ऋण (ऋणम्), रिज्जू, उज्जू (ऋजु), रिसहो, उसहो (ऋषभ), रिऊ, उदू (ऋतु), रिसो, इसी (ऋषि)

(८७) जिस दृश धातु के आगे कृत् के क्तिप्, टक् और सक् प्रत्यय आये हा, उसके ऋ का रि आदेश होता है। जैसे—एआरिसो, तारिसो, सरिसो, सरिच्छो, एरिसो, केरिसो अरणा-रिसो अम्हारिसो, तुम्हारिसो।

विशेष—शौरसेनी, पैशाची और अपभ्रश मे इन शब्दों के रूप कुछ और ही होते है।

शौर०	जादिस	यान्दशम्
	तादिस	तादृशम्
पै०	जातिस	यादृशम्
	तातिस	तादृशम्
अप०	जइश	यादृशम्
	तइश	तादृशम्

(८८) किसी भी शब्द मे आदि ऐकार का एकार होता है। जैसे—सेलो (शेल), सेत्त, सेच्च (शैत्यम्), एरावणो (ऐरावत), तेल्लुक (त्रेलोक्यम्), केलासो (कैलास), केढवो (कैतव), वेहव्य (वैधव्यम्)

(८९) दैत्यादि॥ गण मे ऐ के स्थान मे ए का अपवाद

* कल्पलतिका के अनुसार दैत्यादि गण के शब्द निम्नलिखित हैं—
दैत्यादौ वैश्यवेशासवैशम्पायनकैतवा ,
स्वैरवैदेहवैदेशक्षेत्रवैषयिका अपि ।
दैत्यादिष्वपि विज्ञेयास्तथा वैदेशिकादय ॥

अइ आदेश होता है। जैसे—*दइच्च (दैत्यम्), दइण (दैन्यम्), अइसरिअ (ऐश्वर्यम्), भइरवो (भैरव*), ढइवअ (दैवतम्), चइआलीओ (वैतालिक), वइएसो (वैदेश), बइएहो (वैदेह), वइअन्भो (वैदर्भ), वइस्साणरो (वेश्वानर), कैअव (कैतवम्), वइसाहो (वैशाख), वइसालो (वैशाल)

(६०) वैरादिङ्गण मे ऐत् के स्थान मे अइ आदेश विकल्प से होता है। जैसे—उइर, वे (वेरम्), कइलासो, केलासो (कैलास) कइरव, केरव (कैरवम्), वइसवणो, वेसवणो (वेश्रवण), वइसपाअणो, वेसपाअणो (वेशम्पायन), वइआलिओ, वेआलिओ (वैतालिक), वइसिओ, वेसिओ (वैशिक), चइत्तो, चेत्तो (चैत्र)

(६१) शब्द के आदि औकार का ओकार आदेश होता है। जैसे—कोमुई (कौमुदी), जोण (यौवनम्) कोथुहो (कौस्तुभ), सोहग्ग (सौभाग्यम्), दोहग्ग (दौर्भाग्यम्) गोदमो (गौतम), कोसबी (कौशाम्बी), कोचो (कौञ्च), कोसिओ (कौशिक)

(६२) सौन्दर्यादिङ्गण के शब्दो मे औत् के स्थान मे उत्

* प्राकृतमञ्जरी के अनुसार दैत्यादि गण मे निम्नलिखित शब्द परिगृहीत है—

दैत्य स्वैर चैत्य कैटभवेदेहकौ च वैशाख ,

वैशिकभैरववैशम्पायनवैदेशिकाश्च दैत्यादि ।

† वैरादिगण मे वैर, कैतव, चैत्र कैलास, दैव और भैरव गृहीत है। शौरसेनी मे दैव शब्द मे यह नियम लागू नहीं होता।

‡ कल्पलतिका के अनुसार सौन्दर्यादिगण के शब्द यो है—

सौन्दर्य शौण्डिको दौवारिक शौण्डोपरिष्टकम् ।

आदेश होता है। जैसे—सुन्देर, सुन्दरिअ (सौन्दर्यम्) सुडो (शौण्ड), दुवारिओ (दौवारिक), मुञ्जाय (अ)णो (मौञ्जायन), सुगन्धत्तण (सौगन्ध्यम्), पुलोमी (पौलोमी), सुवणिणओ (सौवर्णिक)

(६३) कौत्तेयक और पौरादि गण के शब्दों में औत् के स्थान में अउ आदेश होता है। जैसे—कउक्खेअओ, कुक्खेअओ (कौत्तेयक), पउरो (पौर), कउरओ(वो) (कौरव), पउरिस (पौरुषम्), सउह (सौधम्), गउडो (गौड), मउली (मौलि), मउण (मौनम्), सउरा (सौरा), कउला (कौला) ।

विशेष—कौशल शब्द के विषय में दो रूप होते हैं—

कोसलो, कउसलो (कौशलम्)

(६४) अव और अप उपसर्गों के आदि स्वर का आगेवाले सस्वर व्यञ्जन के साथ 'औत्' विकल्प से होता है। जैसे—ओआसो, अवआसो (अवकाश), ओसरइ, अवसरइ (अपसरति), ओहणं, अअहण (अपघनम्) ।

विशेष—उक्त नियम कहीं पर नहीं भी लागू होता है।

जैसे—अवगअ (अपगतम्), अवसदो (अपसद)

कौत्तेय पौरुष पौलोमिमौञ्जदौस्याधिकादय ॥

प्राकृतमञ्जरी के अनुसार—

सौन्दर्यशौण्डकौत्तेयास्तथा मौञ्जायनो ऽपि च ।

तथा दौवारिकश्चेति सौन्दर्यादिरय गण ॥

कल्पलतिका के अनुसार पौरादि निम्नलिखित हैं—

पौरपौरुषशैलानि गौडद्वौरितकौरवा ।

कोशलमौलिबौचित्य पौराकृतिगणा मता ॥

(६५) आगेवाले सस्वर व्यञ्जन के साथ उप के आदि स्वर के स्थान में उत् और ओत् आदेश विकल्प होते हैं । जैसे—
ऊहसिञ्च ओहसिञ्च (उपहसितम्), ऊआसो, ओआसो
(उपवास) ।

❀ प्रथम अध्याय समाप्त ❀



द्वितीय अध्याय

(१) स्वर से पर मे रहनेवाले, अनादिभूत तथा दूसरे किसी व्यञ्जन से सयोगरहित क, ग, च, ज, त, द, प, य और व अक्षरो का प्रायः लुक् होता है । कलोप जैसे—लोओ, सअठ, * मउलो, णउलो, णोआ (लोक, शकटम्, मुकुलम्, नकुल, नौका), गलोप जैसे—णओ, † णअर‡, मअङ्को §, साअरो, भाइरही (नगो, नगरम्, मृगाङ्ग, सागर, भागीरथी), चलोप जैसे—सई, कअग्गहो, () वअण, सूई, रोअदि, उइद, सूअअ (शची, कचग्रह, वचनम्, सूची, रोचते, उचितम्, सूचकम्), जलोप जैसे—रअओ, पआवई, □ गओ, रअद (रजक, प्रजापति, गज, रजतम्), तलोप जैसे—विआण, किअ, रसाअल,)(रअण (वितानम्, कृतम्, रसातलम्, रत्नम्), दलोप जैसे—

* सयठ पाठान्तर हेम० व्या० मे है ।

† हेम० व्या० मे 'नओ' पाठान्तर है ।

‡ हेम० व्या० मे 'नयर' पाठान्तर है ।

§ हेम० व्या० मे 'मयङ्को' पा० ।

() हेम० व्या० 'कयग्गहो' पा० ।

□ हेम० व्या० 'पयावई' पा० ।

)(हेम० व्या० 'रसा यल' पा० ।

जइ, नई, गञ्जाळ, मञ्जणो†, वञ्जण, मञ्जो (यदि, नदी, गदा, मदन, वदनम् मद), पलोप जैसे—रिऊ, सुडरिसो, कई, विडलं (रिपु, सुपुरुष, कपि, विपुलम्), यलोप जैसे—दञ्जालू‡, णञ्जण△, विञ्जोञ्जो, णाडणा (दयालु, नयनम्, वियोग वायुना), वलोप जैसे—जीञ्जो, दिञ्जहो, लाञ्जण),(विञ्जोहो, वडञ्जाणलो§ (जीव, दिवस, लावण्यम्, विबोध, वडवानल*)

विशेष—(क) प्रायः कहने से कही-कही लोप नहीं होता है । जैसे—सुकुसुम, प्रयाग-जल, पियगमण, सुगदो, अगुरु,() सचाव, विजण, अतुल, सुतर,□ विदुरो, आदरो, अपारो, अजसो देवो, दाणवो सबहुमान इत्यादि ।

(ख) स्वर से पर में नहीं रहने के कारण सकरो, सगमो, णक्कचरो,][धणजञ्जो,

* हेम० व्या० 'गया' पा० ।

† हेम० व्या० 'मयणो' पा० ।

‡ हेम० व्या० 'दयालू' पा० ।

△ 'नयण पा० हेम० व्या० ।

) ('लायण' पा० हेम० व्या० ।

§ 'वलयाणलो' पा० हेम० व्या० ।

○ 'अगरू' पा० हेम० व्या० ।

□ 'सुतार' पा० हेम० व्या० ।

][नक्कचरो पा० हेम० व्या० । नत्तचरो भी पाठ मिलता है ।

पुरदरो और सवरो इत्यादि में लोप नहीं होता ।

- (ग) अक्रो, वग्गो, अग्घो, मग्गो, आदि में सयुक्त होने के कारण लोप नहीं होता है ।
- (घ) कालो, गन्धो, चोरो, जारो, तरू, दवो पाव आदि में आद्यक्षर होने के कारण लोप नहीं होता है ।
- (ङ) समास में उत्तर पद के आदि का लोप होता और नहीं भी होता है । जैसे—सह अरो, सहचरो, जलअरो, जलचरो, सह आरो सहकारो आदि ।
- (च) कुछ लोग किन्हीं प्रयोगों में क का लोप नहीं कर के ग आदेश करते हैं जैसे—एगत्तण (एकत्वम्), एगो (एक), अमुगो (अमुक), आगारो (आकार) आगरिसो (आकर्ष)
- (छ) कही आदि के कादि वर्णों का भी लोप, कही च का ज और कही आषे में च का ट आदेशः भी होते देखे जाते हैं ।

* शौरसेनी में पताका, व्यापृत, और गर्भित को छोड़ कर अन्य त के स्थान में द आदेश होता है । पताका का पडाआ, व्यापृत का व्वावडो और गर्भित का गम्भिण में रूप होते हैं । भरत के तकार का धकार होकर भरधो रूप होता है । इसी प्रकार द का प्रायः लोप नहीं

आदि के कादि के लोप जैसे—स उण
(स पुन), सो अ (स च,) इन्ध (चिह्नम्),
च का ज जैसे—पिसाजी (पिशाची),
आर्ष मे च का ट जैसे—आउण्टण
(आकुञ्चनम्)

विशेष—जहाँ नियम २१ के अनुसार कादि वर्णों के लोप हो चुकने पर अ अथवा आ अवशिष्ट हों, वहाँ लघुप्रत्ययान्तर यकार का उच्चारण जानना चाहिए।

(२) अवर्ण से पर मे अनादि प का लुक् नही होता है ।
जैसे—सवहो (शपथ), सावो (शाप)
✓ (३) स्वर से पर मे होनेवाले असयुक्त तथा अनादि ख,
घ, थ, ध और भ अक्षरो के स्थान मे प्राय ह् आदेश होता है ।

होता । जैसे—वदण, सौदामिणी । प्राय कहने से हिभ्रअ मे लोप हो जाता है । मागधी मे छ के स्थान मे श्र आदेश होता है । ज घ के स्थान मे य होता है । य का लोप नहीं होता । पैशाची मे त और द के स्थान मे त होता है । हृदय का हितय रूप होता है । अपभ्रश मे स्वर से परे अनादि और असयुक्त क, ख, त, थ, प और फ के स्थान मे क्रमश ग, घ, द, ध, व और भ ये ही आदेश होते है । पैशाची मे वर्ग के तृतीय और चतुर्थ अक्षरों के स्थान मे क्रमश वर्ग के प्रथम और द्वितीय अक्षर होते है । जैसे नगर का नकर तथा भगवती का फरवती । प्रसङ्ग उपस्थित हो जाने के कारण यहाँ इतनी बातें लिखी गई ।

ख का ह जैसे—महो, मुह, मेहला, लिहइ, पमुहेण, सही
 आलिहिदा (मख, मुखम्, मेखला, लिखति, प्रमुखेण, सखी,
 आलिखिता), घ का ह जैसे—मेहो जहण, माहो, लाइअं,
 लहु (मेघ, जघनम्, माघ लाघनम्, लघु), थ का ह जैसे—
 नाहोळ, गाहा, मिहुण, सग्रहो कहेहि, ऋह, मणोरहो (नाथ,
 गाथा, मिथुनम्, शपथ, कथय, कथम्, मनोरथ), ध का ह
 जैसे—साहू, राहा, वाहो, वहिरो, वाहइ, इदहणू, अहिअ,
 माहवीलदा, महुअरो (साधु, राधा, बाधा, बधिर, बाधते,
 इन्द्रधनु, अविकम्, माधवीलता, मधुकर, भ का हां जैसे—
 सहा, सहावो, णह, सोहइ, सोहण, आहरण, दुल्लहो (सभा,
 सभाव, नभ, शोभते, शोभनम्, आभरणम्, दुर्लभ)

विशेष—(क) स्वर से पर मे नहीं रहने से—सखो
 (शङ्ख) सघो (सङ्घ) और कथा (कन्था) मे ह
 आदेश नहीं हुआ।

(ख) सयुक्त होने से—लुम्पइ (लुम्पति) और
 अक्खइ (अक्षति) मे ह आदेश नहीं हुआ।

(ग) आदि में होने के कारण गज्जतो (गर्जयन्)
 खे और गज्जइ घणो (गर्जयतिघण) मे आदेश
 नहीं हुआ।

* पृथिवी और प्रथम को छोड़कर शौरसेनी मे थ का प्राय
 घ होता है। जैसे—जधा (यथा), तथा (तथा) और अणघा
 (अन्यथा)। पृथिवी के लिए पडुवी और प्रथम के लिए पडुम होते हैं।

† शौरसेनी मे ध क्ष द के समान और भ क्ष व के समान उच्चा-
 रण भर होता है लेख मे तो घ और भ ही रहते हैं।

(घ) ग्रायः कथन के बल से पखलो (प्रखल),
पलबधणो (प्रलम्बघ्न), अधीरो (अधीर),
अधण्यो (अधन्य), जिणधम्मो (जिनधर्म)
इत्यादि में ह आदेश नहीं होता ।

(४) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि ट ठ और ड के स्थान में क्रमशः ड ढ और ल आदेश होते हैं ।
ट का ड जैसे—ण्डोक्क, भण्डो, विण्डवो, घण्डो, घण्डइ (नट, भट,
विटप, घट, घटते), ठ का ढ जैसे—मण्डो, सण्डो कमण्डो,
कुण्डारो (मठ, शठ, कमठ, कुठार), ड का ल जैसे—वलवा-
मुह, गरुलो, कीलइ, तलायो, वलही (वढमामुखम्, गरुड
क्रीडति, तडाग, वलही)

विशेष—(क) स्वर से पर में ऐसा कहने से घटा (घण्टा)
वैकुण्डो (वैकुण्ठ), मोंड (मुण्डम्) एवं कोंड
(कुण्डम्) में ट, ठ और ड के स्थान में क्रमशः
ड, ढ और ल नहीं हुए ।
(ख) संयुक्त रहने के कारण खट्टा, चिट्टइ
(तिष्ठति) खड्गो के ट, ठ और ड के स्थान में
ड, ढ और ल नहीं हुए ।
(ग) अनादि नहीं होने से टक, ठाई (स्थायी)
और डिंभो में ट, ठ ड के ड, ढ, ल नहीं हुए ।
(घ) कहीं पर ट का ड नहीं होता और अत्यन्त
पट धातु में ट का ल आदेश विकल्प से होता
है । अटइ (अटति) में आदेश का अभाव और
फालेइ, फाडेइ (पाटयति) में ट के स्थान में ल
और ड पर्याय से हुए ।

(ङ) ङ का ल आदेश प्रायिक है, अत आगेवाले शब्दों में विकल्प से ल होता है। वलिस, वडिस, दालिम, दाडिम, गुलो, गुडो, गाली, नाडी, गल, गड। प्राकृत-प्रकाशकार दाडिम, वडिस, निविड में ल आदेश नहीं मानते हैं। कल्प लतिका के मत से केवल पीडित और गुड में वैकल्पिक लत्व होता है। वस्तुतः निविड, पीडिअ और गीड में ल का अभाव ही उचित है।

(५) 'प्रति' उपसर्ग में तकार के स्थान में प्रायः ङकार आदेश होता है। जैसे — पडिवरण (प्रतिपन्नम्), पडिसरो (प्रतिसर), पडिमा (प्रतिमा)

विशेष—'प्रायः' कहने से आगे के उदाहरणों में ङकार विधान वाला नियम नहीं लागू हुआ। पडव (प्रतीपम्), सपई (सप्रति), पडिहाण (प्रतिष्ठानम्), पडिहा (प्रतिष्ठा), पडिण्णा (प्रतिज्ञा)

(६) ऋत्वादि गण* के शब्दों में तकार का दकार होता है। जैसे — उदू (ऋतु), रअद (रजतम्), आअदो (आगत), णिबुदी (निर्वृति), आउदी (आवृति), सवुदी (सवृति), सुइदी (सुकृति), आइदी (आकृति), हदो (हत), सजदो

* ऋत्वादिगण के शब्द इस प्रकार उल्लिखित हैं —

ऋतु किरातो रजतञ्च तात सुसङ्गत सयतसाम्प्रतञ्च
सुसंस्कृतिप्रीतिसमानशब्दास्तथाकृतिर्निर्वृतिरुल्यमेतत्।

उपसर्गसमायुक्ते कृतिवृत्ती वृतागतौ।

ऋत्वादिगणने नेया अन्ये शिष्टानुसारत ॥

(सयत), विउद (विवृतम्), सजादो (सयात), सपदि (सप्रति), पडिवही (प्रतिपत्ति) ।

विशेष—उक्त नियम प्राकृतप्रकाश (२ ७) के ऋत्वादिषु तो द सूत्र के अनुसार बनाया गया है। किन्तु साधारण प्राकृत के लिए इस नियम को नहीं मानते। वे कहते हैं कि—‘स तु शौरसेनी-मागधी-विषय एव दृश्यत इति नोच्यते।’ अर्थात् यत यह सूत्र शौरसेनी और मागधी भाषाओं में ही लागू होता है अतः हम इसका परित्याग करते हैं।

अतः साधारण प्राकृत में उक्त गण में तकार का दकार आदेश नहीं होता। रूप इस प्रकार के होंगे—उऊ (ऋतु), रअअ (रजतम्), एअ (एतम्), गओ (गत), सपअ (साम्प्रतम्), जओ (यत), तओ (तन), कअ (कृतम्), हआसो (हताश), ताओ (तात)

(७) दश और दह, प्रदोषि और दीप धातुओं के दकार के स्थान में क्रमशः ड, ल और वैकल्पिक ध आदेश होते हैं।
जैसे —

प्राकृत	
डसइ	(द = ड)
डहइ	(द = ड)
पलीबेइ	(द = ल)
पलित्त	(द = ल)
धिप्पइ, दिप्पइ	(वैकल्पिक ध)

संस्कृत

दशति

दहति

प्रदोषयति

प्रदीपयति

दीपयति

(८) स्वर से पर मे रहनेवाले असयुक्त और अनादि* न का ण आदेश होता है । किन्तु आदि मे वर्तमान असयुक्त न का विकल्प से ण होता है । स्वर से पर अनादि और असयुक्त न का ण जैसे—सअण (शयनम्), कणअ (कनकम्), वअण (वचनम्), माणुसो (मानुष) । आदि मे असयुक्त न का वैकल्पिक ण जैसे—णरो, नरो (नर), णई, नई (नदी)

विशेष—आदि मे वर्तमान सयुक्त न का वैकल्पिक णत्व नहीं होता । जैसे—न्याय

✓ (९) स्वर से पर मे रहनेवाले असयुक्त और अनादि† प के स्थान मे प्राय व आदेश हो जाता है । जैसे—सवहो (शपथ) सावो (शाप), उवसग्गो (उपसर्ग), पईवो (प्रदीप), कासवो (काश्यप), पाव (पापम्), उवमा (उपमा), महिवालो (महीपाल), गोवेइ (गोपयति), कलावो (कलाप), तवइ (तपति), कवोलो (कपोल)

विशेष—(क) स्वर से पर मे रहनेवाले कहने से कम्पइ (कम्पते) मे व आदेश नहीं हुआ ।

(ख) असंयुक्त कहने से अप्पमत्तो (अप्रमत्त) मे व आदेश नहीं हुआ ।

* प्राकृत प्रकाश २ ४ सर्वत्र (आदि और अनादि मे) न का ण मानता है । ऊपर का नियम ८ हेमचन्द्र के अनुसार है । पैशाची मे णकार का नकार हो जाता है ।

† शौरसेनी मे अपूर्व शब्द के स्थान मे 'अवरूव' और अउव्व ये दो रूप होते हैं ।

विशेष—उक्त नियम में विस के स्त्रीलिङ्ग रूप विसिनी का उल्लेख हुआ है। अतः विस (विम्मम्) में यह नियम लागू नहीं हुआ।

(१४) पद के आदि य का जञ् आदेश होता है। जैसे —
जसो (यश), जमो (यम), जाइ (याति)

विशेष—(क) पद के आदि में न होने के कारण अव-
अवो (अवयव) में नियम नहीं लगा।

(ख) उपसर्गयुक्त हो जाने पर अनादि य का भी ज आदेश होता है। जैसे —सजमो (सयम),
सजोओ (सयोग), अवजसो (अपयश)।

(ग) कल्पलतिका के मत से सामान्यतः उत्तर
पदस्थ य का भी ज आदेश होता है। जैसे —
गाढ-जोव्वणा (गाढयौवना), अजोग्गो (अयोग्य)

(घ) कभी-कभी आदि य का लोप भी हो जाता
है। जैसे —अहाजाअ (यथाजातम्)

(१५) तीय एव कृत् प्रत्ययो के यकार के स्थान में द्विरुक्त
ज (ज्ञ) आदेश विकल्प से होता है। जैसे —

प्राकृत	संस्कृत
दीज्जी, दीओ	द्वितीय
करणिज्ज, करणीअ	करणीयम्
रमणिज्ज, रमणीअ	रमणीयम्
पेज्ज, पेअ	पेयम्

* मागधी में य का ज आदेश नहीं होता है।

(१६) युष्मद् शब्द के य के स्थान में त आदेश होता है ।
जैसे —तुम्हारिसो (युष्माद्दश)

(१७) छाया शब्द में यकार के स्थान में हकार आदेश होता है । जैसे —छाहा (छाया)

(१८) हरिद्रादिऋ गण के शब्दों में असयुक्त र के स्थान में ल आदेश होता है । जैसे —हलद्वा (हरिद्रा), दलिद्दो (दरिद्र)

✓ (१९) सस्कृत वर्णमाला के श और ष के स्थान में प्राकृत में स आदेश होता है । जैसे —कुसो (कुश), सेसो (शेष)

विशेष—वस्तुस्थिति तो यह है कि प्राकृत वर्णमाला में श और ष वर्णों के लिए कोई स्थान ही नहीं है ।

✓ (२०) अनुस्वार से पर में रहनेवाले ह के स्थान में घ आदेश होता है । जैसे —सिघो, सीहो (सिंह), सघारो, सहारो (सहार)

विशेष—कहीं कहीं अनुस्वार से पर में नहीं रहने पर भी ह का घ होता देखा जाता है । जैसे —दाघो (दाह)

द्वितीय अध्याय समाप्त

* कल्पलतिका के मत से हरिद्रादि गण यों है —

हरिद्रामुखराङ्गारमुकुमारयुधिष्ठिरा ।

करुणाचरणश्चैव परिखापरिधावपि ॥

किरातश्चाङ्गुरी चैव दरिद्रश्चैवमादय ।

आदि शब्द से पारिभद्र, जठर, निष्ठुर और अपद्मार शब्दों का इस गण में संग्रह किया जाता है । चरण शब्द शरीराङ्गवाची ग्रहीत है । इसलिए 'पङ्क्त चरण' में नियम नहीं लगता । मागधी और पेशाची में र के स्थान में ल होता है ।

प्राकृत व्याकरण

तृतीय अध्याय

(१) क, ग, ट, ड, त, द, प, श, प और स व्यञ्जन वर्ण जब किसी सयोग के प्रथम अक्षर हो तो उनका लुक् हो जाता है। और अनादि मे वतमान शेष वर्णो का द्वित्व होता है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
मुक्त	[कलुक् , तद्वित्व] मुक्तम्
सिक्थ	[कलुक् , थद्वित्व] सिक्थम्
भक्त	[कलुक् , तद्वित्व] भक्तम्
मुत्त	[कलुक् , तद्वित्व] मुत्तम्
दुद्ध	[गलुक् , धद्वित्व] दुग्धम्
मुद्ध	[गलुक् , धद्वित्व] मुग्धम्
सिणिद्धो	[गलुक् , धद्वित्व] स्निग्धम्
सप्पओ	[टलुक् , पद्वित्व] पट्पद
खग्गो	[डलुक् , गद्वित्व] खड्ग
सज्जो	[डलुक् , जद्वित्व] षड्ज
उप्पल	[तलुक् , पद्वित्व] उत्पलम्
उप्पाओ	[तलुक् , पद्वित्व] उत्पात
मुग्गो	[दलुक् , गद्वित्व] मुद्ग
मुग्गरो	[दलुक् , गद्वित्व] मुद्गर
मग्गू	[दलुक् , गद्वित्व] मद्गु

सुत्त	[पलुक् , तद्वित्व]	सुप्तम्
पज्जत्त	[पलुक् , तद्वित्व]	पर्याप्तम्
गुत्तो	[पलुक् , तद्वित्व]	गुप्त
निञ्चलो	[शलुक् , चद्वित्व]	निश्चल*
चुअइ	[शलुक् , द्वित्वाभावः†]	श्च्योतति
गोद्धी	[षलुक् , ठद्वित्व]	गोष्ठी
निट्ठुरो	[षलुक् , ठद्वित्व]	निष्ठुर
खलिअ	[सलुक् , ख का द्वित्वाभाव‡]	स्खलितम्
रोहो	[सलुक् , ण का द्वित्वाभाव‡]	स्नेह

(२) म, न और य ये व्यञ्जन यदि सयुक्त के अन्तिम अक्षर हो तो उनका लुक् होता है और अनादि मे वर्तमान शेष वर्णों का द्वित्व हो जाता है। जैसे—

प्राकृत

संस्कृत

जुग्ग	[मलुक् , गद्वित्व]	युग्मम्
रस्सी	[मलुक् , सद्वित्व]	रश्मि
सरो	[मलुक् , द्वित्वाभाव‡]	स्मर
नग्गो	[नलुक् , गद्वित्व]	नग्न
भग्गो	[नलुक् , गद्वित्व]	भग्न
लग्ग	[नलुक् , गद्वित्व]	लग्नम्
सोम्मो	[यलुक् , मद्वित्व]	सौम्य

(३) ल, व, र ये व्यञ्जन सयुक्त के आद्यक्षर हों अथवा अन्त्याक्षर चन्द्र शब्द को छोड़कर सर्वत्र (सयुक्त के आदि

* † ‡ आदि मे होने से चुअइ, खलिअ और रोहो मे द्वित्व नहीं हुए।

† आदि मे होने से सरो के स का द्वित्व नहीं हुआ।

और अन्त मे) उक्त व्यञ्जनो का लुक् होता है । और अनादि में स्थित शेष वर्णों का द्वित्व होता है । जैसे—

	प्राकृत	संस्कृत
उक्ता	[सयुक्तादि ललुक् ,	कद्वित्व] उत्का
वक्कल	[सयुक्तादि ललुक् ,	कद्वित्व] वल्कलम्
सण्ह	[सयुक्तान्त्य ललुक् ,	द्वित्वाभाव] श्लक्ष्णम्
विक्कवो	[सयुक्तान्त्य ललुक् ,	कद्वित्व] विक्कव
सहो	[सयुक्तादि वलुक् ,	दद्वित्व] शब्द
अहो	[सयुक्तादि वलुक् ,	दद्वित्व] अब्द
पिक्क	[सयुक्तान्त्य वलुक् ,	कद्वित्व] पक्कम्
धत्थ	[सयुक्तान्त्य वलुक् ,	द्वित्वाभाव*] ध्वस्तम्
अक्को	[सयुक्तादि रलुक् ,	कद्वित्व] अर्क
वग्गो	[सयुक्तादि रलुक् ,	गद्वित्व] वर्ग
चक्क	[सयुक्तान्त्य रलुक् ,	कद्वित्व] चक्र
गहो	[सयुक्तान्त्य रलुक् ,	द्वित्वाभाव*] ग्रह
रत्ती	[सयुक्तान्त्य रलुक् ,	ताद्वित्व] रात्रि

विशेष—(क) चन्द्र शब्द का चन्द्रो यही रूप होता है । किन्तु हृषीकेश भट्टाचार्य अपने व्याकरण के पृष्ठ ५६ की पादटिप्पणी में लिखते हैं कि We find the form चदो in many Manuscripts

(ख) द्व इत्यादि में जहाँ दोनो व्यञ्जनों का लुक् प्राप्त हो, वहाँ प्राचीन प्राकृत आचार्यों के रूप दर्शन से कहीं सयुक्त के आदि वर्ण कहीं अन्त्य वर्ण और कहीं बारी-बारी से दोनों वर्णों के लुक्

होते हैं। सयुक्तादिवर्ण का लुक् जैसे —उविग्गो (उद्विग्ग) विउणो (द्विगुण), कम्मस (कल्मषम्), सव्व (सर्वम्), सयुक्तान्त्य वर्ण का लुक् जैसे —कव्व (काव्यम्), कुल्ला (कुल्या) मल्ल (माल्यम्), दिअो (द्विप), दुआई (द्विजाति)। बारी बारी से आद्यन्त वर्ण लुक् जैसे —वार, दार (द्वारम्)

(४) द्र के रेफ का लुक् विकल्प से होता है। जैसे —दोहो, द्रोहो (द्रोह), रुहो, रुद्रो (रुद्र), भद्र भद्र (भद्रम्), समुदो, समुद्रो (समुद्र), द्रहो, दहो* (हृद)

(५) 'ज्ञा' धातु सम्बन्धी व् का लुक् विकल्प से होता है एव अनादि ज का द्वित्व होता है। जैसे —सव्वज्जो, सव्वण्ण (सर्वज्ञ), अप्पज्जो, अप्पण्ण (अल्पज्ञ), अहिज्जो, अहिण्ण (अभिज्ञ), जाणां, गाण (ज्ञानम्), दइवज्जो, दइवण्ण (दैवज्ञ), इज्झिअज्जो, इज्झिअण्ण (इज्झितज्ञ), मणोज्ज, मणोण्ण (मनोज्ञम्), पज्जा, पण्णा (प्रज्ञा), अज्जा, आणा‡ (आज्ञा), सजा§, सण्णा (सज्ञा)

* हृद शब्द की स्थितिपरिवृत्ति (इसके लिए देखिए हेम० २ १२०) के बाद द्रह रूप होता है। यहाँ इसी द्रह में उक्त नियम (३ ४) लग जाने से दहो और द्रहो रूप हुए। कुछ लोग र का लोप करना नहीं चाहते और कुछ लोग द्रह को संस्कृत मानते हैं।

† आदि में होने से द्वित्व नहीं हुआ।

‡ किसी किसी पुस्तक में 'अण्णा' पाठ मिलता है।

§ स्वर से पर में नहीं होने से द्वित्व नहीं हुआ।

विशेष—कहीं-कहीं यह नियम नहीं लागू होता है। जैसे—
विण्णाण (विज्ञानम्)*

(६) अनादि एकाकी व्यञ्जन, जो कि पूर्वोक्त नियमों से सयुक्त व्यञ्जन के लुक् होने पर अवशिष्ट रहता है द्वित्वा को प्राप्त करता है। जैसे—

प्राकृत सस्कृत

दिट्ठी [षलुक्, ठद्वित्व] दृष्टि

हत्थो [स लुक्, थ द्वित्व] हस्त

(७) वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ वर्गों के द्वित्व का प्रसङ्ग हो तो द्वितीय वर्ग के ऊपर उसी वर्ग के प्रथम और चतुर्थ के ऊपर उसी वर्ग के तृतीय अक्षर होते हैं। जैसे—वक्खाण (व्याख्यानम्), अग्घो (अर्घ)

(८) दीर्घ स्वर एवं अनुस्वार से पर मे रहनेवाले सयुक्तशेष व्यञ्जन (ऊपर से नियमों से सयुक्ताक्षरो मे व्यञ्जन के लुक् हो जाने पर अवशिष्ट व्यञ्जन) का द्वित्व नहीं होता है†। जैसे—

* शौरसेनी मे ज के स्थान मे ञ होता है। मागधी और पैशाची मे ज के स्थान मे ञ्ज होता है। पैशाची मे राजन् शब्द सम्बन्धी ज चिञ् निकल्प से होता है। शौरसेनी, मागधी और पैशाची मे न्य और ण्य के स्थान मे भी ञ्ज होता है।

† हेमचन्द्र ने 'अनादौ शेषादेशयोद्वित्वम्' ५ ८६ सूत्र बनाकर आदेश का भी द्वित्व माना है। जैसे—उक्को, जक्को, रग्गो, किच्ची, रुप्पी। कहीं पर यह नियम नहीं लगता है। जैसे—कसिणो। अनादि कहने से खलिअ, थेरो, खम्भो मे नियम नहीं लगा।

‡ यहाँ दीर्घ और अनुस्वार नियमवश सम्पन्न (लाक्षणिक) और स्वाभाविक (अलाक्षणिक) दोनों गृहीत हैं। लाक्षणिक दीर्घ—छूटो,

ईसरो (ईश्वर), लास (लास्यम्), सकतो (सक्रान्त), सक्ता (सध्या)

(६) रेफा और हकार का द्वित्व नहीं होता है । जैसे — सुदेर (सौन्दर्यम्), बम्हचेर (ब्रह्मचर्यम्), धीर (धैर्यम्), विहलो (विह्वल), कहारणो (कार्षापण)

(१०) वर्णों के द्वित्व करानेवाले पूर्वोक्त नियम समस्त (समासवाले) पदों में विकल्प से प्रवृत्त होते हैं । तात्पर्य यह है कि समास में शेष और आदेश व्यञ्जन का द्वित्व विकल्प से होता है । जैसे — नइ ग्गामो, नइ-ग्गामो (नदी ग्राम), कुसुम-पयरो, कुसुम-पयरो (कुसुम प्रकर), देव थुई, देव-थुई (देव-स्तुति) इत्यादि ।

विशेष—कभी-कभी पूर्वोक्त द्वित्वविधायक नियमों की विषयता नहीं होने पर भी समास में वैकल्पिक द्वित्व होता देखा जाता है । जैसे — पम्मुक्क, पमुक्क (प्रमुक्तम्), तेल्लोक्क, तेलोक्क (त्रैलोक्यम्) इत्यादि ।

(११) तैलादिः गण के शब्दों में प्राचीन प्राकृत आचार्यों

नीसासो, फासो । अलाक्ष्णिक दीर्घ — पास, सीस । लाक्ष्णिक अनुस्वार — तस अलाक्ष्णिक अनुस्वार — सक्ता, विभो । यह नियम आदेश में भी लगता है ।

† रेफ शेष नहीं मिलता है । आदेश ही मिलता है । देखो नियम ३ ३

* प्राकृत प्रकाश में तैलादि गण के बदले नीडादि गण से काम लिया गया है । कल्पलतिका में नीडादि गण यों हैं —

नीड व्याहृतमण्डूकस्तासि प्रेमयौवने ।

ऋजु स्थूल तथा तैल त्रैलोक्य च गणो यथा ॥

✓ के निर्णयानुसार कही अन्त्य और कही अनन्त्य व्यञ्जनो का द्वित्व होता है। जैसे —तेल्ल (तैलम्), मडुक्को (मण्डूक), उज्जू (ऋजु), सोत्त (स्रोत), पेम्म (प्रेम) विड्डा (व्रीडा), जोव्वणा (यौवनम्)

✱ (१२) सेवादिऋ गण के शब्दों में प्राचीन प्राकृत आचार्यों के निर्णयानुसार कही अन्त्य और कही अनन्त्य (किन्तु अनादि) व्यञ्जनो का विकल्प से द्वित्व होता है। जैसे —सेव्वा, सेवा (सेवा), विहित्तो, विहित्तो (विहित), कोउहल्ल, कोउहल (कौतूहलम्), वाउल्लो, वाउलो (व्याकुल), नेड्डु, नीड, नेड (नीडम्), नक्खा, नहा (नखा), निहित्तो, निहित्तो (निहित), वाहित्तो, वाहित्तो (व्याहृत), माउक्क माउअ (मृदुकम्), एक्को, एअो (एफ), थुल्लो, थोरो (स्थूल) हुत्त, हूअ (हुतम्), दइव्व, दइव (दैवम्), तुण्हक्को, तुण्हक्को (तूष्णीक), मुक्को, मूअो (मूक), रक्खण्ण, खण्ण (स्थाणु), थिण्ण, थीण (स्त्यानम्), अम्हक्केर, अम्हक्केर (अस्मदीयम्) इत्यादि।

(१३) क्ष के स्थान में ख आदेश होता है। किन्तु कुछ स्थलो में छ और झ आदेश भी होते हैं। ख आदेश जैसे —

* कल्पलतिका में सेवादि गण यो है —

सेवा कौतूहल दैव विहित मखजानुनी ।

पिवादय सवा (१) शब्दा एतदाद्या यथार्थका ॥

त्रैलोक्य कणिकारश्च वेश्या भूर्जश्च दुःखितम् ।

रात्रिविश्वासनिश्वासा मनोऽलेश्वर रश्मय ॥

दीर्घैकशिवतूष्णीकमित्रपुष्पासि दुर्लभा ।

दुष्करो निष्कृप कर्मकरेष्वासपरस्परम् ॥

नायकाद्यास्तथा शब्दा सेवादिगणसम्भता ।

खओ (क्षय), लखण (लक्षणम्), छ और ख आदेश जैसे — छीण, खीण (क्षीणम्), भ और ख आदेश जैसे — भिज्जइ, खिद्यति (चिद्यति)

(१४) अद्यादि* गण के शब्दों में क्ष के स्थान में ख न होकर छ आदेश होता है । जैसे — अच्छी (अक्षि), उच्छू (इक्षु)

विशेष—स्थगित शब्द के स्थ के स्थान में भी उक्त नियम से छ आदेश हो जाता है । जैसे — छइअ (स्थगितम्)

(१५) उत्सव अर्थ के वाचक क्षण शब्द में क्ष के स्थान में छ आदेश होता है । उत्सव अर्थ में जैसे — छणो, समय अर्थ में जैसे — खणो (क्षण)

(१६) सयुक्त कम और डम् के स्थान में प आदेश होता है । कम में जैसे — रूप, रूपिणी (रुक्मम्, रुक्मिणी) । डम् में जैसे — कुप्पल (कुड्मलम्)

विशेष—कही-कही कम के लिए चम आदेश भी देखा जाता है । जैसे — रुचमी (रुक्मी)

✓ (१७) ष्क और स्क के स्थान में ख आदेश होता है, यदि उन सयुक्ताक्षरो से घटित शब्द द्वारा किसी नाम (सञ्ज्ञा) की प्रतीति होती हो । ष्क का ख जैसे — पोक्खर (पुष्करम्), पोक्ख-

* कल्पलतिका के अनुसार अद्यादि गण यों हैं —

अत्राक्षिचक्षुरक्षुणक्षार उत्क्षिप्तमक्षिकै ।

दक्षो वक्ष सट्क्षोऽक्ष क्षेत्रक्षीरेक्षुकुक्षय ॥

क्षुधा चेत्यादय शब्दा अद्यादिगणसम्भता ।

रिणी (पुष्करिणी), निक्ख (निष्कम्) स्क का ख जैसे —
खधो (स्कन्ध) खधावारो (स्कन्धावार)

विशेष—संज्ञा नहीं होने से दुक्कर (दुष्करम्) निक्काम्भ
(निष्काम्यम्) और सक्कअ (सस्कृतम्) में उक्त
नियम लागू नहीं हुआ ।

(१८) उष्ट्र, इष्ट और सदष्ट शब्द के ष्ट को छोड़कर अन्य
ष्ट के स्थान में ठ आदेश होता है । जैसे —लट्टी (यष्टि) मुट्टी
(मुष्टि), दिट्टी (दष्टि), सिट्टी (सृष्टि), पुट्टो (पुष्ट),
कट्ट (कष्टम्)

विशेष—उष्ट्र आदि में ठ आदेश नहीं होने से उट्टो, इट्टा-
चुण्ण वज और सदट्टो रूप होते हैं ।

(१९) चैत्य शब्द के त्य को छोड़कर अन्य त्य के स्थान में
च आदेश होता है । जैसे —सच्च (सत्यम्), पच्चओ (प्रत्यय),
निच्च (नित्यम्), पच्चच्छ (प्रत्यक्षम्)

विशेष—चैत्य शब्द का चइत्त रूप होता है ।

(२०) कुछ स्थलों में त्व, ध्व, द्व और ध्व के स्थान में
क्रमशः च्च, च्छ, ज्ज और ज्झ आदेश होते हैं । त्व का जैसे—
भोच्चा, एच्चा, सोच्चा (भुक्त्वा, ज्ञात्वा श्रुत्वा), ध्व का जैसे—
पिच्छी (पृथ्वी), द्व का जैसे—बिज्ज (विद्वान्), ध्व का
जैसे—बुज्जा (बुद्ध्वा)

(२१) धूर्तादि गण के शब्दों को छोड़कर अन्य र्त का ट
आदेश विकल्प से होता है । जैसे —केवट्टो (कैवर्त्त), वट्टी
(वर्त्ति), णट्टओ (नर्त्तक), णट्टई (नर्त्तकी) सबट्टिअ (सबर्त्तिकम्)

विशेष—धूर्तादि गण मे उक्त नियम लागू नहीं होता है । वुत्तो, किन्ती, वत्ता, आयत्तण, निवत्तण, पयत्तण, सयत्तण, आयत्तओ, निपत्तओ, पयत्तओ सयत्तओ, वत्तिआ, पत्तिओ, कत्तिओ, उक्कत्तिओ, कत्तरी, मुत्ती मुत्तो, मुहुत्तो ।

(२२) ह्रस्व से पर मे वर्तमान व्य, श्र, त्स और प्स के स्थान मे छ आदेश होता है । किन्तु निश्चल शब्द के श्र का छ आदेश नहीं होता । व्य का छ जैसे :—पच्छ (पथ्यम्), पच्छा (पथ्या), मिच्छा (मिथ्या), रच्छा (रथ्या) श्र का छ जैसे :—पच्छिम (पश्चिमम्), अच्छेर (आश्चर्यम्), पच्छा (पश्चात्) त्स का छ जैसे :—उच्छाहो (उत्साह), मच्छरो (मत्सर), पच्छो (पत्स) प्स का छ जैसे—लिच्छइ (लिप्सति), जुगुच्छइ (जुगुप्सते), अच्छरा (अप्सरा)

विशेष—(क) ह्रस्व से पर मे नहीं रहने से ऊसारिओ (उत्सारित) मे उक्त नियम नहीं लगा ।

(र) निश्चल शब्द का णिञ्जलो रूप होता है ।

(ग) तथ्य का आर्ष प्राकृत रूप तत्थ और तच्च होता है ।

(२३) सयुक्त छ, ग्य और ग्य के स्थान मे ज आदेश होता है । छ का ज जैसे :—मज्ज, अवज्ज, वेज्ज, विज्जा (मद्यम्, अवद्यम्, वेद्यम्, विद्या) ग्य का ज

१ धूर्तादि गण मे धूर्त, कीर्ति, वार्ता, आवर्तन, निवर्तन, प्रवर्तन, सवर्तन, आवर्तक, निवर्तक, प्रवर्तक, सवर्तक, वर्तिका, वार्तिक, कार्तिक, उत्कर्तित, कर्तरी, मूर्ति, मूर्त और मुद्वर्त शब्द परिगणित हैं ।

जैसे :—जज्जो, सेज्जा (जय्य , शय्या) र्य्य का ज जैसे :—
भज्जा, कज्ज, वज्ज, पज्जाओ, पज्जन्त (भार्य्या, कार्य्यम् , पर्य्यम् ,
पर्य्याय , पर्य्यन्तम्)

विशेष—(क) शौरसेनी मे र्य्य के स्थान मे र्य्य भी होता हे ।

(ख) पैशाची मे र्य्य के स्थान मे कही रिय आदेश होता हे ।

(२४) ध्य के स्थान मे भ एज्झ और झ के स्थान मे ण आदेश होते हे । ध्य का झ जैसे :—भाण, उव-
ज्माओ, सज्माओ, मज्झ, विज्झो, अज्माओ (व्यानम् , उपा-
ध्याय , साध्याय या स्वाध्याय , मध्यम् , विन्ध्य , अध्याय)
झ का ण जैसे :—निण्ण, पज्जुण्णो, (निन्नम् , प्रद्युन्न)
झ का ण जैसे :—णाण, सणा, पण्णा, विण्णाण (ज्ञानम् ,
सज्जा, प्रज्ञा, विज्ञानम्)

(२५) समस्त और स्तम्ब के स्त को छेडकर अन्य स्त के स्थान मे थ आदेश होता है । जैसे —हत्थो, थोत्त,
थोअ, पत्थरो, थुई (हस्त स्तोत्रम् , स्तोकम् , प्रतर , स्तुति)

विशेष—(क) मागधी मे स्त और र्थ के स्थान मे स्त ही होता है ।

(ख) समस्त शब्द का रूप समत्त और स्तम्ब शब्द का तबो होता है ।

(२६) सयुक्त न्म के स्थान मे म आदेश होता है ।
जैसे —जम्मो, मम्महो (जन्म, मन्मथ)

(२७) एप और रप के स्थान में फ आदेश होता है । एप का फ जैसे :—पुफ, सफ, निफेसो (पुपम् , शप्पम् , निप्पेप) स्प का फ जैसे :—फवण, पडिफह्दी, फसो (स्पन्दनम् , प्रतिस्पद्वी, स्पर्श) ,

(२८) सयुक्त ऋ, एण, स्त्र, ह्र, ह और सूक्ष्म शब्द के द्ध के स्थान में ण्ह आदेश होता है । ऋ का ण्ह जैसे :—पण्हो (प्रण्ण), एण का ण्ह जैसे :—विण्ह, ऋण्हो उण्हिस (विण्णु, कृण्ण, उण्णीपम्) स्त्र का ण्ह जैसे :—चोण्हा, ण्हाउ, ण्हाग, उण्ही, जण्ह (ज्योत्स्ना, स्नायु, स्नानम् , गहि, जहु) ह्र का ण्ह जैसे :—पुवण्हो अवरण्हो (पर्वाह, अपराह) क्षण का ण्ह जैसे :—सण्ह, तिण्ह (श्रृच्छणम् , तीच्छणम्) सूक्ष्म के क्ष्म का ण्ह जैसे :—सण्ह (सूक्ष्मम्)

(२९) सयुक्त श्म, ण्म, रम् और ह्म के स्थान में म्ह आदेश होता है । श्म का म्ह जैसे :—कम्हारो (काश्मीर) ण्म का म्ह जैसे :—गिम्हो, उम्ह (ग्रीष्म, उष्मा), रम् का म्ह जैसे :—अम्हारिसो, विम्हो (अरमान्द्रश, विस्मय) ह्म का म्ह जैसे :—बम्हा, सम्हो, बम्हणो, बम्हचर (ब्रह्मा, सुह्य, ब्राह्मण, ब्रह्मचर्यम्)

विशेष—(क) ब्रह्मचर्यम् के लिए कभी-कभी बम्भचर रूप भी देखा जाता है ।

(ख) रश्मि और स्मर में उक्त नियम लागू नहीं होता है । जैसे —रस्सी, सरो ।

(३०) सयुक्त ह्य के स्थान में झ आदेश होता है ।
जैसे —सझो, सझ, गुझ (सद्य, मद्यम्, गुद्यम्)

(३१) सयुक्त लृ के स्थान में ल्ह आदेश होता है ।
जैसे —कल्हार, पल्हाओ (कल्हारम्, प्रल्हाद)

(३२) जिस सयुक्त अक्षर का अन्त लकार से होता हो उसका विप्रकर्ष होता है । और पूर्ण के अक्षर को इत्य भी होता है । जैसे —किलिण्ण, किलिट्ट, सिलिट्ट, पिलिट्ट, सिलोओ, किलेसो, मिलान्ण, किलिरसइ (क्लिन्नम्, क्लिष्टम्, श्लिष्टम्, श्लोक, क्लेश, म्लानम् क्लिश्यति)

विशेष—रमो (क्लम), पवो (प्लप) और सुक्-
पक्खो (शुक्लपक्ष) में उक्त नियम लागू नहीं होता ।

(३३) उकारान्त किन्तु डीप्रत्ययान्त तन्वी (तनु+
ई) सट्श शब्दों में वर्तमान सयुक्ताक्षरो का विप्रकर्ष होता है और पूर्ण के अक्षर का उकार स्वर से योग होता है ।
जैसे —तिगुवी, तगुई (तन्वी), लहुवी, लहुई (लघ्वी),
गुरुवी, गुर्नुई (गुर्वी), पुहुवी (पृथ्वी)

विशेष—उक्त नियम की विषयता नहीं रहने पर भी
सुरुधो (सुव्र) में नियम प्रवृत्त हो जाता है । प्राकृत के
प्राचीन ऋषियों के अनुसार सूक्ष्म शब्द का सुहुम रूप
हो जाता है ।

(३४) जब च्स् और स् रान्द किसी समास के अङ्ग न होकर पृथक् ही एक पद हो तब इनका विप्रकर्ष हो जाता एव पूर्ण के व्यञ्जन में उ स्वर का योग भी हो जाता है । जैसे —

प्राकृत

सुवे ऋअ

सुवे जना

संस्कृत

श्च कृतम्

स्वे जना

विशेष—हेमचन्द्र ने २११४ में एकस्वरवाले पद में च्स् और स् रान्तों का उक्त कार्य माना है । उसका भी तात्पर्य पृथक् ही एक पद होने में है । समास का अङ्ग हो जाने पर सयगो (स्वरजन) हो जाता है ।

(३५) शील (स्वभाव, आदत्त), वर्म (गुण) अथवा सावु (प्रवीण) अर्थ में जो प्रत्यय आते हैं उनके स्थान में 'इर' आदेश होता है । जैसे —हसिरो, रोचिरो, लज्जिरो, भमिरो, जम्पिरो, वेविरो, उससिरो (हसनशील इत्यादि)

विशेष—कोई-कोई तुन् के स्थान में ही 'इर' का आदेश मानते हैं । उनके मत से संस्कृत के नमी और गमी के लिए नमिर और गमिर रूप नहीं सिद्ध होते ।

(३६) क्त्वा प्रत्यय के स्थान में तुम्, अत्, तूण और तुआण ये ४ आदेश होते हैं । जैसे —

प्राकृत		संस्कृत
दद्दु	[त्त्वा = तुम्]	दग्ध्वा
मोत्तु	[" "]	मुक्त्वा
भमिअ	[त्त्वा = अत्]	भ्रमित्वा
रमिअ	[" "]	रन्त्वा
घेत्तूण	[त्त्वा = तूण]	गृहीत्वा
काउण	[" "]	कृत्वा
भोत्तुआण ^१	[त्त्वा = तुआण]	भुक्त्वा
सीउआण ^२	[" "]	सपित्वा

विशेष—(क) कहीं-कहीं तुम्हाले म के अनुराज का लोप हो जाता है। जैसे —वन्दित्तु। य का लोप करके वन्दित्वा संस्कृत का वन्दित्ता प्राकृत रूप बनता है।

✓ (ख) शौरसेनी में क्त्वा के स्थान में इय ओर दूण आदेश होते हैं। कृ और गम वातुआ से अदूय होता है। मागधी-आजन्ती में क्त्वा के स्थान में तूण आदेश होता है। अपभ्रंश में क्त्वा के स्थान में इइ, उइ, यिअवि आदेश होते हैं।

(३७) इदमर्थ में प्रयुक्त प्रत्ययों के स्थान में 'केर' आदेश होता है। जैसे —तुम्हकेरो, अम्हकेरो (युष्म-दीय, अरमदीय)

१ २ हेमचन्द्र २ १४६ में भोत्तुआण और सेउआण रूप मिलते हैं।

३ किसी से सम्बन्ध रखनेवाला पुरोवर्ती पदार्थ। जैसे—तुम्हारा यह ग्रन्थ, इस अर्थ में संस्कृत में 'युष्मदीयो ग्रन्थ' ऐसा प्रयोग इदमर्थ में है।

विशेष—मईअ-पक्खे, पाणिणीआ (मदीयपक्खे, पाणिनीया) मे उक्त नियम नहीं लगता है । पर और राजन् शब्दों से पारम्क और राइक्क भी बनते हैं ।

(३८) इदमर्थ मे यु-मद्-अस्मद् शब्दों से पर मे रहनेवाले अच् प्रत्यय के स्थान मे 'एच्चय' आदेश होता है । जैसे —तुम्हेच्चय, अम्हेच्चय (यौष्माकम्, आस्माकम्)

विशेष—अपभ्रश मे इदमर्थ प्रत्ययों के स्थान मे केवल 'आर' आदेश होता है । यथा —अम्हारो (अस्मदीय) ।

(३९) त्व प्रत्यय के स्थान मे 'डिमा' और 'त्तण' आदेश विकल्प से होते हैं । जैसे —पीणिमा, पीणत्तण (पीनत्वम्)

विशेष—तल् (ता) प्रत्ययान्त पीनता आदि के स्थान मे पीणआ (या) इत्यादि रूप होते हैं । पीणदा रूप विशेष प्राकृत मे भले ही होता हो, किन्तु सामान्य प्राकृत मे नहीं होता । हों प्राकृतप्रकाशकार कुल प्राकृतों मे तल् प्रत्यय के स्थान मे 'त्ता' आदेश करते हैं ।

(४०) अकोठवजित शब्द से पर मे आनेवाले तैल' प्रत्यय के स्थान मे 'डेल्ल' आदेश होता है । जैसे —इज्जुदी-एल्ल (इज्जुदीतैलम्)

विशेष—अकोठ शब्द से अकोल्लतेल्ल रूप होता है ।

(४१) यद्, तद् आर एतद् शब्दों से पर मे आने-
गले परिमाणार्थक प्रत्यय के स्थान मे 'इत्तिअ' आदेश होता
है और एतद् शब्द का लुक् भी होता है । जैसे —जित्तिअ,
तित्तिअ, इत्तिअ (यायत्, तायत्, एतावत्)

(४२) इदम्, किम्, यद्, तद् और एतद् शब्दों से
पर मे आनेगले परिमाणार्थक प्रत्यय के स्थान मे 'डेत्तिअ'
'डेत्तिल' और 'डेदह' आदेश होते हे । इन प्रत्ययों के आने
पर एतद् शब्द का लुक् हो जाता है । इदम् शब्द से जैसे —
एत्तिअ, एत्तिल, एदह (इयत्), केत्तिअ, केत्तिल, केदह
(कियत्), जेत्तिअ, जेत्तिल, जेदह (यावत्), तेत्तिअ, तेत्तिल,
तेदह, (तायत्), एत्तिअ, एत्तिल, एदह (एतायत्)

(४३) कृत्स्न प्रत्यय (क्रिया की अभ्यावृत्ति की गणना
अर्थ मे होनेगले) के स्थान मे 'हुत्त' आदेश होता
है । जैसे —बहुहुत्त (बहुकृत्स्न)

(४४) मतुप् प्रत्यय के स्थान मे आलु, इल्ल, उल्ल,
आल, वन्त और इन्त आदेश होते हे । आलु जैसे :—
ईसाळ्, णिद्वाळ् (ईर्ग्यावान्, निद्रायान्) इल्ल जैसे :—विआ-
रिल्लो, सोहिल्लो (पिकारवान्, शोभायान्) उल्ल जैसे :—
विआरुल्लो, मसुल्लो (पिकारयान्, मासवान्) आल जैसे :—
रसालो, जगलो, जोण्हालो (रसवान्, जडवान्, ज्योत्सा-

१ प्रत्ययों के आदि ड् के इत् अर्थात् लुप्त होने से यद् और तद् के
ति अर्थात् अद्भाग का भी लोप हो जाता है ।

२ दे० 'सख्याया क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच्' । पा० सू० ५।४।२७

वान्) वन्त जैसे :—वणन्तो, भक्तिवन्तो (वनवान् , भक्तिमान्)

विशेष—(क) हेमचन्द्र के मन से मन्त ओर इर आदेश भी होते हैं। जैसे —सिरिमतो, पुष्णमतो, वणिरो (श्रीमान्, पुण्यवान् वनवान्)

(ख) कुछ लोग का कन्ना है कि इल्ल और उल्ल सार्वात्रिक न होकर पाणिनीय व्याकरण के शैपिक प्रकरण में ही आते हैं। जैसे —पुरिल्ल (पौरस्त्यम्), अधुल्ल (आत्मीयम्)

(४५) उति प्रत्यय के स्थान में 'उ' यह आदेश होता है। जैसे —महुव (मधुवन्)

स्वार्थिक प्रत्यय ।

प्राकृत	प्रत्यय	मस्कृत	प्राकृत	प्रत्यय	संस्कृत
नवल्लो	ल्ल	नय	मिसालिअ	डालिअ	मिश्र
एकल्लो, एकल्लो	,,	एक	नीहर	र	नीर्घ
अवरिल्लो	,,	उपरि	पिज्जला	ल	पिच्चुन्
सुमया	मया	ध्रू	पत्तल	,,	पन्नम्
भमया	डमया		पीवल	,	पीतम्
सणिअ	डिअ	शनै	पीअल	,	अन्त्र
मणिअ	,,	मनाक्	अवल्लो		
अणअ	डअ		जमल	,	यम

विशेष—स्वार्थ में सभी शब्दों से क प्रत्यय होता है ।

तृतीय अध्याय समाप्त



चतुर्थ अध्याय

[शब्दसाधन प्रकरण]

(१) प्राकृत मे सस्कृत के समान ही पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग होते हैं ।

विशेष—सस्कृत के जिन शब्दों का प्राकृत मे लिङ्ग बदल जाता है, उनके प्रिय मे इस ग्रन्थ के १-३८-४५ तक मे प्रिचार किया गया है ।

(२) प्राकृत मे सस्कृत के समान तीनों प्रचन न होकर एकप्रचन और बहुप्रचन ही होते हैं ।

(३) कर्ता आदि छः कारकों की चतुर्थीरहित विभक्तियाँ प्राकृत शब्दों के आगे प्रयुक्त होती हैं । चतुर्थी के स्थान की पूर्ति पष्ठी विभक्ति से होती है । विभक्तिया के नाम पाणिनि के नामकरण के अनुसार ही हैं ।

(४) प्राकृत मे अर्णान्त (अ और आ से अन्त होनेवाले), इर्णान्त (इ और ई से अन्त होनेवाले), उवर्णान्त (उ और ऊ से अन्त होनेवाले), ऋवर्णान्त (ऋ से अन्त होनेवाले) तथा हलन्त (जिनके अन्त मे व्यञ्जन अक्षर आये हो) ये पाँच प्रकार के शब्द पाये जाते हैं ।

विशेष—वस्तुतः प्रयोग मे ऋकारान्त तथा हलन्त शब्दों की उपलब्धि नहीं होने से तीन ही प्रकार के शब्द रह जाते हैं ।

(५) पुँल्लिङ्ग मे वर्तमान ह्रस्व अकारान्त शब्द के आगे आनेवाली प्रथमा के एक्यचन की 'सु' विभक्ति के स्थान मे 'ओ' आदेश होता है । जैसे —देओ, हरिओ, हदो (देव, हरिश्चन्द्र, हट)

विशेष—(क) मागधी मे सु के पर मे रहने पर अन्त के अ का ए हो जाता है और सु का लोप हो जाता है । जैसे —स्वखे, एगे, मेशे (वृक्ष, एप, मेप)

(ख) अपभ्रश मे सु और अम् के पर मे रहने पर अन्त के अ के स्थान मे उ आदेश माना जाता है ।

(६) जस्, शस्, डसि और आम इन विभक्तिया के पर मे रहने पर पुँल्लिङ्ग शब्द के अन्त्य अ के स्थान मे आ आदेश होता है तथा जस् और शस् विभक्तियों का लोप होता है । जैसे —देया, णडला (देवा, देवान्, नकुल नकुलान्)

(७) अन्त (अ से अन्त होनेवाले) शब्द से पर मे आनेवाले अम् के अकार का लुक् हो जाता है । जैसे —देय, णडल (देय, नकुलम्)

(८) ह्रस्व अकारान्त शब्द से पर मे आनेवाले टा (तृतीया के एक्यचन) और आम् (षष्ठी के बहुवचन) के स्थान मे ण आदेश होता है । जैसे —देवेण, देयाण, अथवा देवाण (देवेन, देवानाम्)

विशेष—अपभ्रश मे टा के स्थान मे ण और अनु-स्वार होते हैं । तथा टा के पर मे रहने पर अ का नित्य

एत्य होता है एय भिस् के पर मे रहने पर विकल्प से ।
से अ पर मे आप् का ह आदेश होता है ।

(६) अदन्त (अ से अन्त होनेवाले) शब्दों के अन्तिम अ के स्थान में ए होता है, यदि उनसे आगे डि (सप्तमी एकवचन) और डस् (पष्ठी-एकवचन) से भिन्न प्रभक्तियाँ आती हों । जैसे — देवेहि, देवेसु, णउलेहि, णउलेसु (देवै देवेषु, नकुलै, नकुलेषु)

(१०) अदन्त (अ से अन्त होनेवाले) शब्द से पर में आनेवाले भिस् के स्थान में केवल (अनुनासिक एय अनुस्वार से रहित), सानुनासिक और सानुरूपार 'हि' आदेश होता है । जैसे—देवेहि, देवेहिँ, देवेहि, णउलेहि, णउलेहिँ, णउलेहि (देवै, नकुलै)

विशेष—‘प्राकृतप्रकाश’ और ‘कल्पलतिका’ के अनुसार भिस् के स्थान में केवल हिम् आदेश किया जाता है ।

(११) अदन्त (अ से अन्त होनेवाले) शब्द से पर में आनेवाले डसि के स्थान में तो, दो, दु, हि और हित्तो आदेश होते हैं । दो ओर दु के दकार का लुक् भी होता है । जैसे —देयत्तो, देयाओ, देवाड, देयाहि और देवाहित्तो (देयात्)

विशेष—(क) प्राकृतप्रकाश और कल्पलतिका के अनुसार डसि के स्थान में आदो, दु तथा हि आदेश किये जाते हैं ।

१ हेमचन्द्र (३ ८) के अनुसार डसि का लुक् होकर एक रूप 'देवा' भी होता है ।

(र) शौरसेनी मे डसि के स्थान मे आदो', ओर 'आहु' आदेश होते हैं, किन्तु कल्पलतिका के अनुसार केवल 'वो' आदेश होता है ।

(ग) पौशाची मे डसि के स्थान मे 'आतो' ओर 'जात्तो' आदेश होते हैं ।

(घ) अपभ्रश मे डसि के स्थान मे 'ह' और 'हू' आदेश होते हैं ।

(१२) अवन्त (अ से अन्त होनेवाले) शब्द से पर मे आनेवाले भ्यस् के स्थान मे चो, वो, दु हि, हितो ओर सुतो आदेश होते हैं । जैसे — देवचो, देवाओ, देवाड, देवाहि, देवेहि, देवाहितो, देवेसुतो (देवेभ्य)

विशेष—अपभ्रश मे अवन्त शब्दों से पर मे आनेवाले भ्यस् के स्थान मे 'हू' आदेश होता है ।

(१३) अवन्त शब्द से पर मे आनेवाले डस (पष्ठी-एकवचन) के स्थान मे 'स्स' आदेश होता है । जैसे — देयस्स, णउलस्स (देयरय, नकुलस्य)

विशेष—(क) मागधी मे डस् के स्थान मे विकल्प से 'आह' आदेश होता है ।

(ख) अपभ्रश मे डस् के स्थान मे सु, हो, स्सो ये आदेश होते हैं ।

(१४) अवन्त शब्द से पर मे आनेवाले डि (सप्तमी-एकवचन) के स्थान मे 'ए' और 'म्मि' आदेश होते हैं । जैसे — देवे, देवेम्मि, णउले, णउलेम्मि (देवे, नकुले)

उपर्युक्त नियमों के अनुसार अकारान्त पुल्लिङ्ग

देव शब्द के रूप—

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा देवो	देवा
द्वितीया देव	देवे, देवा
तृतीया देवेण, देवेण	तेहि-हिँ-हि
पञ्चमी देवत्तो, देवाओ, देवाउ, देवाहि देवाहित्तो इत्यादि	देवाहितो, देवास्तो देवेहितो इत्यादि
षष्ठी देवरस	देवाण, देवाण
सप्तमी देवे, देवेम्मि	देवेसु, देवेसु
सबोधन देव, देवो	देवा

कुल जन्म शब्दों के रूप उक्त देव शब्द के समान ही प्राय चलते हैं ।

(१५) इदन्त (इ से अन्त होनेवाले) और उदन्त (उ से अन्त होनेवाले) पुल्लिङ्ग शब्दों का सु, जस्, भिस्, भ्यस् और सुप् प्रभक्तियों के पर में रहने पर अन्त (इ और उ) का दीर्घ होता है ।

विशेष—हेमचन्द्र के मत से शस् (द्वितीया-बहुवचन) के लुक् हो जाने पर भी इदन्त-उदन्त का दीर्घ होता है ।

(१६) इदन्त और उदन्त पुल्लिङ्ग शब्दों से पर में आनेवाले जस् के स्थान में ओ और णो आदेश होते हैं । कहीं-कहीं जस् का लुक् भी हो जाता है ।

विशेष—हेम० ३, २०, २१, २२ के अनुसार इदन्त-उदन्त से पुल्लिङ्ग मे जस् के स्थान मे डित् अउ-अओ आदेश और उदन्त से केवल डित् अओ आदेश विकल्प मे होते ह । णो आदेश भी विकल्प से होता है । डित् होने से पूर्व के 'टि' का लोप जानना चाहिए ।

(१७) इदन्त और उदन्त पुल्लिङ्ग शब्दों से पर मे आनेवाले शस् के स्थान मे नित्य और डस् के स्थान मे विकल्प से णो आदेश होता ह ।

विशेष—अपभ्रंश मे इदन्त-उदन्त से पर मे आनेवाले 'डसि' के स्थान मे 'हे', 'भ्यस्' के स्थान मे 'हु' और डि के स्थान मे हि आदेश होते हे ।

(१८) इदन्त और उदन्त शब्दों से पर मे आनेवाले 'टा' (तृतीया-एकवचन) के स्थान मे 'णा' आदेश होता है ।

विशेष—अपभ्रंश मे टा के स्थान मे सानुस्वार ए ओर ण आदेश होते है ।

(१९) शेष रूपों की सिद्धि अदन्त शब्दों के समान ही जाननी चाहिए ।

उपर्युक्त नियमों के अनुसार इदन्त-पुल्लिङ्ग

गिरि शब्द के रूप—

एकवचन		बहुवचन	
प्रथमा	गिरी	गिरीओ,	गिरिणो
द्वितीया	गिरि	गिरिणो	
तृतीया	गिरिणा	गिरीहि-हिँ-हि	

पञ्चमी	गिरिक्तो इत्यादि	गिरिहितो गिरिसुतो इत्यादि
षष्ठी	गिरिणो, गिरिस्स	गिरिण, गिरिण
सप्तमी	गिरिम्मि	गिरीसु, गिरीसु
सबोधन	गिरि	गिरीओ

हेमचन्द्र (३, १६ २४) के अनुसार गिरि शब्द के रूप—

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा गिरी	गिरी, गिरवो, गिरउ, गिरिणो
द्वितीया गिरि	गिरी, गिरिणो
तृतीया गिरिणा	गिरीहि-हिँ-हि
पञ्चमा गिरिणो, गिरिक्तो	गिरिक्तो, गिरीओ,
गिरीओ, गिरीउ	गिरीउ, गिरीहितो,
गिरीहितो	गिरीसुतो
षष्ठी गिरिणो, गिरिस्स	गिरिण, गिरीण
सप्तमी गिरिम्मि	गिरीसु, गिरीसु
सबोधन गिरि, गिरी	गिरिणो, गिरओ, गिरउ, गिरी

उदन्त पुंलिङ्ग गुरु शब्द के रूप —

प्रथमा गुरू	गुरूओ, गुरूणो
द्वितीया गुरू	गुरूणो
तृतीया गुरूणा	गुरूहि-हिँ-हि
पञ्चमी गुरूक्तो इत्यादि	गुरूहितो इत्यादि
षष्ठी गुरूणो, गुरूस्स	गुरूण, गुरूण
सप्तमी गुरूम्मि	गुरूसु, गुरूसु
सबोधन गुरू	गुरूओ

पुल्लिङ्ग में कुल उकारान्त, उकारान्त शब्दों के रूप गिगि और गुरु शब्दों के समान ही होते हैं ।

हेमचन्द्र के अनुसार गुरु शब्द के रूप —

एकवचन

बहुवचन

प्रथमा गुरु	(गुरु, गुरवो, गुरओ गुरउ, गुरुणो
द्वितीया गुरु	गुरु, गुरुणो
तृतीया गुरुणा	गुरुहि-हि-हि
पञ्चमी (गुरुणो, गुरुतो, गुरुओ गुरुउ, गुरुहितो)	गुरुतो, गुरुओ, गुरुउ गुरुहितो, गुरुसुतो
षष्ठी गुरुणो, गुरुस्स	गुरुण, गुरुण
सप्तमी गुरुम्मि	गुरुसु, गुरुसु
सबोधन गुरु, गुरु	गुरु, गुरुणो, गुरवो गुरउ, गुरओ

(२०) ऋकारान्त शब्दों के आगे किसी भी विभक्ति के आने पर अन्य ऋ के स्थान में 'आर' आदेश होना है और उसका रूप अदन्त शब्दों जैसा पाया जाता है ।

(२१) सु और अप् को छोड़ कर शेष सभी विभक्तियों के पर में होने पर ऋकारान्त शब्द के अन्त्य ऋ के स्थान में विकल्प से उकार होता है । उक्त पक्ष में उकारान्त शब्दों के जैसे रूप होते हैं ।

(२२) सबोधनवाले सु के पर में रहने पर ऋदन्त शब्द-के अन्तिम ऋ के स्थान में 'अ' आदेश विकल्प से होता है ।

किन्तु जो ऋकारान्त शब्द विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ हो उसमें उक्त नियम लागू नहीं होता है । जैसे —हे पिअ, हे पिअर (हे पित)

विशेष—कर्तृशब्द विशेषणवाची ऋकारान्त है, अतः उक्त नियम लागू नहीं हुआ । इससे 'हे कत्तार' रूप होगा ।

(२३) पितृ, भ्रातृ और जामातृ शब्दों से पर में किसी भी विभक्ति के आने पर ऋकार के स्थान में 'आर' का अपमान 'अर' आदेश होता है ।

विशेष—(क) अर' आदेश होने पर उसके रूप भी अदन्त शब्दों के समान ही चलते हैं ।

(ख) सु के पर में रहने पर ऋदन्त शब्दों के ऋ के स्थान में 'आ' आदेश विकल्प से होता है ।

उपर्युक्त नियमों के अनुसार भर्तृ शब्द के रूप —

एकवचन

प्रथमा	भत्तारो
द्वितीया	भत्तार
तृतीया	भत्तुणा, भत्तारेण
पञ्चमी	भत्तारादो, भत्तुणो, इत्यादि
षष्ठी	भत्तुणो, भत्तारस्स
सप्तमी	भत्तारे, भत्तारम्मि, भत्तुम्मि
संबोधन	हे भत्तार

बहुवचन

भत्तुणो भत्तारा
भत्तुणो, भत्तारे
भत्तारेहि भत्तुहि
भत्तारहितो, भत्तुहितो, इत्यादि
भत्तुण, भत्ताराण
भत्तुसु, भत्तारेसु
हे भत्तारा

हेमचन्द्र (३, ३६, ४०, ४४, ४८) के अनुसार भर्तृ
शब्द के रूप —

एकवचन

बहुवचन

प्रथमा	भत्तारो	भत्तारा, भत्तू, भत्तुणो भत्तउ, भत्तओ
द्वितीया	भत्तार	भत्तारे, भत्तू, भत्तुणो
तृतीया	भत्तुणा, भत्तारेण	भत्तूहि, भत्तारेहि
पञ्चमी	{ भत्तुणो भत्तूओ, भत्तूउ, भत्तूहि, भत्तूहितो, भत्ता राओ, भत्ताराउ, भत्ताराहि, भत्ता राहितो, भत्तारा	भत्तू, भत्तूओ, भत्तूहितो, भत्तूसुतो, भत्ताराओ, भत्ताराउ, भत्ताराहि, भत्तारेहि, भत्ता राहितो, भत्तारेहितो, भत्तारा- सुतो, भत्तारेसुती
षष्ठी	{ भत्तुणो, भत्तुस्स, भत्तारस्स	भत्तूण, भत्तूण, भत्ताराण, भत्ताराण
सप्तमी	भत्तुम्मि, भत्तारे, भत्तारम्मि	भत्तूसु, भत्तारेसु
सबोधन	हे भत्तार	हे भत्तारा

कुल ऋकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप भर्तृ शब्द के समान
ही चलते हैं ।

ऋकारान्त पितृ शब्द के रूप —

प्रथमा	पिआ, पिअरो	पिअरा
द्वितीया	पिअर	पिअरे, पिदुणो
तृतीया	पिअरेण, पिदुणा	पिअरेहि
पञ्चमी	पिअरादो, पिदुणो, इ०	पिअरहितो, पिदुहितो, इत्यादि
षष्ठी	पिअरस्स, पिदुणो	पिअराण, पिदुण

एकवचन

बहुवचन

सप्तमा पिअरे, पिअरम्मि, पिदुम्मि पिअरेसु, पिदुसु
सबोधन हे पिअ, हे पिअर हे पिअरा

पितृ शब्द के समान ही भ्रातृ और जामातृ शब्दों के रूप चलने हैं ।

हेमचन्द्र (३ ३६-४०, ४४-४८) के अनुसार पितृ शब्द के रूप —

प्रथमा	पिआ', पिअरो	{ पिअरा, पिउणो, पिअरो, पिअओ, पिअउ पिऊ
द्वितीया	पिअर	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिऊ
तृतीया	पिअरेण, पिअरेण, पिउणा इत्यादि	पिअरेहि हि हिँ, पिऊहि हिँ-हि इत्यादि
सबोधन	पिअ, पिअर	पिअरा, पिउणो, पिअवोइ यदि

शेष विभक्तियों के रूपों का ऊह कर लेना चाहिए ।

(२४) प्राकृतप्रकाश और प्राकृतकल्पलतिका में ईकारान्त उकारान्त शब्दों के साधन के लिए अलग सूत्र नहीं देखे जाते । इससे सिद्ध होता है कि उनके (ईकारान्त उकारान्त के) कार्य भी क्रमशः इकारान्त उकारान्त शब्दों के समान ही होते हैं ।

(२५) हेमचन्द्र ने सभी विभक्तियों में क्विबन्त ईकारान्त उकारान्त शब्दों के दीर्घ ईऊ के लिए ह्रस्व का विधान किया है । और केवल सबोधन के एकवचन में अपने निप्रस को वैकल्पिक माना है ।

१ शौरसेनी में प्रथमा के एकवचन में पिदा रूप होता है । देखिए 'तादृणो वि एदाए पिदा'-अभिज्ञान शाकुन्तल

(२६) पुँल्लिङ्ग मे गो शब्द का गाव यह रूप होता है । इस लिए इसके रूप अदन्त शब्दों के समान ही चलते हैं ।

स्त्री प्रत्यय

(२७) प्राकृत मे कुछ ही ऐसे शब्द हैं, जिनमे विशेष नियमों के अनुसार विशेष स्त्री प्रत्यय आते हैं । शेष शब्दों के आगे सस्कृत के ही अनुसार स्त्री प्रत्यय आते हैं ।

(२८) पाणिनि (४ १ १५) के अनुसार अण् आदि प्रत्यय निमित्तर जो ङीप् होता है, वह प्राकृत मे विकल्प से होता है । जैसे — साहणी, साहणा, कुरुचरी, कुरुचरा ।

(२९) अजातिवाची पुँल्लिङ्ग नाम (प्रातिपदिक) से स्त्री लिङ्ग को बतलाने मे विकल्प से ङी प्रत्यय होता है । जैसे — नीली, नीला, काली, काला, हसमाणी, हसमाणा, सुप्पणही, सुप्पणहा, इमीए, इमाए, इमीण, इमाण, एईए, एआए, एईण, एआण ।

प्रिशेष—(क) कुमार्यादि मे सस्कृत के समान नित्य ही ङी होता है । कुमारी, गौरी इत्यादि ।

(ख) जातिवाची मे उक्त नियम के नहीं लगने से करिणी, अया, एलया इत्यादि रूप होते हैं ।

(३०) छाया और हरिद्रा शब्दों मे 'आप्' का प्रसङ्ग (प्राप्ति) होने पर विकल्प से 'ङी' प्रत्यय होता है । जैसे — छाही, छाहा,^१ हलदी, हलद्दा ।

(३१) स्त्रीलिङ्ग मे स्वस्त्रादि^२ शब्दों से पर मे डा प्रत्यय

१ हेमचन्द्र के अनुसार 'छाया' पाठ है । देखें हेम० ३ ३४

२ स्वसा तिष्ठश्चतस्त्रश्च ननान्दा दुहिता तथा ।

याता मातेति सप्तैते स्वस्त्रादय उदाहृता ॥ सिद्धा कौ अग्रन्तस्त्री

होकर ससा आदि रूप हो जाते हैं और उनके रूप आदन्त शब्दों जैसे चलते हैं। जैसे —ससा, नणन्दा, दुहिआ।

(३२) सु, अम् और आम्वजित^१ सुप् (सभी विभक्तियों) के पर मे रहने पर किम्, यद् और तद् शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में 'ङी' प्रत्यय विकल्प से होता है। जैसे —कीओ, काओ, कीए, काए, कीसु, कासु, जीओ, जाओ, तीओ, ताओ।

(३३) स्त्रीलिङ्ग शब्द से पर मे आनेवाले जस् और शस् के स्थान में विकल्प से 'उत्' और 'ओत्' आदेश होते हैं। और उनसे पूर्व के ह्रस्व स्वर का विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसे —मालाउ, मालाओ, पक्ष मे-माला। बुद्धीउ, बुद्धीओ, पक्ष मे बुद्धी। सहीउ, सहीओ, पक्ष मे सही। घेरूउ, घेरूओ, पक्ष मे घेरू। वहूउ वहूओ, पक्ष मे वहू।

विशेष—शौरसेनी में स्त्रीलिङ्ग शब्द से जस् का उत् नहीं होता है।

(३४) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान नाम (प्रातिपदिक) से पर मे आनेवाले टा, डस् और ङी के स्थान में 'अत्' 'आत्' 'इत्' और 'एत्' आदेश होते हैं। पूर्व के ह्रस्व स्वर का दीर्घ भी होता है। आदन्त शब्द से टादि के स्थान में केवल आत् आदेश नहीं होता। उक्त चारों आदेश जब डसि के स्थान में होते हैं, तब उनके पूर्व के ह्रस्व स्वर का विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसे —मुद्धाअ, मुद्धाइ, मुद्धाए, बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए।

विशेष—(क) अपभ्रंश में टा के स्थान में एत् होता है।

१ उक्त नियम हेमचन्द्र के अनुसार है। किन्तु एच भट्टाचार्य अपने प्राकृत व्याकरण में 'अनामि सुपि' लिखते हैं। पृ १०७, प १७

(२) अपभ्रंश मे डसि और डस् के स्थान मे हे, भ्यस् ओर आम् के स्थान मे हु और डि के स्थान मे हि होते है।

(३५) अम् विभक्ति के पर मे रहने पर स्त्रीलिङ्ग शब्द के अन्तिम दीघ को ह्रस्व विकल्प से होता है।

(३६) स्त्रीलिङ्ग मे वर्तमान दीर्घ ईकारान्त शब्द से पर मे आनेवाले सु जस् और शस् के स्थान मे 'आ' आदेश विकल्प से होता है।

(३७) संबोधनवाली विभक्ति के पर मे रहने पर आबन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के अन्तिम आ को 'ए' आदेश होता है।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग लता शब्द के रूप —

एकवचन

प्रथमा	लदा
द्वितीया	लद
तृतीया	लदाए, लदाइ, लदाअ
पञ्चमी	लदादो, लदाए, इत्यादि
षष्ठी	लदाए, लदाइ, लदाअ
सप्तमी	लदाए, लदाइ, लदाअ
संबोधन	हे लद

उहुवचन

लदा, लदाओ, लदाउ
लदा, लदाओ, लदाउ
लदाहि हि हि
लदाहितो, इत्यादि
लदाण, लदाण
लदासु, लदासु
हे लदाओ

हेमचन्द्र के अनुसार लता शब्द के रूप —

प्रथमा	लदा	लदा, लदाओ, लदाउ
द्वितीया	लद	लदा, लदाओ, लदाउ

एकवचन

तृतीया	लदाए, लदाइ, लदाअ
पञ्चमी	{ लदाए, लदाइ, लदाअ लदत्तो, लदाओ, लदाउ लदाहितो, इत्यादि
षष्ठी	लदाए, लदाइ, लदाअ
सप्तमी	लदाए, लदाइ, लदाअ
सबोधन	हे लदे, लदा

बहुवचन

लदाहि-हिँ-हि
लदत्तो, लदाओ, लदाउ
लदाहितो, लदासुतो
लदाण, लदाण
लदासु, लदासु
हे लदा, लदाओ, लदाउ

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग बुद्धि शब्द के रूप —

प्रथमा	बुद्धी	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
द्विताया	बुद्धि	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
तृतीया	बुद्धीए, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धिअ	बुद्धीहि-हिँ-हि
पञ्चमी	बुद्धीए, बुद्धीइ, इत्यादि	बुद्धीहितो, बुद्धीसुन्तो इत्यादि
षष्ठी	बुद्धीए, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धीअ	बुद्धीण, बुद्धीण
सप्तमी	बुद्धीए, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धीअ	बुद्धीसु, बुद्धीसु
सबोधन	हे बुद्धी	हे बुद्धी, बुद्धीओ, इत्यादि

हेमचन्द्र के अनुसार बुद्धि शब्द के रूप —

प्रथमा	बुद्धी	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
द्विताया	बुद्धि	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
तृतीया	{ बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए	बुद्धीहि-हिँ-हि
पञ्चमी	{ बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धित्तो बुद्धीइ, बुद्धीए, बुद्धीओ बुद्धीउ, बुद्धीहितो	बुद्धित्तो, बुद्धीओ-उ- हितो-सुतो

एकवचन

षष्ठी बुद्धीअ आ-इ-ए
सप्तमी " " "
सबोधन हे बुद्धि, बुद्धी

बहुवचन

बुद्धीण-ण
बुद्धीसु-सु
हे बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ

कुल उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप उक्त बुद्धि शब्द के समान ही चलते हैं। ऐसे ही हेमचन्द्र के अनुसार धेणु, सही, वहु शब्दों के रूप भी चलते हैं।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग धेणु शब्द के रूप —

प्रथमा	धेणू	धेणू, धेणूओ, धेणूउ
द्वितीया	धेणु	" " "
तृतीया	धेणूए-इ-आ-अ	धेणूहि-हिँ-हि
पञ्चमी	धेणूओ धेणूइ, इत्यादि	धेणूहितो-सुतो
षष्ठी	धेणूए-इ-आ-अ	धेणूण, धेणूण
सप्तमी	" " " "	धेणूसु-सु
सबोधन	हे धेणु धेणू	हे धेणू, धेणूओ, इत्यादि

सभी उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप धेणु शब्द के समान ही चलते हैं।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग नदी शब्द के रूप —

प्रथमा	नई नईआ	नईओ, नईआ
द्वितीया	नइ	नई, नईओ, नईआ
तृतीया	नईए-इ-आ-अ	नईहि-हिँ-हि
पञ्चमी	नईए, नईअ, नइदो, इत्यादि	नई, नईहितो, नईसुतो

एकवचन

पष्ठी नईए, -इ, -आ-अ
 सप्तमी " " " "
 सबोधन हे नई, नई

बहुवचन

नईण, नईण
 नईसु नईसु
 हे नई, नईओ, इत्यादि

कुल ईकारान्त खीलिङ्ग शब्दों के रूप नदी शब्द के समान ही चलते हैं ।

उकारान्त खीलिङ्ग वहू (यधू) शब्द के रूप —

प्रथमा वहू	वहू , वहूओ, इत्यादि
द्वितीया वहू	वहू , वहूओ, इत्यादि
तृतीया वहूए-इ-आ-अ	वहूहि-हि-हि
पञ्चमी वहूदो, वहूए, इत्यादि	वहूहितो-सुतो
षष्ठी वहूए-इ-आ-अ	वहूण, वहूण
सप्तमी " " " "	वहूसु-सु
सबोधन हे वहू, वहू	हे वहू, वहूओ, इत्यादि

कुल उकारान्त खीलिङ्ग शब्दों के रूप वहू शब्द के समान ही चलते हैं ।

ऋकारान्त खीलिङ्ग मातृ शब्द के रूप —

१ हेमचन्द्र (३ ४६) के अनुसार मातृ शब्द के दो प्राकृत रूप मिलते हैं—माअ्रा (माता) और माअरा (देवी Goddess) । हमें इस शब्द से ३ ४४ के अनुसार 'माउ' और १ १३५ के अनुसार 'माइ' रूप भी मिलते हैं । इनमें 'माअ्रा' और 'माअरा' के रूप माला एव लता शब्दों के अनुसार, माउ के रूप धेणु के अनुसार और माइ के रूप बुद्धि शब्द के अनुसार चलते हैं ।

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा माआ	माआ
द्वितीया माअ ^१	माए
तृतीया माआइ, माआअ, इत्यादि	माएहि-हिँ-हि
पञ्चमी माआदो, माआए, इत्यादि	माआहितो, माआसुतो
षष्ठी माआइ, माआअ, इत्यादि	माआण, माआण
सप्तमी " " "	माआसु-सु
सबोधन हे माअ, इत्यादि	हे माआ, इत्यादि

स्त्रीलिङ्ग में गो शब्द के गावी और गाई ये दो रूप होते हैं। इन दोनों के रूप ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अनुसार चलते हैं।

अजन्त नपुसक लिङ्ग के शब्दों के सम्बन्ध में नियम —

(३८) नपुसक लिङ्ग में वर्तमान स्वरान्त शब्दों से पर में आनेवाले सु (प्रथमा के एकवचन) के स्थान में 'म्' होता है। जैसे — वण (वनम्)

(३९) नपुसक लिङ्ग में वर्तमान स्वरान्त शब्दों से पर में आनेवाले जस् और शस् (प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन) के स्थान में इ, इ और णि आदेश होते हैं। जैसे — कुलाई, कुलाइ और कुलाणि।

विशेष—(४) शौरसेनी में नपुसक लिङ्ग में जस्-शस् के स्थान में केवल 'णि' आदेश होता है।

(ख) अपभ्रंश में जस्-शस् के स्थान में 'इ' आदेश होता है।

१ शौरसेनी में द्वितीया के एकवचन में 'मादर' यह रूप होता है।

(४०) नपुसक लिङ्ग मे वर्तमान शब्दो से पर मे आनेवाले सबोधन के 'सु' का लोप होता है ।

(४१) सु (प्रथमा के एकवचन) के पर मे रहने पर इदन्त-उदन्त नपुसक शब्दो के अन्तिम इ और उ को दीर्घ नहीं होता है ।

अकारान्त नपुसकलिङ्ग कुल शब्द के रूप —

एकवचन

प्रथमा कुल
द्वितीया ”
सबोधन हे कुल

बहुवचन

कुलाई, कुलाइ, कुलाणि
” ” ”

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान चलते हैं ।

इकारान्त नपुसक दधि शब्द के रूप —

प्रथमा दहि, दहि
द्वितीया ” ”
सबोधन हे दहि

दहीई, दहीइ, दहीणि
” ” ”

उकारान्त नपुसक मधु शब्द के रूप —

प्रथमा महु, महु
द्वितीया ” ”
सबोधन हे महु

महूई, महूइ, महूणि
” ” ”

शेष रूपो का उह पुल्लिङ्ग आदि से कर लेना चाहिए ।

हलन्त शब्दो के साधनसबन्धी नियम एव उनके रूप —

प्राकृत मे हलन्त शब्द नहीं होते हैं । कुछ हलन्त शब्दो के

अन्त्य व्यञ्जनो का लोप होता है और कुछ हलन्त शब्द अजन्त के रूप में परिणत हो जाते हैं। अतः हलन्त शब्दों के साधनार्थ विशेष नियम नहीं है।

फ़ैल आत्मन् और राजन् शब्दों के साधनार्थ प्राकृत के कुछ प्राचीन आचार्यों ने नियम बनाये हैं। वे ही नियम प्रयोग के अनुसार अन्य नान्त शब्दों के लिए भी उपयुक्त माने गये हैं।

राजन् शब्द के रूप —

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा राआ	राआणो, राआ
द्वितीया राअ	राए, राआणो
तृतीया रण्णा, राइणा	राएहि
पञ्चमी राआदो, रण्णो, राआदु, राइणो	राआहितो, राइहितो
षष्ठी रण्णो, राइणो, राअस्स	राआण, राइण, राआण्ण
सप्तमी राअस्मि, राए, राइस्मि	राएसु, राएसु
सबोधन हे राआ, राअ	

हेमचन्द्र (३, ४६-५५,) के अनुसार राजन् शब्द के रूप —

प्रथमा राया	राया, रायाणो, राइणो
द्वितीया राय, राइण	राये, राया, रायाणो, राइणो
तृतीया राइणा, रण्णा, राएण, राएण	राएहि हि हि, राईहि हि हि
पञ्चमी रण्णो, राइणो, रायत्तो, इ०	रायत्तो, राइत्तो, इत्यादि
षष्ठी राणो, राइणो, रायस्स	राईण, राईण, रायाण, रायाण

	एकवचन	बहुवचन
सप्तमी	राये, रायम्मि, राइम्मि	राईसु, राईसु, राएसु, राएसु
सबोधन	हे राया, राय	राया, रायाणो, राइणो

आत्मन् शब्द के रूप —

प्रथमा	अप्पा, अप्पाणो	अप्पाणा, अप्पाणो, अप्पा
द्वितीया	अप्पाण, अप्प	अप्पाणे, अप्पणो
तृतीया	अप्पाणेण, अप्पणा	अप्पाणेहि, अप्पेहि
पञ्चमी	अप्पाणाओ, अप्पणो	अप्पाणाहितो, अप्पाहितो,
	अप्पाओ, अप्पादो, इ०	इत्यादि
षष्ठी	अप्पाणस्स, अप्पणो	अप्पाणाण, अप्पाण
सप्तमी	अप्पाणम्मि, अप्पे	अप्पाणेसु, अप्पेसु
सबोधन	हे अप्प, इत्यादि	

विशेष—हेमचन्द्र (३ ५६-५७) के अनुसार आत्मन् शब्द के दो प्राकृत रूप अप्प और अप्पाण होते हैं। इनमें अप्प के रूप राजन् शब्द जैसे चलते हैं। और ‘अप्पाण’ के वच्छ अथवा देव शब्द के अनुसार। तृतीया के एकवचन में उसके दो और अधिक रूप होते हैं—‘अप्पणिआ’ और ‘अप्पणइआ’

(४२) प्राकृत कल्पलतिका के अनुसार ‘भवत्’ और ‘भगवत्’ के अन्तिम तकार के स्थान में सु विभक्ति के पर में रहने पर अनुस्वार किया जाता है। यह नियम यहाँ भी गृहीत है। जैसे — भव (भवान्), हे भव (हे भवन्), भअव (भगवान्), हे भअव (हे भगवन्)

(४३) प्राच्या में भवत् शब्द के स्त्रीलिङ्ग में भोदी यह रूप होता है।

सर्वनाम शब्दों के साधन के नियम और रूप —

प्राकृत में सर्वनाम के सबध में सामान्य नियम देखने में नहीं आते हैं। जो भी नियम देखने में आते हैं, विशेष स्थलों के लिए विशेष नियम हैं। केवल अदन्त सर्वनाम शब्दों की सिद्धि के लिए कुछ साधारण नियम हैं, जिनका नीचे उल्लेख हुआ है। अन्य विशेष नियमों का परिज्ञान उदाहरणों द्वारा ही सम्भव है। अदन्त सर्वनाम शब्दों के विषय में नियम ये हैं —

(४४) सर्वादिगण पठित शब्दों के अन्तिम अ से पर में आनेवाले जस् के स्थान में 'ए' आदेश होता है।

विशेष—कहीं कहीं सर्वादि के प्रथम अ का प्रैकल्पिक एत्व होकर सेव्वे और सर्वे रूप होते हैं।

(४५) अदन्त सर्वादि से पर में आनेवाले 'आम्' के स्थान में 'एसि' आदेश विकल्प से होता है। तथा 'डि' के स्थान में 'स्सि', 'म्मि' और 'त्थ' ये आदेश होते हैं और इद्म् तथा एतद् शब्दों को छोड़कर अन्य सर्वादि शब्दों से आनेवाले डि के स्थान में 'हि' आदेश भी होता है।

पुंलिङ्ग में सर्व शब्द के रूप —

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा सव्वो	सव्वे
द्वितीया सव्व	सव्वे
तृतीया सव्वेण	सव्वेहि
पञ्चमी सव्वदो, सव्वत्तो, इत्यादि	सव्वेहितो, इत्यादि
षष्ठी सव्वस्स	सव्वेसि, सव्वान्ण

एकवचन	बहुवचन
सप्तमी { सव्वस्सि, सव्वम्मि, सव्वत्थ, सव्वहि	सव्वेसु, सव्वेसु
सबोधन हे सव्व, सव्वो	सव्वे

खीलिङ्ग में सर्ग शब्द के रूप आदन्त खीलिङ्ग शब्दों के समान तथा नपुसक में सर्ग शब्द के रूप अदन्त नपुसक लिङ्गवाले शब्दों के समान चलते हैं।

विश्व आदि सर्वादिगण के शब्दों के रूप इसी सर्ग शब्द के रूपों के समान चलते हैं।

विशेष—अपभ्रंश में सर्व के स्थान में साह आदेश होता है। अदन्त सर्वादि से पर में आनेवाले डसि का 'हा' आदेश होता है। डि के स्थान में केवल हि आदेश ही होता है।

पुलिङ्ग में यद् शब्द के रूप —

प्रथमा	जो	जे
द्वितीया	ज	जे
तृतीया	जेण, जिण	जेहि
पञ्चमी	जत्तो, जदो, जम्हा, जाओ	जाहितो, जासुतो, इत्यादि
षष्ठी	जस्स, जासँ	जाण, जेहि ^१
सप्तमी	जस्सि, जम्मि, जहि ^२ , जत्थ	जेसु

१ अपभ्रंश में पुलिङ्ग में 'जासु' और खीलिङ्ग में 'जहे' होता है।

२ शौरसेनी में केवल जाण और टक्कभाषा में 'जाह' 'जाण' ये दो रूप होते हैं।

३ जब सप्तमी के एकवचन से समय का बोध कराना हो तब यद् शब्द का 'जाहे' और 'जाला' ये रूप हो जाते हैं।

(४६) यद् शब्द से खीलिङ्ग म आम्वन्तित रिभक्तिया के पर मे रहने पर डा विकल्प से होता है। जैसे — जी, जीया इत्यादि ।

पुलिङ्ग मे तद् शब्द के रूप —

एकवचन

बहुवचन

प्रथमा सो

ते दे

द्वितीया त, ण

ते, डे

तृतीया तेण, तिण्, शेण

तेहि, शेहि

पञ्चमा तत्तो, तदो, ता तम्हा, ताओ

ताहिता इत्यादि

षष्ठी तास, से, तस्स

ताण, तेसि मि, दाण

सप्तमा तस्सि, तम्मि, तत्थ, तहि

तेसु इत्यादि

(४७) तद् शब्द का खीलिङ्ग मे प्रथमा ये एकवचन मे 'सा' यह रूप होता है और नपुंसक लिङ्ग मे 'त'। आम्वन्तित

१ हेमचन्द्र के अनुसार तद् शब्द के रूप निम्नलिखित हैं —

प्रथमा-एक० स, सो, बहु० ते, शे, द्वितीया एक० त ण, बहु० ते, ता शे णा, तृतीया एक० तण, शेण तिण, बहु० तेहि इत्यादि, पञ्चमी-एक० तम्हा, बहु० तेहि इत्यादि, षष्ठी एक० तस्स, ताम्, बहु० तास, तेसि, सप्तमी एक० तस्सि, ताहे, ताला, तइआ, बहु० तेसु, शेसु, तेसु, शेसु ।

२ पेशाची मे पुलिङ्ग में 'नेन' और खीलिङ्ग में 'नाए' रूप होते हैं ।

३ शौरसेनी मे ङस् मे तस्स, से और आम् स ताण होते हैं ।

अपभ्रंश मे ङस् के पर में रहने पर पुलिङ्ग म तह और खीलिङ्ग में तासु होते हैं। टक्क भाषा मे आम् के पर मे रहने पर 'ताह' और 'ताण' होते हैं ।

विभक्तियों में तद्शब्द से स्त्रीलिङ्ग में ऊँ का भी प्रयोग किया जाता है। जैसे —ती, तीआ इत्यादि।

पुलिङ्ग में एतद् शब्द के रूप —

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एस, एसो	एते, एदे
द्वितीया	एत	एते, एदे
तृतीया	एदिणा, एदेण, एण	एतेहि, एदेहि, एएहि
पञ्चमी	एत्तो, एत्ताहो, एआओ, इ०	एतेहितो इत्यादि
षष्ठी	एअस्स, एदस्स, से	सि, एएसि, एदाण
सप्तमी	{ अयम्मि, एत्थ, इअम्मि, एअम्मि, एअस्सि	एएसु, एदेसु इत्यादि

विशेष—(क) हेमचन्द्र (३, ८२) के अनुसार पञ्चमी के एकवचन में 'एत्तो' और 'एत्ताहे' रूप होते हैं और पक्ष में 'एआओ' 'एआउ' 'एआहि' 'एआहितो' और 'एआ' रूप होते हैं।

(ख) हेमचन्द्र (३. ८४) के अनुसार एतद् शब्द से सप्तमी के एकवचन में 'म्मि' के पर में रहने पर 'अयम्मि' ईयम्मि और पक्ष में एअम्मि रूप होते हैं।

(ग) अन्य रूपों के लिए देखिए हेमचन्द्र के ३ ६६, ८१, ८५

पुलिङ्ग में अदस् शब्द के रूप —

प्रथमा	अमू	अमूणो
द्वितीया	अमु	अमूणो
तृतीया	अमुणा	अमूहि

एकवचन

बहुवचन

पञ्चमी	अमूओ, अमूउ इत्यादि	अमूहितो इत्यादि
षष्ठी	अमुणो, अमुस्स	अमूण
सप्तमी	अमुम्मि, अयम्मि, इअम्मि	अमूसु इत्यादि

विशेष—(क) हमचन्द्र (३ ८७) के अनुसार तीनो लिङ्गो मे अदस् शब्द के प्रथमा एकवचन मे 'अह' रूप भी होता है ।

(र) शौरसेनी मे 'अह' रूप नहीं होता । साधारणत स्त्रीलिङ्ग मे अमू और नपुसक मे अमु रूप प्रयुक्त होते है ।

पुलिङ्ग मे इदम् शब्द के रूप —

प्रथमा	इमो, अअ	इमे
द्वितीया	इम, ण	इमे
तृतीया	इमिणा, इमेण, शेण	एहि, इमेहि, शेहि
पञ्चमी	इदो, इमादो, इत्तो इत्यादि	इमेहितो इत्यादि
षष्ठी	अस्स, इमस्स, से	इमाण, सि
सप्तमा	अस्सि, इमस्सि, इह, शे	एसु

विशेष—(क) इदम् शब्द के स्त्रीलिङ्ग मे 'सु' विभक्ति के पर मे रहने पर 'इअ', 'इमिआ' और नपुसक मे सु और अम् के पर मे रहने पर 'इदं' और 'इणं' रूप होते है ।

(ख) शौरसेनी मे स्त्रीलिङ्ग इदम् शब्द के प्रथमा एकवचन मे 'इअं' और नपुसक मे 'इदम्' 'इमम्' रूप

होते हैं। पुल्लिङ्ग-नपुंसक लिङ्ग में षष्ठी के बहुवचन में केवल 'इमाण्' यह रूप होता है।

पुल्लिङ्ग में किम् शब्द के रूप —

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	को	के
द्वितीया	क	के
तृतीया	किणा, केण	केहि
पञ्चमी	कीणो, कीस, कम्हा, कत्तो, कदो	केहितो इत्यादि
षष्ठी	कास, कस्स	कास, केसि, काण
सप्तमी	कहि, कस्सि, कम्मि, कत्थ, काहे, काला, कइआ	केसु इत्यादि

विशेष—(क) अपभ्रंश में किम् के स्थान में 'काइ' और 'कवण' आदेश विकल्प से होते हैं।

(ख) स्त्रीलिङ्ग में 'का' और नपुंसक में 'किं' रूप होते हैं।

(ग) शौरसेनी में डसि में 'कदो' और उसी विभक्ति में अपभ्रंश में 'कहाँ' रूप होते हैं।

(घ) स्त्रीलिङ्ग में डस् के पर में रहने पर 'कस्सा' कीसे, किअ, कीआ, कीई, 'कीए' होते हैं। शौरसेनी में पुल्लिङ्ग में 'कास' नहीं होता है। अपभ्रंश में पुल्लिङ्ग किम् शब्द का डस् में 'कासु' रूप होता है और स्त्रीलिङ्ग में 'कहं'।

युष्मद् शब्द के रूप —

एकवचन

बहुवचन

प्रथमा	तुम, त, तु, तुम, तुह	{	झे, तुझ, तुझे, तुम्ह, तुम्हे
			उम्हे, तुझे ^१
द्वितीया	{ त, तु, तुव, तुम, तुह		वो तुझे, तुझ, तुम्हे, तुझे
	{ तुमे, तुमे		
तृतीया	{ दे, त, तइ तुए, तुम तुमइ,		तुम्हेहि, तुझेहि, उम्हेहि
	{ तुमर तुमे, तुमाई		उज्झेहि, तुज्झेहि ^२ इत्यादि
पञ्चमी	{ तत्तो, तटत्तो तुयत्तो,		तुम्हाहितो तुम्हाहितो,
	{ तुमत्तो, तुम्भत्तो, तुम्हत्तो,		तुज्भत्तो, तुम्हत्तो, तेहितो
	{ तुहत्तो, तुह्यत्तो, नटो, तुव,		दुहितो ^३ इत्यादि
	{ दुहि, तुमहितो ^४ इत्यादि		

१ हेमचन्द्र ३ ९१ के अनुसार मे, तुम्मे, तुज्म, तुम्ह, तुम्हे, उम्हे रूप होते हैं ।

२ हेमचन्द्र ३ ९२ में तुए रूप बतलाया गया है ।

३ हेमचन्द्र ३ ९३ में वो, तुझ, तुम्मे, तुम्हे, उम्हे, मे, रूप वर्णित हैं ।

४ हेमचन्द्र ३ ९४ के अनुसार—मे, दि, दे, ते, तइ, तए तुम, तुमइ, तुमए, तुमे और तुमाइ रूप होते हैं ।

५ हेमचन्द्र ३ ९५ के अनुसार—मे, तुम्मेहि, तुज्झेहि, उज्झेहि, उम्हेहि, तुम्हेहि, उम्हेहि ये रूप होते हैं ।

६ हेमचन्द्र ३ ९६ और ९७ के अनुसार—तइत्तो, तुवत्तो, तुमत्तो, तुहत्तो, तुम्भत्तो तुम्हत्तो, तुज्मत्तो, तत्तो, तुम्ह तुम्भनहि तो, तुम्ह, तुज्म इत्यादि रूप होते हैं ।

७ हेमचन्द्र ३ ९८ के अनुसार—तुम्भत्तो, तुम्हत्तो, उम्हत्तो, उम्हत्तो, तुज्मत्तो तथा दोदुहिहिनी सुतो ये रूप होते हैं ।

	एकवचन	बहुवचन
षष्ठी	तुह, तुज्झ, तुम्म, तुइ, तु, तुम्ह, तुह, तुह, तुव, तुम, तमे, तुमाइ, दे, तुह्य ^१	वो, भे, तुज्झ, तुह्याण तुम्हाण, तुमाण, तुहाण उम्हाण, तुवाण ^२ इत्यादि
सप्तमी	तइ, तए, तुमए, तुमे, तुमाई, तइ, तुम्मि, तुमम्मि, तुवम्मि, तुहम्मि, तुज्झम्मि ^३ इत्यादि	तुसु, तुम्हेसु, तुझेसु, तुहसु, तुमसु, तुहेसु ^४ इत्यादि

शौरसेनी मे युष्मद् शब्द के रूप —

प्रथमा	तुम	तुम्हे
द्वितीया	तुम	तुम्हे

१ हेमचन्द्र ३ ९९ के अनुसार—तइ, तु, ते, तुम्ह, तुह, तुह, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, उब्भ, उय्ह, तुम्ह, तुज्झ, उम्ह, उज्झ रूप होते हैं ।

२ हेमचन्द्र ३ १०० के अनुसार—तु, वो, भे, तुब्भ तुब्भ, तुब्भाण, तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण, तुब्भाण, तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण, तुम्ह, तुज्झ, तुम्ह, तुज्झ, तुम्हाण तुम्हाण, तुज्झाण, तुज्झाण रूप होते हैं ।

३ हेमचन्द्र ३ १०१ के अनुसार—तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए, तुम्मि, तुवम्मि, तुमम्मि, तुहम्मि, तुब्भम्मि, तुम्हम्मि, तुज्झम्मि रूप होते हैं ।

४ हेमचन्द्र ३ १०२ के अनुसार—तुसु, तुवेसु, तुमेसु, तुहेसु, तुब्भेसु, तुम्हेसु, तुज्झेसु, तुवसु, तुमसु, तुहसु, तुब्भसु, तुम्हसु, तुज्झसु, तुब्भासु, तुम्हासु, तुज्झासु रूप होते हैं ।

	एकवचन	बहुवचन
तृतीया	तए	तुम्हेहि
पञ्चमी	तुम्हादो	तुम्हाहिंतो
षष्ठी	ते, दे, तह, तुम्ह	तुम्हाण
सप्तमी	तइ	तुम्हेसु

अपभ्रंश मे युष्मद् शब्द के रूप —

प्रथमा	तुह	तुम्हे, तुम्हाइ
द्वितीया	तइ, पइ	तुम्हेहि
तृतीया	"	"
पञ्चमी	तउहोंत, तधुहोंत, तुह्युहोंत	तुम्ह
षष्ठी	"	तुम्हह
सप्तमी	"	तुम्हासु

अस्मद् शब्द के रूप —

प्रथमा	{ अह, अहम्मि, अम्मि अम्हि, ह, अहअ, म्मि	मे, वअ, अम्ह, अम्हे अम्हो, मो ^२
द्वितीया	{ शोण, मि, अम्मि, अम्ह म, मम, मिम, अह ^३	अम्हे, अम्हा, णो, शो, अम्ह ^४

१ हेमचन्द्र ३ १०५ के अनुसार—म्मि, अम्मि, अम्हि, ह, अह, अहय रूप होते हैं ।

२ हेमचन्द्र ३ १०६ के अनुसार—अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वय और मे रूप होते हैं ।

३ हेमचन्द्र ३ १०७ के अनुसार—शो, ण मि, अम्मि, अम्ह मम्ह, म, मम, मिम और अह रूप होते हैं ।

४ हेमचन्द्र ३ १०८ के अनुसार—अम्हे, अम्हो, अम्ह और शो रूप होते हैं ।

	एकवचन	उहुवचन
तुत.गा	{ मिमे, मम, ममए, मए ममाइ, मइ, इणो, मओ	अम्हेहि, अम्हाहि अम्ह, अम्हो, शे ^१
पञ्चम'	{ मइत्तो, ममतो मत्तो महत्तो, मह्यत्तो, मइदो ममदुहि ^३ इत्यादि ।	ममतो, अम्हत्तो, ममाहितो ममासुतो, ममेसुतो, अम्हे हितो ^२ इत्यादि ।
षष्ठा	{ भे मम, मइ, मह मह, मह्य, नह्य, अम्ह । ^४	शे, णो, मह्य, अम्ह, अम्ह, अम्हे, अम्हो, मम, अम्हाण महाण, महाण । ^५

१ हेमचन्द्र ३ १०९ के अनुसार—मि, मे, मम, ममए, ममाइ मइ मए रूप होते हैं ।

२ हेमचन्द्र २ ११० के अनुसार—अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, शे रूप होते हैं ।

३ हेमचन्द्र ३ १११ के अनुसार—मइत्तो, ममतो, महत्तो मज्झत्तो मत्तो रूप होते हैं । इसी प्रकार मइदो, मइदु, इत्यादि रूप बनते हैं । शे, दु, हि, हितो और लुक् पक्ष में भी रूपों का ऊह कर लेना चाहिए ।

हेमचन्द्र ३ ११२ के अनुसार—ममतो, अम्हत्तो, ममाहितो, अम्हाहितो ममासुतो अम्हासुतो, ममेसुतो, अम्हेसुतो रूप होते हैं ।

४ हेमचन्द्र ४ ११३ के अनुसार मे, मइ, मम, मह, मइ, मज्झ, मज्झ, अम्ह, अम्ह रूप होते हैं ।

हेमचन्द्र ३ ११४ के अनुसार शे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्ह, अम्हे अम्हो, अम्हाण, ममाण, महाण, मज्झाण, अम्हाण, ममाण, महाण, मज्झाण रूप होते हैं ।

	एकवचन	बहुवचन
सप्तमी	मी, मइ, ममाइ, मए	अम्हेसु, ममेसु, महेसु
	मे, अम्हम्मि, ममम्मि	मएसु अम्हसु, ममसु
	महम्मि	महसु ^१ इत्यादि

शौरसेनी मे अस्मद् शब्द के रूप —

प्रथमा	ही, अह	अम्हे, यय
द्वितीया	म	अम्हे
तृतीया	मए	अम्हेहि
पञ्चमी	मत्तो, ममादो	अम्हेहितो इत्यादि
षष्ठी	मे, मम, मह	अम्ह, अम्हाण
सप्तमी	मइ, मए	अम्हेसु

(४८) मागधी मे सस्कृत के अह और वय के स्थान मे क्रमशः हगे और हके आदेश होते हैं ।

अपभ्रंश मे अस्मद् शब्द के रूप —

प्रथमा	हउ	अम्हे, अम्हइ
द्वितीया	मइ	अम्हे, अम्हइ
तृतीया	मइ	अम्हेहि
पञ्चमा	महु, महु	अम्हेहितो
षष्ठी	महु, महु	अम्हे
सप्तमी	मयि इत्यादि	अम्हासु

१ हेमचन्द्र ३ ११५ के अनुसार—मि, मइ, ममाइ, मए मे, अम्हम्मि, ममम्मि, महम्मि, मज्जम्मि रूप होते हैं ।

२ हेमचन्द्र ३ ११७ के अनुसार—अम्मेसु, महेसु, महेसु, मज्जेसु, अम्हसु, ममसु, महसु, मज्जसु अम्हासु, रूप होते हैं ।

द्वि, त्रि और चतुर् शब्दों के रूप —

	द्विशब्द	त्रिशब्द	चतुर्शब्द
प्रथमा	{ दो, दुवे, दोणि, वेणि, दुणि, विणि	तिणिण	चत्तारो, चडरो, चत्तारि
द्वितीया	”	”	”
तृतीया	दोहिं, दोहि, विहि	तीहि	चऊहि
पञ्चमी	दोहितो, वेहितो इ०	तीहितो	चऊहितो
षष्ठी	दोण्ह, दोण्ण, वेण्ण	तिण्ण	चउण्ह
सप्तमी	दोसु, वेसु	तीसु	चउसु

(४६) अन्य सख्यावाचक शब्दों के रूप अदन्त शब्दों के समान चलते हैं ।

(५०) खीलिङ्ग में पञ्चन् शब्द से आप् प्रत्यय होता है । जैसे —पञ्चा, पञ्चाहि इत्यादि ।

(५१) तादर्थ्य (उसके लिए) अर्थ में षष्ठी विभक्ति विकल्प से आती है ।

(५२) प्राकृत में विभक्तियों के व्यवहार का कोई विशेष नियम नहीं है । कहीं द्वितीया और तृतीया के स्थान में सप्तमी कहीं पञ्चमी के स्थान में तृतीया तथा सप्तमी और प्रथमा के बदले द्वितीया विभक्तियों व्यवहृत होती है ।

पञ्चम अध्याय

[अव्यय प्रकरण]

(१) वाक्योपन्यास अर्थ मे 'त' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे —त निव पुच्छिअ-दोआरिण (राजा से पूछे गये दौवारिक ने इस प्रकार वाक्य का उपन्यास किया ।)
कुमापा ४ १

(२) अभ्युपगम (स्वीकार) अर्थ मे आम अव्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे —आम गिम्ह सिरी (हाँ, यह सही है कि इस उद्यान मे इन दिनो ग्रीष्म ऋतु की शोभा फैली है ।) कुमा पा ४ १

(३) विपरीतता अर्थ मे 'णवि' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे —उण्हेह सीअला णवि (गरम के विपरीत ठंडी अथवा गरम होती हुई भी ठंडी) कुमा पा ४ १

(४) कृतकरण अर्थात् फिर से उसी क्रिया को करने अर्थ मे 'पुणरुत्त' अव्यय का प्रयोग होता है। जैसे —पेच्छ पुणरुत्तम् (एक बार देख चुकने पर भी फिर से देखो ।) कुमा पा ४ १

(५) विषाद, विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय और सत्य अर्थों मे हन्दि' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। विषाद अर्थ में जैसे :—हन्दि पिदेसो (दुःख है कि हमारे लिए यह पिदेश है ?), विकल्प अर्थ मे जैसे :—जीवइ हन्दि पिआ (पता नहीं मेरी प्रियतमा जीती है अथवा नहीं), पश्चात्ताप अर्थ मे जैसे :—हन्दि कि पिआ मुक्का ? (क्या हमने विरह

दुःख का बिना विचार किये ही प्रियतमा को छोड़ दिया ?), निश्चय अर्थ में जैसे :—हन्दि मरण (मरना निश्चित है), सन्य अर्थ में जैसे :—हन्दि जपो गिम्हो (ग्रीष्म यमराज है, यह बात सच है ।) कुमा, पा ४ २

(६) 'ग्रहण करो', 'लो' इस अर्थ में 'हन्द' और हन्दि अव्यय का भी प्रयोग होता है । जैसे —हन्द महु हन्दि परिमल मिम (पुष्परस लो, यह गन्ध ग्रहण करो ।) कुमा पा ४ ३

(७) इव के अर्थ में मिब, पिव, विव, व्व व, बिअ, इम अव्ययो का प्रयोग प्राकृत में विकल्प से होता है ।

मिव—चणणि मित्र (माता के समान)

पिव—रूअ पिव (पुत्री के समान)

विव—सोअर विव (सोदर बहन के समान)

व्व—साअरो व्व (सागर के समान)

व—सहि व (सरसी के समान)

विअ—नत्ति विअ (पौत्री के समान)

पक्ष में इव जैसे —

इव—मउडो इव

(८) लक्षण (लक्ष्य करना) अर्थ में जेण और तेण अव्ययों का प्रयोग होता है । जैसे —जेण अहुल्ला लगली (बिना खिली लवली को लक्ष्य करके), फुल्ल च धूलिकम्ब तेण फुडा चेअ गिम्हसिरी (खिले हुए धूलि कम्ब को लक्ष्य करके ग्रीष्म की शोभा स्फुट ही मालूम पड़ती है ।) कुमा० पा० ४ ५

(९) अवधारण (अन्ययोग व्यवच्छेद) अर्थ में णइ, चेअ, चिअ और च अव्ययो का प्रयोग होता है । जैसे —

णइ—गोलीणा णइ असन्त-उउ-लच्छी (उमन्त ऋतु की शोभा बीत ही गइ ।)

चेअ—स्फुटा चेअ गिम्ह-सिरी (ग्रीष्म की शोभा स्फुट ही मालूम पडती है ।)

च्चिअ—त च्चिअ वन्ना (ये ही धन्य ह ।)

च्च—स च्च सीलेण (रवभाग से अच्छा-सत्-ही)

(१०) दो में एक के निर्द्धारण तथा निश्चय अर्थों में 'बले' अव्यय का प्रयोग होता है । निर्द्धारण में जैसे —नया नोमालिआ बले रम्मा (सभी लताओं में नयमल्लिखा अथवा नयमालिका मन को आनन्द देनेवाली है ।), निश्चय में जैसे :—बले ते मयणवाणा (निश्चय ही वे मदन (कामदेव), के बाण ह ।)

(११) 'किल' के अर्थ में किर, इर, हिर अव्ययों का विकल्प से प्रयोग होता है । पक्ष में किल ही प्रयुक्त होता है । जैसे —

किर—जा किर मल्ली (सभावना करता हूँ कि जो मल्ली है)

इर—जा इर जवा (सभावना करता हूँ कि जो जपा है)

हिर—सुत्ते जणम्मि जो हिर सद्दो चीरीण (लोगों के सो जाने पर जो भीगुरों का शब्द)

पक्ष में किल—एव किल तेन सिविणए भणिआ ।

विशेष—किल शब्द के अर्थ प्रसिद्ध, सभावना आदि हैं ।

(१२) केवल अर्थ मे 'णवर' अव्यय का प्रयोग करना चाहिए । जैसे —सहे चीरीण सुव्वण णवर (केवल कीगुरो का शब्द सुनाई पडता है ।

(१३) आनन्तर्य अर्थ मे 'णवरि' अव्यय का प्रयोग होता है । जैसे —गाअइ किल तस्स मिसा णवरि वसन्तम्स गिम्हसिरी । (कीगुरो की ध्वनि के बहाने वसन्त के बाद आनेवाली ग्रीष्म शोभा हर्ष से मानो गान कर रही है) कुमा० पा० ४ ७

(१४) निवारण अर्थ मे 'अलाहि' अव्यय का प्रयोग करना उत्तम है । जैसे —पहिआ, अलाहि गन्तु (पथिको, जाना व्यर्थ है अर्थात् मत जाओ ।)

(१५) नब् के अर्थ मे 'अण' और 'णाइ' अव्ययो का प्रयोग किया जाता है । जैसे —अण दइआण (कान्तारहित जनो का) । कुसलाई इह णाई (यहाँ कुशल नहीं है) ।

(१६) मा के अर्थ मे 'माइ' इस अव्यय का प्रयोग होता है । जैसे —माई इह एध (यहाँ मत आओ ।)

(१७) 'हद्धी' यह अव्यय निर्वेद अर्थ मे प्रयुक्त किया जाता है । जैसे —हद्धी, इअ व्व चीरीहि उल्लविअ

(१८) भय, वारण और विषाद अर्थो मे वेव्वे का प्रयोग करना चाहिए । जैसे —समुहोट्ठिअम्मि ममरे वेव्वे त्ति मणेइ मल्लिउच्चिणिरी । वारणखेअभएहि भणिउ वेव्वे वयसे त्ति (सम्मुखोत्थिते भ्रमरे वेव्वे इति भणति मल्लिकामुच्चेत्री । वारण खेदभयै भणित्वा वेव्वे 'वयस्ये' इति ।)

(१६) वेव्व और वेव्वे का भी आमन्त्रण अर्थ में प्रयोग किया जाता है। जैसे —वेव्व सहि चिट्ठसु (हमारा आमन्त्रण है ! सखि, रुको)

विशेष—आमन्त्रण अर्थ में वेव्वे का प्रयोग नियम १८ के मणिउ वेव्वे वयसेत्ति में देखा जाता है।

(२०) सखी द्वारा आमन्त्रण अर्थ में 'हला', मामि', और 'हले' अव्ययों का प्रयोग विकल्प से होता है। पक्ष में 'सहि' यह प्रयुक्त होता है। जैसे —वेव्व सहि चिट्ठसु हला निसीद मामि रम जासि कथ हले ? (हमारा आमन्त्रण है, मरि, रुको ! सखि बैठो ! सखि, क्रीडा करो ! जाती कहाँ हो सखि ?)
कुमा पा ४ १०

(२१) मम्मुखीकरण अर्थ में और सखी के आमन्त्रण अर्थ में 'दे' इस अव्यय का प्रयोग करना चाहिए। सामान्य संबोधन में जैसे :—दे पसिअ ताव सुदरि, सख्यामन्त्रण में जैसे :—दे पसिअ किमसि रुट्ठा ? (हे सखि, प्रसन्न होओ, रुठी किस लिए हो ?)

(२२) दान, प्रश्न और निवारण अर्थों में 'हु' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। दान में जैसे :—हुं, गिण्हसु कणय भायणय (मैंने दे डाला, अब तुम यह कनक पात्र ले लो ?), प्रश्न में जैसे :—हु, तुह पिओ न आओ ? (मैं पूछती हूँ अभी तक तेरा प्रियतम नहीं आया ?), निवारण में जैसे :—हुं, कि तेणज्ज (अरे हटाओ भी, उससे अब हमारा क्या मतलब ?)

(२३) निश्चय, वितर्क, सभावना और विस्मय अर्थों में हु और खु का प्रयोग किया जाता है । निश्चय में जैसे :—नो हु अन्नरओ (यह निश्चित है कि वह दूसरी स्त्री में रम गया है ।), तुमय खु माणइत्ता (यह निश्चित है कि तुम मानवनी हो ।), वितर्क और सभावना अर्थों में जैसे :—तस्स हु जुग्गा मि सा खु न त (मैं ऐसा अदाज करता हूँ और यही संभव भी है कि यह हमारी स्त्री उसके योग्य है और तुम उसके—प्रियतम के योग्य नहीं हो ।) विस्मय अर्थ में जैसे :—एसो खु तुज्ज रमणो (आश्चर्य है कि यह तुम्हारा रमण है ।) कुमा पा ४ १०

(२४) गर्हा, आक्षेप, विस्मय और सूचन अर्थों में ऊ का प्रयोग किया जाता है । गर्हा में जैसे :—तुज्ज ऊ रमणो (तुम्हारा निन्दिन रमण), आक्षेप में जैसे :—ऊ कि मए भणिअ (अरे मैंने क्या कह डाला ?), विस्मय अर्थ में जैसे :—ऊ अच्छरा मह सही (अहो, मेरी सखी आसुरा है), सूचन अर्थ में जैसे :—ऊ इअ हसेइ लोओ (तुम्हारे प्रियतम को दोष दे देकर सखियाँ हँसती हैं ।) कुमा पा ४ १३

(२५) कुत्सा अर्थ में 'थू' अव्यय का प्रयोग किया जाता है । जैसे —थू र निक्किह कलहसील (अरे अधम, झगडाहू, तुझे थू है ।)

(२६) 'रे' और 'अरे' क्रमशः संभाषण और रतिकलह अर्थों में प्रयुक्त होते हैं । संभाषण अर्थ में जैसे :—रे हिअय

मडह-सरिआ, रतिकलह मे अरे जैसे — अरे मए सम मा करेसु उवहास ।

२७) क्षेप, सभाषण और रतिकलह अर्थों मे 'हरे' इस अव्यय का प्रयोग करना चाहिए । क्षेप मे जैसे — हरे णिलज्ज, संभाषण में जैसे — हरे पुरिसा, रतिकलह मे जैसे — हरे वहुवल्लह ।

(२८) सूचना और पश्चात्ताप अर्थों मे 'ओ' अव्यय का प्रयोग करना चाहिए । सूचना अर्थ मे जैसे — ओ सटो सि (मैं यह सूचित कर देना चाहता हूँ कि तुम शठ हो ।) पश्चात्ताप मे जैसे — ओ किमसि दिट्ठो ? (क्या तुम देख लिए गये ?) कुमा पा ४ १३

(२९) सूचना, दुःख, सभाषण, अपराध, विस्मय, आनन्द, आदर, भय, खेद, विषाद, और पश्चात्ताप अर्थों मे 'अव्वो' इस अव्यय का प्रयोग करना चाहिए ।

सूचना में जैसे — अव्वो नओ तुह पियो (यह सूचित करता हूँ कि तुम्हारा प्रियतम नत हो गया ।), दुःख मे जैसे — अव्वो तम्मेसि (खेद है कि तुम उदास हो ।), सभाषण मे जैसे — कि एसो अव्वो अन्नासत्तो (क्या यह दूसरी मे आसक्त है ?), अपराध एवं विस्मय में जैसे — अव्वो तुज्जेरिसो माणो (प्रणययुक्त प्रणयी मे तुम्हारा ऐसा मान ?) इससे अपराध और आश्चर्य दोनों प्रकट होते हैं । आनन्द मे जैसे — अव्वो पिअस्स समओ (यह आनन्द की बात है कि प्रियतम के आने का यह समय है ।),

आदर मे जैसे —अव्वो सो एइ (मेरा प्रियतम यह आ रहा है ?), भय मे जैसे —रुसणो अव्वो (भय है कि वह थोड़े अपराध पर भी रुठ जानेवाला है ।), खेद और विषाद मे जैसे —अव्वो कट्ट (मैं खिन्न और विषण्ण हूँ ।), पाश्चात्ताप मे जैसे —अव्वो कि एसो सहि मए वरिओ (सखि, मैं तो पछता रही हूँ कि मैंने इसे बरा क्यों ?)

(३० सभावन अर्थ मे 'अइ' अव्यय का प्रयोग करना चाहिये । जैसे —अइ एसि रड-घराओ (मेरी ऐसी सभावना है कि तुम रतिगृह से आ रही हो ।)

(३१) निश्चय, विकल्प, अनुकम्प्य और सभावन अर्थों मे 'उणे' अव्यय का प्रयोग करना चाहिये । निश्चय मे जैसे —वणे ठेमि (निश्चय ही देता हूँ), विकल्प मे जैसे —होइ वणे न होइ (हो या न हो), अनुकम्प्य मे जैसे —दासो वणे न मुच्चइ (अनुकम्पा योग्य दास छोड़ा नहीं जाता), संभावन मे जैसे —नत्थि वणे ज न देइ विहिपरिणामो ।

(३२) विमर्श अर्थ मे (कुछ के मत से संस्कृत मान्ये अर्थ मे) मणे अव्यय का प्रयोग किया जाता है । जैसे —मणे सूरु (मेरी ऐसी मान्यता है कि यह सूर्य है ।)

(३३) आश्चर्य अर्थ मे अम्मो अव्यय का प्रयोग करना चाहिए । जैसे —स अम्मो पत्तो खु अप्पणो (वह प्रियतम अपने आप प्राप्त हो गया । आश्चर्य है ?)

(३४) स्वयम् के अर्थ मे अप्पणो का प्रयोग विकल्प से

करना चाहिए। देखिए ऊपर के १३ वें नियम का उदाहरण। पक्ष में 'सय' होता है।

(३५) प्रत्येकम् के अर्थ में पाडिक्, पाडिएक् और पक्ष में पत्तेअ का प्रयोग करना चाहिए। जैसे—पाडिक् न्हआओ, वाण ययसीओ पाडिएक् च। पत्तेअ मित्ताइ (प्रत्येक नयिनाण, उनकी प्रत्येक सखियाँ और प्रत्येक मित्र)

(३६) पश्य के अर्थ में 'उअ' का प्रयोग विकल्प से किया जाता है। जैसे —उअ एसो एइ (देखो, यइ आ रहा है।)

(३७) इतरथा के अर्थ में इहरा का प्रयोग विकल्प से किया जाता है। जैसे —कहमिहरा पुलइआ सि वट्ठुमि (अन्यथा इसे देखकर तुम पुलकित क्यों हो ?)

(३८) भगिति और साम्प्रतम् के अर्थ में एकसरिअ का प्रयोग होता है। जैसे —एकसरिअ भगिति साम्प्रतम् वा।

(३९) मुधा के अर्थ में मोरउल्ला का प्रयोग किया जाता है। जैसे —मा तम्म मोरउल्ला ? (व्यर्थ उदास मत होओ ?)

(४०) अर्द्ध और ईषन् में 'दर' इस अव्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे —दरविअसिअ (अर्ध विकसित अथवा ईषद्विकसित)

(४१) प्रश्न अर्थ में किणो अव्यय का प्रयोग करना चाहिए। जैसे —किणो धुवसि ? (काँपते हो क्या ?)

(४२) पादपूति के लिए इ, जे, र का प्रयोग करना चाहिए। जैसे —वारविलया इ एआ, गिम्ह सुह माणिउ पयट्ठा जे, पिअन्ति पिक्क दक्ख रस।

विशेष—अहो, हहो, हेहो, हा, नाम, अहह, ही, सि, अयि, अहाह, अरि, रि, हो, इत्यादि अव्ययो का प्रयोग प्राकृत मे सस्कृत के समान करना चाहिए ।

(४३) अपि के अर्थ मे पि और वि का प्रयोग करना चाहिए जैसे —इअ जपि त पि लविराओ ।



षष्ठ अध्याय

[तिङन्त विचार]

(१) प्राकृत मे क्यङ्, क्यष् आदि प्रत्ययों के विधान के कोई विशेष नियम नहीं है। केवल हेमचन्द्र के व्याकरण मे एक सूत्र (३१३८) है, जिससे य के लुक् के विषय मे ज्ञात होता है। जैसे —गरुआइ, गरुआअइ, दमदमाइ, दमदमाअइ, लोहिआइ, लोहिआअइ।

(२) प्राकृत मे गणभेद (धातुओ के वर्गीकरण) की व्यवस्था नहीं की जाती है।

(३) प्राकृत मे तिप् आदि तिङ् कहलानेवाले प्रत्ययो के वर्तमान काल मे वक्ष्यमाण रूप होते हैं। तथा अदन्त धातुओं को छोड़कर शेष धातुओं में 'आत्मनेपदी' और 'परस्मैपदी' का भेद नहीं माना जाता^१।

वर्तमान काल के प्रत्यय

एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु० इ	न्ति, न्ते, इरे
मध्यम पु० सि	इत्था, ह
उत्तम पु० मि	मो, मु, मा

१ पाणिनि (३४३८) के अनुसार तिप्, तस्, फि, सिप्, थस्, थ, मिप्, वस्, मस्, त, आताम्, फ, थास्, आथाम्, ध्वम्, इ, वहिङ्, महिङ्, इनमें ति स ङ् तक तिङ् कहे जाते हैं।

२ शौरसेनी में सभी धातु परस्मैपदी होते हैं।

(४) अकारान्त आत्मनेपदी धातुओं के प्रथम मध्यम पुरुषों के एकवचन के स्थान में क्रमशः 'ए' और 'से' आदेश विकल्प से होते हैं। जैसे — तुवरए (त्वरते), तुवरसे (त्वरसे)

(५) अदन्त धातु से 'मि' के पर में रहने पर पूर्व के 'अ' का आत्व विकल्प से होता है। जैसे — हसामि, हसमि इत्यादि।

(६) अकारान्त धातु से 'मो' 'मु' और 'म' पर में रहे तो पूर्व के अकार के स्थान में 'इ' और 'आ' होते हैं। कहीं कहीं ए भी होता है। जैसे — हसिमो, हसामो, हसेमो, हसिमु, हसेमु इत्यादि।

वर्तमान में अकारान्त भण धातु के रूप —

एकवचन

बहुवचन

प्रथम पु० भणइ, भणए	भणन्ति, भणन्ते भणिरे
मध्यम पु० भणसि, भणसे	भणह, भणित्था
उत्तम पु० भणामि, भणमि	भणामो, भणिमो, भणेमो इत्यादि

विशेष—यो ही हस और पठ आदि सभी अकारान्त धातुओं के रूपों को जानना चाहिए। केवल अस धातु के रूप विशेष नियमानुसार सिद्ध होते हैं।

वर्तमान में अस धातु के रूप —

एकवचन

बहुवचन

प्रथम पु० अच्छइ, अत्थि	अच्छति, अत्थि
मध्यम पु० सि, अच्छसि, अत्थि	अत्थि, अच्छित्था, अच्छह
उत्तम पु० म्हि, अत्थि, अच्छामि	म्हो, म्हा, इत्यादि

(७) स्वरान्त धातु से भूत काल में सभी पुरुषों और वचनो में विहित प्रत्यय के स्थान में 'ही' 'सि' और 'हीअ' आदेश होते हैं। जैसे —कासी, काही, काहीअ, ठासी, ठाही, ठाहीअ (अकार्षीत्, अकरोत्, चकार, तथा अस्थात्, अतिष्ठत्, तस्थौ)

विशेष—प्राकृतप्रकाश में ही और सी का विधान नहीं देखा जाता। उसके अनुसार एकाच धातु से केवल 'हीअ' आदेश होता है। देखिए—वर० ७ २४

(८) व्यञ्जनान्त धातु से भूतकाल में विहित सभी प्रत्ययो के स्थान में 'इअ' आदेश होता है। जैसे —गण्हीअ (अग्रहीत्, अगृह्णात्, जग्राह)

विशेष—(क) केवल अस धातु के साथ भूतार्थक कुल पुरुष और वचन के प्रत्ययो के स्थान में 'आसि' और 'अहेसि' आदेश होते हैं। जैसे —सो, तुमे अह वा आसि। एव अहेसि। देखिए—तेनास्तेरास्यहासी। हेम० ३ ६४

(ख) प्राकृतप्रकाश के अनुसार, अस धातु का, केवल भूतार्थक एकवचन के साथ एकमात्र 'आसि' आदेश होता है। देखिए वर ७ २५

भविष्यत् काल में तिवादि तिङ् प्रत्ययो के स्वरूप —

एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु० हिइ	हिन्ति, हन्ते, हिरे
मध्यम पु० हिसि	हित्थ, हिरु
उत्तम पु० { हिमि, हामि, स्सामि, स्सम्	हिस्सा, हिहा

भविष्यन् काल मे भू धातु के रूप —

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	होहिइ ^१	होहिन्ति, होहिन्ते, होहिरे
मध्यम पु०	होहिसि ^२	होहित्थ, होहिह
उत्तम पु०	होस्सामि, होहामि	होहामो, होस्सामो
	होस्सामो, होहामो हो	इत्यादि
	स्सामु, होहामु, होस्साम, होहाम, होहिमु, होहिम ^३	

भविष्यन् काल मे कृ धातु के रूप —

प्रथम पु०	काहिइ	काहिति
मध्यम पु०	काहिसि	काहित्था
उत्तम पु०	काह, काहिमि	काइमो

भविष्यन् काल मे हस धातु के रूप —

प्रथम पु०	हसिहि	हसिहिन्ति
मध्यम पु०	हसिहिसि	हसिहित्था
उत्तम पु०	हसिस्स	हसिस्सामो, हसिहामो

१ प्राकृतप्रकाश के अनुसार प्रथम पुरुष के एकवचन में होहिइ, हवहिइ, होज्ज, होज्जा होज्जहिइ, होज्जाहिइ, होसइ होही और प्रथम पुरुष के बहुवचन में होहिन्ति, हुविहिन्ति रूप होते हैं ।

२ प्राकृतप्रकाश के अनुसार मध्यम पुरुष के एकवचन में— होहिहिसि, हुविहिहि, हुविहिसि, होहिहि तथा बहुवचन में होहित्था, होहिहु, हुवित्था, हविहिह रूप होते हैं ।

३ प्राकृतप्रकाश के अनुसार उत्तम पुरुष के एकवचन में होस्सामि, होस्सामो, होहामि, होहिमि, होस्स, होहिमो और बहुवचन में होहिस्सा, होहित्था, होहिओ, होहिमु, होहामो, होहिम, होस्सामो, होस्सामु, होस्साम रूप होते हैं ।

इसी प्रकार से भण, पठ आदि के रूप भी चलते हैं—

(६) कृ, दा, स + गम, रुद, विद, दृश, वच, भिद बुध, श्रु, गम, मुच और छिद धातु भविष्यत् काल में, उत्तम पुरुष के एकवचन में, नीचे लिखे विशिष्ट रूपों को प्राप्त करते हैं। इतर (प्रथम और मध्यम) पुरुषों में श्रु धातु के रूपों के समान रूप प्राप्त करते हैं।

धातुओं के नाम

उत्तम पुरुष के एकवचन के रूप

कृ	काह, काहिमि
दा	दाह, दाहिमि
स + गम	सगच्छ
रुद	रोच्छ
विद	वेच्छ
दृश	देच्छ
वच	वेच्छ
भिद	भेच्छ
बुध	भोच्छ
श्रु	सोच्छ, सोच्छिस्स, सोच्छिमि इत्यादि
गम	गच्छ
मुच	मोच्छ
छिद	छेच्छ

भविष्यत् काल के प्रथम और मध्यम पुरुषों में श्रु धातु के रूप —

एकवचन

बहुवचन

प्रथम पु० सोच्छिइ, सोच्छिहिइ

सोच्छिन्ति, सोच्छिहिन्ति

	एकवचन	बहुवचन
मध्यम पु०	सोच्छिसि, सोच्छिहिसि	सोच्छित्था इत्यादि
उत्तम पु०	सोच्छ	सोच्छिमो, सोच्छिहिमो इत्यादि

विध्याद्यर्थक तिङ् —

प्रथम पु०	ज	न्तु
मध्यम पु०	सु, हि	ह
उत्तम पु०	मु	मो

हस धातु के विध्याद्यर्थ में रूप —

प्रथम पु०	हसउ	हसन्तु, हसेन्तु
मध्यम पु०	{ हससु हसहि, हस, हसेज्जसु, हसह हसेज्जहि, हसेज्जे	
उत्तम पु०	हसमु	हसामो

इसी प्रकार पठ आदि धातुओं के रूप जाने जा सकते हैं। किन्हीं आचार्यों के मत से विध्यादि में वर्तमान के तुल्य ही रूप होते हैं। जैसे —जअइ' इत्यादि।

(१०) वर्तमान, भविष्यत् और विध्यादि में उत्पन्न प्रत्यय के स्थान में ज्ज और ज्जा ये दोनो आदेश विकल्प से होते हैं। पक्ष में यथाप्राप्त होते हैं। जैसे —हसेज्ज, हसेज्जा (हसति, हसिष्यति, हसतु, हसेत् इत्यादि)

विशेष—(क) हेमचन्द्र के मत से स्वरान्त धातुओं के विषय में ही उक्त नियम लागू होता है।

(ख) शौरसेनी में उक्त नियम लागू नहीं होता।

१ शौरसेनी में जि धातु के विध्यादि में 'जेदु' इत्यादि रूप होते हैं।

(११) धातु से वर्तमान, भविष्यत् और विध्यादि अर्थवाले तिङ् यदि पर हो तो धातु और प्रत्यय के मध्य में भी उज और उजा विकल्प से होते हैं। होज्जइ, होज्जाइ (भवति भविष्यति, भवतु, भूयात् इत्यादि)

(१२) शतृ और शानच् इन दोनों में एक-एक के स्थान में न्त और माण ये दो आदेश होते हैं। जैसे — पढन्तो, पढमाणो, हसन्तो, हसमाणो (पठन्, हसन्)

(१३) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शतृ और शानच् के स्थान में ई, न्ती और माणा आदेश होते हैं। जैसे — उपहसमाणि सरोरुह विहसन्ति हसई व कुमुडणि (उपहसन्ती, विहसन्तीम्, हसन्तीमिव) कुमा पा ५ १०६

(१४) वर्तमान, विध्यादि और शतृ प्रत्ययों के पर में रहने पर अकार के स्थान में एकार विकल्प से होता है। जैसे — हसेइ, हसइ, हसेउ, हसउ, हसेतो, हसतो (हसति, हसेत्, हसन्) कहीं पर नहीं भी होता है। जैसे — जअइ। कही आत्व भी होता है। जैसे — सुणाउ।

विशेष—शौरसेनी में धातु और तिङ् के मध्य में अधिकतर ए और आ होते हैं।

(१५) भाव और कर्म में विहित यक् के स्थान में 'इअ' और 'इज्ज' आदेश होते हैं। जैसे — हसिअइ, हसिज्जइ (हस्यते)

विशेष—दृश और वच के भाव और कर्म में क्रमशः दीश और वुच्च रूप होते हैं। दीसइ (दृश्यते), वुच्चइ (उच्यते)

(१६) क्त्वा, तुम, तव्य और भविष्यत् काल में विहित प्रत्यय के पर में रहने पर धातु के अन्त्य अ के स्थान में 'ए'

और 'इ' होते हैं। जैसे —हसेऊण, हसीऊण (हसित्वा), हसेउ, हसिउ (हसितुम्), हसेअव्व, हसिअव्व (हसितव्यम्), हसेहिइ, हसिहिइ (हसिष्यति)

विशेष—उक्त नियम अदन्त धातुओं को छोड़ अन्य धातुओं में लागू नहीं होता। जैसे —काऊण (कृत्वा)

(१७) क्त प्रत्यय के पर में रहने पर धातु के अन्त्य 'अ' का 'इ' होता है। जैसे —हसिअ, पठिअ (हसितम्, पठितम्)

(१८) ण्यन्त धातु के णि के स्थान में अत्, एत्, आव् और आवे ये चार आदेश होते हैं।

(१९) भाव और कर्म अर्थ में विहित क्त प्रत्यय के पर रहने पर णि का लुक् और (पर्यायेण लुगभाव होने पर) 'अवि' आदेश होते हैं। णिच् के पर में रहने पर भ्रम धातु के स्थान में विकल्प से 'भमाड' आदेश होता है। जैसे —कारिअ, कराविअ (कारितम्), सोसिअ, सोसविअ (शोषितम्), तोसिअ, तोसविअ (तोषितम्), कारीअइ, कराविअइ, कारिज्जइ, कराविज्जइ (कार्यते), भमाडइ, भमाडेइ, भामेइ, भमावइ (भ्रामयति)

धात्वादेशसंबंधी नियम—

(२०) व्यञ्जनान्त धातु के अन्त्य व्यञ्जन के आगे अ आकर मिलता है। जैसे —हसइ (हसति) इत्यादि।

(२१) अकारान्त धातुओं को छोड़कर अन्य स्वरान्त धातु के अन्त में अकार का आगम विकल्प से होता है। जैसे —पाइ, पाअइ इत्यादि।

(२२) चि, जि, हु, श्रु, सु, लू, पू और धू धातुओं के

अन्त मे णकार ना आगम होता है और इनके दीर्घ स्वर का ह्रस्व होता है। जैसे —चिणइ, जिणइ, हुणइ, लुणइ इत्यादि।

(२३) भाव और कर्म अर्थ मे वर्तमान च्यादि धातुओ के अन्त मे द्विरुक्त व (व्व) का आगम विकल्प से होता है। जैसे —चिव्वइ, चिणिज्जइ (चीयते) इत्यादि।

(२४) भाव और कर्म अर्थ मे वर्तमान चित्र, हन और रण धातुओ के अन्त मे द्विरुक्त म (म्म) का आगम विकल्प से होता है एव यक का लोप होता है। हन यातु के विषय मे कर्ता अर्थ मे भी द्विरुक्त म (म्म) होता है। जैसे —चिम्मइ हम्मइ (चीयते, हन्यते)

विशेष—शौरसेनी मे यह नियम प्रवृत्त नहीं होता है।

(२५) भाव और कर्म अर्थ मे वर्तमान दुह, लिह, वह और रुध धातुओ के अन्त्य मे द्विरुक्त म (म्म अथवा किसी किसी के मत से ञ्म) विकल्प से होते हैं, यक का लोप भी होता है। जैसे —दुव्वइ, दुहिज्जइ (दुह्यते) इत्यादि।

(२६) भाव और कर्म मे वर्तमान गमादि धातुओ के अन्त्य वर्ण का द्वित्व विकल्प से होता और यक का लोप भी होता है। जैसे —गम्मइ, गमिज्जइ, हस्सइ, हसिज्जइ (गम्यते, हस्यते)

विशेष—नीचे लिखे धातु नीचे लिखे अनुसार विशेष नियमों का अनुसरण करते हैं —

सं० धातु	भावकर्म मे प्रा०	भावकर्ममे सं०
दह	डह्यइ, डहिज्जइ	दह्यते
वध	वह्यइ, वधिज्जइ	वध्यते
स + रुध	सरुब्भइ, सरुधिज्जइ	सरुध्यते
अनु + रुध	अण्णरुब्भइ, अण्णरुधिज्जइ	अनुरुध्यते

उ + रुध	उवरुधइ, उवरुधिज्जइ	उपरुध्यते
हृ	हीरइ, हरिज्जइ	ह्रियते
कृ	कीरइ, करिज्जइ	क्रियते
तृ	तीरइ, तरिज्जइ	तीर्यते
ज	जीरइ, जरिज्जइ	जीर्यते
अर्ज	विढप्पइ, विढविज्जइ, अजिज्जइ	अर्ज्यते
ज्ञा	णच्चइ, णज्जइ, जाणिज्जइ, णाइज्जइ	ज्ञायते
वि+आ+हृ	वाहिप्पइ, वाहरिज्जइ	व्याह्रियते
आ + रभ	आढप्पइ, आढवीअइ	आरभ्यते
स्निह	सिप्पइ	स्निह्यते
सिच	सिप्पइ	सिच्यते
ग्रह	घेप्पइ, गण्हिज्जइ	गृह्यते
स्पृश	स्त्रिप्पइ	स्पृश्यते

(२७) धातु के अन्त्य उवर्ण के स्थान मे अव आदेश होता है । जैसे —हु वातु का 'एहव' इत्यादि ।

(२८) धातु के अन्त्य ऋवर्ण के स्थान मे 'अर' आदेश होता है । जैसे —कृ का कर इत्यादि ।

विशेष—वृषादि के ऋकार का 'अरि' आदेश होता है । जैसे —वृष का वरिस कृष का करिस इत्यादि ।

(२९) धातु के इवर्ण और उवर्ण का गुण होता है । जैसे —नेइ (नयति), मोत्तुण (मुक्त्वा)

(३०) रुष आदि धातुओं के स्वर का दीर्घ होता है । जैसे —रूसइ, पूसइ, सीसइ, तूसइ, दूसइ, (रुष्यति, पुष्णाति शिनिष्टि, तुष्यति, दुष्यति)

(३१) धातुओं में स्वरों के स्थान में अन्य स्वर बाहुल्येन होते हैं। जैसे — हवइ,^१ हिवइ (भवति), चिणइ,^२ चुणइ (चिनोति), सदहण, सदहाण (श्रद्धधानम्), धावइ, धुवइ (धावति), रुवइ, रोवइ (रोदिति)

विशेष—बाहुल्येन कहने से—देइ, लेइ, विहेइ नासइ आदि प्रयोगों में नित्य ही धातु के एकस्वर के स्थान में दूसरा स्वर हुआ।

(३२) कुछ संस्कृत धातुओं के प्राकृत रूपान्तर नीचे लिखे अनुसार होते हैं —

संस्कृत धातु	प्राकृत रूपान्तर
कथ	वज्जर, पज्जर, उप्पाल, पिसुण, सघ, बोल्ल, चव, जम्प, सीस, साह तथा दु ख अर्थ में णिव्वर।
जुगुप्स	जुण, दुगुच्छ, दुगुच्छ
बुभुक्ष	णीख पत्त में बुहुक्ख
ध्या	भा
गै	गा
ज्ञा	जाण, मुण
उद् + ध्मा	धुमा
श्रद् + धा	दह (सदहइ)
पा (पीने में)	पिज्ज, डल्ल, पट्ट, घोट्ट
उद् + वा	ओरुम्वा, वसुआ
नि + द्रा	ओहीर, डल्ल

१ देखिए—भुवेर्होहुवदवा । हेम ४ ६०

२ देखिए—इसी पुस्तक का ६ २२

स + भावि	आसघ
उद् + नामि	उत्थघ (उत्थघ), उल्लाल, गुलुगुच्छ, उप्पेल (किसी किसी के मत से उस्याव भी)
प्र + स्थापि	पट्टव, पेण्डव, पट्टाव
वि + ज्ञपि	बोक्क, आवुक्क (हेमचन्द्र के अनुसार अवुक्क), विण्णव
अपि	अल्लिव, चच्चुप्प, पणाम, अप्प
यापि	जव, जाव
प्लावि	उम्वाल, पव्वाल, पाव
विकोशि(नामधातुण्यन्त)	पक्खोड (किसी ० के मत से परकोड)
रोमन्थि	उग्गाल (हेम० ओग्गाल) वग्गोल, रोमथ
कामि	णिट्ठव, काम
प्र + काशि	पुव्व, पआ (या) स
कम्पि	विच्छोल, कम्प
आ + रोहि (पि)	वल, रोव
दोलि	रद्धोल, दोल (मतान्तर से ढोल भी)
रञ्जि	राव, रञ्ज
घट + णिच्	परिवाड, घड
वेष्टि	परिआल, वेढ
क्री	किण
वि + क्री	क्के, क्किण, (विक्केइ, विक्कणइ)
भी	भा, बीह
आ + ली	अल्ली (अल्लियइ, अल्लीणो)
नि + ली	णिलीअ, णिलुक्क, णिरिग्घ, लुक्क, लिक्क, लिह्क्क, निलिज्ज
वि + ली	विरा, विलिज्ज

रु	रुञ्ज, रुण्ट, रव
श्रु	हण, सुण
धु	धूव, धुण
भू	हो, हुव, हव, हु, ^१ णिव्वड, ^२ हू, ^३ हुप्प ^४
कृ	कुण, कर णिआर, ^५ णिट्ठुह ^६ सदाण, ^७ वावम्फ, ^८ णिच्चोल या णिव्वोल, ^९ पयल्ल, ^{१०} पइल्ल, णीलुच्छ ^{११} कम्म, ^{१२} गुलल

१ विद्वर्जित प्रत्यय के आने पर भू के स्थान में हु आदेश विकल्प से होता है। हेम ४ ६१

२ पृथक् होना और स्पष्ट होना अर्थ में णिव्वड आदेश होता है। हेम ४ ६२

३ क्त प्रत्यय के पर में रहने पर हू आदेश होता है। हेम ४ ६४

४ प्रभु होना अर्थ में प्र उपसर्ग पूर्व में रहने पर भू के स्थान में हुप्प विकल्प से होता है। हेम ४ ६३

५ काणेक्षित अर्थ में। देखो—‘काणेक्षिते णिआर ।’ हेम ४ ६६

६ निष्ठम्भ और अवष्टम्भ अर्थों में क्रमशः णिट्ठुह और सदाण आदेश होते हैं। देखो—‘निष्ठम्भावष्टम्भे’ हेम ४ ६७

७ श्रम अर्थ में। देखो—‘श्रमे वावम्फ ।’ हेम ४ ६८

८ क्रोध से ओठ मलिन करने अर्थ में। देखो—‘म-युनौष्ठमालिन्ये’ हेम ४ ६९

९ शिथिल होना या लम्बा पडना अर्थ में। देखो—‘शैथिल्यलम्बने’ हेम ४ ७०

१० निष्पात और आच्छोटन में। हेम ४ ७१

११ क्षौरकर्म में। हेम ४ ७२

१२ चाटुकरण में। हेम ४ ७३

स्मृ	कर, कूर (हेमचन्द्र के मत से मर और शूर), भर, भल, लढ, विम्हर, सुमर, पयर, पम्हुह, सर
वि + स्मृ	पम्हुस, विम्हर, वीसर
वि + आ + हृ	कोक्क, पोक्क, वाहर
सुच	छड्डु, अवहेड, मेल्ल, (हेमचन्द्र के मत से उमिक भी) रे अव, णिल्लुञ्क्क, धसाड, णिव्वल ^१
चञ्च	वेहव, वेलव, जूख, उमच्छ
रच	रणह (हेम० के मत से उगह) अवह, विडविड्डु, उवहत्य ^२ सारव, समार और केलाय
मिच	सिञ्च सिम्प । पत्त मे सेअ
प्रच्छ	पुच्छ
गर्ज	बुक्क, ढिक ^३
राज	रग्घ, छह्य, सह, रीर, रेह, राय
प्र + स्तृ	पयल्ल, उवेल्ल महमह ^४
नि + स्तृ	नीहर (हेम० के अनुसार णीहर), नील, धाड, वरहाड । पक्ष मे नीसर
जागृ	जग्ग । पक्ष मे जागर
वि + आ + पृ	आजड्डु । पक्ष मे वावर

१ दु खमोचन अर्थ में । देखो—‘दु खे णिव्वल ।’ हेम० ४ ९२

२ उवहत्य से केलाय तक जितने आदेश हैं सम् और आह् पूर्वक रच के स्थान में विकल्प से होते हैं । देखो हेम० ४ ९५

३ वृषभ के गर्जन अर्थ में । देखो—‘वृषे ढिक ।’ हेम० ४ ९९

४ गन्ध प्रसार में ।

स + वृ०

आ + ह

प्र + ह

अव + तृ

शक

त्यज

वृ

पारि (पृ + णिच्)

फक्क

शलाघ

खच

पच

मरुज

पुञ्ज

लज्ज

उद् + विज

तिज

मृज

भञ्ज

व्रज

अनु + व्रज

अर्ज

युज

भुज

उप + भुज

साहर, साहट्ट । पक्ष मे सवर

सन्नाम । पक्ष मे आदर

सार । पक्ष मे पहर

ओह, ओरस । पक्ष मे ओअर

चय, तर, तीर, पार । पक्ष मे सक

चय

तर

पार

थक्क । किसी के मत से छक्क

सलह

वेअड । पक्ष मे खच

सोल्ल, पडल अथवा पडल्ल । पक्ष मे पअ

आउड्ड, णिउड्ड, वुड्ड, खुण

आरोल, वमाल । पक्ष मे पुज

जीह । पक्ष मे लज्ज

उन्निव

ओमुक्क

उग्गुस, लुळ्ळ, पुळ्ळ, पुस, फुस, पुस,

लुह, हुल, रोसाण

वेमय, मुसुमूर, मूर, सूर, सूड, विर, पवि-

रञ्ज, करञ्ज नीरञ्ज

वच्च

पडिअग्ग, अग्गुवच्च

विढव, अज्ज

जुञ्ज, जुज्ज, जुण

भुञ्ज, जिम, जेम कम्म, अण्ह, समाण, चड्ड

कम्मव

घट	गढ । पक्ष मे घड
स + घट	सगल । पक्ष मे सघड
स्फुट	फुट, फुड, मुर ^१
मण्ड	चिञ्च, चिञ्चिअ, चिञ्चिल्ल, रीड, टिविडिक्क
तुड	तोड, तुट, खुट, खुड, उखुड उल्लुक,
	णिलुक, लुक, उल्लूर
घूर्ण	घुल, घोल, घुल्ल, पहल्ल
नृत	नच्च
क्वथ	अट्ट, कढ
ग्रन्थ	गण्ठ
मन्थ	विरोल, घुमल
ह्लाद और ह्लाद	अवअन्छ
नि + सद	गुमज्ज
छिद	दुहाव, णिन्छल्ल, णिञ्मोड, णिव्वर,
	णिळ्ळर, ल्हर छिन्द
आ + छिद	ओअन्न, उहाल
विद	विज्ज
मृद	मल, मढ, परिहट्ट, खड्ड, चड्ड, मड्ड, पन्नाड
	अथवा परणाड
स्पन्द	चुनुचुलु, फन्द
निर् + पद	निव्वल, निप्पज्ज
वि, स + वद	पिअट्ट, बिलोट्ट, फस और पक्ष मे विसवय
शद	भड, पक्खोड
आ + ऋन्द	णीहर । पक्ष मे अक्कन्द
खिद	जूर, विसूर । पक्ष मे खिज्ज

रुध	उत्थङ्ग या उत्तङ्ग । पक्ष मे रुन्ध
नि + सिध	हक्क । पक्ष मे निसेह
क्रुध	जूर । पक्ष मे कुञ्भ
जन	जा, जम्म
तन	तड, तडु, तडुव, विरल्ल और तण
तृप्त	थिप्प
उप + सृप	अल्लिअ । पक्ष मे उवसप्प
स + तप	भक्ख । पक्ष मे सतप्प
वि + आप	ओअग्ग । पक्ष मे वाव
स + आप	समाण । पक्ष मे समाव
क्षिप	गलत्थ, अडुक्क, सोल्ल पेल्ल, णोल्ल, छुह, हुल, परी, धत्त । पक्ष मे सिव
उद् + क्षिप	गुल्लगुब्ब, उत्थघ, अल्लत्थ, उब्भुत्त, उस्सिक्क, हक्खुव । पक्ष मे उक्खिव
आ + क्षिप	णीरव । पक्ष मे अक्खिव
स्वप	कमवस, लिस, लोट्ट । पक्ष मे सुञ्ज
वेप	आयम्ब, आयम्भ । पक्ष मे वेव
वि + लप	भक्ख, वडवड । पक्ष मे विलव
लिप	लिम्प
गुप	विर, णड । पक्ष मे गुप्प
कृप	अवहाव ^१
प्र + दीप	तेअव, सन्दुम, सन्धुक्क, अम्भुत्त और पक्ष मे पलीव
लुभ	सभाव । पक्ष मे लुब्भ
क्षुभ	खडर, पड्डुह । पक्ष मे खुब्भ

आ + रभ	आरभ, आढव । पक्ष में आरभ
उप, आ + लभ	भख, पचार, वेत्तव । पक्ष मे उवात्मभ
जृम्भ	जम्भा ^१
नम	णिसुढ ^१ । पक्ष मे णव
वि + श्रम	णिव्वा । पक्ष मे वीसम
आ + क्रम	ओहाव, उत्थार, छुन्द । पक्ष मे अक्कम
भ्रम	तिरिटिल्ल, दुण्डुल्ल, ढण्डल्ल, चक्कम्म, भम्मड, भमड, भमाड, तलअण्ट, भण्ट, भम्प, भुम, गुम, फुम, फुस, दुम, दुस, परी, पर, भम अई, अइच्छ, अणुवज्ज, अवज्जस, उक्कुस, अक्कुस, पच्चडु, पच्छन्द, णिम्मह, णी, णीण, णीलुक्क, पदअ रभ, परिअल्ल, वोत्त, परिअल, णिरिणास, णिवह, अवसेह, अवहर, गच्छ, अहिपच्चुअ, ^३ अब्भिड, ^४ सगच्छ, उम्मत्थ, ^५ अब्भागच्छ, पलोद्द, ^६ पच्चागच्छ
गम	
शम	पडिसा, परिसाम । पक्ष मे सम
रम	सखुड्ड, खेड्ड, उब्भाव, किलिकिञ्च, कोट्ठुम, मोट्ठाय, णीसर, वेल्ल और पक्ष मे रम

१ वि पूर्व में रहने पर उक्त आदेश नहीं होते हैं । देखो—‘अवेर्जृम्भो जम्भा ।’ हेम० ४ १५७ में अवेरिणि किम्^२ केलिपसरो विअम्भइ ।

२ भाराकान्त कर्ता में ।

३ आब् पूर्वक गम का उक्त आदेश होता है ।

४ सम् पूर्वक गम का उक्त आदेश होता है ।

५ अभि और आब् पूर्वक गम का उक्त आदेश होता है ।

६ प्रति और आब् पूर्वक गम का उक्त आदेश होता है ।

पूर	अग्घाड, अग्घव, उद्दुम, अज्जुम, अहिरेम पक्ष मे पूर
त्वर	तुअर, जअड, तूर, ^१ तुर ^२
क्षर	खिर, ऋर, पग्गर पच्चड, णिच्चल, णिटडुअ
चल	चल्ल, चल
उच्छल	उत्थल
वि + गल •	थिप्प, णिटडुह
दल	विसट्ट, दल
वल	वम्फ, वल
मील	मिल्ल, मील
भ्रश	फिड, फिट्ट, फुड फुट्ट, चुक्क, भुल्ल पक्ष मे भस
नश	णिरणास, णिवह, अवसेह, पडिसा, सेह, अवहर । पक्ष मे नस्स
अव + काश	ओआस
स + दिश	अप्पाह
दृश	निअच्छ, पेच्छ, अवयच्छ, अवयज्झ, वज्ज, सव्वव, देक्ख, ओअक्ख, अवअक्ख, पुलोअ, निअ, अवआस
स्पृश	फास, फस, फरिस, छिव, छिह, आलुद्ध, आलिह
प्र + विश	रिअ । पक्ष मे पविस
प्र + मृष	पम्हुस

१ त्यादि और शतृप्रत्ययों के पर में रहने पर तूर होता है ।
जैसे —तूरई, तूरन्तो ।

२ त्यादि से भिन्न में तुर होता है । जैसे तुरिओ, तुरन्तो ।

प्र + मुष	पम्हुस
पिष	णिवह, णिरिणास, णिरिणज्ज, रोञ्च, चड्ड, पीस
भष	मुक्क, भस
कृष	कड्ड, साअड्ड, अञ्च, अणच्छ, आयञ्छ, आइञ्छ, करिस, अक्खोड ^१
गवेष	दुण्डुल्ल, ढण्ढोल, गमेस, घत्तु, गवेस
श्लिष	सामग्ग, अवयास, परिअत। पक्ष मे सिलेस
म्रक्ष	चोप्पड, मकय
काङ्क्ष	आह, अहिलद्ध, अहिलद्ध, वच्च, वम्फ, मह, सिंह, विलुम्प
प्रति + ईक्ष	मामय, विहीर, विरमाल। पच्च मे पडिक्ख
तक्ष	तच्छ, चच्छ, रम्प, रम्फ, तक्क
वि + कस	कोआस, वोसट्ट, विअस
हस	गुञ्ज, हस
स्त्रस	ल्हस, डिम्भ, सस
त्रस	डर, बोज्ज, वज्ज
नि + अस	णिम, गुम
परि + अस	पलोट्ट, पल्लट्ट, पल्हत्थ
विर् + श्वस	भल्ल, नीसस
उद् + लस	ऊसल, ऊसुम्म, णिल्लस, पुल्लआअ, गुञ्जोल्ल, आरोअ, उल्लस
भास	भिस, भास
प्रस	घिस, गस
अव + गाह	ओवाह (उगाह), ओगाह (उगाह)

१ म्यान से तलवार खींचने अर्थ में ।

आ + रह	चड, बलगग, आरुह
मुह	गुम्म, गुम्मड, मुळ्म
दह	अहिऊल, आलुङ्ग, डह
ग्रह	बिण्ह, हर, पङ्ग, निरुवार, अहिपच्चुअ, घेत् ^१
पच	वोत् ^२

(३३) ऋवा, तुम और तव्य के पर मे रहने पर रुद, भुज और मुच धातुओ के अन्त्य वर्ण का त होता है। जैसे —रोत्तूण, रोत्तु, रोत्तव्व, भोत्तूण, भोत्तु, भोत्तव्व, मोत्तूण, मोत्तु, मोत्तव्व।

(३४) भूत और भविष्यत् काल के प्रत्ययो एव त्त्वा, तुम और तव्य के पर मे रहने पर कृ धातु का 'का' आदेश होता है।

(३५) कुछ संस्कृत धातुओ के निम्नलिखित प्राकृत आदेश होते हैं —

संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत
इष	इच्छ	यम	जच्छ
अस	अच्छ	छिद	छिद
भिद	भिद	युव	जुव
बुध	बुह	गृध	गिह
क्रुध	कुह	सिध	सिह
सद	सड	पत	पड
वृध	वढ	वेष्ट	वेड
सवेष्ट	सवेल्ल	उद् + वेष्ट	उव्वेल्ल, उव्वेढ

(३६) खाद और धाव धातुओ के अन्त्य वर्ण का लुक् होता है। जैसे —खाइ, खाअइ, धाइ, धाअइ (खादति, धावति)।

१ २ केवल क्त्वा, तुम और तव्य के पर में रहने पर उक्त आदेश होता है।

(३७) मृज धातु के अन्त्य वर्ण का 'र' आदेश होता है ।
जैसे —सिरइ (मृजति)

(३८) शक आदि धातुओं के अन्त्य अक्षर का द्वित्व होता है । जैसे —सक्, लग्, कुप्, नस्स इत्यादि ।

(३९) क्त प्रत्यय के सहित तत्तद् सोपसर्ग अथवा निरुपसर्ग धातुओं के स्थान में नीचे लिखे अफुण्ण आदि आदेश होते हैं —

संस्कृत	प्राकृत
आक्रान्त	अफुण्णो
उत्कृष्टम्	उक्कोम
स्पष्टम्	फुड ^१
अतिक्रान्त	बोलीणो
विक्रमित	वीसहो (बोसहो)
रुग्ण	लुग्गो
नष्ट	विल्हक्को
प्रमृष्ट	पम्हट्टो
अर्जितम्	विढत्त
स्पृष्टम्	छित्त
त्यक्तम्	जढ
क्षिप्तम्	ह्वासिअ
आस्वादितम्	चक्खिअ
स्थापितम्	निमिअ इत्यादि



१ तुलना कीजिए—अवधी के 'फुरे कहत हई' से ।

सप्तम अध्याय

[कुछ विशिष्ट पद]

प्राकृत के विशेष विशेष पदों की सिद्धि के लिए विभिन्न प्राकृत व्याकरणों में विशेष विशेष नियम दिये गये हैं। हम यहाँ उनके विशेष रूप बतला रहे हैं। पादटिप्पणी में विशेष सूत्रों का भी यथासम्भन्ध उल्लेख किया जा रहा है।

प्राकृत	संस्कृत
अगणी, अग्गी ^१	अग्नि
अक्कोल्लो ^२	अक्कोल्ल
अङ्गारो ^३	अङ्गार
अच्छेर, अच्छरिअ अच्छरिअ, अच्छअर अच्छरिज्ज, अच्छरीअ	आश्चर्यम्
अलचपुर ^४	
अतसी ^५	अचलपुरम् अतसी

१ स्नेहाग्न्योर्वा । हेम० २ १०२

२ अक्कोल्ले ल । हेम० १ २००

३ पक्काङ्गारललाटे वा । हेम० १ ४७ से इ के अभाव पक्ष में ।

४ वल्ल्युत्तरपर्यन्ताश्चर्ये वा । हेम० १ १८ आश्चर्ये । हेम० २ ६६

अतो रिआइ-रिज्ज रीअ । हेम० २ ९७

५ अचलपुरे चलो । हेम० २ ११८

६ अतसी-सातवाहने ल । हेम० १ २११

अणिउत्तय, अणिउतय ^१	अतिमुक्तकम्
अन्तेउर ^२	अन्त पुरम्
अन्तेआरी ^३	अ तश्चारी
अन्नन्न, अन्नन्न ^४	अन्योन्यम्
अप्पा, अत्ता ^५	आत्मा
अम्ब ^६	आम्रम्
अज्जो ^७	आर्य
अहिमज्जू, अहिमज्जु, अहिमज्जू ^८	अभिमन्यु
अद्ध, अद्ध ^९	अर्द्धम्
अण ^{१०}	ऋणम्
अरुहो, अरहो, अरिहो ^{११}	अर्ह
अरुहतो, अरहतो, अरिहतो ^{१२}	
अलाऊ, अलाउ ^{१३}	अलावु

१ 'यमुनाचामुण्डा' हेम० १ १७८ क्वचिन्न भवति ।

अइमुतय, अइमुत्तय ।

२ ३ तोऽन्तरि । हेम० १ ६०

४ 'ओतोऽद्वान्योन्य' हेम० १ १५६

५ आत्मनि प । वर० ३ ४८

६ ताम्राप्ते म्ब । हेम० २ ५६ । ह्रस्व सयोगे । हेम० १ ८८

७ द्य-य्य-य्यौ ज । हेम० २ २४ । ह्रस्व सयोगे । हेम० १ ८४

८ अभिमन्यौ जजौ वा । हेम० २ २५

९ अद्धद्धिर्मूर्द्धोर्ध्वन्ते वा । हेम० २ ४१

१० ऋतोऽत् । हेम० १ १२६ ११ उच्चार्यति । हेम० २ १११

१२ उच्चार्यति । हेम० २ १११

१३ वालाव्वरण्ये लुक् । हेम० १ ६६

अडो, अवडो ^१	अवट
अवहड ^२	अवहतम्
अट्टरह ^३	अष्टादश
अट्टी ^४	अस्थि
अल्ल, अह ^५	आर्द्रम्
आफसो ^६	अस्पर्श
आओ, आअओ ^७	आगत
आइरिओ, आअरिओ ^८	आचार्य
आओज्ज ^९	आतोद्यम्
आढिओ ^{१०}	आहत
आमेलो ^{११}	आपीड
आढत्तो, आरद्धो ^{१२}	आरब्ध
आणाल ^{१३}	आलानम्

१ यावत्तावज्जीवितावर्तमानावटप्रावारकदेवकुलैवमेवेव । हेम० १ २२१

२ आर्ष प्रयोग है ।

३ हस्यानुष्टेष्टासदष्टे । हेम० २ ३४ । सखागद्देर । हे० १ २१९

४ ठोऽस्थिविसस्थुले । हे० २ ३२ ५ उदोद्वाद्रै । हेम० १ ८२

६ 'स्पृश फासफस ' हे० ४ १८०

७ व्याकरणप्राकारागते कगो । हेम० १ २०८

८ आचार्यै चोऽच्च । हेम० १ ७३

९ व द्य-याँज । हेम० २ २४ १० आहतो ढि । हेम० १ १४३

११ एत्पीयूषापीडविभीतककीदृशो दृशो । हेम० १ १०५ आपेलो, आवेडो ये दो रूप भी देखे जाते हैं । देखो—नीपापीडे मो वा । हेम०

१ २३४ आमेलो, आमेडो ।

१२ 'मलिनोभयशुक्तिछुत्तारब्ध ' हेम० १ १३८,

१३ आलाने लनो । हेम० २ ११७

आली ^१	आली
आत्तमाणो, आवत्तमाणो ^२	आवर्तमान
आसीसय (आसीसा) ^३	आशी
आलिट्ठ, आलिद्ध ^४	आशिलष्टम्
इङ्गालो ^५	अङ्गार
इङ्गुअ ^६	इङ्गुदम्
ईसि ^७	ईषत्
इआणीं	इदानीम् ^८
इत्तिअ	एतावत्
इड्ढी ^९	ऋद्धि
इक्खू ^{१०}	इक्षु
उच्चय ^{११}	उच्चैस्
उक्करो, उक्करो ^{१२}	उत्कर

१ ओदाल्या पङ्क्तौ । हेम० १ ८३ के अभाव में ।

२ 'तस्य वृत्तादौ । हेम० २ ३० । 'यावत्तावज्जीवितावर्तमान

हेम० १ २७१

३ गोणादय । हेम० २ १७४

४ आशिलष्टे लघौ । हेम० २ ४९

५ पक्काङ्गारललाटे वा । हेम० १ ४७

६ शिथिलेऽङ्गुदे वा । हेम० १ ८९

७ गौणस्य ' हेम० २ १२९ के अभाव पक्ष में ईसि होता है ।

८ यत्तदेतदोतोरित्तिअ एतल्लुक् च । हेम० २ १५६

९ इत्कपादौ । हे० १ १२८

१० प्रवासीक्षौ । हे० १ ९५ के अभाव में ।

११ उच्चैर्नोच्चैस्यैश्च । हेम० १ १५४

१२ 'बल्ल्युत्कर ' हेम० १ ५८

उच्छवो ^१	उत्सव
उत्थारो, उच्छाहो ^२	उत्साह
ऊसुओ, उच्छुओ ^३	उत्सुक
उम्बरो, उडम्बरो ^४	उदुम्बर
उल्लूपल, ओक्खल ^५	उल्लखलम्
उव्वीढ, उव्वूढ ^६	उद्व्यूढम्
उवरि ^७	उपरि
उव्वभ, उव्वि ^८	उद्वर्धम्
उसहो ^९	ऋषभ, वृषभ
उज्जू ^{१०}	ऋजु
उऊ, उट्टू ^{११}	ऋतु
उल्ल ^{१२}	आर्द्रम्
उल्लेइ ^{१३}	आर्द्रयति
ऊसारो ^{१४}	आसार

१ सामर्थ्यात्सुकोत्सवे वा । हेम० २ २२

२ वोत्साहे थो हश्च २ । हेम० २ ४८

३ सामर्थ्यात्सुकोत्सवे वा । हेम० २ २२

४ 'दुर्गादेव्युदुम्बर' हेम० १ २७०

५ 'न वा मयूख' हेम० १ १७१ ६ ईवोद्व्यूढे । हेम० १ १२०

७ वोपरौ । हेम० १ १०८ अवरि भी होता है । पकाव ।

८ वोर्द्धे । हेम० २ ५९

९ उदत्वादौ । हेम० १ १३१ । वृषभे वा । हेम० १ १३३

१० ११ उदत्वादौ । हेम० १ १३१ । रि का अभाव । देखो
हेम० १ १४१

१२-१३ उदोद्धाद्रौ । हेम १ ८२

१४, ऊद्धारो । हेम० १ ७६

उच्छृ ^१	इक्षु
ऊसवो ^२	उत्सव
एकारो ^३	अयस्कार
एङ्गि, एत्ताहे ^४	इदानीम्
एरिसो ^५	ईदृश
एआरह	एकादश
एकसि, एकसिअ, एकईआ, एगआ ^६	एकदा
एरावणो ^७	ऐरावत
ऐ ^८	आयि
ओल्लेइ ^९	आर्द्रयति
ओसढ, ओसह, ^{१०}	औषधम्
ओली ^{११}	आली (लि)
कउह, ककुध ^{१२}	ककुदम्
ककुहा ^{१३}	ककुप्
कण्डुअण ^{१४}	कण्डूयनम्

१ प्रवामीक्षौ । हेम० १ ९५

२ छ का अभाव । देखो-सामर्थ्योत्सुकोत्सवे वा । हेम० २ २२

३ 'स्थविरविवक्त्रिलायस्कार' हेम० १ ८

४ एङ्गि एताहे इदानीम् । हेम० २ १३४

५ एत्पीयूष ' १ १०५

६ बलाद् सि मित्र इत्या । हेम० २ १ २

७ ऐत एत् । हेम० १ १४८ ८ अयौ वत् । हेम० १ १८९

९ उदोद्वाद् । हेम० १ ८२ १० औषधे । हेम० १ २२७

११ ओताल्या पत्तौ । हेम० १ ८३ १२ ककुदे ह । हे० १ २२५

१३ ककुभो ह । हेम० १ २१ । 'कउहा' भा देखा जाता है ।

१४ उर्नहलूमत्फण्डूयवातूले । हेम० १ १२१

कइमे ^१	कतम
कइवाह, कइअव ^२	कतिपयम्
कडण, कअण ^३	कदनम्
कलम्बो, कअम्बो ^४	कदम्ब
कणट्टिअ ^५	कदर्थितम्
कअल, केल, केली, करली ^६	कदलम्, कदली
कण्डलिआ ^७	कन्दरिका
कमधो, कअवो ^८	कबन्ध
कणवीरो ^९	करवीर
कणेरू ^{१०}	करेणू
कणरो, कणिणारो ^{११}	कर्णिकार
काउओ ^{१२}	कामुक
काहावणो, कहावणो ^{१३}	कार्षापण

१ मध्यमकतमे द्वितीयस्य । हेम० १ ४८

२ डाहवौ कतिपये । हेम० १ २५०

३ दशन दष्ट दग्ध दोला दण्ड दर दाह दम्भ दर्भ-कदन दोहदे दो वा
ड । हेम० १ २१७

४ कदम्बे वा । हेम० १ २२२ ५ कदर्थिते वा । हेम० २ २२४

६ कदल्पामद्भुमे । हेम० १ २२० । वा कदले । हेम० १ १०७

७ कन्दरिकाभिन्दिपाले ण्ड । हेम० २ ३८

८ कबन्धे मयो । हेम० १ २३९ ९ करवीरे ण । हेम० १ २५३

१० करेणूवाराणस्यो । हेम० २ ११९

११ वेत कर्णिकार । हेम० १ १ ८ कर्णिकारे वा । हेम० २ ९५

१२ 'यमुनाचासुग्डा' हेम० १ १७८

१३ कार्षापणे । हेम० २ ७१ हव सयोगे । हेम० १ ८४

कालास, कालाअस ^१	कालायसम्
कम्हारो ^२	काश्मीर
कसुअ, केसुअ, किसुअ, किमुअ ^३	किशुकम्
करिआ ^४	क्रिया
किसल, किसलअ ^५	किसलयम्
किलिण्ण ^६	क्लिन्नम्
केरिसो ^७	कीदृश
कोहल, कोऊहल, कोउहल्ल, कुऊहल ^८	कुतूहलम्
कुब्ज ^९ (पुष्प अर्थ मे)	कुब्जम्
कोहण्डी, कोहली, कोहडी ^{१०}	कुष्माण्डी
कोप्पर ^{११}	कूर्परम्
किञ्ची ^{१२}	कृत्ति

- १ 'किसलयकालायस' हेम० १ २६९
 २ आत्काश्मीरे । हेम० १ १००
 ३ किशुके वा । हेम० १ ८६ । मासादेवा । हेम० १ २९
 ४ 'हृश्रीहाकृत्स्न' हेम० २ १०४
 ५ 'किमलयकालायस' हे० १ २६९ । ९ लात् । हेम० २ १०६
 ७ दृश क्तिप्क्सक । हेम० १ १४२ । 'एत् पीयूषापीड' हे० १ १०५
 ८ कुतूहले वा ह्रस्वश्च । हेम० १ ११७ । 'न वा मयूख' हेम० १ १७१ । हेम० २ ९९
 ९ कुब्जकर्परकाले क खोऽपुष्पे । हे० १ १८१ अपुष्पे पर्युदास से ख का अभाव ।
 १० 'ओत्कुष्माण्डी' हेम० १ १२४ । 'कुष्माण्ड्या' हेम० २ ७०
 ११ ओत्कुष्माण्डीतूणीरकूर्पर' हेम० १ १२४
 १२ कृत्तिचत्वरे च । हे० २ १२

किस, कस ^१	कुशम्
कसिणो, कसणो (रग मे) } _२	कृष्ण
कण्हो (वासुदेव मे)	
कसिण (गो) ^३	कृत्स्नम्
किसर, केसर ^४	केसरम्
केढवो ^५	कैटभ
कुन्छेअअ, कौच्छेअअ ^६	कौक्षेयकम्
कन्दो ^७	स्कन्द
रन्दो ^८	स्कन्द
खणो (समय मे) ^९	क्षण
खप्पर ^{१०}	कर्परम्
खमा ^{११}	क्षमा, क्षमा
खभो ^{१२}	स्तम्भ
खित्त ^{१३}	क्षितम्

- १ इत्तुपादौ । हेम० १२८ तथा ऋतोऽत् । हेम० १ १२
 २ कृ णो वणं वा । हेम० २ ११० ३ 'हृश्रीही' हेम० २ १०४
 ४ 'एत इद्वा वेदना' हेम० १ १४६
 ५ केटमे भो व । हेम० १ २४० एत एत् । हेम० १ १४८
 'सटाशकटकैटमे' १ १९५
 ६ कौक्षेयके वा । हेम० १६१ ७ शुष्कस्कन्दे वा । हेम० २ २
 ८ ष्कक्योर्नाम्नि । हेम० २ ४ पक्ष में 'कन्दो' होगा ।
 ९ क्ष ख 'हेम० २ ३ १० 'कुब्जकर्पर' 'हेम० १ १६१
 ११ क्षमाया कौ । हेम० २ १८
 १२ स्तम्भे स्तो वा । हेम० २ ८ पक्ष में थम्भो होगा ।
 १३ क्ष=ख । देखो—हेम० २ ३

खारा ^१	स्थाणु
खासिओ, खइओ ^२	खचित
खुडिओ, खण्डिओ ^३	खण्डितम्
खल्लीडो ^४	खल्वाट
खासिअ ^५	कासितम्
खीलओ ^६	कीलक
खुजो ^७	कुञ्ज
खेडओ ^८	क्ष्वेटक
खेडिओ ^९	स्फेटिक
गेदुअ ^{१०}	कन्दुक
गग्गर ^{११}	गद्गदम्
गड्डो ^{१२}	गर्त
गड्डहो, गदहो ^{१३}	गर्दभ
गब्भिण ^{१४}	गभितम्

-
- १ स्थाणावहरे । हेम० २ ७ २ 'खचित' हेम० १ १९३
 ३ 'वन्द्रखण्डिते' हेम० १ २३
 ४ ई स्त्यानखल्वाटे । हेम० १ १७४
 ५ कुञ्जकर्परकीले 'हेम० १ १८१ मे देखो—आर्षेऽन्यत्रापि
 खासिअ ।
 ६, ७ 'कुञ्जकर्परकीले' हेम० १ १८१
 ८, ९ क्ष्वेटकादौ । हेम० २ ६
 १० एच्छुय्यादौ । हेम० १ ५७ तथा 'मरकतमदकले' हेम०
 १ १८२
 ११ सख्यागद्गदे र । हेम० १ २१६
 १२ गते ड । हेम० २ ३५ १३ गर्दभे वा । हेम० २ ३७
 १४ गर्भितोतिमुक्ते ण । हेम० १ २०८

गडओ ^१	गवय
गभिरीअ	गाम्भीर्यम्
गेह्य ^२	ग्राह्यम्
गलोई ^३	गुडूची
गह्वई ^४	गृहपति
गोला, गोआवरी ^५	गोदा, गोदावरी
गोणो, गडओ, गावो, } गडआ, गावीओ, गावी } ^६	गौ
गारव, गडरव ^७	(पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग मे)
घर ^८	गौरवम्
चविलो, चविडो ^९	गृहम्
चविडा, चवेडा ^{१०}	चपेट
चदिमा ^{११}	चपेटा
चाउडा ^{१२}	चन्द्रिका
	चामुण्डा

१ गवये व । हेम० १ ५४

२ एद् ग्राह्ये । हेम० १ ७८ ३ 'ओत्कुष्माण्डी' हेम० १ १२४

४ गृहस्य घरोऽपतौ । हेम० २ १४४ में देखो—अपतौ पर्युदास ।

५ गोला, गोआवरी इति तु गोदागोदावरीभ्या सिद्धम् । देखो—
गोणादय । हेम० २ १७४

६ गव्यउ आग्र । हेम० १ १५८ तथा गोणादय । हेम० २ १७४

७ आच्च गौरवे । हेम० १ १९३

८ गृहस्य घरोऽपतौ । हेम० २ १४४ पा० घरो ।

९, १० चपेटापाटौ वा । हेम० १ १९८ तथा 'एत इद्वा वेदना
चपेटा' हेम० १ १४६

११ चन्द्रिकाया म । हेम० १ १८५

१२ 'यमुनाचामुण्डा' हेम० १ १७८

चइत्त ^१	चै यम्
चोरिञ्ज ^२	चौर्यम्
चोग्गुणो चउग्गुणो ^३	चतुर्गुण
चोढो (तथो), चउढो (तथो) ^४	चतुर्थ
चोढी (तथी), चउढी (तथी) ^५	चतुर्थी
चोदह, चउदह ^६	चतुर्दश
चोदसी चउदसी ^७	चतुर्दशी
चोव्वार, चउव्वार ^८	चतुर्वारम्
चच्चर ^९	चत्वरम्
चिहुर ^{१०}	चिकुर
चुच्छ ^{११}	तुच्छम्
चिलाओ ^{१२}	किरात
चिन्ध, चिल्ल ^{१३}	चिह्नम्
छणो (उत्सव मे) ^{१४}	क्षण

१ त्योऽचैत्ये । हेम० २ १३ के अभाव में ।

२ 'म्याद्गव्य' हेम० २, १०७

३ न वा मयूख 'हेम० १ १७१

४, ५ 'न वा मयूख' हेम० १ १७१ तथा स्त्यानचतुर्थीर्धे वा ।
हेम० २ ३३

६, ७, ८ 'न वा मयूख' हेम० १ १७१

९ कृत्तिचवरे च । हेम० २ १२

१० निकषम्फटिकचिकुरे ह । हेम० १ १८

११ तुच्छे तश्चछौ । हेम० १ २०४

१२ किराते च । हेम० १ १८३ तथा हरिद्रादौ ल । हेम० १ २४४.

१३ चिह्ने न्वो वा । हेम० २ ५० १४ क्षण उत्सवे । हेम० २ २०

छमा (पृथिवी मे) ^१	क्षमा, दमा
छद ^२	क्षितम्
छीअ ^३	क्षुतम्
छुहा ^४	क्षुवा
छुत्त, छिक् ^५	क्षुप्तम्
छालो (ली) ^६	छाग (गी)
छाहा (अनातप मे) ^७	छाया
छाआ (कान्ति मे) ^८	
छउम, छम्म ^९	छद्म
छड्डिओ ^{१०}	छदिकः
छुच्छ ^{११}	तुच्छम्
छमी ^{१२}	शमी
छमुहो ^{१३}	षण्मुख
छट्टो ^{१४}	षष्ठ
छट्टी ^{१५}	षष्ठी

- १ क्षमाया कौ । हेम० २ १८ २ 'वृक्षक्षिप्तयो ' हेम० २ १२७
 ३ ई क्षुते । हेम० १ ११२
 ४, ५ छोऽद्यादौ । हेम० २ १७ तथा क्षुधो हा । हेम० १ १७
 ६ छागे ल । हेम० १ १९१
 ७ छायाया होऽमान्तौ वा । हेम० १ २४९
 ८ पञ्चछद्ममूर्खद्वारे वा । हेम० २ ११२
 ९ 'समर्द्ध ' हेम० २ ३६ १० तुच्छे तश्चछौ । हेम० १ २०४
 ११ 'षट्शमी ' हेम० १ २६५
 १२ 'बलणतो ' हेम० १ २५ तथा हेम० १ २६५
 १३, १४ 'षट्शमीशाव ' हेम० १ २६५

छत्तिवण्णो, छत्तवण्णो ^१	सप्तपर्ण
छिरा ^२	शिरा
छुहा ^३	सुधा
छिहा ^४	स्पृहा
जडिलो ^५	जटिल
जम्मण, जम्मो ^६	जन्म
जिम्भा, जीहा ^७	जिह्वा
जुण्ण, जिण्ण ^८	जीर्णम्
जीअ ^९	जीवितम्
जीविअ ^१	जीवितम्
जीआ ^{११}	ज्या
जह, जहा ^{१२}	यथा
जउणा ^{१३}	यमुना

- १ सप्तवर्णे वा । हेम० १ ४९ तथा हेम० १ २६५
 २, शिराया वा । हेम० १ २६६ पक्ष में 'शिरा' ।
 ३ षट्शमीशावसुधासप्तपर्णेष्वादेश्छ । हेम० १ २६५
 ४ स्पृहायाम् । हेम० २ २३
 ५ जटिले जो फो वा । हेम० १ १९४
 ६ न्मो म । हेम० २ ६१ तथा 'अन्त्य' हेम० १ ११
 ७ ईजिह्वा । हेम० १ ९२ तथा ह्यो भो वा । हेम० २ ५७
 ८ उज्जर्णे । हेम० १ १०२ जुण्णसुरा । जिण्णे भोज्जण मत्ते
 ९, १० 'यावत्तावज्जीविता' हेम० १ २७१
 ११ ज्यायामीत् । हेम० २ ११५
 १२ 'वाव्ययोत्खाता' हेम० १ ६७
 १३ 'यमुनाचामुद्धा' हेम० १ १७८

जा, जाव, जित्तिअ ^१	यावत्
जहुट्टिलो, जहिट्टिलो ^२	युधिष्ठिर
झडिलो ^३	जटिल
झओ ^४	ध्वज
झुणि ^५	ध्वनि
टगर ^६	तगरम्
टसरो ^७	त्रसर
ठमो ^८	स्तम्भ
ठीण ^९	स्त्यानम्
ठहो ^{१०}	स्तब्ध
डोलो ^{११}	दोल
डोहलो ^{१२}	दोहद
डाहो ^{१३}	दाह

१ 'यावत्तावज्जीवितावर्तमाना' हेम० १ २७१ तथा हेम० १ ११

२ युधिष्ठिरे वा । हेम० १ ९९ तथा उतो मुकुलादिष्वत् । हेम०

१ १०७

३ जटिले जो झो वा । हेम० १ १९४

४ त्वध्वद्वधा चछजझा कचित् । हेम० २ १५

५ 'त्वध्वद्वधा' हेम० २ १५ तथा ध्वनिविष्वचोः । हेम० १ ५२

६, ७ तगरत्रसरतूवरे ट । हेम० १ २०५

८ थठावस्पन्दे । हेम० २ ९

९ ई स्त्यानखत्वाटे । हेम० १ ७४

१०, ११ स्तब्धे ठहौ । हेम० २ ३९

१२, १३ दशन दष्ट दग्ध दोला दण्ड दर दाह दम्भ दर्भ कदन दोहदे दो

वा ड । हेम० १ २१७

डटो ^१	दष्ट
डसन ^२	दशनम्
डरो (भय मे) ^३	दर
डभो ^४	दम्भ
डडो ^५	दण्ड
डडू (डडो) ^६	दग्धम्
णिवुत्त, णिउत्त, णिअत्त ^७	निवृत्तम्
णिसीढो, णिसीहो ^८	निशीथ
णिच्चलो ^९	निश्चल
गुमण्णो, णिसण्णो ^{१०}	निषण्ण
णडाल, णिडाल, णलाड ^{११}	ललाटम्
तविअ, तत्त ^{१२}	तप्तम्
तम्ब ^{१३}	ताम्रम्
तम्बोल ^{१४}	ताम्बूलम्
ता, ताव, तित्तिअ ^{१५}	तावत्

- १ ० ३ ४ ५ ६ वही ७ निवृत्तगुन्दारके वा । हेम० १ १३२
 ८ निशीथपृथिव्योर्वा । हेम० १ २१८
 ९ दु खे णिच्चल । हेम० ४ ९२ की पादटिप्पणी ५ देखो
 १० उमो निषण्णे । हेम० १ १७४
 ११ ललाट लडो । हेम० २ १२३ तथा पक्काङ्गारललाटे वा । हेम०
 १ ४७
 १२ शर्षतप्तत्रजे वा । हेम० २ १०५
 १३ ह्रस्व सयोगे । हेम० १ ८४ तथा ताम्राग्ने म्ब । हेम० २ ५६
 १४ 'ओत्कुष्माण्डी ' हेम० १ १२४
 १५ 'यावत्तावज्जीविता ' हे० १ २७१ तथा 'यत्तदेतदो ' हेम०
 २ १५६ एव १ ११

तित्तिरो ^१	तित्तिरि
तिरिच्छी ^२	तिर्यक्
तिक्ख, तिह् ^३	तीक्ष्णम्
तेह, तूह, तित्थ ^४	तीर्थम्
तोण, तूण ^५	तूणम्
तोणीर ^६	तूणीरम्
तूर ^७	तूर्यम्
तेरह ^८	त्रयोदश
तेवीसा ^९	त्रयोविंशति
तेत्तीसा ^{१०}	त्रयस्त्रिंशत्
तीसा ^{११}	त्रिंशत्
तेवण्णा ^{१२}	त्रिपञ्चाशत्
तबो ^{१३}	स्तम्ब

- १ तित्तिरौ र । हेम० १ ९० २ तिर्यक्स्तिरिच्छ । हे० २ १४३
 ३ 'सूक्ष्मश्च' हेम० २ ७५ तथा तीक्ष्णे ण । हेम० २ ८२
 ४ तीर्थे हे । हे० १ १०४ ह्रस्व सयोगे । हेम० १ ८४ तथा तु ख-
 दक्षिणतीर्थे वा । हेम० २ ७२
 ५ स्थूणातूरौ वा । हेम० १ १२५
 ६ 'ओत्कुष्माण्डी' हेम० १ १२४
 ७ 'ब्रह्मचर्यतूर्य' हेम० २ ६३
 ८ एत्रयोदशादौ ' हेम० १ १६५ सत्यागद्वदे र । हेम०
 १ २१९ तथा हेम० १ २६२
 ९, १० वही ।
 ११ विशत्यादेर्लुक् । हेम० १ २८ १२ गोणादय । हेम० २ १७४
 १३ 'स्तस्य थो' हेम० २ ४५ के असमस्तस्तम्बे इति पर्युदास
 से तबो होता है ।

तवो ^१	स्तव
थेणो, यूणो ^२	स्तेन
थभो ^३	स्तम्भ
थवो ^४	स्तव
थी ^५	स्त्री
थेरो ^६	स्थविर
थीण ^७	स्त्यानम्
थाणू ^८	स्थाणु
थोणा, थूणा ^९	स्थूणा
थोर, थूल (थुल्लो) ^{१०}	स्थूलम्
थेरिअ ^{११}	स्थैर्यम्
दुवरो ^{१२}	तूवर
दाढा ^{१३}	दष्ट्रा

- १ स्तवे वा । हेम० २ ४६ से थ के अभाव में ।
- २ उ स्तेने वा । हेम० १४७ ३ 'स्तस्य थो ' हेम० २ ४५
- ४ स्तवे वा । हेम० २ ४६
- ५ स्त्रिया इत्थी । हेम० २ १३० से 'इत्थी' के अभाव में ।
- ६ स्थविरविचकित्तायस्कारे । हेम० १ १६६
- ७ स्त्यानचतुर्थी वा । हेम० २ ३३ से ठ के अभाव में थीण होता है । तथा ^८ स्त्यान खल्वाटे । हेम० १ ७४
- ८ स्थाणावहेर । हेम० २ ७ से हर अर्थ में ख के अभाव में थाणु होता है । ९ स्थूणातूणो वा । हेम० १ १२५
- १० ल्लो, थोरो (थेरो A) सेवादौ वा । हेम० २ ९९
- ११ स्याद्भन्वच्चैत्यचौर्यमेषु यात् । हेम० २ १०७
- १२ हेमचन्द्र के अनुसार दुवरो रूप नहीं होता है ।
- १३ दष्ट्राया दाढा । हेम० २ १३९

दड्ड ^१	दग्धम्
दडो ^२	दण्ड
दिण्ण ^३	दत्तम्
दण्णवहो, दण्णअ वहो ^४	दनुजवध
दभो ^५	दम्भ
दरो (अल्प मे) ^६	दर
दस, दह ^७	दश
दसण ^८	दशनम्
दहमुहो, दसमुहो ^९	दशमुख
दट्टो ^{१०}	दष्ट
दाहिणो, दक्खिणो ^{११}	दक्षिण
दाहो, दाघो ^{१२}	दाह
दिवहो, दिवसो ^{१३}	दिवस

- १ 'दशनदष्टदग्ध' हेम० १ २१७ से ड के अभाव में । २ वही ।
 ३ इ स्वप्नादौ । हेम० १ ४६ तथा पञ्चाशत्पञ्चदशदत्ते ।
 हेम० २ ४३ ४ लुग्भाजनदनुज 'हेम० १ २९७
 ५ दशनदष्टदग्ध' हेम० १ २१७, से ड के अभाव में ।
 ६ वही । ७ दशपाषाणे ह । हेम० १ २६२
 ८ दशनदष्टदग्ध 'हेम० १ २१७ से ड के अभाव में ।
 ९ श का वैकल्पिक ह । देखो—दशपाषाणे ह । हेम० १ २६२
 १० हेम० १ २१७ के अभाव में ।
 ११ वैकल्पिक ह । दु खदक्षिणतीर्थे वा । हेम० २ ७२ तथा दीर्घ—
 दक्षिणे हे । हेम० १ ४५
 १२ हो धोऽनुस्वारात् । कचिदननुस्वारादपि-दाघो । पक्षे दाहो ।
 हेम० १ २९४ ।
 १३ स का वैकल्पिक ह । दिवसे स । हेम० १ १६३

दिग्धो, दीहो ^१	दीर्घ
दुह, दुक्ख ^२	दु खम्
दुअल्ल, दुऊल, दुगुल्ल ^३	दुकूलम्
दुग्गावी, दुग्गा एवी ^४	दुर्गादेवी
दूह्वो, दुह्वो ^५	दुर्भग
दुक्कड ^६	दुष्कृतम्
दुहिआ ^७	दुहिता
दरिओ ^८	दृष्ट
दिअरो, देअरो ^९	देवर
देउल, देवउल ^{१०}	देवकुलम्
देव्व, दइव्व, दइव्व ^{११}	दैवम्
दोहलो ^{१२}	दोहद

- १ हेम० २ ७९ तथा दीर्घे वा । हेम० २९१
- २ वैकल्पिक ह । दु खदक्षिणतीथ वा । हेम० २ ७
- ३ ऊकार का वैकल्पिक अन्व और लकार मा द्वि व । देखो-दुकूले वा लश्च द्वि । हेम० १ ११९ । आर्ष प्राकृत में दुगुल्ल होता है ।
- ४ दुर्गादेव्युदुम्बरपादपतनपादपीठेऽत्तर्द । हेम० १ २७०
- ५ लुकि दुरो वा । हेम० १ ११५ और ऊत्वे दुर्भगमुभगे व । हेम० १ १९२
- ६ प्रत्यादौ ड । आपे दुक्कड । हेम० १ २००
- ७ 'दुहितृभगिन्यो ' हेम० २ १२६ इससे 'यूआ' आदेश के अभाव में ।
- ८ अरिर्हते । हेम० १ १४४
- ९ एत इद्वा वेदनाचपेठादेवरकेमरे । हेम० १ १४०
- १० यावत्तावत् ' हेम० १ २७१ ११ एच्च देवे । हेम० १ १५३
- १२ प्रदीपिदोहदे ल । हेम० १ २२१

दोला ^१	दोला
देर, दुआर, दार, दुवार ^२	द्वारम्
दिही ^३	धृति
धूआ ^४	दुहिता
धगुह, धग ^५	धनु
धत्ती, धाई, धारी ^६	धात्री
धिइ	धिक्
विरत्थु ^७	धिगस्तु
धिई ^८	धृति
धिटो, धटो ^९	धृष्ट
धट्जणो ^{१०}	धृष्टद्युम्न
धीर, धिज्ज ^{११}	धैर्यम्
नत्तिओ, नत्तुओ ^{१२}	

१ 'दशनदष्टदग्धदोला' हेम० १ २१७ से ड के अभाव में ।

२ द्वारे वा । हेम० १ ७९ पद्मछत्रमूर्खद्वारे वा । हेम० २ ११२.

३ धृतेर्दिहि । हेम० २ १३१

४ धूआ दुहिआ । 'दुहितृभगिन्यो' हेम० २ १०

५, धनुषो वा । हेम० १ २०

६ धात्र्याम् । हे० २ ८१ ह्रस्व से पहले ही रलोप होने पर धाई और पक्ष में वारी ये रूप होते हैं ।

७ गोणादय । हेम० २ १७४

८ त्रतेर्दिहि । हेम० २ १३१ इससे 'दिहि' के अभाव में ।

९ मस्तृणस्तृणाङ्कस्तृण्यङ्गवृष्टे वा । हेम० १ १३० तथा हेम० २ ३८.

१० धृष्टद्युम्ने ण । हेम० २ ९४

११ ईवैयै । हेम० १ १५५ तथा धैर्ये वा । हेम० २ ९४

१२ 'इदुतौपृष्ठवृष्टि' हेम० १ १३७

नोहलिआ ^१	नवफलिका
निहसो ^२	निकष
निम्बो ^३	निम्ब
निसढो ^४	निषध
नेड्ड, नीड ^५	नीडम्
नीमो, नीवो ^६	नीप
नीमी, नीवी ^७	नीवि
नेरइओ ^८	नैरयिक
नारइओ ^९	नारकिक
नेउर, निउर, नूउर ^{१०}	नूपुरम्
नापिओ ^{११}	नापित
निम्भरो ^{१२}	निर्भर

१ ओत्पूतर ' हेम० १ १७०

२ निकषस्फटिकचिकुरे ह । हेम० १ १८६

३ निम्बनापिते लण्ह वा । हेम० १ २३० इसके अभाव में ।

४ निषधे धो ढ । हेम० १ २२६

५ नीडपीठे वा । हेम० १ १०६

६ नीपापीडे मो वा । हेम० १ २३४

७ स्वप्ननीव्योर्वा । हेम० १ २५९,

८ ९ कथ नेरइओ, नारइओ १ नैरयिक-नारकिकशब्दयोर्भविष्यति ।

देखो—द्वारे वा । हेम० १ ७९

१० इदेतौ नूपुरे वा । हेम० १ १०३

११ निम्बनापिते लण्ह वा । हेम० १ २३० से ण्ह के अभाव में ।

तथा हेम० १ १७७

१२ द्वितीयतुर्ययोरुपरि पूर्व । हेम० २ ९०

नमोक्कारो ^१	नमस्कार
नीचञ्च ^२	नीचै
नावा ^३	नौ
पक्क, पिक्क ^४	पक्कम्
पम्ह ^५	पद्म
पण्णरह ^६	पञ्चदश
पञ्चावण्णा, पण्णण्णा ^७	पञ्चपञ्चाशत्
पण्णास ^८	पञ्चाशत्
पडाया ^९	पताका
पट्टण ^{१०}	पत्तनम्
पाइक्को, पाआई ^{११}	पदाति
पोम्म, पउम, पम्म ^{१२}	पद्मम्
पहो ^{१३}	पन्था

- १ 'नमस्कार' हेम० १ ६२
 २ उच्चैर्नीचैस्यै अ । हेम० १ १५४
 ३ नाव्याव । हेम० १ १६४
 ४ पक्काङ्गारल्लटे वा । हेम० १ ४७
 ५ पद्म श्म ष्म स्म ह्या म्ह । हेम० २ ७४
 ६ पञ्चाशत्पञ्चदशदत्ते । हेम० २ ४३
 ७ गोणादय । हेम० २ १७८ ८ पञ्चाशत्पञ्चदशदत्ते । २ ४३
 ९ प्रत्यादौ ड । हेम० १ २०६
 १० 'वृत्तप्रवृत्त' हेम० २ २९
 ११ 'मलिनोभय शुक्ति' हेम० २ १३८
 १२ ओत्पद्मे । हेम० १ ६१ 'पद्म छद्म' हेम० २ ११०
 १३ 'पथि पृथिवी' हेम० १ ८८

परोष्पर ^१	परस्परम्
पारक्क, पारिक्क, पारकेर, पाराकेर ^२	परकीयम्
पेरन्तो, पज्जन्तो ^३	पर्यन्त
पल्लट्ठ, पल्लत्थ ^४	पर्यस्तम्
पल्लाण, पडायाण ^५	पर्याणम्
पलिअ, पलिल ^६	पलितम्
पल्लङ्को, पलिअको ^७	पल्यङ्क
पाअवडण, पावडण ^८	पादपतनम्
पावीड, पाअवीड ^९	पादपीठम्
पहिहो ^{१०}	पान्थ (पथिक)
पारद्धी ^{११}	पापद्धि

१ 'नमस्कारपरस्परे' हेम० १ ६२

२ 'परराजभ्यां' हेम० २ १४८

३ एत पर्यन्ते । हेम० २ ६५

४ पर्यस्ते यठौ । हेम० २ ४७ तथा 'पर्यस्तपर्याण' हेम० २ ६८

५ पर्याणो ङा वा । हेम० १ २५२ 'पर्यस्तपर्याण' हेम० २ ६८

६ पलिते वा । हेम० १ २११

७ पल्लङ्को इति च पल्यङ्कशब्दस्य यलोपे द्वित्वे च । पलिअको इत्यपि चौर्यसमत्वात् । देखो—पर्यस्तपर्याणसौकुमार्ये स्तु ।
हेम० २ ६८

८ 'दुर्गादेव्युदुम्बरपादपतन' हेम० १ २७०

९, 'दुर्गादेव्युदुम्बरपादपतन' हेम० १ २७०

१० पथोणस्येकट्-पहिओ । हेम० २ १५२

११ पापद्धौ र । हेम० १ २३५

पारेवओ, पारावओ ^१	पारावत
पाहाणो, पासाणो ^२	पाषाण
पिहढो, पिढरो ^३	पिठर
पिउसिआ, पिउच्छा ^४	मितृष्वसा
पिसल्लो, पिसाओ ^५	पिशाच
पेढ, पीढ ^६	पीठम्
पीअ ^७	पीतम्
पीवल, पीअल ^८	पीतलम्
पेउस ^९	पीयूषम्
पुण्णामो ^{१०}	पुन्नाग
पुरिसो ^{११}	पुरुष
पोप्पल ^{१२}	पूगफलम्
पोप्पली ^{१३}	पूगफली

१ पारावते रो वा । हेम० १ ८०

२ दशपाषाणो ह । हेम० १ २६०

३ पिठरे हो वा रश्च ड । हेम० १ २०१

४ मातृपितु स्वसु सिआछौ । हेम० २ १४२

५ 'खचितपिशाचयो ' हेम १ १९३

६ नीडपीठे वा । हेम० १ १०६

७ ल इति किम् ? पीअ । देखो—पीते वो ले वा । हेम० १ २१३

८ पीते वो ले वा । हेम० १ २१३ तथा विद्युत्पत्रपीतान्धाक्ष ।
हेम० २ १७३

९ 'एत्पीयूष ' हेम० १ १०५

१० पुन्नागभागिन्योर्गो म । हेम० १ १९०

११ पुरुषे रो । हेम० १ १११

१२ 'ओत्पूतरवदर ' हेम० १ १७० १३ वही ।

पोरो ^१	पूतर
पुरिम, पुव्व	पूर्वम्
पिध, पिह, पुव, पुह ^३	पृथक्
पुहई, पुढवी, पुहवी ^४	पृथिवी
पउरिस ^५	पौरुषम्
पवट्टो, पउट्टो ^६	प्रकोष्ठ
पइण्णा ^७	प्रतिज्ञा
पइट्ठा ^८	प्रतिष्ठा
पडसुआ ^९	प्रतिश्रुत्
पईव ^{१०}	प्रतीपम्
पच्चुहो, पच्चुसो ^{११}	प्रत्यूष
पुहुम, पडुम, पढम, पढम ^{१२}	प्रथमम्

- १ वही । २ पूर्वस्य पुरिम । हेम० २ १३५
 ३ 'इदुतौवृष्टवृष्टि' हेम० १ १३७ तथा पृथकि धो वा । हेम० १ १८८
 ४ पथिपृथिवी 'हेम० १ ८८ तथा उट्त्वादौ । हेम० १ १३१
 एव निशीथपृथिव्योर्वा । हेम० १ २१२
 ५ अउ पौरादौ वा । हेम० १ १६२
 ६ ओतोऽद्वान्यो-यप्रकोष्ठ ' १ १४६
 ७ ८ प्राय कथन से डनहीं हुआ । देखो-प्रत्यादौ ड । हेम० १ २०६
 ९ प्रत्ययादौ ड । हेम० १ २०६ 'पथिपृथिवी' हेम० १ ८८
 तथा वक्रादावन्त । हेम० १ २६
 १० प्राय कथन से ड नहीं हुआ । देखो-प्रत्यादौ ड । हेम० १ २०६
 ११ प्रत्यूषे षश्च हो वा । हेम० २ १४
 १२ प्रथमे पथोर्वा । हेम० १ ५५ तथा मेथिशिथिर ' हेम० १ २१५

पावासू ^१	प्रवासी
पअट्ट पउत्त ^२	प्रवृत्तम्
पसडिल, पसिडिल ^३	प्रशिथिलम्
पारो, पाआरो ^४	प्राकार
पाहुड ^५	प्राभृतम्
पागुरण, पाउरण, पावरण ^६	प्रावरणम्
पावारओ, पारओ ^७	प्रावारक
पलक्खो ^८	प्लक्ष
फणसो ^९	पनस
फलिहा ^{१०}	परिखा
फलिहो ^{११}	परिष
फरुसो ^{१२}	परुष
फालिहदो ^{१३}	पारिभद्र

- १ प्रवासीक्षौ । हेम० १ ९५ अत समृद्धयादौ वा । हेम० १ ४४
 २ उट्टत्वादौ । हेम० १ १३१ तथा 'वृत्तप्रवृत्त ' हेम० २ २९
 ३ शिथिलेड्डुद वा । हेम० १ ८९
 ४ 'व्याकरणप्राकारागते ' हेम० १ २६८
 ५ उट्टत्वादौ । हेम० १ १३१ तथा प्रत्यादौ ड । हेम० १ २०९
 ६ प्रावरणो अङ्स्वाऊ । हेम० १ १७५
 ७ 'यावत्तावज्जीविता ' हेम० १ २७१
 ८ प्लक्षे लात् । हेम० २ १०३ ९ 'पाटिपरुष ' हेम० १ २३२
 १० वही तथा हरिद्रादौ ल । हेम० १ २५४ ११ वही ।
 १२ 'पाटिपरुष ' हेम० १ २३२
 १३ वही तथा हरिद्रादौ ल । हेम० १ २५४

फलिह ^१	स्फटिकम्
भङ्गी ^२	भगिनी
भरहो ^३	भरत
भविअ ^४	भव्यम्
भवन्तो ^५	भवान्
भस्स, भप्प ^६	भस्म
भामिणी ^७	भागिनी
भाअण, भाण ^८	भाजनम्
भारिआ ^९ (पैशाची मे)	भार्या
भिण्डिवालो ^{१०}	भिन्दिपाल
भिण्फो ^{११}	भीष्म
भेडो ^{१२}	भेर
भसरो, भसलो ^{१३}	भ्रमर
भिज्जडी ^{१४}	भ्रुकुटि

- १ स्फटिके क हेम० १ १९७ तथा 'निकषस्फटिक ' हेम०
 १ १८६ फलिहो भी देखा जाता है ।
 २ 'दुहितृभगिन्यो ' हेम० २ १२६ बहिणी के अभाव में
 ३ 'वितस्तिवसतिभरत ' हेम० १ २१४
 ४ 'स्याद्भव्य ' हेम० २ १०७ ५ गोणादय । हेम० २ १७४
 ६ भस्मात्मनो पो वा । हेम० २ ५१
 ७ पुन्नागभागिन्योर्गो म । हेम० १ १६०
 ८ लुरभाजनदनुज ' हेम० १ २६७
 ९ र्यस्नष्टा ' हेम० ४ ३१४
 १० कन्दरिकाभिन्दीपाले ण्ड । हेम० २ ३८
 ११ भीष्मेष्म । हेम० २ ५४ १२ किरिभेरे रो ड । हेम० १ २५१
 १३ भ्रमरे सो वा । हेम० १ २४४ १४ इर्धुकुटौ । हेम० १ ११०

भुलया ^१	भ्रलता
भिम्भलो ^२	विह्लल
भयप्फइ, भयस्सई ^३	बृहस्पति
मघोणो ^४	मघवान्
मअगलो ^५	मदकल
मज्झिमो ^६	मध्यम
मज्झलो, मज्झलो ^७	मध्याह्न
महुअ, महुअ ^८	मधूकम्
मणोहर, मणहर ^९	मनोहरम्
मल्ल (न्तू), मण्णू (न्तू) ^{१०}	मन्यु
मोहो, मऊहो ^{११}	मयूख
मोरो, मऊरो, मयुरो ^{१२}	मयूर

- १ उर्ध्वहन्मत्कण्ठ्यवातूले । हेम० १ १२१
 २ वा विह्ले वौ वध्व । हेम० २ ५८ पक्ष में विम्भलो, विह्लो ।
 ३ बृहस्पतौ बहो भय । हेम० २ १३७ तथा बृहस्पतिवत्स्पत्यो
 सो वा २ ६९ ष्यस्पयो फ । हेम० २ ५३
 ४ गोणादय । हेम० २ १७४
 ५ मरकतमदकले ग । हेम० १ १८२
 ६ मध्यमकतमे द्वितीयस्य । हेम० १ ४८
 ७ मध्याह्ने ह । हेम० २ ८४ तथा ह्रस्व सयोगे । हेम० १ ८४
 ८ मधूके वा । हेम० १ १२२
 ९ 'श्रोतोद्वान्योन्य ' हेम० १ १५६
 १० मन्यौ न्तो वा । हेम० २ ४४
 ११ 'न वा मयूख ' हेम० १ १७१
 १२ मोरो मऊरो इति तु मोरमयूरशब्दाभ्यां सिद्धम् । देखो—
 हेम० १ १७१

मरगञ्ज ^१	मरकतम्
मड्डिञ्ज ^२	मर्हितम्
मङ्गल, मल्लिण ^३	मल्लिनम्
मसिण, मसण ^४	मसृणम्
महन्तो ^५	महान्
मरहट्ट ^६	महाराष्ट्रम्
मयन्दो ^७	माकन्द
माजसिआ, माउच्छा ^८	मातृष्वसां
मट्टुरिअ ^९	माधुर्यम्
मञ्जरो, मज्जारो ^{१०}	मार्जार
मेरा ^{११}	मिरा (मर्यादा अर्थ मे)
मुक्क, मुत्त ^{१२}	मुक्तम्
मूसल, मुसल ^{१३}	मुसलम्

-
- १ 'मरकतमदकले' हेम० १ १८२
 २ 'समर्दवितर्दि' हेम० २ ३६
 ३ 'मल्लिनोभयशुक्ति' हेम० २ १३८
 ४ 'मसृणमृगाङ्क' हेम० १ ३०
 ५ गोणादय । हेम० १ १७४ (मत्तूण महन्ता तन्स्सन्ति । कुमा० पा० ७ ५१)
 ६ महाराष्ट्रे । हेम० १ ६९ ७ गोणादय । हेम० २ १७४
 ८ मातृषितु स्वसु सिआ छौ । सेम० २ १४२
 ९ खद्यधधमाम् । हेम० १ १८७
 १० मार्जारस्य मञ्जरवज्जरौ । हेम० २ १३८
 ११ मिरायाम् । हेम० १ ८७
 १२ 'शक्तमुक्तदष्ट' हेम० २ २
 १३ उत्सुभगमुसले वा । हेम० १ ११३

मुरुखो, मुक्खो ^१	मूर्ख
मुड्ढा, मुद्धा ^२	मूर्धा
मोल्ल ^३	मूल्यम्
मूसओ ^४	मूसिक
मिअको, मअको ^५	मयङ्क
मडअ ^६	मृतकम्
मट्टिआ ^७	मृत्तिका
मिच्चू, मच्चू ^८	मृत्यु
मिअगो, मुइगो ^९	मृदङ्ग
माउअ, मउअ, माउक्क ^{१०}	मृदुकम्
माउत्तण, मउत्तण, माउक्क ^{११}	मृदुत्वम्
मुसा, मूसा, मोसा ^{१२}	मृषा

- १ पद्मच्छदममूर्खद्वारे वा । हेम० १ ११२
 २ श्रद्धद्धिमूर्धोऽर्धन्ते वा । हेम० २ ४१
 ३ 'ओत्कुष्माण्डी ' हेम० १ १२४
 ४ 'पथिपृथिवी ' हेम० १ ८८
 ५ 'मसृणमृगाङ्क ' हेम० १ १३०
 ६ प्रत्यादौ ड । हेम० १ २०६ । मडअ
 ७ 'वत्तप्रवृत्तमृत्तिका ' हेम० २ २९
 ८ 'मसृणमृगाङ्कमृत्यु ' हेम० १ १३०
 ९ इ स्वप्नादौ । हेम० १ ४६ तथा 'इदुतौ वृष्टवृष्टि
 हेम० १ १२७
 १० आ कृशामृदुकमृदुत्वे वा । हेम० १ १२७ तथा 'शक्तमुक्तदष्ट
 हेम० २ २
 ११ वही । १२ उदुदोन्मृषि । हेम० १ १३६

मुसावाआ ^१	मृषावाक्
मेढी ^२	मेथि
मस्सू ^३	श्मश्रु
मसाण ^४	श्मशानम्
रण, रत्त ^५	रक्तम्
रअण ^६	रत्नम्
राइक्क, राअकेर, रायक्क ^७	राजकीयम्
राउल, राअउल ^८	राजकुलम्
राई, रत्ती ^९	रात्रि
रुण ^{१०}	रुदितम्
रुक्खो ^{११}	वृक्ष
रण्ण ^{१२}	अरण्यम्
रिच्छो, रिक्खो ^{१३}	ऋक्ष

- १ वही । २ 'मेथिशियिर' हेम० १ २१५
 ३ वक्रादावन्त । हेम० १ २६ तथा 'आदे श्मश्रु' हेम० २ ८६
 ४ वर० ३ ६ तथा आदे श्मश्रुश्मशाने । हेम० २ ८६
 ५ क्तेन दिण्णादय । वर० ८ ६२
 ६ रयण । 'द्धमाक्काघा' हेम० २ १०१ तथा रअण । 'क्किष्ट-
 शिष्ट' वर० ३ ६०
 ७ परराजभ्या कडिक्कौ च । हेम० २ १४८
 ८ 'लुग्गभाज्जनदलुजराजकुले' हेम० १ २६७
 ९ रात्रौ वा । हेम० २ ८८ तथा हेम० २ ८९
 १० क्तेन दिण्णादय वर० ८ ६२
 ११ वर० १ ३२, ३ ३१, हेम० २ १२७
 १२ बालाव्वरण्ये लुक् । हेम० १ ६६
 १३ रि केवलस्य । हेम० १ १४० तथा ऋक्षे वा । हेम० २ १९-

रिज् ^१	ऋजु
रिऊ ^२	ऋतु
रिड्ढी, रिद्धी ^३	ऋद्धि
रिण ^४	ऋणम्
रिसहो ^५	ऋषभ
रिसी ^६	ऋषि
लहुअ ^७	लघुकम्
लुक्को, लुगो ^८	रुग्ण
लोण, लअण ^९	लवणम्
लाहलो ^{१०}	लाहल
लागलो ^{११}	लाग्लल
लट्टी ^{१२}	यष्टि
लिम्बो ^{१३}	निम्ब

- १ 'ऋणज्वृषभ' हेम० १ १४१ २ वही ।
 ३ रि केवलस्य । हेम० १४०
 ४ 'ऋणज्वृषभ' हेम० १ १४१ ५ वही ।
 ५ 'ऋणज्वृषभ' हेम० १ १४१
 ७ लघुके लहो । हेम० २ १२२
 ८ 'शक्तमुक्तदष्टरुग्ण' हेम० २ २
 ९ न वा मयूख 'हेम० १ १७१
 १ लाहललाग्ललाङ्गुले वादेर्ण । हेम० १ २५६ इससेण के अभाव में
 ११ वही ।
 १२ षस्यानुष्ट्रेष्टासदष्टे । हेम० २ ३४ तथा यष्टया ल । हेम०
 १ २४७
 १३ निम्बनापिते लण्ह वा । हेम १ २३०

लाऊ^१
लाङ्गलो^२

अलाबु
लाङ्गल

ब एवं व

वार^३
वारह^४
बइल्लो^५

द्वारम्
द्वादश
बलीवर्द

वम्हचेर, वम्भचेर, वम्हचरिअ^६
बहिणी^७

ब्रह्मचर्यम्,
भगिनी

वम्महो^८

मन्मथ

वडर, वज्ज^९

वज्रम्

वुद्र, वद्र^{१०}

वन्द्रम्

वोर^{११}

वदरम्

वोरी^{१२}

वदरी

१ वालाव्वरण्ये लुक् । हेम० १ ६६

२ लाहललाङ्गललाङ्गले वादेर्ण । हेम० १ २५६ इससेण के अभाव में ।

३ उवाभाव । देखो—हेम० २ ११२ उत्त्वपक्ष में दुवार होता है

४ पशपाषाणो ह । हेम० १ २६२ तथा हेम० १ २१९

५ गोणादय । हेम० २ १७४

६ 'स्याङ्गव्य' हेम० २ १०७ हेम० २ ९३ हेम० २ ७४

हेम० २ ६३

७ दुहितृभगिन्योर्ध्वआ-बहिण्यौ । हेम० २ १२६

८ मन्मथे व । हेम० १ २४२

९ शर्षतप्तवज्रे वा । हेम० २ १०५

१० वन्द्रखण्डिते णा वा । हेम० १ ५३

११ 'ओत्पूतरवदर' हेम० १ १७६

१२ वही

वणस्सई, वणप्फई ^१	वनस्पति
विलया, वणिदा ^२	वनिता
वरिअ ^३	वर्यम्
वेल्ली, वल्ली ^४	वल्ली
वसही ^५	वसति
वाहि, वाहिर ^६	वहिष्
वाउलो ^७	वातूल
वाणारसी ^८	वाराणसी
वाहो (नेत्र जल मे) } ^९	वाष्प
वाप्पो (धूम मे) }	
वीसा ^{१०}	विशति
वेइल्ल, विअइल्ल ^{११}	विचकिल्ल
विच्छड्डो ^{१२}	विच्छर्द

१ वृहस्पतिवनस्पत्यो सो वा । हेम २ ६९ तथा षस्पयो फ ।

हे० २ ५३

२ वनिताया विलया । हेम २ १२८

३ 'स्याद्भव्यचैत्य हेम० २ १०७

४ 'वल्ल्युत्कर ' हेम० १ ५८

५ वितस्तिवसति ' हेम० १ २१४

६ वहिषो वाहि-वाहिरौ । हेम० २ १४०

७ उर्भू हनूमत्कण्डूयवातूले । हेम० १ १२६

८ 'करेणुवाराणस्यो ' हेम० २ ११६

९ वाष्पे द्वौऽश्रुणि । हेम० २ ७०

१० 'ईजिह्वा ' हेम० १ ९२ तथा हेम० १ २८

११ 'स्थविरविचकिला ' हेम० १ १६६

१२ 'समर्दवितर्दिविच्छर्द ' हेम० २ ३६

विअड्डी ^१	वितर्द्धि
विअडढो ^२	विदग्ध
वहेडअडो ^३	विभीतक
वीसभो ^४	विश्रम्भ
वीसु ^५	विष्वक्
वीसत्थो ^६	विश्वस्त
विसढो, विसमो ^७	विषम
विसटटुल ^८	विसण्डुल
विहूणो, विहीणो ^९	विहीन
विहभलो, विहलो ^{१०}	विह्वल
वीरिअ ^{११}	वीर्यम्
वच्छो ^{१२}	वृक्ष
वट्ट (ट्टो) ^{१३}	वृत्तम्

- १ वही । २ 'दग्धविदग्ध' हेम० २ ४०
 ३ 'एत्पीयूषापीडविभीतक' हेम० १ १०५, १ ८८, १ २०६
 ४ सर्वत्र लवरामवन्दे । हेम० २ ७९ तथा हेम० १ ४३
 ५ 'लुप्तयरव' हेम० १ ४३ वा त्वरे मध्व । हेम० १ २८ तथा
 'ध्वनि' हेम० १ ५२
 ६ 'लुप्तयरव' हेम० १ ४३
 ७ विषमे मो ढो वा । हेम० १ २४१
 ८ ठोऽस्थिविसस्थुले । हेम० २ ३२
 ९ ऊर्हीनविहीने वा । हेम० १ १०३
 १० वा विह्वले वौ वध्व । हेम० २ ५८
 ११ 'स्याद्भव्य' हेम० २ १०७
 १२ रुक्ल आदेश का अभाव । देखो—हेम० २ १२७
 १३ 'वृत्तप्रवृत्त' हेम० २ २९

वुडढो ^१	वृद्ध
वुड्ढी ^२	वृद्धि
वेण्ट, वोण्ट, विण्ट ^३	वृत्तम्
वुन्दारओ ^४	वृन्दारक
विञ्छुओ, विच्छुओ, विचुओ, } विछिओ ^५	वृश्चिक
वसहो ^६	वृषभ
विट्ठ, वुट्ठ ^७	वृष्टम्
विट्ठी, वुट्ठी ^८	वृष्टि
वड्डयर ^९	बृहत्तरम्
विह्ण्फई, वुह्ण्फई, वह्ण्फई } वह्ण्स्सई, वुह्ण्स्सई } ^{१०}	बृहस्पति
वेल्ह ^{११}	वेणु
वेडिसो ^{१२}	वेतस
विअणा, वेअणा ^{१३}	वेदना

१ उह्त्वादौ । हेम० १ १३१ तथा हेम २ ४०

२ वही । ३ ह्देदोद्बृन्ते । हेम० १ १३९

४ विवृत्तवृन्दारके वा । वुन्दारया, वन्दारया । हेम० १ १३२

५ वृश्चिके श्वेर्बुर्वा । हेम० २ १६ तथा हेम० १ १२८

६ वृषभे वा । हेम० १ १३३ तथा हेम० १ १२६

७ 'इदुतौ वृष्टवृष्टि' हेम० १ १३७ ८ वही ।

९ गोणादय । हेम० २ १७४

१ वा बृहस्पतौ । हेम० १ १३८, २ १३७, २ ६९ २ ५३

११ वेणौ णो वा । हेम० १ २०३

१२ इस्वप्नादौ । हेम० १ ४६ इत्वे वेतसे । हेम० १ २०७

१३ 'एत इद्वा वेदना' हेम० १ १६६

वेरुलित्र ^१	वैदूर्यम् (वैडूर्यम्)
वारण, वाञ्छरण ^२	व्याकरणम्
वावडो ^३	व्यापृत
विउस्सगो ^४	व्युत्सर्ग
वोसिरण ^५	व्युत्सर्जनम्
सअड ^६	शकटम्
सक्को, सत्तो ^७	शक्त
सणिअरो ^८	शनैश्चर
समरो ^९	शवर
सुवओ	शावक
सारग ^{१०}	शार्ङ्गम्
सिडिल, सडिल ^{११}	शिथिलम्
सिरोवेअणा, सिरविअणा ^{१२}	शिरोवेदना
सीभरो, सीहरो, सीअरो ^{१३}	शीकर

- १ वैडूर्यस्य वेरुलित्र । हेम० २ १३३
 २ व्याकरणप्राकारागते कगो । हेम० १ २०८
 ३ प्रत्यादौ ड । हेम० १ २०६
 ४ गोणादय । हेम० २ १७४ ५ वही ।
 ६ कगचजतदप ' हेम० १ १७७ सयड । 'सदाशकट
 हेम० १ १९६
 ७ 'शक्तमुक्त ' हेम २ २
 ८ इत्सैन्यवशनेश्चरे । हेम० १ १४९ सणिच्छरोभी देखा जाता है ।
 ९ शवरे वो म हेम० १ २५८ १० शाङ्ग 'हेम० २ १००
 ११ शिथिलेङ्कुदे वा । हेम० १ ८९ तथा हेम० १ २१५
 १२ ओतोद्वा योन्य ' हेम० १ १५६
 १३ शीकरेभहौ वा । हेम० १ १८४

सिष्पी ^१	शुक्ति
सुन्न, सुक्क ^२	शुक्त, शुल्कम्
सिग, सग ^३	शृङ्गम्
सकल ^४	शृङ्खलम्
सोडीर ^५	शौण्डीर्यम्
सोरिअ ^६	शौर्यम्
सा, साणो ^७	श्वा
सीआण, सुसाण ^८	श्मशानम्
सामओ ^९	श्यामाक
सलाहा ^{१०}	श्लाघा
सेलिफो, सेलिम्हो ^{११}	श्लेष्मा
सढा ^{१२}	सटा

१ मलिनोभयशुक्ति 'हेम० २ १३८

२ शुक्के ङो वा । हेम० २ ११

३ 'मसृणमृगाङ्कमृत्युशृङ्ग' हेम० १ १३०

४ शृङ्खले ख क । हेम० १ १८९

५ 'ब्रह्मचर्यतूर्यसौन्दर्यशौण्डीर्य' हेम० २ ६३

६ स्याद् भव्यचैत्यचौर्यसमेषु यात् । हेम० २ १०७

७ श्वन्शब्दस्य तु सा साणो इति प्रयोगौ भवत । देखो—ध्वनि विष्वचो रु । हेम० १ ५०

८ आर्षे श्मशानशब्दस्य सीआण सुसाण इत्यपि भवति । देखो—हेम० २ ८६

९ श्यामाके म । हेम० १ ७१

१० 'क्षमाश्लाघा' हेम० २ १०१,

११ लात् । हेम० २ १०६, सेफो, सिलिम्हो २ ५।

१२ सटाशकटकैटभे ढ । हेम० १९६

सत्तरी ^१	सप्तति
सत्तरह ^२	सप्तदश
समत्थो ^३	समर्थ
समड्डो ^४	समर्द्ध
समत्त ^५	समस्तम्
सररुह, सरोरुह ^६	सरोरुहम्
सङ्गिओ ^७	सर्वाङ्गीण
सक्खिणो ^८	साक्षी ^९
सालवाहनो ^{१०}	मातवाहन
सङ्गस ^{११}	साध्वसम्
सामच्छ, सामत्थ ^{१२}	सामर्थ्यम्
सुण्हा ^{१३}	सास्ना
सीहो, सिंघो ^{१४}	सिंह

-
- १ सप्ततौ २ । हेम० १ २१०
 २ सख्यागदगदे र । हेम० १ २१९ ३ हेम० २ ७९
 ४ 'समर्द्धीवतर्दि' हेम० २ ३६
 ५ असमस्तस्तम्ब इति किम् ? समत्तो, तबो । देखो—हेम० २ ४५
 ६ 'ओतोद्वान्योन्य' हेम० १ १५६
 ७ सर्वाङ्गादौनस्येक । हेम० २ १५१
 ८ गोणादय । हेम० २ १७४
 ९ अतसीसातवाहने ल । हेम० १ २११
 १० साध्वसध्यह्या भ । हेम० २ २६
 ११ सामर्थ्यात्सुकोत्सवे वा । हेम० २ २२
 १२ उ सास्नास्तावके । हेम० १ ७५
 १३ मासादेर्वा । हेम० १ २९, १ ९०, तथा १ २६४

सिहदत्तो ^१	सिंहदत्त
सिहराओ ^२	सिहराज
सोमालो, सुउमालो, सुकुमालो ^३	सुकुमार
सुकड (आर्ष मे) ^४	सुकृतम्
सूहवो, सुहवो ^५	सुभग
सुण्ह, सण्ह, सुहम (आर्ष मे) ^६	सूक्ष्म
सूरिओ ^७	सूर्य
सूआलो ^८	सोच्छ्रास
सिधव ^९	सैन्धवम्
सिण्ण, सेण्ण ^{१०}	सैन्यम्
सणिद्ध, सिणिद्ध ^{११}	स्निग्धम्
सुण्हा सुसा ^{१२}	स्नुषा
सिआ ^{१३}	स्यात्

१ बहुलाधिकारात्कचिन्न भवति । देखो—हेम० १ ९२

२ वही । ३ 'न वा मयूख ' हेम १ १७१

४ प्रत्यादौ ड । हेम० १ २०६

५ 'ऊत्वे दुर्भगसुभगे ' हेम० १ १९२ तथा हेम० १ ११३

६ अदूत सूक्ष्मे वा । हेम० १ ११८ तथा २ ७५

७ 'स्याद्भव्यचैत्य ' हेम० २ १०७

८ ऊत्सोच्छ्रासे । हेम० १ १५७

९ इत्सैन्धवशनैश्चरे । हेम० १ १४९

१० सैन्ये वा । हेम० १ १५० तथा अइदँत्यादौ च । हेम० १ १५१

साइच्च भी होता है ।

११ स्निग्धे वादितौ । हेम० २ १०९

१२ स्नुषाया ण्हो न वा । हेम० १ २६१

१३ स्याद् भव्य ' हेम० २ १०७

सिविणो, सिमिणो ^१	स्वप्न
हगुमन्तो ^२	हनूमान्
हीरो, हरो ^३	हर
हडडई, इरडई ^४	हरीतकी
हलिआरो, हरिआलो ^५	हरिताल
हलदी, हलिदी, हलहा ^६	हरिद्रा
हरिअदो ^७	हरिश्चन्द्र
हूणो, हीणो ^८	हीन
हिअ, हिअअ ^९	हृदयम्



-
- १ इ स्वप्नादौ । हेम० १ ४८, हेम० १ २५९ तथा स्वप्ने नात्
हेम० २ १०
- २ उभ्रूहनूमत्कण्ड्वयवातूले । हेम० १२१ तथा हेम० २ १५९
- ३ ईर्हरे वा । हेम० १ ५१
- ४ हरीतक्यामीतोऽत् । हेम० १ ९९
- ५ 'हरिताले' हेम० २ १२१
- ६ हरिद्राया विकल्प इत्यन्ये । देखो 'पथिपृथिवी' हेम० १ ८८
- ७ श्रो हरिश्चन्द्रे हेम० २ ८७
- ८ ऊर्हीनविहीने वा । हेम० १ १०३
- ९ इत्कृपादौ । हेम० १ १२८ तथा किसलयकालायसहृदये य ।
हेम० १ २८९

अष्टम अध्याय

[शौरसेनी]

(१) 'प्रकृति सस्कृतम्'^१ इस उक्ति के अनुसार शौरसेनी में जितने भी शब्द आते हैं, उनकी प्रकृति सस्कृत है ।

(२) शौरसेनी में अनादि में वर्तमान असयुक्त त का द आदेश होता है । जैसे — मारुदिणा मन्तिदो (त का द), एदाहि, एदाओ (एतस्मात्)

विशेष—(क) संयुक्त होने के कारण अज्जउत्त और सउन्तले में त का द नहीं हुआ ।

(ख) आदि में होने के कारण 'तवा करेध जधा तस्स राइणो अणुकम्पणीआ भोमि' में तधा और तस्स के तकारों का द नहीं हुआ ।

(३) लक्ष्य के अनुरोध से शौरसेनी में वर्णान्तर के अघ (बाद में) वर्तमान त का द होता है । जैसे — महन्दो, निच्चिन्दो, अन्दे उर (महान्त , निच्चिन्त , अन्त पुरम्) ।

विशेष—उक्त नियम सयुक्त त के विषय में काचित्क है ।

(४) शौरसेनी में तावत् शब्द के आदि तकार का दकार विकल्प से होता है । जैसे — दाव, ताव (तावत्) ।

(५) शौरसेनी में इन्नन्त शब्द से आमन्त्रण (सम्बोधन की प्रथमा विभक्ति) के सु के पर में रहने पर पूर्व के 'इव्' के

न का आकार विकल्प से होता है। जैसे —भो कञ्चुइआ (भो कञ्चुकिन्), सुहिआ (सुखिन्) अन्यत्र भो तवस्सि (भो तपस्विन्), भो मणस्सि (भो मनस्विन्) ।

(६) शौरसेनी मे आमन्त्रणवाले सु के पर मे रहने पर पूर्ववाले नकारान्त शब्द के न के स्थान मे विकल्प से म होता है। जैसे —भो राय (भो राजन्), भो विअयवम्म (भो विजयवर्मन्) अन्यत्र भयव हुदवह (भगवन् हुतवृह) होता है ।

✓ (७) शौरसेनी मे भवत् और भगवत् शब्दों से सु विभक्ति के पर मे रहने पर पूर्व के नकार का मकार होता है। जैसे — एदु भव, समणे भगव महावीरे । पज्जलितो भयव हुदासणो ।

✓ (८) शौरसेनी मे र्य के स्थान मे य्य आदेश विकल्प से होता है। जैसे —अय्यउत्त पय्याकुली कदम्हि (आर्यपुत्र पर्याकुलीकृतास्मि), सुय्यो (सूर्य) पअ मे अज्जो (आर्य), पजाउलो (पर्याकुल), कज्जपरवसो (कार्यपरवश) ।

* (९) शौरसेनी मे थ के स्थान मे ध विकल्प से होता है। जैसे —णाधो, णाहो, कध, कह, राजपधो, राजपहो (नाथ, कथ, राजपथ) ।

✓ (१०) शौरसेनी मे 'इह' और 'हच्' आदेश के हकार के स्थान मे ध विकल्प से होता है। जैसे —इध (इह), होध (होह = भवथ), परित्तायध (परित्तायह = परित्रायध्वे) ।

✓ (११) शौरसेनी मे भ् धातु के हकार का भ आदेश विकल्प से होता है। जैसे —भोदि, होदि (भवति) ।

१ मध्यम पुरुष के बहुवचन में इत्था और ह अथवा हा होते हैं ।
दे इम पुस्तक के छठे अध्याय के वर्तमानकाल के प्रत्ययों में मध्यम पुरुष तथा हेम० ३ १४३

✓ (१२) शौरसेनी में पूर्व शब्द का 'पुरव' यह आदेश विकल्प से होता है। जैसे —अपुरव नाड्य, अपुरवागद (अपूर्व नाट्यम् अपूर्वागतम्), पक्ष में अपुव्व पद, अपुव्वागद (अपूर्व पदम्, अपूर्वागतम्) ।

✓ (१३) शौरसेनी में त्त्वा प्रत्यय के स्थान में इप्प और दूण ये आदेश विकल्प से होते हैं। जैसे —भविय, भोदूण, हविय, होदूण, पढिय, प्ढिदूण, रमिय, रन्दूण। पक्ष में—भोत्ता, होत्ता, पढित्ता, रन्ता ।

विशेष—वररुचि (१२. ६) के अनुसार केवल इय होता है ।

(१४) शौरसेनी में कृ और गम वातुओ से पर में आनेवाले त्त्वा प्रत्यय के स्थान में अडुअ (किसी किसी पुस्तक के अनुसार अदुअ) आदेश विकल्प से होता है। और धातु के टि का लोप हो जाता है। जैसे —कडुअ, गडुअ। पक्ष में—करिय, करिदूण, गच्छिय, गच्छिदूण ।

विशेष—वररुचि (१२. १०) के अनुसार दुअ होता है ।

✓ (१५) शौरसेनी में त्यादि के आदेश^१ इ और ए के स्थान में दि आदेश होता है। जैसे —नेदि, देदि, भोदि, होदि ।

✓ (१६) अकार से पर में यदि नियम १५ वाले इ और ए हो तो उनके स्थान में दे और दि ये दोनो आदेश होते हैं। जैसे —अच्छदे, अच्छदि, गच्छदे, गच्छदि, रमदे, रमदि, किज्जदे, किज्जदि ।

१ देखो—इसी पुस्तक के छोटे अध्याय के वर्तमान काल के प्रथम पुरुष के एकवचन तथा इसी अध्याय का नियम ४ ।

(१७) शौरसेनी मे भविष्यत् अर्थ मे विहित प्रत्यय के पर मे रहने पर स्सि होता है। जैसे —भविस्सिदि करिस्सिदि, गच्छिस्सिदि।

विशेष—वातु और प्रत्ययो के बीच मे आने के कारण 'स्सि' विकरण है।

(१८) शौरसेनी मे अत् से पर मे आनेवाले डसि के स्थान मे आदो और आदु ये आदेश होते ह और शब्द डे टि (अ) का लोप होता है। जैसे —दूराडो, दूरादु (दूरात्)।

(१९) शौरसेनी मे इदानीम् के स्थान मे दाणि यह आदेश होता है। जैसे —अनन्तर करणीय दाणि आणैवदु अय्यो।

विशेष—उक्त नियम साधारण प्राकृत मे भी लागू होता देखा जाता है।

(२०) शौरसेनी मे तस्मात् के स्थान मे ता आदेश होता है। जैसे —ता जाव पविसामि। ता अल एदिणा माणेण।

(२१) शौरसेनी मे इत् और एत् के पर मे रहने पर अन्त्य मकार के आगे णकार का आगम विकल्प से हाता है। इकार के पर मे जैसे —जुत्तणिम, जुत्तमिम, सरिसणिम, सरिसमिम, एकार के पर मे जैसे —किणोद, किमेद, एण-णेद, एवमेद।

(२२) शौरसेनी मे एव के अर्थ मे य्येव यह निपात प्रयुक्त होता है। जैसे —मम य्येव बम्भणस्स, सो य्येव एसो।

(२३) चेटी के आह्वान अर्थ मे शौरसेनी मे हस्से इस निपात का प्रयोग किया जाता है। जैसे —हस्से चदुरिके।

(२४) विस्मय और निर्वेद अर्थो मे शौरसेनी मे हीमाणहे इस निपात का प्रयोग किया जाता है। विस्मय में जैसे :—

हीमाणहे जीवन्तवच्छा मे जणणी । निर्वेद मे जैसे —हीमा-
णहे पलिस्सन्ता हगे एदेण निपविधिणो दुव्ववसिदेण ।

✓(२५) शौरसेनी मे ननु के अर्थ मे ण यह निपात प्रयुक्त होता है । जैसे —ण अफलोदया, ण अय्यमिस्सेहि पुढम ग्येव आणत्त, ण भव मे अग्गदो चलदि ।

विशेष—आर्ष मे ण का वाक्यालङ्कार में भी प्रयोग होता है । जैसे —नमोत्थु ण जयाण ।

(२६) शौरसेनी मे हर्ष प्रकट करने के लिए अम्महे इस निपात का प्रयोग किया जाता है । जैसे —अम्महे एआए सुम्मिलाए सुपलिगदिदो भव ।

(२७) शौरसेनी मे विदूषक के हर्ष द्योतन मे 'हीही' इस निपात का प्रयोग किया जाता है । जैसे —हीही भो, सपन्ना मणोरधा पियवयस्सस्स ।

✓(२८) शौरसेनी मे व्यापृत शब्द के त का तथा कही कही पुत्र शब्द के त का भी ड होता है । जैसे —वावडो, पुडो पुत्तो (व्यापृत , पुत्र) ।

✓(२९) शौरसेनी मे गृद्ध जैसे शब्दों के ऋकार का इकार होता है । जैसे —गिद्धो (गृध्र) ।

✓(३०) ब्रह्मण्य, विज्ञ, यज्ञ, और कन्या शब्दों के ण्य, ज्ञ और न्य के स्थान मे झ आदेश विकल्प से होता है । कि तु पैशाची मे यही कार्य नित्य ही होता है । जैसे —ब्रह्मञ्जो, विञ्जो, जञ्जो और कञ्जा । पक्ष मे बह्मण्णो, विण्णो, कण्णा (ब्रह्मण्य , विज्ञ , कन्या) ।

✓(३१) शौरसेनी मे सर्वज्ञ और इज्झितज्ञ शब्दों के अन्त्य ज्ञ के स्थान मे ण होता है । जैसे —सव्वण्णो, इज्झिअण्णो (सर्वज्ञ , इज्झितज्ञ) ।

(३२) शौरसेनी मे नपुसक लिङ्ग मे वर्तमान शब्दो से पर मे आनेवाले जस् और शस् के स्थान मे णि आदेश और पूर्व स्वर का दीर्घ भी होता है । जैसे —वणाणि, घणाणि (वनानि, धनानि) ।

(३३) शौरसेनी मे तिङ् प्रत्ययों के पर मे रहने पर भूधातु के स्थान मे भो आदेश होता है । जैसे —भोमि ।

विशेष—लृट् (अर्थात् भविष्यत् काल के तिङ्) के पर मे रहने पर उक्त नियम लागू नहीं होता । जैसे —भविस्सिदि ।

(३४) शौरसेनी मे तिङ् के पर मे रहने पर दा धातु के स्थान मे दे आदेश होता है और केवल लृट् के पर मे रहने पर दइस्स आदेश । सामान्यतः तिङ् मे जैसे —देमि । लृट् के पर मे रहने पर जैसे —दइस्स ।

(३५) शौरसेनी मे कृञ् धातु के स्थान मे कर आदेश होता है । जैसे —करेमि ।

(३६) शौरसेनी मे तिङ् के पर मे रहने पर स्था धातु के स्थान मे चिट् आदेश होता है । जैसे —चिट्ठिदि ।

(३७) शौरसेनी मे तिङ् के पर मे रहने पर स्मृ, दृश और अस धातुओ के स्थान मे क्रमशः सुमर, पेक्ख और अच्छ आदेश होते हैं । जैसे —सुमरदि, पेक्खदि, अच्छन्ति (स्मरति, पश्यति, सन्ति) ।

विशेष—(क) तिप् के साथ अस धातु के सकार के स्थान मे त्थि आदेश होता है । अत्थि । जैसे —पससिद् णात्थि मे वाआ-विहवो ।

(ख) भविष्यत् काल मे भिप्-सहित अस के स्थान मे विकल्प से स्स आदेश होता है । पक्ष मे धातु के स्वर का दीर्घत्व भी होता है । स्स, आस्स ।

(३८) शौरसेनी मे स्त्री शब्द के स्थान मे 'इत्थी' आदेश होता है । जैसे —इत्थी (स्त्री) ।

(३९) शौरसेनी मे इप् के स्थान मे विअ आदेश होता है । जैसे —विअ ।

(४०) जस् सहित अस्मद् के स्थान मे वअ और अम्हे ये दोनो रूप शौरसेनी मे होते है । जैसे —वअ और अम्हे (वयम्) ।

(४१) शौरसेनी मे सर्वनाम शब्दो से पर मे आनेवाली (सप्तमी एकवचन की) छि विभक्ति के स्थान मे सित्वा आदेश होता है । जैसे —सव्वसित्वा, इदरसित्वा (सर्वस्मिन् , इतरस्मिन्) ।

(४२) शौरसेनी से भावकर्म और कर्ता अर्थो मे धातु से परस्मैपद के ही प्रत्यय होते है । भाव मे जैसे —कि दाणि दासीएपुत्ता ? दुभित्त्वरुडरड्ड विअ उद्धक सासाअसि एसा सा सेत्ति । कर्ता मे जैसे —अज्ज वन्दामि । कर्म मे जैसे —अदो जेव कामीअदि ।

(४३) आश्चर्य शब्द का अच्चरिअ रूप शौरसेनी मे होता है । जैसे —अहह, अच्चरिअ अच्चरिअ ।

(४४) शेष शब्दो के साधन प्राकृत अथवा महाराष्ट्री के अनुसार किये जाते है ।

प्राकृतसर्वस्व के अनुसार शौरसेनी के शब्द —

शौरसेनी	संस्कृत	विशेष निर्देश्य
अउव्ज	अपूर्वम्	
अगिम्मि	अग्नौ	
अङ्गारो	अङ्गार	इत् का अभाव
अहिमण्ण	अभिमन्यु	ञ्ज का अभाव
अव्वह्मण	अब्रह्मण्यम्	
अव्वह्मज्ज (झ)		

अअ रुक्खो	अय वृक्ष	
अमु जणो	असौ जन	
अमु वहू	असौ वधू	
अमु वण	अदो वनम्	
अदो कारणादो	एतस्मात् (अमुष्मात्)	
	कारणात्	
अह	अहम्	
अम्हे	वय, अरु	
अम्ह, अम्हाण	अस्माकम्	
इदो	इत	
इअ बाला	इय बाला	
इण धण	इद धनम्	
इढ वण	इद वनम्	
इङ्गिअज्जो (ज्जो)	इङ्गितज्ज	
ईदिस	ईदृशम्	एत का अभाव
उल्लहलो	उल्लखल	ओत् का अभाव
उवरि	उपरि	अत् का अभाव
उत्थिदो	उत्थित	ठ का अभाव
एसो जणो	एष जन	
कध	कथम्	
कत्थ, कस्सि, कहि	कस्मिन्	न्मि नहीं हुआ
कण्णआ	कन्यका	
कज्ज (ज्ज) आ		
कबन्धो	कबन्ध	
किंसुओ	किशुक	ओत्व का अभाव
किरातो	किरात	च का अभाव

क्रीदिस	क्रीदशम्	एत् का अभाव
कुमारी	कुमारी	ह्रस्व का अभाव
कुदो	कुत	
कुम्हण्डो	कुम्माण्ड	ह का अभाव
केसुओ	किशुक	ओत्व का अभाव
कोदूहल	कौतूहलम्	द्वित्व का अभाव
रणो	क्षण	छ का अभाव
खीर	क्षीरम्	छ का अभाव
गद्दहो	गर्दभ	उ का अभाव
चउट्टी	चतुर्थी	ओत् का अभाव
चउद्दी	चतुर्दशी	ओत् का अभाव
चिण्ह	चिह्नम्	न्ध का अभाव
जधा	यथा	ह्रस्व का अभाव
जण्णसेणो	यज्जसेन	
जादिस	यादशम्	
जुहुट्टिरो	युधिष्ठिर	अत् का अभाव
दुष्कमाणो	दह्यमान	
णईओ	नद्य	
राण	नूनम्	
तत्थ, तद्दि, तस्सि	तस्मिन्	म्मि का अभाव
तए	त्वया, त्वयि	
तधा	तथा	ह्रस्व का अभाव
तादिस	तादशम्	
तुण्ड	तुण्डम्	ओत्व का अभाव
तुम	त्वं अथवा त्वाम्	
तुम्हे	यूयम्, युष्मान्	
तुम्हेहि	युष्माभि	

तुम्हेहिन्तो	युष्मभ्यम्	
<u>तुम्हाण</u>	युष्माकम्	
तुम्हेसु	युष्मासु	
तुमोदा	त्वत्	
तुम्ह, ते	तव	
थूल	स्थूलम्	द्वित्व का अभाव
दस, दह	दश	
दसरहो	दशरथ	
दे	तव	
देअरो	देवर	इत् का अभाव
देव्व	दैवम्	अइ का अभाव
नइए	{ नद्या, नद्या , नद्या , नद्याम्	
पओट्ठो	प्रकोष्ठ	षत्व का अभाव
पासाणो	पाषाण	ष, ह का अभाव
पावो	पाप	
पिण्ड	पिण्डम्	एत्व का अभाव
पिदणा	पृतना	
पुरुसो	पुरुष	इत्व का अभाव
पोक्खर	पुष्करम्	
पोक्खरणी	पुष्करिणी	
फोडओ	स्फोटक	ख का अभाव
भिन्दिवालो	} भिन्दिपाल	
भिण्डिवालो		
भाणुओ, भाणओ	भानव	
मए	मया	
मस	मासम्	

मइ	मयि	
मऊरो	मयूर	ओत् का अभाव
मत्	मत्	
मह, मम	मम	
महूसो	मधूक	ओत् का अभाव
मत्तो, मसादो	मत्	
मादर	मातरम्	
मालाओ	माला	
मिओ	मृत	
मे	माम्	
मे	मम	
मोत्ती	मुक्ता	
रक्खो	वृत्त	ओत् का अभाव
लवण	लवणम्	ओत् का अभाव
लावण्य	लावण्यम्	ओत् का अभाव
उअर	वदरम्	ओत् का अभाव
उळफो	वाष्प	
वअ	वयम्	
वहुए	{ वध्वा, वध्वा , वध्वा , वध्वाम्	
वहूओ	वध्व	
वालाए	{ वालया, बालाया , बालया , बालायाम्	
वाउम्मि	वायौ	
विहण्फदी	बृहस्पति	भ आदिका अभाव
वेअणा	वेदना	इत् का अभाव
वेदसो	वेतस	इत् का अभाव

वो	व (युष्मान् , युष्माकम्)	
महल	सफलम्	
मरिक्ख	सदृक्षम्	छ का अभाव
सम्महो	सम्मद	उ का अभाव

प्राकृत सर्वस्व के अनुसार शौरसेनी में तिङन्त रूपों के नियम

- (४५) (क) धातुओं से परस्मैपद ही होते हैं ।
 (ग) तीनों कालों में प्रायः लट् लकार ही होता है ।
 (ग) त्यादि के तकार का दकार होता है ।
 (घ) बहुवचन में तकार का घकार होता है ।
 (ङ) उत्तम पुरुष में म् होता है ।
 (च) उत्तम पुरुष में मिप् के साथ स्सम् ही होता है ।
 (छ) च, ज्ञ, हा, सोच्छ वोच्छ ये सब नहीं होते हैं ।

प्राकृतमर्वस्व के अनुसार शौरसेनी धातु

संस्कृत	शौरसेनी	सिद्ध क्रियापद
भू	भो और हो	भोदि, होदि, क्त में भूद
दृश	पेच्छ ^१	पेच्छदि
ब्रू	बुच्च	बुच्चदि
कथ	कध	कधेदि
घ्रा	जिग्घ	जिग्घदि
भा	भाअ	भाअदि
मृज	फुस	फुसदि
घूर्ण	घुम्म	घुम्मदि

१ हेमचन्द्र के अनुसार पेक्ख आदेश होता है । देखो अष्टम अध्याय का नियम ३७ ।

ष्टु	थुण	थुणदि
भी	भा	भादि
स्रज	पस	पसदि
चर्च	चव्व	चव्वदि
ग्रह	गेण्ड	गेण्डदि
गृह्य	गेड्ढ, घेप्प	गेड्ढदि, घेप्पदि
शक	सक्कुण, सक्	सक्कुणादि, सक्कादि
स्तै	मिआअ	मिआअदि
उद् + स्था	उत्थ	उत्थेदि
स्वप	सुअ	सुअदि
शीङ	सुआ	सुआदि
रुध	राव	रोवदि
रुत्	रोद	रोददि
मस्ज	वुड्ढ	वुड्ढदि
दुह्य	दुहीअ	दुहीअदि
उह्य	वहीअ	वहीअदि
लिह्य	लिहीअ	लिहीअदि

प्रकृतसर्वस्व के अनुसार नीचे लिखे शब्दों को भा शौरसेनी में जानना चाहिये ।

भिफ्फो (भीम), सत्तुग्घो (शत्रुघ्न), जेत्तिक (यावत् , तेत्तिक (तावत्), एत्तिक (एतावत्), भट्टा भर्ता) धूदा, दुाहदिआ (दुहिता), इत्थी (स्त्री), भादा, भदुओ (भ्राता, भ्रातर), जामादा, जामादुओ (जामाता, जामातर) ।

द्राक् अथ मे दउत्ति, निश्चय अर्थ ग क्खु और खु, इव के अर्थ मे व्व, एव के अर्थ मे ज्जव और जेव तथा ननु के अर्थ मे ण प्रयुक्त होते हैं ।

नवम अध्याय

[मागधी]

(१) प्रकृति शौरसेनी (वर० ११ २) इस वररुचि सूत्र के अनुसार मागधी की प्रकृति शौरसेनी मानी गई है। साथ ही 'माधारेण प्राकृत के शब्द भी मागधी के मूल माने जाते हैं।

(२) मागधी में अइन्द पुल्लिङ्ग शब्दों का प्रथमा के एक पचन में ओकारान्त रूप न होकर एकारान्त रूप होता है। जैसे — एशे मेजे, एशे पुलिशे (एष मेप, एष पुरुष), करोमि भन्ते (करोमि भदन्त)।

(३) मागधी में रफ के स्थान में लकार और वन्त्य सकार के स्थान में तालव्य शकार होते हैं। रफ का जैसे :— नले, कले (नर कर), म का श जैसे :— हशे (हस), दोनो का जैसे :— शाजने, पुलिशे (सारन, पुरुष)।

(४) मागधी में यन् सकार और षकार (अलग-अलग) संयुक्त हो तो उनके स्थान में स होता है। ग्रीष्म शब्द में उक्त आदेश नहीं होता। संयुक्त सकार में जैसे :— मस्त्वलति हस्ती (प्रस्त्वलति हस्ती) बुहस्पदी (बृहस्पति) मस्कली (मस्करी), प्रिरपये (प्रिस्मय), संयुक्त षकार में जैसे :— शुक् बालु (शुक्कारु), कस्ट कट्टु, विस्नु (विष्णु), उस्मा (उस्मा), निस्फल (निष्फलम्), धनुस्सण्ड (धनुस्सण्डम्)

विशेष—(क) उक्त नियम जहाँ लगता है, वहाँ सयोग के आगे-पीछे के वर्णों का लोप नहीं होता ।

(ख) ग्रीष्म शब्द में उक्त नियम के लागू नहीं होने से गिम्हवाशले (ग्रीष्मवासर) होता है ।

(५) द्विरुक्त ट (ट्ट) और षकार से आक्रान्त (युक्त) ठकार के स्थान में मागधी में त् आदेश होता है । ट्ट में जैसे '—पस्टे (पट्ट), भस्टालिका (भट्टारिका) भम्बणी (भट्टिनी), छ में जैसे :—शुस्टु क्त (सुट्टु कृतम्) केरटागाल (कोष्ठागारम्) ।

(६) स्थ और र्थ इन दोनों के स्थान में मागधी में सकार से संयुक्त त्कार होता है । स्थ में जैसे :—उवस्तिदे (उपरिथित), उस्तिदे (सुस्थित), र्थ में जैसे :—अस्तवद (अर्थवती), शग्नवाहे (साथवाह) ।

(७) मागधी में ज, घ और य के स्थान में य आदेश होता है । ज का जैसे —याप्ते (जनपद), अय्युणे (अर्जुन), दुय्यणे (दुर्जन), गय्यदि (गर्जति), घ का जैसे :—मय्य (मद्यम्), अय्य किल विग्याहले आगते (अद्य किल विद्याहर आगत ।), य का जैसे :—यात्ति (याति) ।

विशेष—इसी पुस्तक के दूसरे अध्याय के चौदहवें नियम के बाधनार्थ य के स्थान में पुन य का विधान किया जाता है ।

(८) मागधी में न्य, ण्य झ और ङ इन संयुक्ताक्षरो के

स्थान में द्रिस्त ज होता है । न्य का जैसे :—अहिमञ्ज-
कुमाले, (अभिमन्युकुमार) कञ्जकापलग (कन्यकापरणम्)
ण्य का जैसे —अबम्हञ्ज (अब्रह्मण्यम्), पुञ्जाह (पुण्या-
हम्) झ का जैसे —अञ्जाविशाले (प्रज्ञाविशाल) शव्यञ्जे
(सर्ज) अवञ्चा (अपञ्चा), अ का जैसे —अञ्जली
(अञ्जलि), वणञ्जए (धनञ्जय), पञ्जले (पञ्जर) ।

(६) मागधी में ब्रज धातु के जकार का ञ्ज आदेश होता है । जैसे —वञ्जदि (व्रजति) ।

विशेष—उक्त नियम उम्मी अध्याय में मातये नियम का अपवाद है । अन्यथा ग आदेश हो जाता है ।

(१०) मागधी में अनादि में वर्तमान छ के स्थान में शकार से संयुक्त चकार श्र होता है । जैसे —गश्च, गश्च (गच्छ, गच्छ), उश्चलदि (उच्छलति), पिश्चिले (पिच्छिल), तिरिश्चि पेस्कदि (तिरिच्छि पेन्द्रइ=तिर्यक् प्रेक्षते) ।

(११) मागधी में अनादि में वर्तमान क्ष के स्थान में जिह्वामूलीय ङ्क^१ आदेश होता है । जैसे —यङ्के (यक्ष), लङ्कणे (रक्षसे) ।

(१२) मागधी में प्रेक्ष और आचक्ष के क्ष के स्थान में स्क आदेश होता है । जैसे —पेस्कदि (प्रेक्षते), आचस्कदि (आचक्षते) ।

विशेष—पूय नियम (ग्यागह्ये) का यह नियम अपवाद है

१ देखो—अगला नियम (१२) ।

२ प्राकृत पकाश के अनुसार स्क आदेश होकर यस्के और लस्करी रूप होते हैं । ६०—वर० ११ ८

(१३) मागधी मे स्था वातु के तिष्ठ के स्थान मे चिष्ठ आदेश होता है। जैसे —चिष्ठिद (तिष्ठति) ।

विशेष—किसी-किसी पुस्तक के अनुसार चिद्ध आदेश होकर चिद्धिद रूप भी होता है ।

(१४) मागधी मे अवर्ण से पर मे आनेवाले डस् (षष्ठी के एकवचन) के स्थान मे आह आदेश विकल्प से होता है । आह के पूर्ववर्ती टि का लोप होता है । जैसे —हगे न ईदिशाह कम्माह काली (अह न ईदृशस्य कर्मण कारी) पक्ष मे—भीमशेणस्स पञ्चादे हिण्डीअति ।

(१५) मागधी मे अवर्ण मे पर मे विद्यमान आम् के स्थान मे आह आदेश विकल्प से होता है और पूर्व के टि का लोप हो जाता है । जैसे —जाह (येषाम्), पक्ष मे—जाण (येषाम्) ।

(१६) मागधी मे अहम् आर वयम् के स्थान मे हगे आदेश होता है । जैसे —हगे शक्कावदालत्तिस्तणिवाशी वीवले (अह शक्कावतारतीर्थनिवासी धीवर) ।

विशेष—प्राकृतप्रकाश के अनुसार अह के स्थान पर हके और अहके भी होते हैं ।

प्राकृत-प्रकाश के अनुसार मागधी के विशेष शब्द ।

संस्कृत	मागधी	प्रा	प्र	अ	सूत्र
माष	माशे	११			३
विलास	विलाशे	११			३
जायते	यायदे	११			४
परिचय	पलिचये	११			५
ग्रहीतच्छले	गहिदच्छले	११			५

विजल	वियले	११	४
निर्भर	णिभिन्ने	११	५
हृदये	हृदके	११	६
आदर	आलले		
कार्यम्	कय्ये	११	७
दुजन	दुय्यणे	११	७
राक्षस	लस्कशे	११	८
दक्ष	ल्म्के	११	८
अहर्	हके अहके, हगे	११	९
एष राजा	एशि लाआ	११	१०
एष पुरुष	एशे पुलिशे	११	१०
हमित	हशिडु, हरिति, हशि-	११	११
पुरुषस्य	पुलिशाह, पु तशश	११	१२
तिष्ठति	चिष्ठिदि	११	१२
कृत	कडे	११	१३
मृत	मडे	११	१४
गत	गडे	११	१४
सोढ्वा	सहिदाणि	११	१६
कृत्वा	कारिदाणि		
शृगाल	शिआले, शिआलके	११	१६



दशम अध्याय

✓ [पैशाची]

(१) पैशाची की प्रकृति शौरसेनी है ।

(२) पैशाची में ज्ञ के स्थान में व्य होता है । जैसे — पञ्चा (प्रज्ञा) सञ्चा (सज्ञा), सव्यञ्चो वर्ज्ज), वञ्चान (ज्ञानम्), विञ्चान (विज्ञानम्) ।

✓ (३) राजन् शब्द के रूपों में जहाँ जहाँ व रहता है उस ज्ञ के स्थान में चिच् अदेश विकल्प से होता है । जैसे — राचिञ्चा लपित, रञ्चञ्चा लपित । राज्ञा लपितम्), राचिञ्चो वन रञ्चो धन (राज्ञो धनम्) ।

✓ (४) पैशाची में न्य आर ण्य के स्थान में व्य आदेश होता है । जैसे — व्यञ्चका अभिव्यञ्च (कन्यका अभिमन्युः) । पुञ्चञ्चस्मो पुञ्चाह (पुण्यकर्म पुण्याहम्) ।

✓ (५) पैशाची में णकार का नकार हो जाता है । जैसे — गुनगनयुत्तो (गुणगणयुक्त), गुनेन (गुणेन) ।

✓ (६) पैशाची में तकार और दकार के स्थान में तकार हो जाता है । जैसे — भगवती, पव्वती (भगवती, पार्वती) । मतनपरवसो (मदनपरवश), सतन (सदनम्), तामोतरो (दामोदर), होतु (होदु शौ०) ।

✓ (७) पैशाची में लकार के स्थान में लकार हो जाता है । जैसे — सल्लिळ, कमळ (सलिल कमलम्) ।

✓(८) पेशाची में श ओर ष के स्थान में न होता है ।
जैसे —सोर्भात, सोभन, ससी (शोभत, शोभन शशी) ।
।वसमो, विसानो (विषम, विषाण) ।

✓(९) पेशाची में हृदय शब्द के यज़र के स्थान में पकार हो जाता है । जैसे —हितपक (हृदयकम्) ।

✓(१०) पेशाची में दु के स्थान तु आदेश विकल्प से होता है —दुतुम्बक, कुदुम्बक (कुदुम्बकम्) ।

✓(११) पैशाची में त्वा प्रत्यय के स्थान में तून आदेश होता है । जैसे —गन्तून, पणितून, पठितून (गवा, हसित्वा, पठित्वा) ।

(१२) पेशाची में घ्रा के स्थान में दून और तू- आदेश होते हैं । जैसे —नद्धन नत्थून, तद्धन, तत्थून (नद्घा-द्घ्रा)

✓(१३) पेशाची में कनी कही र्य, क्त्त और छ के स्थानों में क्रमशः रिय, रैन और सट आदेश होते हैं । जैसे —गरिया, सिनात, कसट (भार्या, स्नातम्, कष्टम्) ।

विशेष—(क) प्राकृतप्रकाश (१०) के अनुसार क्त्त के स्थान में सन आदेश होता है । जैसे —सनान, सनेहो (रनानम्, स्नेह) ।

(ख) नियम १३ में 'कनी-कनी' कहने से मुज्जो (मूय), सुनुसा और तिद्धो (दिष्ट) में उक्त नियम नहीं लगा

(१४) पैशाची में भाव कमवाने यक् के स्थान में उद्य आदेश होता है । जैसे —रमिद्यते, पठिद्यते (रम्यते, पठ्यते)

(१५) पैशाची में क धातु से पर में आये हुए भाव कर्मवाने यक् के स्थान में ईर आदेश होता है और धातु के टि (ऋ) का लोप हो जाता है । जैसे —कीरते (क्रियते) ।

(१६) पैशाची में यादृश, तादृश आदि के दृ के स्थान में

ति आदेश होता है। जैसे —यातिसो, तातिसो, भवातिसो, अब्बातिसो, युम्हातिसो, अम्हातिसो (यादृश, तादृश, भवादृश, अन्यादृश, युध्मादृश, अस्मादृश)।

(१७) पैशाची मे इच् और एच् (देखो छठे अध्याय मे वर्तमान काल के प्रत्यय) के स्थान मे ति आदेश होता है। जैसे —वसुआति, भोति, नेति, तेति।

(१८) पैशाची मे अकार से पर मे आनेवाले इच् और एच् के स्थान मे ते और ति दोनों आदेश होते हैं। जैसे —लपते, लपति, अच्छते, अच्छति, गच्छते, गच्छति, रमते, रमति।

(१९) पैशाची मे इच् और एच् के स्थान मे, भविष्यत् काल मे स्सि न होकर एय्य आदेश ही होता है। जैसे —हुवेय्य^१ (भविष्यति)।

(२०) पैशाची मे अकार से पर मे आनेवाले डसि के स्थान मे आतो और आतु ये दो आदेश होते हैं। जैसे —तुमातो, तुमातु, ममातो ममातु।

(२१) पैशाची मे टा के साथ तद् और इद्म् शब्दों के स्थान मे नेन और छीलिङ्ग मे नाए आदेश होते हैं। जैसे —नेन कनसिनानेन (तेन कृत्स्नानेन अथवा अनेन इत्यादि), पूजितो च नाए (पूजितश्चानया)।

प्राकृत प्रकाश के अनुसार पैशाची के विशेष शब्द—

संस्कृत	पैशाची	प्रा	प्र	अ	सूत्र
मेघ	मेखो			१०	२
गगनम्	गकन			१०	२
राजा	राचा			१०	२

१ त तद्धून चिञ्जित रब्बा का एसा हुवेय्य (ता दृष्ट्वा चिन्तित राज्ञा का एषा भविष्यति)।

निर्भर	णिच्छरो	१०	२
वडिशम्	वटिश	१०	०
दशप्रदन्	दसवत्तनो		
मावव	माथवो	१०	५
गोविन्द	गोविन्तो	१०	२
केशव	केसरो	१०	०
सरभरा	सरफम	१०	०
शलभ	सलफो	१	०
सग्राम	सगामो	१०	१
इव	पिव	१०	५
तरुणी	तलुनी	१०	५
कष्टम्	कसठ	१०	३
स्नानम्	सनान	१०	
स्नेह	सनेहो	१०	०
भार्या	भारिआ	१०	८
विज्ञात	विज्ञाते	१०	०
सवञ्ज	सव्वञ्जो	१०	६
कन्या	कञ्जा	१०	६
कार्यम्	कच्च	१०	११
राज्ञा	राचिना रञ्जा	१०	१०
राज्ञ	राचिनो, रञ्जो	१०	१०
दत्त्वा	दातून	१०	१३
गृहीत्वा	घेतून	१०	१३
हृदयकम्	हितअक	१०	१४



एकादश अध्याय

[अपभ्रंश]

(१) अपभ्रंश में किसी एक स्वर के स्थान में कोई एक दूसरा स्वर प्रायः हो जाता है। जैसे — कश्चित् के लिए अपभ्रंश में कश्च और काश्च, वेणी के लिए वेण और वीण, बाहु के लिए बाह और बाहा, प्रपु के लिए पट्टि पिट्टि और पुट्टि, तृण के लिए तणु, निणु और तृणु, सुकृतम् के लिए सुकिटु, सुकिउ और कृटु, छिन्न के लिए किन्नउ, किलिन्नउ, लेखा के लिए लिह लीह और तेह तथा गोरी के लिए गउरी और गोरी य रूप विभिन्न स्वरों के आने से होते हैं।

२) अपभ्रंश में खादि विभक्तियों के आने पर प्रायः कभी ना प्रातिपदिक के अन्य स्वर का दीर्घ और कभी ह्रस्व हो जाता है। सु विभक्ति में जैसे :—ढोह्ला, सामला (विट श्यामला, हरण स्वर का दीर्घ), ण, सुवर्णरेह (वण संस्कृत का धन्या है। कुछ लोग प्रिया शब्द के स्थान में धण आदेश मानते हैं। सुवर्णरेखा। इनमें दीर्घ स्वर का

१-१ ढोह्ला सामला वण चम्पावण्णा ।

णाइ सुवर्णरेह रुसवट्टइ दिण्णी ॥

(विट श्यामल धन्या चम्पकवर्णा ।

इव सुवर्णरेखा रुषपट्टके दत्ता ॥)

हस्य हुआ है ।) स्त्रीलिङ्ग मे जैसे —विट्टीए (पुत्रि ।
यहाँ हस्य का दीर्घ हुआ ह), पइट्टि (प्रगिष्टा । यहाँ दीर्घ
का हस्य हुआ है ।), निसिआ खग्ग (निशिता खड्गा ।
यहाँ दीर्घ का हस्य हुआ है ।), घोडा ' अश्वा । यहाँ हस्य
स्यग्ग का दीर्घ हो गया है ।)

(३ अपभ्रंश मे सु (प्रथमा मे एकवचन) और अय
विभक्तियों के आने पर शब्द के अन्तिम अ के स्थान मे उर
जाता है । जैसे —दहमुहु^३, तोसिअ-सकर चउमुहु छमुहु
(दशमुख, तोषित शकर चतुर्मुख षण्मुखम्) ।

(४) अपभ्रंश मे पुल्लिङ्ग मे वर्तमान शब्द (प्रातिपदिक
के अन्त्य अ के स्थान मे अ विकल्प से होता है, जब कि उन

१ विट्टीए मइ भणिय तुहुँ मा कर वड्ढा दिट्ठि ।

पुत्ति सकण्णी भल्लि जिव मारइ दिअइ पइट्ठि ॥

(पुत्रि मया भणिता त्व मा कुरु वक्ता दृष्टिम् ।

पुत्रि सकर्णा भल्लिर्यथा मारयति हृदय प्रविष्टा ॥)

२ एइ ति घोडा एह थलि एइ ति निअसआ खग्ग ।

एत्थु मुणीसम जाणिअइ जो न वि वालड वगा ॥

(एते ते अश्वा एषा स्थली एते ते निशिता खड्गा ।

अत्र मनुष्यत्व ज्ञायते य नापि बालयति वल्गाम् ॥)

३ दहमुहु भुवण-भयकर तोसिअ सकरु णिग्गउरहवरि चडिअउ ।

चउमुहु छमुहु माइवि एकहिं लाइवि णावइ दइवें घडिअउ ॥

(दशमुख भुवनभयकर तोषितशङ्कर निर्गत रथवरे आरूढ

चतुर्मुख षण्मुख ध्यात्वा एकस्मिन् लगित्वा इव देवेन घाटत) ।

अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों से पर में सु विभक्ति आई हुई हो ।
जैसे —जो^१, सो (य , स) ।

विशेष—पुल्लिङ्ग में कहने से 'अङ्गहि अङ्गु न मिलउ हलि' (अङ्गै अङ्ग न मिलिन सखि) में नपुसक अङ्गु और मिलिउ में ओ नहीं हुआ ।

(५) अपभ्रंश में टा विभक्ति के आने पर शब्द के अन्तिम अ के स्थान में ए हो जाता है । जैसे —प्रवसन्तेण^२ (प्रवसता), नहेण (नखेन) ।

(६) अपभ्रंश में शब्द के अन्त्य अकार और डि (सप्तमी एकवचन) के स्थान में इकार और एकार होते हैं । जैसे —तलि घल्लइ^३, तले घल्लइ (तले क्षिपति) ।

(७) अपभ्रंश में शब्द के अन्त्य अ के स्थान में, भिस् (तृतीया के बहुवचन) के पर में रहने पर, एकार आदेश विकल्प

१ अगलिअ नेह—निवट्टाह जोअण-ल्खु वि जाउ ।

वरिम सएण वि जो मिल^४ सहि सोक्खह सो ठाउ ॥

(अगलितस्नेहनिर्मुक्ताना योजनलक्ष्मपि जायताम् ।

वर्षशतेनापि य मिलति सखि सौख्याना स स्थानम् ॥)

२ जेमहु दिण्णा दिअहवा दइए प्रवसन्तेण ।

ताण गणन्तिँ अङ्गुलिउ जजरिआउ नहेण ॥

(ये मम दत्ता दिवसा दयितेन प्रवसता ।

तान गणयन्त्या अङ्गुल्य जर्जरिता नखेन ॥)

३ सायुरु उप्परि तणु घरइ तलि घल्लइ रयणाइ ।

मामि सुभिन्नु वि परिहरइ समाणेइ खलाइ ॥

(सागर उपरि तृणानि धरति तले क्षिपति रत्नानि ।

स्वामी सुभत्यमपि परिहरति समानयति खलान् ॥)

से होता है। जैसे —लक्खेहि^१ (लक्ष्मै), पथ मे गुणहि^२ (गुण)।

(८) अपभ्रश मे अकारान्त शब्द से पर मे आने वाले डसि विभक्ति के स्थान मे दे और हु आदेश हाते हैं। जैसे —
वच्छहे^३ गृण्हइ, वच्छहु गृण्हइ (वृक्षात् गृह्णाति)।

(९) अपभ्रश मे अन्त शब्द से पर मे आने वाले +यस्
(पञ्चमी बहुवचन) के स्थान मे हु आदेश होता है। जैसे —
गिरि सिङ्गहु^४, (गिरिशृङ्गेभ्य)।

(१०) अपभ्रश मे अन्त शब्द से पर मे आने वाले डस्
(षष्ठी एकवचन) के स्थान मे सु, हो और स्सु ये तीन आदेश
होते हैं। जैसे —तसु^५ (तरय), दुल्लहो (दुर्लभस्य) सुभणस्सु
(सुजनस्य)।

- १ गुणहि न मपइ। कति पर फउ लिहिआ भुज्जति ।
केसरि न लन् लोडिडअ विगय लक्खोहि धेप्पति ॥
(गुण न मपत् कीर्ति पर फअनि लिखितानि भुज्जन्ति ।
केसरी न लभते रूपदिकामपि गजा लवै गृह्यन्ते ॥)
- २ वच्छहे गृण्हइ फलइ जणु कड पल्लव वज्जेइ ।
तो वि महद्दुसु सुअणु जिव ते उच्छङ्गि वरेइ ॥
(अथात् गृह्णाति फलानि जन कटुपल्लवान् वर्जयात् ।
तथापि महादुम सुजन इव तान उच्छेधरति ॥)
- ३ दूस्झाणें पटिउ खलु अ पणु जणु मारेइ ।
निह गिरिसिङ्गहु पडिअ सिल अन्न विचरु करेइ ॥
(दूरोद्वायेन पतित खल आत्मान जन मारयति ।
यथा गिरिशृङ्गेभ्य पतिता शिला अन्यदपि चूर्णीकरोति ॥)
- ४ जो गुण गोवइ अप्पणा पयडा करइ परस्सु ।
तसु हउ कल्लिणि दुल्लहो वलि किन्नउ सुअणस्सु ॥

(११) अपभ्रश मे अदन्त शब्द से पर मे आने वाले आम् के स्थान मे ह आदेश होता है । जैसे —तणह^१ (तृणानाम्) ।

(१२) इदन्त और उदन्त शब्दों से पर मे आने वाले आम् के स्थान मे, अपभ्रश मे हु और ह दोनों आदेश होते हैं । जैसे —सउणिह^२ (शकुनीनाम्) इत्यादि ।

विशेष—उक्त नियम सुप् सप्तमी बहुवचन) मे भी लागू होता है । जैसे —दुहुँ^३ (द्वयो) ।

(१३) अपभ्रश मे इदन्त, उदन्त शब्दों से पर मे आने वाले डसि, भ्यस और डि के स्थान मे रुमश हे, हु और हि आदेश होते हैं । जैसे —गिरिहे^४, तरुहे (गिरे, तरो) भ्यस् का

(य गुणान् गोपयति आत्मायान् प्रकटान् करोति परस्य ।

तस्य अह कलियुगे दुर्लभस्य बलि करोमि सुजनस्य ॥)

१ तणह तइज्जा भज्जि न वि तें अबड यडि वसन्ति ।

अह जणु लिंगिवि उत्तरइ अह सह सइ मज्जन्ति ॥

(तृणाना तृतीया भज्जी नापि तानि अवटतटे वसन्ति ।

अथ जन लगित्वा उत्तरति अथ सह स्वय मज्जन्ति ॥)

२ दइतु घडावइ वणि तरुहुँ सउणिहँ पक्क फलाइ ।

सो वरि सुक्खु पइठण वि कण्हि खलवयणहि ॥

(देव घटयति वने तरुण शकुनीना (कृते) पक्कफलानि ।

तद् वर सौरय प्रविष्टानि नापि कर्णयो खलवचनानि ॥)

३ धवलु विसूरइ सामिअहो, गरुआ भरु पिक्खेवि ।

हउ कि न जुतउ दुहुँ दिमिहि, खण्डड दोणिण करेवि ॥

(धवल खिद्यति स्वामिन गुरु भार प्रेक्ष्य ।

अह किं न युक्त द्वयोर्दिशो खण्डे द्वे कृत्वा ॥)

४ गिरिहे सिलायलु तरुहुँ फलु धेप्पइ नोसावन्नु ।

वरु मेल्लेप्पिणु माणुसहँ तो वि न रुच्चइ रन्नु ॥

का दुः—तरुहु (तरुभ्य) डि का हि जेमे :--
कालिहि^२ (कलौ) ।

(१४) अपभ्रश मे अदन्न शब्द मे पर मे आने वाले टा के स्थान मे ण और अनुस्वार आदेश होते हैं । जैसे —दइए (नयितेन) पप्र नन्तेण (प्रवन्त) । देखो—इसी अध्याय मे नियम ५ की पाठ टिप्पणी ।

(१५) अपभ्रश मे इकारान्त, उकारान्त शब्दों से पर मे आने वाले टा के स्थान मे ए ण और अनुराज आदेश होते हैं ।
जैमे :—अग्निण (अग्निना) अग्निण (अग्निना) अग्नि (अग्निना) ।

(गिरे शिलानल नरा फल गृह्यते नि सामान्यम् ।

गृह सुक्वा मनुष्याणा तथापि न रोचते शरण्यम् ॥)

१ तरुहु वि वक्कु फनु मुणिवि परिहणु असणु लहन्ति ।

सामिहे एत्तिउ अगलउ आयरु भिचु गृहन्ति ॥

(तरुभ्य अपि वक्कुल फल मुनय अपि परिधानम् अशन लभ त स्वामिभ्य , इयद् अविकादर मृत्या गृहन्ति ।)

२ अह विरल पहाउ जि कलिहि धम्मु ।

(अथ विरलप्रभाव एव कलौ धम ।)

अग्निण उण्हउ होड जु वाए सीअलु तेव ।

जो पुणु अग्नि सीअला तसु उण्हत्तणु केव ॥

(अग्निना उष्ण भवति जगन् वातेन शीतल तथा ।

ग पुन अग्निना शातल तस्य उष्णत्व कथम् ?)

विप्पिअ-आरउ इइ वि पिउ तो वि त आणहि अज्जु ।

अग्निण दड्ढा जइ वि घर तो ते अग्नि कज्जु ॥

(विप्रियकारक यद्यपि प्रिय तदपि तमानय अथ ।

अग्निना दग्ध यद्यपि गृह तदपि तेन अग्निना कार्यम् ॥)

(१६) अपभ्रश मे सु, अम्, जस् और शस् विभक्तियों का लोप हो जाता है। देखो इसी अध्याय के नियम २ की पादटिप्पणी ३ मे 'एइ ति घोडा' इत्यादि मे सु, अम्, जस् का लोप ।

(१७) अपभ्रश मे षष्ठी विभक्ति का प्राय लुक् हो जाता है । जैसे — गय^१ (गजानाम्) ।

(१८) अपभ्रश मे यदि किसी शब्द से संबोधन मे जस् विभक्ति आई हो तो उसके स्थान मे हो आदेश होता है । जैसे — तरुणहो, तरुणिहो^२ (हे तरुणा हे तरुण्य) ।

विशेष — यह नियम पूर्वोक्त सोलहवें नियम का अपवाद है ।

(१९) अपभ्रश मे भिस् ओर सुप् के स्थान मे हि आदेश होता है । जैसे — गुणहि (गुणै), मग्गेहि^३ तिहि (मागेषु त्रिषु) ।

(२०) अपभ्रश मे स्त्रीलिङ्ग मे वर्तमान शब्द से पर मे आनेवाले जस् और शस् (प्रत्येक) के स्थान मे उ और ओ आदेश होते हैं । जैसे — अङ्गुलिउ (अङ्गुल्य । जस्=उ), सव्व

१ मगर-सएहि जु वणिअइ देखु अम्हारा कन्तु ।

अइमत्तह चत्तङ्कुसह गय कुम्भइ दारन्तु ॥

(मगरशतेषु यो वर्ण्यते पश्य अस्माक कान्तम् ।

अतिमत्ताना त्यक्ताङ्कुशाना गजाना कुम्भान् दारयन्तम् ॥)

२ तरुणहो तरुणिहो मुणिउ मइ करहु म अप्पहों घाउ ।

(हे तरुणा, हे तरुण्य (च) ज्ञात मया आत्मान धात मा कुरुत ।)

३ भाईरहि जिव भारइ मग्गेहि तिहि वि पयट्ठइ ।

(भागीरथी यथा भारते मागेषु त्रिषु प्रवर्तते ।)

झाउ^१ (सर्वाङ्गी । शस्=उ), विलासिणीओ^२ (विलासिनो । शस्=ओ) ।

(२१) अपभ्रश मे खोलिङ्ग मे वर्तमान शब्द से पर म आनेवाले टा (तृतीया एकवचन) के स्थान मे ए आदेश होता है । जैसे —ससिमण्डल चन्दिमए^३ (शशिमण्डलचन्द्रिकया) ।

(२२) अपभ्रश मे खोलिङ्ग मे वर्तमान शब्द से पर मे आने वाले डस (षष्ठी एकवचन) और डसि (पञ्चमी एकवचन) के स्थान मे हे आदेश होता है । जैसे —मङ्गहे,^४ तहे,^५ धणहे^६ इत्यादि (मध्याया , तस्या , धन्याया इत्यादि), बालहे^७ (बालाया) ।

१-२, सुन्दर-सव्वझाउ विलासिणीओ पेच्छन्तरण ।

(सुन्दरसर्वाङ्गी विलासिनी प्रेक्षमाणानाम् ॥)

३ निअ-मुह-करहि वि मुद्ध कर अन्वारइ पडिपेक्खइ ।

ससि-मण्डल चन्दिमए पुणु काई न दूरे देक्खइ ॥

(निजमुखकरै अपि मुग्धा करमन्धकारे प्रतिप्रेक्षते ।

शशिमण्डलचन्द्रिकया पुन किं न दूरे पश्यति ?)

४-७ फोडेन्ति जें हियडउ अप्पणउ ताह पराई कवण घृण ।

रक्खेज्जहु लोअहो अप्पणा बालहे जाया विसम थण ॥

(स्फोटयत यौ हृदयमात्मीय तयो परकीया का घृणा ?

रक्षत लोका आत्मान बालाया जातौ विषमौ स्तनौ ॥)

तुच्छ मङ्गहे तुच्छ-जम्पिरेहे ।

तुच्छच्छरोमावलिहे तुच्छरायतुच्छयरहास हे ।

पियवयणु अलहन्तिअहे तुच्छकाय-वम्मह-निवासहे ॥

अनुजु तुच्छउं तहें धणहे त अक्खणह न जाइ ।

कटरि थणतरु मुद्धडे जें मणु विच्चि ण माइ ॥

(तुच्छमध्याया तुच्छजल्पनशीलाया ।

(२३) अपभ्रश मे स्त्रीलिङ्ग मे वर्तमान शब्द से पर मे आनेवाले भ्यस् (पञ्चमी बहुवचन) और आम् (षष्ठी बहुवचन) के स्थान मे हु आदेश होता है । जैसे — वयसिअहु^१ (वयस्याभ्य अथवा वयस्यानाम्) ।

(२४) अपभ्रश मे स्त्रीलिङ्ग मे वर्तमान शब्द से पर मे आनेवाले छि (सप्तमी एकवचन) के स्थान मे हि आदेश होता है । जैसे — ग्रहिहि (मय्याम्) ।

(२५) अपभ्रश मे नपुंसक लिङ्ग मे वर्तमान शब्द से पर मे आनेवाले जस् (प्रथमा बहुवचन) और शस् (द्वितीया बहुवचन) के स्थान मे इ आदेश होता है । जैसे — कमलइ^१ अलि-उलइ (कमलानि अलिकुलानि) ।

तुच्छाच्छरोमावल्या तुच्छरागाया तुच्छतरहासाया ।

प्रियवचनमलभमानाया तुच्छकायमन्मथनिवासाया ॥

अन्यद् यत्तच्छ तस्या धन्याया तदाख्यातु न याति ।

आश्चर्य स्तनान्तर मुग्धाया येन मनो वर्त्मनि न माति ॥)

१ भल्ला हुआ जु मारिआ बहिणि महारा कन्तु ।

लज्जेन्नु वयसिअहु जइ भग्गा घर एन्तु ॥

(भव्य भूत यत् मारित भगिनि अस्मदीय कान्त ।

अलाल्ज्यत वयस्याभ्य (नाम्) यदि भग्न गृह ऐष्यत ॥)

२ वायसु उड्ढावन्तिअए पिउ दिट्ठउ सहस ति ।

अद्धा बलया महिहि गम अद्धा फुट्ट तडत्ति ॥

(वायस उड्ढापयन्त्या प्रियो दृष्ट सहसेति ।

अर्द्धानि बलयानि मय्या गतानि अर्द्धानि स्फुटितानि तटिति ॥)

१ कमलइ मेल्लवि अलिउलइ करि गण्डाह महन्ति ।

असुलह मेच्छण जाह मलि ते ण वि दूर गणयन्ति ॥

२६) अपभ्रश मे नपुमक लिङ्ग मे वर्तमान कान्त (जिसके अन्त मे अमहित क हा) शब्द से पर मे आनेवाले सु (प्रथमा-एकवचन) और अम् (द्वितीया एकवचन , के स्थान उ आदेश होता है। जैसे —इसी अध्याय के नियम २० को पाठ टिप्पणी २ मे तुच्छउ (तुच्छम्) है। आर भगउ^१ (भगम्) इत्यादि को भी तेयना चाहिए।

(२७) अपभ्रश मे अकारान्त सर्वादि से पर मे आनेवाले डसि (पञ्चमी एकवचन) के स्थान मे हाँ आदेश होता है। जैसे —जहाँ होन्तउ आगदो, तहाँ होन्तउ आगदो (यस्नात् भवान् आगत तस्मात् भवान् आगत) एव कहाँ (कस्मात्)।

(२८) अपभ्रश मे अकारान्त किम् (क) से पर मे आनेवाले डसि क स्थान मे इहे आदेश ओर क के अकार का लोप विकल्प से होता है। जैसे —किहे^२ (कस्मात्), कहाँ (कस्मात्)।

(२९) अपभ्रश मे अकारान्त सर्वादि शब्दो से पर मे आने वाले सप्तमी के एकवचन छि के स्थान मे हि आदेश होता है।

(कमलानि मुक्त्वा अलिकुलानि करिगण्डान् काक्षन्ति ।

असुलभम् एष्टु येषा निर्बन्ध ते नापि दूर गणयन्ति ॥)

१ भगउ देखिखवि निअय बलु, बलु पसरिअउ परस्सु ।

उम्मिल्लइ ससिरेह जिव करि करवालु पियस्सु ॥

(भगुरु दृढ़ा निजक बल बल प्रसृतक परस्य ।

उन्मीलति शशिलेखा यथा करे करवाल प्रियस्य ॥)

२ जइ तह तुइउ नेहडा मइ सहूँ न वि तिल तार ।

त किहँ वड्ढेहिं लोअणेंहिं जोइज्जउँ सय वार ॥

(यदि तस्या युज्यतु स्नेह मया सह नापि तिलतार ।

तत् कस्मात् वक्राभ्या लोचनाभ्या दृश्ये (अह) शतवारम् ॥)

जैमे —जहि , तहि, एकहि (यस्मिन् , तस्मिन् , एकस्मिन्)

(३०) अपभ्रश मे अकारान्त यद्, तद् और किम् (य, त क) से पर मे आनेवाले षष्ठी के एकवचन ङस् के स्थान मे आसु आदेश विकल्प से होता है । और शब्द के टि (अ) का लोप भी होता है । जैसे —जासु, तासु, कासु^१ (यस्य, तस्य, कस्य) ।

(३१) अपभ्रश मे स्त्रीलिङ्ग मे वर्तमान यद्, तद्, किम् (या, ता, का) से पर मे आनेवाले षष्ठी के एकवचन ङस् के स्थान मे विकल्प से अहे आदेश और टि (आ) का लोप भी होता है । जैसे —जहे केरउ, तहे केरउ, कहे केरउ (यस्या कृते, तस्या कृते कस्या कृते) ।

(३२) अपभ्रश मे सु और अम् (प्रथमा-द्वितीया के एकवचन) के पर मे रहने पर यद् और तद् शब्दों के स्थान मे

१ जहि कप्पिज्जइ सरिण सरु छिज्जइ खगिण खरगु ।

तहि तेहइ भड घड निवहि कन्तु पयासइ मरगु ॥

(यस्मिन् कल्प्यते शरेण शर छियते खड्गेन खड्ग ।

तस्मिन् तादृशे भट घटा निवहे कान्त प्रकाशयति मार्गम् ॥)

२ कन्तु महारउ हलि सहिए निच्छइ रुसइ जासु ।

अत्थिहि, सत्थिहि हत्थिहि वि ठाउ फेडइ तासु ॥

(कान्त अस्मदीय हला सखिके निश्चयेन रुष्यति यस्य ।

अत्रै शस्त्र हस्तैरपि स्थानमपि स्फोटयति तस्य ॥)

जीविउ कास न वल्लहउ धणु पुणु कासु न इट्ठु ।

दोण्णि वि अवसर निवडिअइ, तिण सम गणइ विसिट्ठु ॥

जीवित कस्यै न वल्लभक धन पुन कस्य नेष्टम् ।

द्वे अपि अवसर—निपतित तृणसमे गणयति विशिष्ट ॥

क्रमशः ध्रु और त्र आदेश विकल्प में होते हैं। जैसे — प्रज्ञाणि चिद्वि नाहु ध्रु त्र रणि वरदि न भ्रन्ति (प्राज्ञणे तिघ्रात नाव यत् यद् रणे करोति न भ्रान्तिम्), पक्ष में त बोल्लिअइ जु निव्वहइ (तत् जल्प्यते यन्निर्गति) ।

(३३) अपभ्रश में नपुसक लिङ्ग में वर्तमान इदम् शब्द के स्थान में सु और अम् के पर में रहने पर इपु आदेश होता है। जैसे — इमु कुलु तुह तणउं, इमु कुलु देक्खु (इद कुल इत्यादि) ।

(३४) अपभ्रश में प्रथमा और द्वितीया के एकवचनो में एतत् शब्द के स्त्रीलिङ्ग में एह, पुल्लिङ्ग में एहो और नपुसक में एहु रूपा होते हैं। जैसे — एह कुमारी एहो नर एहु मणोरह ठाणु (एषा कुमारी, एष नर एतन्मनोगम्यानम्) ।

(३५) अपभ्रश जस्-शस् के आने पर एतद् शब्द के स्थान में एइ आदेश होता है। देखो—इसी अध्याय के नियम २ तथा ३ की पादटिप्पणी एइ पेच्छ (एतान् प्रेक्षस्व) ।

(३६) अपभ्रश में जस्-शस् के आने पर अत्स् शब्द के स्थान में ओइ आदेश होता है। जैसे — ओइ^१ ।

(३७) अपभ्रश में इदम् शब्द के स्थान में आय आदेश स्वादि विभक्तियों के पर में रहने पर होता है। जैसे — आयइ (इमानि), आयेण (एतेन), आयहो (अस्य) इत्यादि ।

(३८) अपभ्रश में सर्व शब्द के स्थान में साह आदेश विकल्प से होता है। जैसे — साहु वि लोउ, सव्वु विलोउ (सर्वोऽपि लोक) ।

१ जइ पुच्छह घर वड्डाइ तो वड्डा घर ओइ ।

विहलित्त जण-अब्भुद्धरण कन्तु कुडीरइ ओइ ॥

(यदि पृच्छथ गृहाणि महान्ति तद् महान्ति गृहाणि अमूनि ।

विहलित्तजनाभ्युद्धरण कान्त कुटीरके पश्य ॥)

(३६ अपभ्रंश में किम् शब्द के स्थान में काइ और ञवण आदेश विकल्प से होते हैं। जैसे — इसी अध्याय के नियम २१ की पादटिप्पणी एक में देखो—‘काइ न दूरे देखखइ’ (कि न दूरे पश्यति ?) और नियम २२ की पादटिप्पणी दो में ‘ताहँ पराई कवण घृण’ (तयो परकीया का घृणा ?), ‘कि गजहि रल मेह’ (कि गजसि रल मेघ)।

(४०) अपभ्रंश में युष्मद्, अस्मद् विषयक नियमों को न लिख कर यहाँ हम उनके रूप ही लिख रहे हैं। ये रूप ह-चन्द्र के अनुसार हैं। नियमों के लिए उन्हीं के ४ ३६८ से ४ ३८१ तक सूत्रों को देखना चाहिए।

अपभ्रंश में युष्मद् शब्द के रूप —

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तुहु	तुम्हे तुम्हः
द्वितीया	पइ, तइ	तुम्हे तुम्हइ
तृतीया	पइ, तइ	तुम्हेहि
पञ्चमी	तउ, तुज्झ, तुध्र (तुहु)	तुम्हह
षष्ठी	” ” ” ”	तुम्हह
सप्तमी	पइ, तइ	तुम्हासु

अपभ्रंश में अस्मद् शब्द के रूप —

प्रथमा	हउ	अम्हे, अम्हइ
द्वितीया	मइ	अम्हे, अम्हइ
तृतीया	मइ	अम्हेहि
पञ्चमी	महु, मज्झु	अम्हह
षष्ठी	महु, मज्झु	अम्हह
सप्तमी	मइ	अम्हासु

(४१) अपभ्रंश मे धातु से वर्तमान काल के प्रथम पुरुष के बहुवचन मे तिङ् का आदेश 'हि' प्रिकल्पन होता है । जैसे — धरहि, करहि, सहहि । (धरत , कुन्त शोभन्ते)

(४२) अपभ्रंश मे धातु से, वर्तमान काल के मध्यम पुरुष के एकवचन मे, तिङ् के स्थान मे 'हि' आदेश प्रिकल्पन होता है । जैसे — रुअहि (रोदिषि), लहहि (लभसे , पक्ष मे रुअसि इत्यादि ।

(४३) अपभ्रंश मे धातु से, वर्तमान काल के मध्यम पुरुष के बहुवचन मे, आनेवाले तिङ् के स्थान मे हु अन्त प्रिकल्पन होता है । जैसे — इच्छहु (इच्छथ), पक्ष मे — उच्छह ।

- १ मह क्वरि बन्ध तह मोह वरहि ।
न मल्ल जुज्झु ममिराह करहि ।
(मुखकबरीब-वौ तस्या शोभा धरत ।
ननु मल्ल युद्ध शशिराह कुरुत ॥)
तह सहहि कुरल भमर उल तुलिअ ।
न तिमिर डिम्भ खेलन्ति मिलिअ ॥
(तस्या शोभन्ते कुरला भमरकुलतुल्लिता ।
ननु भमरडिम्भा व्रीडन्ति मिलिता ॥)
- २ वप्पीहा पिउ पिउ भणवि कित्तिउ रुअहि हयास ।
तुह जलि महु पुणु वल्लहइ विहुँ वि न पूरिअ आस ।
चातक (पपीहा) पिबामि पिबामि (प्रिय पिय)
भणि वा कियत् रोदिषि हताश
तव जले मम पुनर्वल्लभे द्रयोरपि न पूरिता आशा ॥)
- ३ बलि-अब्भत्थणि महु महणु लहुद्धूआ सोइ ।
जइ इच्छहु वडत्तणउ देहु म मग्गाहु कोइ ॥

(४४) अपभ्रंश मे धातु से पर मे आनेवाले वर्तमानकालिक उत्तम पुरुष के एकवचन तिङ के स्थान मे उ आदेश विकल्प से होता है । जैसे —कड्डउ (कर्षामि), पक्ष मे कड्डामि (कर्षामि)

(४५) अपभ्रंश मे धातु से पर मे आनेवाले वर्तमानकालिक उत्तम पुरुष के बहुवचन तिङ के स्थान मे हु आदेश विकल्प से होता है । जैसे —लहहु^३, लभामहे), जाहु (याम), वलाहु (वलामहे) ।

(४६) अपभ्रंश मे हि और स्व के स्थान मे इ, उ और ए ये तीनों आदेश विकल्प से होते हैं । इ जैसे —सुमरि^१, मेल्लि (स्मर, मुञ्च), विलम्बु^२ (विलम्बस्व), करे^३ (कुरु) पक्ष मे—सुमरहि इत्यादि ।

(बले अ+यर्थने मधुमयनो लघुकीभूत , सौऽपि ।

यदि इच्छथ महत्त्व दत्त मा मार्गयत कमपि ॥)

२ विहि विणडउ पीडन्तु गह म धणि करहि बिसाउ ।

सपइ कट्टुँ वेस जिव छुड अग्घइ ववसाउ ॥

(विधिर्विनाटयतु ग्रहा पीडयन्तु मा धन्ये कुरु विषादम् ।

सपद कर्षामि वेषमिव यदि अर्घति व्यवसाय ॥)

३ खग्ग विसाहिउ जहि लहहु पिय तहि देसहि जाहु ।

रण दुन्निवस्से भग्गाइ विण जुज्झं न वलाहुँ ॥

(खड्ग-विसाधित यत्र लभामहे तत्र देशे याम ।

रणदुर्भिक्षेण भग्ना विना युद्धेन न वलामहे ॥)

१ २ ३ कुज्जर सुमरि म सल्लइउ सरला सास म मेल्लि ।

कवल जि पाविय विहि वसिण ते चरि माणु म मेल्लि ॥

भमरा एत्थु वि लिम्बडइ के वि दियहडा विलम्बु ।

घण पत्तलु छाया बहुलु फुल्लइ जाम कयम्मु ॥

(४७) अपभ्रंश मे भविष्यत्कालिन् तिङ् सन्धी 'स्य' के स्थान मे स आदेश विकल्प से होता है। जैसे —होसइ, पक्ष मे—होहिइ (भविष्यति) ।

(४८) सस्कृत के 'क्रिये' इस क्रियापद के स्थान मे अपभ्रंश मे कीसु यह आदेश विकल्प से होता है। जैसे —'तसु कन्तहो बलि कीसु (तस्य कान्तस्य बलि क्रिये) ।

सस्कृत धातुओ के अपभ्रंश मे आदेश —

धातु आदेश उदाहरण

भू (पर्याप्ति मे) हुब्ब अहरि पहुब्बइ^२ नाहु (अघरे प्रभवति नाय)

ब्रू ब्रुव ब्रुवह^३ सुहामिउ किपि (ब्रूत सुभा-
षित किञ्चिन्)

” ब्रोप्प ब्रोप्पिणु^४ (उक्त्वा)

प्रिय एम्बहि करे स्नेह करि छड्दि तुहँ करवालु ।

ज कावालिय बप्पुडा लेहिँ अभग्गु क्वालु ॥

(कुञ्जर स्मर मा सल्लकी सरलान श्वासान् मा सुञ्च ।

कवला ये प्राप्ता विधिवशन ताश्चर मान मा सुञ्च ॥

भ्रमर अत्रापि निम्बके कति दिवसान् विलम्बस्व ।

घनपत्रवान् छायाबहुल फुल्लति यावत्कदम्ब ॥

प्रिय एवमेव कुरु भल्ल करे त्यज त्प करवालम् ।

येन कापालिका वराका लान्ति अभग्ग कपालम् ॥)

१ दिअद्दा जन्ति भडप्पडहिँ षडहिँ मनोरह पच्छि ।

ज अच्चइ त माणिअइ होसइ करतु म अच्चि ॥

(दिवसा यान्ति वेगै पतन्ति मनोरथा पश्चात् ।

यदस्ति तन्मान्यते भविष्यति कुर्वन् मा आस्व ॥)

२ हेम० ४ ३९० ३ हेम० ८ २९१ ४ हेम० ४ २९१

ब्रच	वुच	वुचइ, वुचेप्पि, वुचेप्पिणु ^१
दृश	प्रस्स	प्रस्सदि ^२
ग्रह	गृण्ह	पढ, गुण्हेप्पिणु, व्रतु (पठगृहीत्वा व्रतम्)
तक्ष	छोल्ल	पसि छोल्लिज्जन्नु ^३ (शशी अतश्चिष्यन्)
तापि	भल्ल	मासानलजाल भल्लकिअउ ^४ (श्वसा नलज्वालासन्तापितम् ।)
शल्लाय	खुडुक्क	हिअइ खुडुक्कइ ^५ (हृदये शल्लायते)
गर्ज	गुडुक्क	गुडुक्कइ ^६ मेहु (गर्जति मेघ)

(४६) अपभ्रश मे पढ के आदि मे अवर्तमान किन्तु स्वर से पर मे आनेवाले और असयुक्त क, ख, त, थ, प, फ, वर्णों के स्थान मे प्राय ग, घ, द, व, ब और भ कम से ही होते है । जैसे —पिअमाणुसविच्छोह गरु (प्रियमनुष्यविद्वोभकरम्), सुधि चिन्तिज्जइ माणु (सुख चिन्त्यते मान), कधिदु (कथितम्), सबबु (शपथम्), सभलउ (सफलम्) ।

(५०) अपभ्रश मे पढ के आदि मे अवर्तमान असयुक्त मकार के स्थान मे अनुनासिक वकार विकल्प से होता है । जैसे —कवेलु, भवरु (कमलम्, भ्रमर), जिब, तिब (जिम, तिम) ।

(५१) अपभ्रश मे सयोग के बाद मे आनेवाले रेफ का लुक् विकल्प से होता है । जैसे —जइ केवइ पावीसु पिउ (यदि

१ हेम० ४ ३९०

२ हेम० ४ ३९३

३ हेम० ४ ३९३

४ हेम० ४ ३९५

५ तुलना कीजिए—भोजपुरी के 'भारकना' से । हेम० ४ ३९५

६ कौटे जैमा आचरण करना' इस अर्थ में । हेम० ४ ३९५

७ तुलना कीजिए—हिन्दी के 'घुडकना' से । हेम० ४ ३९५

कथञ्चित् प्राप्स्यामि प्रियम्), पक्ष मे—जइ भग्गा पारकडा ते' सहि मञ्जु प्रियेण (यदि भग्गा परकीयास्तत्सखि मम प्रियेण ।)

(५०) अपभ्रंश मे कहीं कहीं सर्वथा अविद्यमान रेफ भी होता देखा जाता है। जैसे —ब्रासु महारिसि एउ भणइ (व्यास महर्षि एतद् भणति, 'कहीं कहीं' ऐसा कहने से 'वासेण पि भारहसम्भि बद्ध (व्यासेनापि भारतस्तम्भे बद्धम् ।) मे नियम लागू नहीं हुआ ।

(५३) अपभ्रंश मे आपद्, विपद्, ओर सपद् के अन्त्य द् के स्थान मे कहीं कहीं इ हो जाता है। जैसे —अणउ करन्तहा पुरिसहो जाणइ आवइ (अनय कुर्यत पुम्परय जापद् आयाति), विवइ विपद्), सपइ (सपद्), 'कहीं कहीं' कहने से 'गुणहि' न मपय कित्ति पर' (उपर्युक्त नियम ७ की पाठटिप्पणी ४) मे सपइ न होकर सपय हुआ ।

(५४) अपभ्रंश मे कथ, यथा ओर तथा के थादि अवयवों के स्थान मे हर एक के एम, इम, इह और इध ये चार आदेश होते हैं और पूर्व के टि का लोप होता है। जैसे —'केम' (केवँ) समणउ दुहु दिणु किध रयणी हुहु होय' (कथ समाणयता दुष्ट दिन कथ रात्रि शीघ्र भवति ?) एव किह, जेम (वँ), जिम (वँ), जिह, जिध, तेम (वँ), तिम (वँ), तिह तिध होते हैं ।

(५५) अपभ्रंश मे याट्श्, ताट्श्, कीट्श् और ईट्श् शब्द क्रमश जेहु, तेहु, केहु और एहु रूप प्राप्त करते हैं। जैसे —जेहु, तेहु, केहु, एहु^३ (याट्क्, ताट्क्, कीट्क्, ईट्क्)

१ तुलना कीजिए—गुजराती के केम, जेम और तेम से ।

२ तुलना कीजिए—हिन्दी के क्यों, ज्यों और त्यों से ।

३ मइ भणिअउ बलिराय तुहु केहु मग्गण एहु ।

(५६) अकारान्त यादृश, तादृश, कीदृश और ईदृश के स्थान में जइस, तइस, कइस और अइस रूप होते हैं । जैसे — जइसो, तइसो, कइसो ओर अइसो (यादृश , तादृश इत्यादि)

(५७) अपभ्रश में यत्र के रूप जेत्थु और जत्तु तथा तत्र के रूप में तेत्थु और तत्तु होते हैं । जैसे — जेत्थु, जत्तु (यत्र), तेत्थु, तत्तु (तत्र) ।

(५८) अपभ्रश में यावत् के रूप जाम (जावँ), जाउ, जामहि और तावत् के रूप ताम (तावँ), ताउ, तामहि (तावत्) ।

जेहु तेहु न वि होइ वढ सइ नारायण एहु ॥

(मया भणित बलिराज त्व कीदृग् मार्गण एष ।

यादृक्, तादृक् नापि भवति मूर्ख स्वयं नारायण इदृक् ॥)

१ जइ सो घडि प्रयावदा केत्थु वि लेप्पिणु सिक्खु ।

जेत्थु वि तेत्थु वि एत्थु जणि भण तो तहि सारिक्खु ॥

(यदि स घटयति प्रजापति कुत्रापि लात्वा शिक्षाम् ।

यत्रापि तत्रापि अत्र जगति भण तदा तस्या सदृशीम् ॥)

२ जाम न निवडइ कुम्भ-यडि सीह चवेड चडक्क ।

ताम समतहँ मयगलह पइ पइ वज्जइ ढक्क ॥

(यावन्न निपतति कुम्भ तटे सिंहचपेटाचटाकार ।

तावत्पमस्तानां मदकलानां पदे पदे वाद्यते ढक्का ॥)

तिलह तिलत्तण ताउँ पर जाउँ न नेह गलन्ति ।

जामहिँ विसमा कज्ज-गइ जीवहँ मज्जे एइ ॥

(तिलानां तिलत्व तावत् पर यावत् न स्नेहा गलन्ति ।

यावत् विषमा कार्यगति जीवानां मध्ये आयाति ॥)

तामहि अच्छउ डयर जणु सुअणु वि अन्तर देइ ।

(तावत् आस्तामितर जनं सुजनोऽप्यन्तरं ददाति ॥)

(५६) अपभ्रंश मे कुत्र के स्थान मे केत्थु आर अत्र के स्थान मे एत्थु रूप होते हैं । जैसे — केत्थु (कुत्र), एत्थु^१ (अत्र)

(६०) अपभ्रंश मे (परिमाणार्थक) यावद् और तावद् के स्थान मे जेवड और तेवड रूप विकल्प से होते हैं । इसी प्रकार (परिमाणार्थक) इयत् और कियत् के स्थान मे एवड और केवड रूप विकल्प से होते हैं । जैसे — जेवडु अन्तरु रावण रामहँ तेवडु अन्तरु पट्टण-गामहँ (यावदन्तर रावणरामयो तावदन्तर पत्तन (पट्टण) ग्रामयो) एव एवडु अन्तरु (इयत् अन्तरम्), केवडु अन्तरु (कियत् अन्तरम्) ।

(६१) अपभ्रंश मे परस्पर के स्थान मे 'अपरोप्पर' रूप होता है । जैसे — अवरोप्पर जोअन्ताह सामिउ गञ्जिउ जाह (परस्पर युद्धचमानाना स्वामी पीडित येषाम्) ।

(६२) अपभ्रंश मे कादि (क + आदि) व्यञ्जनो मे स्थित ए ओर ओ एव पदान्त मे वर्तमान उ, हु, हिं ओर ह का लघु उच्चारण किया जाता है । जैसे — अन्न जु तुन्छउँ तहे घणहे, बलि किज्जउँ सुअणस्सु, ढइउ घडावइ वणि तरुहु, तरुहु वि वक्कनु, खग विसाहिउ जहि लहहु, तणहँ तइज्जी भज्जि न वि ।

(६३) प्राकृत के नियमानुसार जहाँ म्ह हुआ हो उसका (म्ह का) अपभ्रंश मे म्म होता है । जैसे :—संस्कृत मे ग्रीष्म, प्राकृत मे गिम्हो और अपभ्रंश मे गिम्मो रूप होते हैं ।

(६४) अपभ्रंश मे अन्यादश शब्द के स्थान मे अन्नाइस और अवराइस ये आदेश होते हैं । जैसे — अन्नाइसो, अवराइसो (अन्यादश) ।

१ इन उदाहरणों के लिए इसी अध्याय के नियम ५७ की पाद टिप्पणी २ देखो ।

नीचे कुछ अन्य मस्कृत शब्दों के अपभ्रंश रूप मात्र ही दिये जा रहे हैं। विशेष जानकारी के लिए हेमचन्द्र के व्याकरण का अवलोकन करना चाहिए।

संस्कृत	अपभ्रंश	हम० सूत्र संख्या
प्राय	प्राउ, प्राइव, प्राइम्प पग्गिम्ब	४ ४१४
अन्यथ	अनु अन्नह	४ ४१२
कुत	कउ कहन्तिहु	४ ४१५
तत, तदा	तो	४ ४१७
एव	एम्प	४ ४१८
परम्	पर	" "
समम्	समाणु	" "
ध्रुवम्	ध्रुव	" "
मा	म	"
मन्त्र	मणउ	" "
किल	किर	४ ४१६
अथवा	अह्वइ	" "
दिवा	दिवे	" "
सह	सहु	" "
नाहि	नाहि	" "
पश्चात्	पच्छइ	४ ४२०
एवनेय	एम्बइ	" "
एव	जि	"
इदानीम्	एम्बहि, एम्बहि	"
प्रत्युत	पच्चलिउ	" "
इत	एत्तहे	" "
विवर्णण	वुन्नउ	४ ४२१
उक्तम्	उत्तउ	" "

वर्त्मनि	विच्चि	४ ४२१, ३५०
शोघ्रम्	वहिल्लउ	४ ४२२
कलहकारी	घड्डल	" "
अस्पृश्यससर्ग	विट्ठाल	" "
भय	द्रवक्क	" "
आत्मीयम्	अप्पण	" "
दृष्टि	द्रेहि	" "
गाढ	निच्चट्ठ	" "
साधारण	सड्डल	" "
कौतुक	कोट्ट	" "
क्रीडा	खेड्ड	"
रम्य	खण्ण	" "
अद्भुत	ढक्करि	" "
हे सखि	हेल्लि	"
पृथक् पृथक्	जुअ जुअ	"
मूढ	नाल्लिउ, वढ	"
नव	नवख	" "
अवस्कन्द	दडवट	"
यदि	छुड्ड	" "
सबन्धी	केर, तण	" "
मा भैषी	मब्भीसा	" "
यद् यद् दृष्टम्	जाइडिआ	" "
	हुहु ^१	४ ४२३
	घुगघ ^२	" "

घइ ^१		४ ४२४
खाइ ^२		" "
केहि ^३		४ ४२५
तेहि ^४		" "
रेसि ^५		" "
रेसि ^६		" "
तयोण ^७		" "
पुन	पुणु	४ ४२६
विना	विणु	" "
अवश्यम्	अवसे अवस	४ ४२७
एकश	एक्कसि	४ ४२८

(६५) अपभ्रश मे नाम (प्रातिपदिक) के आगे स्वार्थ मे अ, अड, और उल्ल प्रत्यय होते हैं । और स्वार्थिक क प्रत्यय का लुक् भी होता है । जैसे —वे दोसडा (द्वौ दोषौ) कुडल्ली (कुटी) ।

विशेषः—जहाँ अड और उल्ल प्रत्यय होते हैं, वहाँ पूर्व के टि का लोप भी हो जाता है ।

(६६) पूर्वोक्त नियमानुसार जो प्रत्यय किये जाते हैं तदन्त नाम से स्त्रीत्व अर्थ के द्योतन मे ई प्रत्यय हो जाता है और टि का लोप भी हाता है । जैसे —गोरड + ई = गोरडी ।

(६७) अपभ्रश मे स्त्रीलिङ्ग के द्योतन करने वाले अ प्रत्ययान्त से पर मे आने वाले प्रत्यय से पुन आ प्रत्यय होता है । जैसे —धूलि = धूल = धूलड = धूलडिआ (धूलि) ।

विशेषः—स्त्रीलिङ्ग मे वर्तमान नहीं रहने पर यह नियम लागू नहीं होता । जैसे —कन्नडइ (कर्णे) ।

(६८) अपभ्रंश मे युष्मदादि शब्दो से पर मे आने वाले ईय प्रत्यय का आर आदेश होता है । और उसके पूर्व के टि का लोप भी होता है । जैसे —तुहारेण (युष्मदीयेन), अम्हारा (अस्मदीयम्), महारा (अस्मदीय) ।

(६९) अपभ्रंश मे इदम्, किम्, यद्, तद् और एतद् शब्दो से पर मे आने वाले अतु प्रत्यय के स्थान मे एत्तुल आदेश होता है और पूर्व के टि का लोप होता है । जैसे —एत्तुलो, केत्तुलो, जेत्तुलो, तेत्तुलो ।

(७०) अपभ्रंश मे सप्तम्यन्त सर्वादि से पर मे आने वाले त्र प्रत्यय के स्थान मे एत्तहे आदेश होता है । पूर्व के टि का लोप होता है । जैसे —एत्तहे, तेत्तहे (अत्र, तत्र) ।

(७१) अपभ्रंश मे त्व और तल प्रत्ययो के स्थान में प्राय ष्पण आदेश होता है । जैसे —बड्डुष्पणु (महत्त्वम्), पक्ष मे—वड्डुत्तणहो (महत्त्वस्य) ।

(७२) अपभ्रंश मे तव्य प्रत्यय के स्थान मे इएव्वउ, एव्वउ और एवा ये तीन आदेश होते हैं । जैसे —करिएव्वउ, मरिएव्वउ (कर्तव्यम्, मर्तव्यम्), सहेव्वउ (सोढव्यम्), सोएवा, जग्गेवा (स्वपितव्यम्, जागरितव्यम्) ।

(७३) अपभ्रंश मे त्त्वा प्रत्यय के स्थान मे इ, इउ, इवि, अवि, एप्पि, एप्पिणु, एवि और एविणु आदेश होते हैं ।
इ जैसे:—मारि (मारयित्वा), इड जैसे:—भज्जिउ (भङ्क्त्वा),
इवि जैसे:—चुम्बिवि (चुम्बित्वा), अवि जैसे:—विछोडवि (विच्छोड्य), एप्पि जैसे:—जेप्पि (जित्वा), एप्पिणु जैसे:—चएप्पिणु (त्यक्त्या), एवि जैसे:—पालेवि (पालयित्वा), एविणु जैसे:—लेविणु (लात्वा) ।

(७४) अपभ्रश मे 'नुम्' प्रत्यय के स्थान मे एउ, अण, अणह, अणहि, एपि, एपिणु, एवि और एविणु ये आठ आदेश होते हैं । एव जैसे:—देउ (दातुम्), अण जैसे:—रुण (कर्तुम्), अणह और अणहि जैसे:—मुञ्जणह, मुञ्जगहि (भोक्तुम्), एपि, एपिणु, एवि और एविणु जैसे:—जेपि, चएपिणु, पालेवि और लेविणु (जेतु, त्यक्तु, पालयितु और लातुम्) ।

विशेष:—गम वातु से एपिणु आने पर गम्पिणु और गमेपिणु रूप होते हैं । उसी तरह एपि के रहने पर गम्पि और गमेपि रूप होते हैं ।

(७५) अपभ्रश मे तुन् प्रत्यय के स्थान मे अणअ आदेश होता है । जैसे —मारणउ (ओ), बोल्लणउ (मारयिता, कथयिता) ।

(७६) अपभ्रश मे इव (उत्प्रेक्षा मे) के अर्थ मे न, नउ, नाइ, नाइव, जणि, जणु ये छ रूप होते हैं ।

न जैसे:—न मल्ल जुञ्जु ससिराहु करहि (ननु मल्लयुद्ध शशिराहु कुरुत) **नउ जैसे:**—नउ जीवगालु दिण्णु । (ननु जीवार्गलो दत्त) **नाइ जैसे:**—थाइ गवेसइ नाइ । (स्तोघ गवेषयतीव) **नावइ जैसे:**—नावइ गुरु-मच्छर भरिउ । (ननु गुरु-मत्सर-भरितम्) **जणि जैसे:**—सोहइ इन्द्रनीलु जणि कणइ बइट्टउ (शोभते इन्द्रनील ननु कनके उपवेशित) **जणु जैसे:**—निरुधम रसु पिण पिणवि जणु । (निरुधमरस प्रियेण पीत्तेव) ।

(७७) अपभ्रंश मे लिङ्ग प्राय बदलते रहते हैं । जैसे —
गय कुम्भइ (गजकुम्भानि । कुम्भ शब्द पुल्लिङ्ग है, किन्तु नपुंसक
के रूप मे व्यग्रहृत हुआ है) ।

(७८) अपभ्रंश के शेष कार्य सौरसेनी के अनुसार किये
जाते है ।

इति शुभम् ।





परिशिष्ट

अक्षरानुक्रम शब्दसूची

अअ हक्खो शौ ८ ४४
 अइसुतथ १ ३३
 अइसरिअ १ ८९
 अइसो अप ११ ५६
 अउ व शौ ८ ४४, पा २ ९
 अक्खवल १ २
 अक्खो (वि) २ १, ३ ३
 अक्खइ (वि) २ ३
 अगणी ७ अ
 अगरू (वि) पा २ १
 अगिम्मि शौ ८ ४४
 अगुरू (वि) २ १
 अगगओ १ ४६
 अगिण अप ११ १५
 अगिण अप ११ १५
 अगिणी १ २
 अगि अप ११ १५
 अगगी ७ अ
 अगघो ३ ७ (वि) २ १
 अक्को १ ३
 अकोल्ल तेल्ल (वि) ३ ४०
 अकोल्लो ७ अ
 अङ्गण १ ३७
 अगण १ ३७
 अङ्गारो शौ ८ ४४ ७ अ
 अङ्गु अप (वि) ११ ४

अङ्गुलिअ अप ११ २०
 अङ्गरिअ शौ ८ ४३, ७ अ
 अच्छुअर ७ अ, पा १ ५७
 अच्छुइ ६ ६
 अच्छुति प १० १८
 अच्छुते प १० १८
 अच्छुदि शौ ८ १६
 अच्छुदे शौ ८ १६
 अच्छुन्ति शौ ८ ३७
 अच्छति ६ ६
 अच्छुरसा (वि) १ २०, १ २५
 अच्छुरा ३ २२ १ २५, १, २०
 अच्छुरा चावार० पा १ २०
 अच्छुरिअ पा १ ५७, ७ अ
 अच्छुरिज्ज ७ अ, पा १ ५७
 अच्छुरीअ पा १ ५७ ७ अ
 अच्छुरेहि पा १ २५
 अच्छु १ ४२
 अच्छुसि ६ ६
 अच्छुइ ६ ६
 अच्छामि ६ ६
 अच्छामि ६ ६
 अच्छिथा ६ ६
 अच्छो ३ १४, पा १ ४१, १ ४२
 अच्छीइ १ ४१, पा १ ४१
 अच्छेर ७ अ, ३ २२, १ ५७ पा
 १ ५७

अजमो (वि) २ १
 अजिज्जइ ६ २६
 अजोगो (वि) २ १४
 अज उत्त शौ (वि) ८ २
 अजा १ ६५ ३ ५
 अजो ७ अ, शौ ८ ८
 अज्जाओ ३ २४
 अज्जलीइ पा १ ४४
 अज्जली मा ९ ८
 अज्जातिसो पै १० १६
 अटइ (वि) २ ४
 अट्टरह ७ अ
 अट्टाए दण्डो अर्द्ध पा १ ६
 अट्टी ७ अ
 अडो ७ अ
 अड्ढ ७ अ
 अण ७ अ
 अणिउत्तय ७ अ
 अणिउत्तय ७ अ
 अणिउत्तय १ ३३
 अणुरुधिज्जइ ६ २६
 अण्णधा शौ पा २ ३
 अण्णा पा ३ ५
 अण्णारिसो १ ८
 अण्णरुवमइ ६ २६
 अण्णावअणुक्कण्ठो पा १ १५
 अत्तुल (वि) २ १
 अत्ता ७ अ
 अत्थि ६ ६, शौ (वि) ८ ३७
 अदीहाउसमाणी पा १ २५
 अदो कारणादो शौ ८ ४४

अद् ७ अ
 अद्दो ३ ३
 अद्द ७ अ
 अधण्णो (वि) २ ३
 अधम्माय कुञ्जइ अद्द पा १ ६
 अधीरो (वि) २ ३
 अनु अप ११ ६४
 अनुत्तेन्तो (वि) पा १ १९
 अनुवत्तन्तो (वि) पा १ १९
 अन्तर १ ३७
 अन्तरप्पा १ १९
 अन्तरिदा १ १९
 अन्ते आरी ७ अ
 अन्ते उर ७ अ
 अतर १ ३७
 अतावेइ १ ७
 अन्दे उर शौ ८ ३
 अधलो स्वा प्र ३ ४५
 अन्नल ७ अ
 अन्नह अप ११ ६४
 अन्नाहसो अप ११ ६४
 अन्नुन्न ७ अ
 अपारो (वि) २ १
 अपुरव शौ ८ १२
 अपुरवागद शौ ८ १२
 अपुव्व शौ ८ १२
 अपुव्वागद शौ ८ १२
 अपपज्जो ३ ५
 अपपण्णइआ (वि) ४ ४१
 अपपणा ४ ४१
 अपपणिआ (वि) ४ ४१

अप्पणो ४ ४१
 अप्पण अप ११ ६४
 अप्पणू ३ ५
 अप्पमत्तो (वि) २ ९
 अप्प ४ ४१
 अप्पा ४ ४१, ७ अ
 अप्पाओ ४ ४१
 अप्पाणम्मि ४ ४१
 अप्पाणा ४ ४१
 अप्पाणाओ ४ ४१
 अप्पाणाण ४ ४१
 अप्पाणाहितो ४ ४१
 अप्पाणे ४ ४१
 अप्पाणेण ४ ४१
 अप्पाणेषु ४ ४१
 अप्पाणेहि ४ ४१
 अप्पाणो ४ ४१
 अप्पाण ४ ४१
 अप्पाणस्स ४ ४१
 अप्पादो ४ ४१
 अप्पाहितो ४ ४१
 अप्पिअ १ ५८
 अप्पुल्ल (वि) ३ ४४
 अप्पे ४ ४१
 अप्पेइ १ ५८
 अप्पेसु ४ ४१
 अप्पेहि ४ ४१
 अकुण्णो ६ ३९
 अब्बाब्ज मा ९ ८
 अभिमब्जू पै १० ४
 असुगो (वि) २ १

असुज्जणो शौ ८ ४४
 असुणा ४ ४७
 असुणो ४ ४७
 असुम्मि ४ ४७
 असु वण शौ ८ ४४
 असु वडू शौ ८ ४४
 असुस्स ४ ४७
 असु ४ ४७
 अमू ४ ४७
 अमूउ ४ ४७
 अमूओ ४ ४७
 अमूणे ४ ४७
 अमूणो ४ ४७
 अमूण ४ ४७
 अमूसु ४ ४७
 अमूहि ४ ४७
 अमूहितो ४ ४७
 अम्ब ७ अ
 अब १ ६७
 अम्महे शौ ८ २६
 अम्मि हेरु, पा ४ ४७ ४ ४७
 अम्ह हेरु, पा ४ ४७ शौ ४ ४७
 अम्ह हेरु, पा ४ ४७ शौ ४ ४७
 अम्हइ अप ४ ४८
 अम्हइ अप ११ ४०
 अम्हकेर ३ १२
 अम्हकेरो ३ ३७
 अम्हकेर ३ १२
 अम्हत्तो ४ ४७, हेरु पा ४ ४७
 अम्हम्मि ४ ४७, हेरु पा ४ ४७

अम्हसु ४ ४७ हेरू, पा ४ ४७
 अम्हह अप ११ ४०
 अम्हहे अप ४ ४८
 अम्हा ४ ४७
 अम्हाण हेरू, पा ४ ४७
 अम्हाण ४ ४७, शौ ४ ४७, ८ ४४
 हेरू पा ४ ४७
 अम्हातिसोपै १० १६
 अम्हारा अप ११ ६८
 अम्हारिसो १ ८७, ३ २९
 अम्हारो अप (वि) ३ ३८
 अम्हासु अप ११ ४०, हेरू, पा ४ ४७
 अम्हासुतो हेरू पा ४ ४७
 अम्हाहि हेरू पा ४ ४७
 अम्हाहि ४ ४७
 अम्हाहितो हेरू पा ४ ४७
 अम्हि ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 अम्हे ४ ४७, शौ ८ ४४, ८ ४०
 ४ ४७ अप ११ ४०, ४ ४८,
 हेरू पा ४ ४७
 अम्हेण्व १ ४८
 अम्हेण्व ३ ३८
 अम्हेण्व १ ४८
 अम्हेसु हेरू पा ४ ४७, शौ ४ ४७
 अम्हेसुतो हेरू पा ४ ४७
 अम्हेहि अप ११ ४०, ४ ४७
 शौ ४ ४७
 अम्हेहि अप ४ ४८, हेरू पा ४ ४७
 अम्हेहितो अप ४ ४८, शौ ४ ४७

अम्हो ४ ४७ हेरू पा ४ ४७
 अयम्मि ४ ४७, (वि) ४ ४७
 अया (वि) ४ २९
 अय्य मा ९ ७
 अय्यउत्त शौ ८ ८
 अय्युणे मा ९ ७
 अरहतो ७ अ
 अरहो ७ अ
 अरिहता ७ म
 अरिहो ७ अ
 अरुहतो ७ अ
 अरुहो ७ अ
 अलचपुर ७ अ
 अलसी ७ अ
 अलिअ १ ७३
 अलिउलइ अप ११ २५
 अलीअ (वि) १ ७३
 अलाउ ७ अ
 अलाऊ २ १२, ७ अ
 अलावू २ १२
 अल्ल ७ अ
 अवभवो (वि) २ १४
 अवभासो १ ९४
 अवगअ (पि) १ ९४
 अवजसो (वि) २ १४
 अवज्ज ३ २३
 अवज्जा मा ९ ८
 अवडो ७ अ
 अवरण्हो ३ २८
 अवराइसो अप ११ ६४
 अवरिखो स्वा प्र ३ ४५

अवरूव शौ पा २ १
 अवरोप्परु अप ११ ६१
 अवस अप ११ ६४
 अवसदो (वि) १ ९४
 अवसरद् १ ९४
 अवस अप ११ ६४
 अवहड ७ अ
 अवहज्ज शौ ८ ४४
 अवहण्ण शौ ८ ४४
 अवहज्ज शौ ८ ४४
 अस्तवदी मा ९ ६
 अरमासु अप ४ ४८
 अरस ४ ४७
 अरसि ४ ४७
 अरसो १ ५२
 अरस १ ६७
 अह (वि) ४ ४७
 अह ४ ४७
 अहके मा प्रा प्र ९ १६, मा (वि)
 ९ १६
 अहमि ४ ४७
 अहय हेरू, पा ४ ४७
 अहरट्ट १ ६७
 अहव १ ६१
 अहवद् अप ११ ६४
 अहवा १ ६१
 अह ४ ४७, हेरू, पा ४ ४७, शौ
 ४ ४७, ८ ४४
 अहाजाअ (वि) २ १४
 अहिअ २ ३
 अहिआई १ ५२

अहिआई पा १ ५२
 अहिजो ३ ५, (वि) १ ५२
 अहिणू १ ५६ ३ ५
 अहिमज्जू ७ अ
 अहिमज्ज ७ अ
 अहिमज्जु कुमाले मा ९ ८
 अहिमण्ण शौ ८ ४४
 अहिमन् ७ अ
 अहिमुको १ ३३ •
 अहेसि (वि) ६ ८
 असु १ ३३
 असो १ ३२

आ

आअओ ७ आ
 आअदो २ ६
 आअरिओ ७ आ
 आइदी २ ६
 आहरिओ ७ आ
 आउण्ण आ (वि) २ १
 आउदी २ ६
 आप्ण अप ११ ३७
 आओ ७ आ
 आओज्ज ७ आ
 आगमण्णू १ ५६
 आगरिसा (वि) २ १
 आगारो (वि) २ १
 आचरुक्कदि मा ९ १२
 आढत्तो ७ आ
 आढप्पद् ६ २६

आढवीअह ६ २६
 आढिओ ७ आ
 आणा ३ ५
 आणाल ७ आ
 आणिअ १ ७३
 आत्तमाणो ७ आ
 आदरो (वि) २ १
 आफसो ७ आ
 आमेलो ७ आ
 आयइ अप ११ ३७
 आयहो अप ११ ३७
 आयास (वि) १ ६७
 आरद्धो ७ आ
 आरम्भो १ ३७
 आरभो १ ३७
 आलले मा , प्राप् ९ १६
 आलिट्ठ ७ आ
 आलिद्ध ७ आ
 आलिहिदा २ ३
 आली ७ आ
 आवइ अप ११ ५३
 आवत्तओ (वि) ३ २
 आवत्तण (वि) ३ २१
 आवत्तमाणो ७ आ
 आसि (वि) ६ ८
 आसीसा ७ आ
 आसीसय ७ आ
 आसो १ ५१ , १ ५२
 आस्स शौ (वि) ८ ३७
 आहरण २ ३
 आहिआई १ ५२

आहिआई पा १ ५२
 इ
 इ हेरू , पा ४ ४७
 इअ (वि) १ ५०
 इअ उअह ० १ ६९
 इअ ज ० १ ६९
 इअम्मि ४ ४७
 इअ (वि) ४ ४७
 इअ बाला शौ ८ ४४
 इआणि १ ३६
 इआणि १ ३६
 इआणी ७ इ
 इङ्गालो १ ३ , ७ इ
 इङ्गिअजो ३ ५ , शौ ८ ४४
 इङ्गिअजो शौ ८ ४४
 इङ्गिअणू ३ ५
 इङ्गिअणो शौ ८ ३१
 इङ्गुअ ७ इ
 इङ्गुदी एल्ल ३ ४०
 इच्छह अप ११ ४३
 इच्छहु अप ११ ४३
 इट्ठाणुण व्व (वि) ३ १८
 इद्धी १ ८१ , ७ ई
 इणो ४ ४७
 इण (वि) ४ ४७
 इण धण शौ ८ ४४
 इत्तिअ ३ ४१ , ७ इ
 इत्तो ४ ४७
 इत्थी शौ ८ ३८ , प्राप् ८ ४५
 इदरसिवा शौ ८ ४१

इदहण २ ३
 इदो ४ ४७, शौ ८ ४४
 इद (वि) ८ ४७
 इद वण ८ ४४
 इध शौ ८ १०
 इन्ध (वि) २ १
 इमस्स ४ ४७
 इमस्सि ४ ४७
 इम ४ ४७
 इमादो ४ ४७
 इमाण (वि) ४ ४७ ४ २९
 इमाए ४ २९
 इमिआ (वि) ४ ४७
 इमिणा ४ ४७
 इमिए ४ २९
 इमीण ४ २९
 इसु अप ११ ३३
 इमे ४ ४७
 इमेण ४ ४७
 इमेहि ४ ४७
 इमेहितो ४ ४७
 इमो ४ ४७
 इसि १ ५४, पा १ ५४
 इसी १ ८१, १ ८६
 इह ४ ४७
 इह १ ३१
 ईक्खू ७ ई
 ईदिशाह मा ९ १४
 ईदिस शौ ८ ४४
 ईयम्मि (वि) ४ ४७
 ईसरो ३ ८, (वि) १ ६७

ईसि ७ इ
 ईसालू २ ४४

उ

उइद २ १
 उऊ ७ उ, (वि) २ ६
 उक्कत्तिजो (वि) ३ २१
 उक्करो पा १ ५७, ७ उ
 उक्कण्ठा (वि) १ १९, १ ३७
 उक्कठा १ २, १ ३७, १ ३२
 उक्का ३ ३, १
 उक्किट्ठ ८ ८१
 उक्करो ५ ५७, ७ उ, पा १ ५७
 उक्को पा ३ ६
 उक्कोस ६ ३९
 उक्खअ १ ६१
 उक्खाअ १ ६१
 उच्चअ ७ उ
 उच्छण्णो (वि) १ ७७
 उच्छवो ७ उ
 उच्छाहो ३ २२ (वि) १ ७७ ७ उ
 उच्छुओ ७ उ
 उच्छू ३ १४, ७ उ
 उज्जू १ ८३
 उज्जू १ ८६, ७, उ, ३ ११
 उज्झ हेरू, पा ४ ४७
 उज्जेहि ४ ४७ हेरू पा ४ ४७
 उट्ठो (वि) ३ १८
 उट्ठगबरो ७ उ
 उण्णय १ १७
 उण्हीस ३ २८

उत्तिमो १ ५४
 उत्थारो ७ उ
 उत्थिदो शौ ८ ४४
 उत्थेदि शौ, प्रास ८ ४५
 उदू ७ उ १ ८३, १ ८६, २ ६
 उद्ध ७ उ
 उपसगो २ ८
 उपपल ३ १,
 उप्पाओ (वि) पा १ १९, ३ १
 उबरुधिज्जह् ६ २६
 उबरुह्जह् ६ २६
 उरुम हेरू पा ४ ४७
 उरुम ७ उ
 उरुबर १ ३
 उरुबरो ७ उ
 उरुह हेरू पा ४ ४७
 उरुहत्तो हेरू पा ४ ४७
 उरुहाण हेरू पा० ४ ४७
 उरुहाण हेरू पा० ४ ४७
 उरुहे ४ ४७
 उरुहेहिं ४, ४७, हेरू पा ४ ४७
 उरुह ३ २९
 उरुह हेरू पा ४ ४७
 उरुहत्तो हेरू पा ४ ४७
 उरुहे हेरू पा ४ ४७
 उरुहेहिं हेरू पा ४ ४७
 उरुल्लल ७ ३
 उरुल्ललो शौ ८ ४४
 उल्लेह् ७ उ
 उल्ल ७ उ
 उवज्जाओ ३ २४

उवणिअ १ ७३
 उवणीओ १ ७३
 उवमा २ ९
 उवर (वि) पा १ १९
 उवरि शौ ८ ४४
 उवरिं १ ३३, ७ उ
 उवस्तिदे मा ९ ६
 उवहसमाणिं ६ १३
 उव्विगो (वि) ३ ३
 उव्वीह ७ उ
 उव्वूह ७ उ
 उश्चलदि मा ९ १०
 उसहो १ ८३, ७ उ, १८६
 उरमा मा ९ ४
 ऊआसो १ ९५
 ऊरुओ १ ७७
 ऊजा १ ६५
 ऊमओ १ ७७
 ऊसवो (वि) १ ६७, ७ उ
 ऊससिरो ३ ३५
 ऊसारो ७ उ
 ऊसारिओ (वि) ३ २२
 ऊसित्तो १ ७७
 ऊसुओ १ ७७, ७ उ
 ऊसो १ ५१
 ऊहसिअ १ ९५
 ऋ
 ऋण १ ८६
 ए
 ए हेरू पा ४ ४७
 एअ (वि) पा १ १९

एअग्नि (वि) ४ ४७
 एअस्स ४ ४७
 एअस्सि ४ ४७
 एअ (वि) पा १ १९, वि २ ६
 एआ (वि) ४ ४७
 एआउ (वि) ४ ४७
 एआए ४ २९
 एआओ ४ ४७, (वि) ४ ४७
 एआण ४ २९
 एआरह ७ ए
 एआरिसो १ ८७
 एआहि (वि) ४ ४७
 एआहितो (वि) ४ ४७
 एह पेच्छ अप ११ ३५
 एईए ४ २९
 एईण ४ २९
 एएसि ४ ४७
 एएसु ४ ४७
 एएहि ४ ४७
 एओ ३ १२
 एओ एरथ १ १२
 एकसि ७ ए
 एकल्लो स्वाप्र ३ ४५
 एकईआ ७ ए
 एकल्लो स्वाप्र ३ ४५
 एकसिअ ७ ए
 एकसिअप ११ ६४
 एकहिअप १ २९
 एकारो ७ ए
 एको ३ १२
 एगआ ७ ए

एगत्तण (वि) २ ६
 एगो (वि) २ १
 एण ४ ४७
 एण्ह ७ ए
 एते ४ ४७
 एतेहि ४ ४७
 एतेहितो ४ ४७
 एत ४ ४७
 एत्तहे अप ११ ७०, ११ ६४
 एत्ताहे ७ ए (वि) ४ ४७
 एत्ताहो ४ ४७
 एत्तिअमत्त १ ६६
 एत्तिअमेत्त १ ६६
 एत्तिअ ३ ४२
 एत्तिक शौ, प्रास ८ ४५
 एत्तिल ३ ४२
 एत्तुलो अप ११ ६९
 सत्तो ४ ४७ (वि) ४ ४७
 एत्थ पा १ ५७, ४ ४७
 एत्थु अप ११ ५९
 एदस्स ४ ४७
 एदाओ शौ ८ २
 एदाण ४ ४७
 एदाहि शौ ८ २
 एदिणा ४ ४७
 एदे ४ ४७
 एदेण ४ ४७
 एदेस् ४ ४७
 एदेहि ४ ४७
 एहह ३ ४२
 एग्ग अप ११ ६४

कहमे ७ क
 कह्रव १ ९०
 कहलासो १ ९०
 कहवाह ७ क
 कहसो अप ११ ५६
 कई २ १
 कउ अप ११ ६४
 कउक्खेअओ १ ९३
 कउरओ १ ९३
 कउला १ ९३
 कउह ७ क
 कउहा० पा १ २६, १ २६
 ककुध ७ क
 ककुहा ७ क
 ककोडो १ ३३
 कच्च पै प्राप्र १० २१
 कच्चु अप ११ १
 कज्जभा शौ ८ ४४
 कज्जपरवसो शौ ८ ८
 कज्ज ३ २३
 कञ्चुओ १ १
 कञ्चुइभा शौ ८ ४
 कञ्चुओ १ ३७
 कच्चुओ १ ३२, १ ३७
 कञ्जभा शौ ८ ४४
 कञ्जा पै प्राप्र १ २१, शौ ८ ३०
 कञ्जका पै १० ४
 कञ्जकावलण मा ९ ८
 कट्ट ३ १८
 कडण ७ क
 कडुअ शौ ८ १४

कडे मा प्राप्र ९ १६
 कड्डउ अप ११ ४४
 कड्डामि अप ११ ४४
 कणअ २ ८
 कणवीरो ७ क
 कणेरु ७ क
 कणओ १ ३७
 कटओ १ ३७
 कण्ड १ ३७
 कण्डुअण ७ क
 कड १ ३७
 कणभा शौ ८ ४४
 कण उर (वि) १ २
 कण्णा शौ ८ ३०
 कणिभासो ७ क
 कणेरु ७ क
 कण्हो ७ क, ३ २८, (वि) १ ८१
 कत्तरी (वि) ३ २१
 कत्तिओ (वि०) ३ २१
 कत्तो ४ ४७
 कत्थ शौ ८ ४४, ४ ४७
 कदो शौ (वि) ४ ४७, ४ ४७
 कध शौ ८ ४४, ८ ९
 कधिदु अप ११ ४९
 कधेदि शौ प्रास ८ ४५
 कथा (वि) २ ३
 कन्दो ७ क
 कञ्जड्ड अप (वि) ११ ६७
 कब-धो शौ ८ ४४
 कमढो २ ४
 कमधो ७ क
 कमलइ अप ११ २५

कमल पै १० ७
 कमो (वि) ३ ३२
 कम्पह् (वि) १ ९, १ ३७
 कपह् १ ३७
 कम्मस (वि) ३ ३
 कम्माह मा ९ १४
 कम्मि ४ ४७
 कम्मो १ ३९
 कम्हा ४ ४७
 कम्हारो ३ २९, ७ क
 कयग्गहो पा २ १
 कय्ये मा प्राप् ९ १६
 कर ६ २८
 करण अप ११ ७४
 करणिज्ज २ १५
 करला ७ क
 कररुहो १ ४३
 कररुह १ ४३
 करहि अप ११ ४१
 कराविअह् ६ १९
 कराविज्जह् ६ १९
 कराविअ ६ १९
 करिण्वव अप ११ ७२
 करिणी (वि) ४ २९
 करिज्जह् ६ २६
 करिट्ठूण शौ ८ १४
 करिय शौ ८ १४
 करिस (वि) ६ २८
 करिसो १ ७३
 करिस्सिदि शौ ८ १७
 करीसो (वि) १ ७३

करे अप ११ ४६
 करेमि शौ ८ ३५
 कलओ १ ६१
 कलम्बो १ ३७, ७ क
 कलबो १ ३७
 कलाओ २ ९
 कलिहि अप ११ १३
 कले मा ९ ३
 कल्हार ३ ३१
 कवण अप (वि) ४ ४७ ११ ३
 कवेलु अप ११ ५०
 कवट्टिअ ७ क
 कवोलो २ ९
 कव्व (वि) ३ ३
 कसट पे १० १३, प्राप् १० २१
 कसणो ७ क
 कस ७ क
 कसिणो ७ क, पा ३ ६
 कसिण ७ क
 कस्ट मा ९ ४
 कस्स ४ ४७
 कस्सि ४ ४७
 कस्सि शौ ८ ४४
 कह १ ३६
 कहन्तिहु अप ११ ६४
 कहमवि १ ४९
 कह २ ३ शौ ८ ९, १ ३६, अ
 (वि) ४ ४७
 कह पि १ ४९
 कहावणो ३ ९, ७ क
 कहां अप ११ २७, ११ २८

कहा अप (वि) ४ ४७

कहि शौ ८ ४४

कहिं ४ ४७

कहे अप ११ ३१

कहेहि २ ३

क ४ ४७

कस १ ६३, १ ३६

कसो १ ३२

कसिओ १ ६३

कसुअ ७ क

का (वि) ४ ४७

काइ अप (वि) ४ ४७

काइमो ६ ८

काइ अप ११ ३९

काउण १ ३४

काउणो ७ क

काऊण ३ ३६, (वि) ६ १६,
१ ३४

काए ४ ३२

काओ ४ ३२

काख अप ११ १

काण ४ ४७

कामीअदि शौ ८ ४२

कारिदाणि मा प्राप् ९ १६

कारिअ ६ १९

कारिजइ ६ १९

कालओ १ ६१

काला ४ २०, ४ ४७

कालाअस ७ क (वि) पा १ १९

कालास (वि) पा १, १९, ७ क

काली ४ २९

कालो (वि) २ १

कास ४ ४७

कासइ १ ५१

कासओ १ ५१

कासवो १ ५१, २ ९

कासी ६ ७

कासु अप (वि) ४ ४७, अप
११ ३०, ४ ३२

कास १ ३६

काह ६ ८, ६ ९

काहावणो ७ क

काहिइ ६ ८

काहिथा ६ ८

काहिमि ६ ८, ६ ९

काहिसि ६ ८

काहिति ६ ८

काही (वि) १ ९, ६ ७

काहीअ ६ ७

काहे ४ ४७

कि १ ३६

किअ (वि) ४ ४७

किअ २ १

किई १ ८१

किख १ ८१

किखी ७ क, पा ३ ६

किख्ख १ ८१

किज्जदि ८ १६

किज्जदे शौ ८ १६

किणा ४ ४७

किण्हो (वि) १ ८१

कित्ती (वि) ३ २१

किध अप ११ ५४
 किन्नउ अप ११ १
 किति १ ५०
 किमवि १ ४९
 किमेद शौ ८ २१
 किर अप ११ ६४
 किरातो शौ ८ ४४
 किरिभा ७ क
 किलिट्ट ३ ३२
 किलिण ३ ३२, ७ क
 किलिन्नउ अप ११ १
 किलिस्सइ ३ ३२
 किलेसो ३ ३२
 किवणो १ ८१
 किवा १ ८१
 किवाण १ ८१
 किविणो १ ५४
 किवो १ ८१
 किसर ७ क
 किसरो १ ८१
 किसलअ ७ क
 किसल ७ क
 किसानू १ ८१
 किसिओ १ ८१
 किसो १ ८१
 किस ७ क
 किमुअ ७ क
 किह अप ११ ५४
 किहे अप ११ २८
 किं अप ११ ३९, (वि) ४ ४७,
 १ ३६

कि णेद शौ ८ २१
 किंपि १ ४९
 किंसुअ १ ३६, ७ क
 किंसुओ शौ ८ ४४, (वि) १ ३७
 किस्सा (वि) ४ ४७
 कीए (वि) ४ ४७, ४ ३२
 कीआ (वि) ४ ४७
 कीई (वि) ४ ४७
 कीओ ४ ३२
 कीदिस शौ ८ ४४
 कीणो ४ ४७
 कीरइ ६ २६
 कीरते पै १० १५
 कीलइ २ ४
 कीस ४ ४७
 कीसु अप ११ ४८, ४ ३२
 कीसे (वि) ४ ४७
 कुऊहल ७ क
 कुवखेअओ १ ९३
 कुच्छेअ ७ क
 कुटुम्बक पै १० १०
 कुडुल्ली अप ११ ६५
 कुढारो २ ४
 कुटुम्बक पै १० १०
 कुदो (वि) १ ४६, शौ ८ ४४
 कुप्प ६ ३८
 कुप्पल ३ १६
 कुञ्ज ७ क
 कुमरो १ ६१
 कुमारो १ ६१
 कुमारी शौ ८ ४४, (वि) ४ २९

कुम्हण्डो शौ ८ ४४
 कुरुचरा ४ २८
 कुरुचरी ४ २८
 कुलभ (वि) पा १ १९
 कुल १ ४१, ४ ४१
 कुलाई ४ ३९, ४ ४१
 कुलाई ४ ३९
 कुलाणि ४ ४१, ४ ३९
 कुलदाहिपो १ ११
 कुलो १ ४१
 कुल्ला (वि) ३ ३
 कुवलभ (वि) पा १ १९
 कुसुम पयरो ३ १०
 कुसुम पयरो ३ १०
 कुसो २ १९
 कुपल १ ३३
 के ४ ४७
 केढवो ७ क, १ ८८
 केण ४ ४७
 केणवि १ ४९
 केणावि १ ४९
 केत्तिअ ३ ४२
 केत्तिल ३ ४२
 केत्तुलो अप ११ ६९
 केत्थु अप ११ ५९
 केहह ३ ४२
 केम अप ११ ५४
 केर अप ११ ६४
 केरव १ ९०
 केरिसो १ ८७, ७ क
 केल ७ क

केलासो १ ८८, १ ९०
 केली ७ क
 केवटो ३ २१
 केवटु अप ११ ६०
 केव अप ११ ५४
 केसर ७ ६
 केसरो पै प्राप्र १० २१
 केसि ४ ४७
 केसु ४ ४७
 केसुअ १ ३६, ७ क
 केसुओ शौ ८ ४४
 केहि अप ११ ६४, ४ ४७
 केहितो ४ ४७
 केहु अप ११ ५५
 केअव पा १ १, १ ८९
 को ४ ४७
 कोउहल ३ १२
 कोउहल ७ क, ३ १२
 कोऊहल ७ क
 कोट्टिम १ ७९
 कौड (वि) २ ४
 कोत्थुहो १ ९१
 कोदूहल शौ ८ ४४
 कोन्तलो १ ७९
 कौचा १ ९१
 कोडु अप ११ ६४
 कोप्पर ७ क
 कोसुई १ ९१
 कोसलो (वि) १ ९३
 कोसबी १ ८१
 कोसिओ १ ९१

कोस्टागाल मा ९ ५
 कोहडी ७ ६
 कोहणडी ७ क
 कोहल ७ क
 कोहली ७ क
 कौच्छेअअ ७ ६
 कौरवा पा १ १
 कसु शौ ८ ४५
 र
 खइअ १ ६१
 खइओ ७ ख
 खओ ३ १३
 खग १ ४३
 खगो १ २, ३ १, १ ४३
 खन्दो ७ ख
 खधावारो ३ १७
 खधो ३ १७
 खट्टा (वि) २ ४
 खडगो (वि) २ ४
 खणौ ३ १५, ७ ख शौ ८ ४४
 खण्डिओ ७ ख
 खण्ण अप ११ ६४
 खण्णू ३ १२
 खप्पर ७ ख
 खमा ७ ख
 खम्भो पा ३ ६
 खभो ७ ख
 खलिअ पा ३ ६, ३ १, पा ३ १
 खल्लीडो ७ ख
 खसिओ ७ ख
 खाअइ ६ ३६

खाइ ६ ३६
 खाइअ १ ६१
 खाइ अप ११ ६४
 खाणू ३ १२, ७ ख
 खासिअ ७ ख
 खित्त ७ ख
 खिद्यति ३ १३
 खीण ३ १३
 खीर शौ ८ ४४
 खीलओ ७ ख
 खु शौ ८ ४५
 खुज्जो ७ ख
 खुडिओ ७ ख
 खुडुक्कइ अप ११ ४८
 खेडओ ७ ख
 खेडिओ ७ ख
 खेडु अप ११ ६४

ग

गभा २ १
 गडआ ७ ग
 गडओ ७ ग
 गडडो १ ९३
 गडरव ७ ग
 गडरी अप ११ १
 गभो २ १, (वि) २ ६
 गकन पै प्राप्र १० २१
 गगार ७ ग
 गच्छति पै १० १८
 गच्छते पै १० १८
 गच्छदि शौ ८ १६

गच्छदे शौ ८ १६
 गच्छ ६ ९
 गच्छिद्रूण शौ ८ १७
 गच्छिय शौ ८ १४
 गच्छिस्सिदि शौ ८ १७
 गज्जह् (वि) २ ३
 गज्जतो (वि) २ ३
 गङ्गुअ शौ ८ १४
 गङ्गे मा प्राप् ९ १६
 गङ्गुहो ७ ग
 गङ्गो ७ ग
 गङ्गा १ ४४
 गङ्गिज्जह् ६ २६
 गङ्गहो शौ ८ ४४, ७ ग
 गन्धून् पै १० ११
 गन्ध उडि १ १३
 गन्धो (वि) २ १
 गन्धिण शो (वि) पा २ १,
 ७ ग
 गमिज्जह् ६ २६
 गमेप्पि अप (वि) ११ ७४
 गमेप्पिणु अप (वि) ११ ७४
 गम्पि अप (वि) ११ ७४
 गम्पिणु अप (वि) ११ ७४
 गम्पिरीअ ७ ग
 गम्मह् ६ २६
 गय अप ११ १७
 गयकुम्भह् अप ११ ७७
 गया पा २ १
 गय्यदि मा ९ ७
 गरुआह् ६ १

गरुआह् ६ १
 गरुई १ ७५
 गरुओ १ ७६
 गरुलो २ ४
 गरुलोई १ ७५, ७ ग
 गश्च मा ९ १०
 गह्वई ७ ग
 गहिअ १ ७३
 गहिदच्छले मा प्राप् ९ १६
 गहिर १ ७३
 गहो ३ ३
 गाई ४ ३७
 गाढजोव्वणा (वि) २ १४
 गारव ७ ग
 गावी ४ ३७, ७ ग
 गावीआ ७ ग
 गावो ७ ग
 गाहा २ ३
 गिट्टो १ ८१
 गिट्ठी १ ८१
 गिट्ठी १ ३३
 गिट्ठो शो ८ २९
 गिट्ठो ३ २९
 गिरउ हेरू ४ १९
 गिरोअ हेरू ४ १९
 गिरवो हेरू ४ १९
 गिरा १ २१, पा १ २१
 गिरि ४ १९, हेरू ४ १९
 गिरि ४ १९, हेरू ४ १९, १ २८
 गिरिण ४ १९
 गिरिण ४ १९

गिरिणा ४ १९, हेरू ४ १९
 गिरिणो ४ १९, हेरू ४ १९
 गिरित्तो ४ १९ हेरू ४ १९
 गिरिम्मि ४ १९ हेरू ४ १९
 गिरि सिङ्गहु अप ११ ९
 गिरि सुतो ४ १९
 गिरि हितो ४ १९
 गिरिस्स ४ १९, हेरू ४ १९
 गिरिहे अप ११ १३
 गिरी ४ १९ हेरू ४ १९
 गिरीउ हेरू ४ १९
 गिरीओ हेरू ४ १९
 गिरीओ ४ १९
 गिरीग हेरू ४ १९
 गिरीण हेरू ४ १९
 गिरीस ४ १९, हेरू ४ १९
 गिरीसु ४ १९ हेरू ४ १९
 गिरीसुतो हेरू ४ १९
 गिरीहिं ४ १९
 गिरीहि ४ १९, हेरू ४ १९
 गिरीहितो हेरू ४ १९, हेरू ४ १४
 गिम्भो अप ११ ६३
 गिम्ह वाशले मा (वि) ९ ४
 गुञ्ज ३ ३०
 गुडो (वि) २ ४
 गुणहिं अप ११ ७
 गुणहिं अप ११ १९
 गुणाइ पा १ ४३
 गुणो १ ४३
 गुण १ ४३
 गुण्ठी १ ३३

गुत्तो ३ १
 गुनगनयुत्तो पै १० ५
 गुनेन पै १० ५
 गुम्फइ (वि) २ ११
 गुरउ हेरू ४ १९
 गुरओ हेरू ४ १९
 गुरवो हेरू ४ १९
 गुरु ४ १९, हेरू ४ १९
 गुरुई ३ ३३
 गुरुउ हेरू ४ १९
 गुरुओ १ ७६, हेरू ४ १९
 गुरुण ४ १९
 गुरुण ४ १९
 गुरुणा ४ १९, हेरू ४ १९
 गुरुणो ४ १९, हेरू ४ १९
 गुरुत्तो ४ १९, हेरू ४ १९
 गुरुम्मि ४ १९ हेरू ४ १९
 गुरुल्लावा १ ६७
 गुहवी ३ ३३
 गुरुस्स ४ १९, हेरू ४ १९
 गुरुहितो ४ १९
 गुरु ४ १९, हेरू ४ १९
 गुळ १ ३३
 गुरु ४ १९, हेरू ४ १९
 गुरुउ हेरू ४ १९
 गुरुओ हेरू ४ १९
 गुरुण हेरू ४ १९
 गुरुण हेरू ४ १९
 गुरुसु ४ १९, हेरू ४ १९
 गुरुसु ४ १९, हेरू ४ १९
 गुरुसुतो हेरू ४ १९.

गुरुहिं ४ १९, हेरू ४ १९
 गुरुहिं ४ १९, हेरू ४ १९
 गुरुहितो हेरू ४ १९
 गुलो (वि) २ ४
 गुण्हेपिणु अप ११ ४८
 गेउझदि शौ, प्रास ८ ४५
 गेण्डदि शौ, प्रास ८ ४५
 गेंडुअ (वि) १ ५७
 गेण्हीअ ६ ८
 गेन्हुअ पा १ ५७, ७ ग
 गेह्य ७ ग
 गोआवरी ७ ग
 गोटी ३ १
 गोणो ७ ग
 गोदमो १ ९१
 गोरडी अप ११ ६६
 गोरी (वि) ४ २९, अप ११ १
 गोला ७ ग
 गोविन्तो पै, प्राप्र १० २१
 गोवेइ २ ९
 घ
 घअ १ ८०
 घइ अप ११ ६४
 घङ्गल अप ११ ६४
 घडइ २ ४
 घडो २ ४
 घटा (वि) २ ४
 घर ७ घ
 घिणा १ ८१
 घुग अप ११ ६४

घुडुक्कइ अप ११ ४८
 घुम्मदि शौ, प्रास ८ ४५
 घुसिण १ ८१
 घेत्तण ३ ३६
 घेत्तून पै, प्राप्र १० २१
 घेप्पह ६ २६
 घेप्पदि शौ, प्रास ८ ४५
 घोडा अप ११ २
 च -
 चहत्त (वि) ३ १९, ७ च
 चहत्तो १ ९०
 चउरगुणो ७ च
 चउट्टो ७ च, शौ ८ ४४
 चउट्टो ७ च
 चउण्ह ४ ४८
 चउस्थो ७ च
 चउस्थो ७ च
 चउइसी ७ च
 चउइह ७ च
 चउइही शौ ८ ४४
 चउमुहु अप ११ ३
 चउरो ४ ४८
 चउव्वार ७ च
 चउसु ४ ४८
 चऊहि ४ ४८
 चऊहितो ४ ४८
 चएप्पिणु अप ११ ७४, अप ११ ७३
 चक्क ३ ३
 चक्काओ (वि) १ १३
 चक्खिअ ६ ३९
 चक्खू १ ४१

चक्खू १ ४१
 चच्चर ७ च
 चहु पा १ ६१
 चत्तारि ४ ४८
 चत्तारो ४ ४८
 चन्दो १ ३७
 चन्दो (वि) ३ ३
 चन्दिमा ७ च
 चन्दो १ ३७, (कि.) ३ ३
 चमर १ ६१
 चम्म (वि) १ ४०, (वि)
 पा १ ४०
 चविडा ७ च
 चविडो ७ च
 चविलो ७ च
 चवेडा ७ च
 चव्वदि शौ, प्रास ८ ४५
 चाउण्डा ७ च
 चाहु पा १ ६१
 चामर १ ६१
 चिट्ठइ (वि) २ ४
 चिट्ठदि मा०, (वि) ९ १३, शौ
 ८ ३६
 चिणइ ६ २२, ६ ३१
 चिणिज्जइ ६ २३
 चिणह १ ६८, शौ ८ ४४
 चिन्ध ७ च
 चिम्मइ ६ २४
 चिलाओ ७ च
 चिक्कइ ६ २३
 चिष्ठदि मा, प्रास ९ १६, मा ९ १३

चिहुर ७ च
 चिल्ल ७ च
 चुअइ ३ १, पा ३ १
 चुच्छ ७ च
 चुणइ ६ ३१
 चुण्णो १ ६७
 चुम्बिअ अप ११ ७३
 चेणह १ ६८
 चेत्तो १ ९०
 चोग्गुणो ७ च
 चोट्टी ७ च
 चोट्टो ७ च
 चोत्थी ७ च
 चोत्थो ७ च
 चोइसी ७ च
 चोइह ७ च
 चोरिअ ७ च
 चोरिआ १ ४४
 चोरिओ १ ४८
 चोरो (वि) २ १
 चोव्वार ७ च
 छ
 छइअ (वि) ३ १४
 छउम ७ छ
 छट्टी ७ छ
 छट्टो ७ छ
 छट्ठिओ ७ छ
 छणा ३ १५, ७ छ
 छत्तवण्णो ७ छ
 छत्तिवण्णो ७ छ
 छमा ७ छ

छमो ७ छ
 छम्म ७ छ
 छाभा ७ छ
 छाली ७ छ
 छालो ७ छ
 छाहा, २ १७, ७ छ, ४ ३०
 छाही ४ ३०
 छिक्क ७ छ
 छित्त ६ ३९
 छिप्पइ ६ २६
 छिरा ७ छ
 छिहा ७ छ
 छीअ ७ छ
 छीण ३ १३
 छुच्छ ७ छ
 छुड्ड अप ११ ६४
 छुत्त ७ छ
 छुहा १ २२, ७ छ
 छुढ ७ छ
 छुढो पा ३ ८
 छेच्छ ६ ९
 छोल्लिज्जन्तु अप ११ ४८
 छमुहु अप ११ ३
 छमुहो ७ छ

ज

जअह ६ ९, ६ १४
 जह अह १ ४८
 जह १ ६४, २ १
 जइश अप (वि) १ ८७
 जइसो अप ११ ५६

जइह १ ४८
 जउणा ७ ज
 जओ (वि) २ ६
 जक्खो पा ३ ६
 जग्गेवा अप ११ ७२
 जज्जो ३ २३
 जज्जो शौ ८ ३०
 जडालो ३ ४४
 जडिलो ७ ज
 जढ ६ ३९
 जणि अप ११ ७६
 जणु अप ११ ७६
 जणवक्केण १ २
 जणसेणो शौ ८ ४४
 जण्हू ३ २८
 जत्तु अप ११ ५७
 जत्तो ४ ४५
 जत्थ ४ ४५
 जत्थज्जलिणा पा १ ४४
 जदो ४ ४५
 जधा शौ, पा २ ३, शौ पा
 ६१, शौ ८ ४४
 जमल स्वाश ३ ४५
 जमो २ १४
 जम्पिरो ३ ३५
 जम्मण ७ ज
 जम्मो ३ २६, ७ ज, १ ३९, प
 १ ३९
 जम्मि ४ ४५
 जम्हा ४ ४५

जरिज्जह् ६ २६
 जलभरो (वि) २ १
 जलचरो (वि) २ १
 जल १ २८
 जसो १ ३९, पा १ ३९, १ १४,
 १ १६
 जस्स ४ ४५
 जस्सि ४ ४५
 जह् १ ६१, ७ ज
 जह्द्विभ १ ७
 जहण २ ३
 जहा १ ६१, ७ ज
 जहाँ अप ११ २७
 जह्द्विलो १ ७५, ७ ज
 जहि अप ११ २९, ४ ४४
 जहुद्विलो १ ७५, ७ ज
 जहे अप ११ ३१, अप पा ४ ४५
 जा (वि) पा १ १९, ७ ज
 जाह् २ १४
 जाह्द्विभा अप ११ ६४
 जाउ अप ११ ५८
 जाओ ४ ३२, ४ ४५
 जाण शौ, पा ४ ४५
 जाण मा ९ १५, ३ ५, ४ ४५
 जाणिज्जह् ६ २६
 जातिस पै (वि) १ ८७
 जादिस शौ (वि) १ ८७, शौ
 ८ ४४
 जाम अप ११ ५८
 जामहि अप ११ ५८
 जामादुओ १ ८३

जामादुओ १ ८३
 जारो (वि) २ १
 जाला पा ४ ४५
 जाव (वि) पा १ १९, ७ ज, १
 १६
 जाव अप ११ ५८
 जास ४ ४५
 जासु अप पा ४ ४५, अप ११ ३०
 जासुतो ४ ४५
 जाहिंतो ४ ४५
 जाह मा ९ १५
 जाह ट पा ४ ४५
 जाहु अप ११ ४५
 जाहे पा ४ ४५
 जि अप ११ ६३
 जिभह् १ ७३
 जिभउ १ ७३
 जिग्घदि शौ प्रास ८ ४५
 जिण ४ ४५
 जिणइ ६ २२
 जिणधम्मो (वि) २ ३
 जिण ७ ज
 जित्तिअ ३ ४१, ७ ज
 जिध अप ११ ५४
 जिब्भा ७ ज
 जिम अप ११ ५४
 जिर्व अप ११ ५४, ११ ५०
 जिह् अप ११ ५४
 जी ४ ४६
 जीभह् (वि) १ ७३
 जीअ (वि) पा १ १९, ७ ज

जीभा ७ ज
 जीभो २ १, ४ ३२
 जीया ४ ४६
 जीरह ६ २६
 जीविअ (वि) पा १ १९, ७ ज
 जीहा ७ ज
 जु अप ११ ३२
 जुगुच्छ ३ २२
 जुग ३ २
 जुण ७ ज
 जुत्तणिम शौ ८ २१
 जुत्तमिम शौ ८ २१
 जुवह अणो (वि) १ ८
 जुहुट्टिरो शौ ८ ४४
 जे ४ ४५
 जेण ४ ४५
 जेत्तिअ ३ ४२
 जेत्तिक शौ प्रास ८ ४५
 जेत्तिल ३ ४२
 जेत्तुलो अप ११ ६९
 जेथु अप ११ ५७
 जेदु शौ पा ६ ९
 जेदह ३ ४२
 जेप्पि अप ११ ७३, ११ ७४
 जेम अप ११ ५४
 जेव शौ ८ ४५
 जेवहु अप ११ ६०
 जेर्व अप ११ ५४
 जेसि ४ ४५
 जेसु ४ ४५
 जेहु अप ११ ५५

जेहि ४ ४५
 जो ४ ४५, अप ११ ४
 जोगो १ २
 जोणहा ३ २८
 जोणहालो ३ ४४
 जोववण १ ९१, ३ १
 जेव शौ ८ ४५
 ज १ ३१, ४ ४५

झ

झभो ७ झ
 झडिलो ७ झ
 झलक्किअउ अप ११ ४८
 झाण ३ २४
 झिझह ३ १३
 झुणि ७ झ
 झे ४ ४७

ञ

ञ्ञान पै १० २

ट

टगर ७ ट
 टक (वि) २ ४
 टसरो ७ ट

ठ

ठह्ठो ७ ठ
 ठभो ७ ठ
 ठविअ १ १४, पा १ ६१
 ठाई (वि) २ ४
 ठाविअ १ ६१
 ठासी ६ ७
 ठाही ६ ७

टीण ७ ७

ड

डङ्गमाणो शौ ८ ४४

डट्टो ७ ड

डट्टो ७ ड

डट्ट ७ ड

डडो ७ ड

डभो ७ ड

डरो ७ ड

डसइ २ ७

डसन ७ ड

डहइ २ ७

डहिङ्गइ ६ २६

डछाइ ६ २६

डाहो ७ ड

डिभो (वि) २ ४

डोलो ७ ड

डोहलो ७ ड

ढ

ढकरि अप ११ ६४

ढोह्वा अप ११ २

ण

णअण १ ४१, २ १

णअणो १ ४१

णअर २ १

णह सोत्त १ ८

णई २ ८

णईओ शौ ८ ४४

णई सोत्त २ ८

णउण १ ६०

णउणा १ ६०

णउणाह १ ६०

णउला ४ ६

णउलेसु ४ ९

णउलेहि ४ ९, ४ १०

णउलेहि ४ १०

णउलेहि ४ १०

णउलो २ १

णउल ४ ७

णउले ४ १४

णउलेमि ४ १४

णउलस्स ४ १३

णओ २ १

णकचरो (वि) २ १, १ २

णक्खइ ६ २६

णक्खा ३ २०

णउज्जइ ६ २६

णट्टइ ३ २१

णट्टओ ३ २१

णढाल ७ ण

णढो २ ४

णड (वि) २ ४

णथि (वि) १ १५

णराओ १ ६१

णरो २ ८

णलाउ ७ ण

णल (वि) २ ४

णह पा १ ४०, १ १६, २ ३

णा हेरू पा ४ ४६

णाह्ज्जइ ६ २६

णाण ३ ५, ३ २४

गाधो शौ ८ ९
 गाराओ १ ६१
 गाली (वि) २ ४
 गाहो शौ ८ ९
 गिअत्त ७ ण
 गिउअ १ ८३
 गिउक्कण्ठ (वि) १ १९
 गिउत्त ७ ण
 गिअलो ७ ण
 गिअलो (वि) ३ २२
 गिअळो पे प्राप् १० २१
 गिअिले मा प्राप् ९ १६
 गिडाल ७ ण
 गिहा १ ६८, शौ (वि) १ ६८
 गिहाल ३ ४४
 गिरओ (वि) १ ७०
 गिराबाध १ १९
 गिरुत्तर १ १९
 गिवडइ १ ७१
 गिवुत्त ७ ण
 गिवुअ १ ८३
 गिवुई १ ८३
 गिवुदी २ ६
 गिसण्णो ७ १
 गिसिअरो १ ६४
 गिसीहो ७ ण
 गिसीहो ७ ण
 गिस्सहो (वि) १ ७०
 गिहुअ १ ८३
 गिहुद १ ८३
 गीसहो १ ७०

गीसासो १ ७०
 गीड (वि) २ ४
 गुमजइ १ ७१
 गुमण्णो १ ७१, ७ ण
 गूण शौ ८ ४४
 गे ४ ४७, हेरू पा ४ ४६, हेरू
 पा ४ ४७
 गेहा १ ६८
 गेण ४ ४६ हेरू पा ४ ४६, ४ ४७
 गेण ४ ४७
 गेसु हेरू पा ४ ४६
 गेसु हेरू पा ४ ४६
 गेहि ४ ४६, ४ ४७
 गेहो ३ १, पा ३ १
 गो ४ ४७
 गोआ २ १
 ग हेरू पा ४ ४६, ४ ४७
 ग ४ ४६ शौ ८ २५ (वि) ८ २५
 शौ ८ ४५
 गहव ६ २७
 गहाऊ ३ २८
 गहाण ३ २८
 त
 तइ १ ६४ ४ ४७, हेरू, पा ४
 ४७, शौ ४ ४७
 तइअ १ ७३
 तइआ हेरू पा ४ ४६
 तइत्तो हेरू पा ४ ४७, ४ ४७
 तइश अप (वि) १ ८७
 तइसो अप ११ ५६
 तइ अप ४ ४७, अप ११ ४०

तड अप ११ ४०
 तडहोत अप ४ ४७
 तप् शौ ४ ४७, हेरू पा ४ ४७,
 शौ ८ ४४
 तओ (वि) २ ६
 तञ्ज आ (वि) ३ २२
 तण अप ११ ६४
 तणह अप ११ ११
 तणु अप ११ १
 तणुई ३ ३३
 तणेण अप ११ ६४
 तण १ ८०
 तत्त अप ११ ५७
 तत्तो ४ ४६, ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तत्त ७ त
 तत्थ शौ ८ ४४, ४ ४६
 तत्थून पै १० १२
 तत्थ आ (वि) ३ २२
 तदो ४ ४६, ४ ४७
 तदधून पै १० १२
 तधा शौ (वि) ८ २, शौ पा
 २ ३०, शौ ८ ४४, शौ पा
 १ ६१
 तध्रुहोत अप ४ ४७
 तमवि १ ४९
 तमे ४ ४७
 तमेण पा १ ३९
 तमो १ ३९
 तपि १ ४९
 तम्बोल ७ त
 तम्ब ७ त

तब १ ६७
 तबो (वि) ३ २५, ७ त
 तम्मि ४ ४६
 तम्हा ४ ४६, हेरू पा ४ ४६
 तयाणि १ ७३
 तरणी १ ३८, पा १ ३८
 तरिज्जइ ६ २६
 तरुणहो अप ११ १८
 तरुणिहो अप ११ १८
 तरुहु अप ११ १३
 तरुहे अप ११ १३
 तरू (वि) २ १
 तलवेण्ट १ ६१
 तलावो २ ४
 तलि अप ११ ६
 तलुनी पै प्राप्र १० २१
 तवइ २ ९
 तवस्सि शौ ८ ५
 तविअ ७ त
 तवो ७ त
 तसु अप ११ १०
 तस्स शौ (वि) ८ २, ४ ४६
 हेरू पा ४ ४६
 तस्मि शौ ८ ४४
 तस्सि ४ ४६, हेरू पा ४ ४६
 तह १ ६१, शौ ४ ४७, अप पा
 ४ ४६
 तहत्ति १ ५०
 तहाँ अप ११ २७
 तहि शौ ८ ४४
 तहि अप ११ २९, ४ ४६

तहिंतो हेरू, पा ४ ४७
 तहे अप ११ २२, अप ११ ३१
 ता (वि) पा १ १९ शौ ८ २०,
 ४ ४६, हेरू पा ४ ४६, ७ त
 ताउ अप ११ ५८
 ताओ (वि) २ ६, ४ ३२ ४ ४६
 ताण ४ ४६, शौ पा ६ पा ४
 ४६ ४ ४६
 तातिस पै (वि) १ ८७
 तातिसो पै १० १६
 तान्मि शौ ८ ४४, शौ (वि)
 १ ८७
 ताम अप ११ ५८
 तामहि अप ११ ५८
 तामोतरो प १० ६
 तारिसो १ ८७
 तालवेण्ट १ ३
 तालवेण्ट १ ६१
 ताळा हेरू पा ४ ४६
 ताव १ १६, (वि) पा १ १९,
 शौ ८ ४, ७ त
 तावँ अप ११ ५८
 तास हेरू पा ४ ४६
 तासु अप ११ ३०, अप, पा ४ ४६
 ताहिंतो ४ ४६
 ताहे हेरू पा ४ ४६
 ताह ट पा ४ ४६
 तिअस-हसो १ १५
 तिअसीसो १ १५
 तिअख ७ त
 तिहो पै (वि) १० १३

तिणा हेरू पा ४ ४६
 तिणु अप ११ १
 तिणुवी ३ ३३
 तिणिण ४ ४८
 तिण्ण ४ ४८
 तिण्ह ३ २८
 तित्तिअ ३ ४१, ७ त
 तित्तिरो ७ त
 तिथ १ ७४, ७ त, १ ६७
 तिध अप ११ ५४
 तिप्प १ ८१
 तिम अप ११ ५४
 तिरिच्छी ७ त
 तिरिश्चि मा ९ १०
 तिवँ अप ११ ५०, अप ११ ५४
 तिह अप ११ ५४
 तिहि अप ११ १९
 तिद्ध ७ त
 ती ४ ४७
 तीआ ४ ४७
 तीओ ४ ३२
 तीरह ६ २६
 तीमा १ ३५, ७ त
 तीसु ४ ४८
 तीहि ४ ४८
 ताहिंतो ४ ४८
 तु ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुह ४ ४७
 तुप ४ ४७
 तुच्छुअ अप ११ २६
 तुज्ज ४ ४७, हेरू पा ४ ४७,
 अप ११ ४०

तुज्जत्तो ४ ४७ हेरू पा ४ ४७
 तुज्जग्मि ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुज्ज हेरू पा ४ ४७
 तुज्जसु हेरू पा ४ ४७
 तुज्जाण हेरू पा ४ ४७
 तुज्जाण हेरू पा ४ ४७
 तुज्जासु हेरू पा ४ ४७
 तुज्जाहितो ४ ४७
 तुज्जेसु हेरू पा ४ ४७
 तुज्जेहि हेरू पा ४ ४७, ४ ४७
 तुज्जे शौ ४ ४७
 तुण्ड शौ ८ ४४
 तुण्हिओ ३ १२
 तुण्हिओ ३ १२
 तुध अप ११ ४७
 तुब्भ हेरू पा ४ ४७
 तुब्भत्तो हेरू पा ४ ४७
 तुब्भग्मि हेरू पा ४ ४७
 तुब्भसु हेरू ४ ४७
 तुब्भाण हेरू पा ४ ४७
 तुब्भाण हेरू पा ४ ४७
 तुब्भासु हेरू पा ४ ४७
 तुब्भे हेरू पा ४ ४७
 तुब्भेसु हेरू पा ४ ४७
 तुब्भेहि हेरू पा ४ ४७
 तुब्भ हेरू पा ४ ४७
 तुम ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुम हेरू पा ४ ४७
 तुमह ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुमए ४ ४७, हेरू पा ४ ७
 तुमत्तो ४ ४७, हेरू पा ४ ४७

तुम ४ ४७, शौ ४ ४७, ८ ४४
 तुमहितो ४ ४७
 तुमग्मि ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुमसु ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुमाह ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुमाण ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुमाण हेरू पा ४ २७
 तुमातु पै १० २०
 तुमातो पै १० २०
 तुमापो शौ ८ ४४
 तुमे ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुमेसु हेरू पा ४ ४७
 तुमो हेरू पा ४ ४७
 तुम्म ४ ४७
 तुग्मि ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुग्गह अप ११ ४०
 तुग्ग ४ ४७, शौ ४ ४७ शौ
 ८ ४४ हेरू पा ७ ४७
 तुग्गकेरो ३ ३७
 तुग्गत्तो ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुग्गग्मि हेरू पा ४ ४७
 तुग्गसु हेरू पा ४ ४७
 तुग्गह अप ४ ४७ अप ११ ४०
 तुग्गह अप ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुग्गाह अप ४ ४७
 तुग्गाण ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुग्गाण शौ ४ ४७, शौ ८ ४४
 हेरू पा ४ ४७
 तुग्गाहो शौ ४ ४७
 तुग्गारिसो १ ८७, २ १६
 तुग्गासु अप ११ ४०, अप ४ ४७
 हेरू पा ४ ४७

तुम्हाहितो शौ ४ ४७, ४ ४७
 तुम्हे शौ ४ ४७, शौ ८ ४४, अप
 ४ ४७, अप ११ ४०
 तुम्हेचय ३ ३८
 तुम्हेसु ४ ४७, शौ ८ ४४, हेरू
 पा ४ ४७
 तुम्हेसु शौ ४ ४७
 तुम्हेहि अप ११ ४० ४ ४७, शौ
 ४ ४७, ८ ४४
 तुम्हेहिन्तो शौ ८ ४४
 तुम्हत्तो हेरू पा ४ ४७
 तुम्ह हेरू पा ४ ४७
 तुम्हे हेरू पा ४ ४७
 तुम्हेहि हेरू पा ४ ४७
 तुव ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुवत्तो हेरू पा ४ ४७, ४ ४७
 तुवम्मि ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुवरण ६ ४
 तुवरसे ६ ४
 तुवसु हेरू पा ४ ४७
 तुवाण हेरू पा ४ ४७, ४ ४७
 तुवाण हेरू पा ४ ४७
 तुवे ४ ४७
 तुवेसु हेरू पा ४ ४७
 तुव ४ ४७
 तुसु ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुह ४ ४७ अप ४ ४७, हेरू पा
 ४ ४७
 तुहत्तो हेरू पा ४ ४७, ४ ४७
 तुहम्मि ४ ४७ हेरू पा ४ ४७
 तुहसु ४ ४७, हेरू पा ४ ४७

तुहाण ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुहाण हेरू पा ४ ४७
 तुहारेण अप ११ ६८
 तुहु अप ११ ४०
 तुहुँ अप ११ ४०
 तुहेसु ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुह ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 तुम्हेहि ४ ४७
 तुझ ४ ४७
 तुझत्तो ४ ४७
 तुझाण ४ ४७
 तुझुहोत अप ४ ४७
 तुझ ४ ४७
 तुझेसु ४ ४७
 तु ४ ४७
 तूण ७ त
 तूर ७ त
 तूसइ ६ ३०
 तूह ७ त, १ ७४
 तूणु अप ११ १
 ते ४ ४६ शौ ८ ४४, हेरू पा ४
 ४६, ४ ४७ शौ ४ ४७
 तेअस्स पा १ ३९, पा १ ३१
 तेओ १ ३९
 तेति पै १० १७
 तेत्तहे अप ११ ७०
 तेत्तिअ ३ ४२
 तेत्तिक शौ प्रास ८ ४४
 तेत्तिल ३ ४२
 तेत्तीसा ७ त

तेत्तुलो अप ११ ६९
 तेरथु अप ११ ५७
 तेदह ३ ४२
 तेण ४ ४६, हेरू पा ४ ४६
 तेम अप ११ ५४
 तेरह ७ त
 तेरहो १ ५७
 तैलोक्क (वि) ३ १०
 तेन्न ३ ११
 तेन्नक १ ८८
 तेन्नोक्क (वि) ३ १०
 तेवहु अप ११ ६०
 तव अप ११ ५४
 तेवण्ण ७ त
 तेवीसा ७ त
 तेसि ४ ४६, हेरू पा ४ ४६
 तेसु ४ ४६, हेरू पा ४ ४६
 तेसु हेरू पा ४ ४६
 तेह ७ त
 तेहि ४ ४६, हेरू पा ४ ४६, अप
 ११ ६४
 तेहितो ४ ४७
 तेहु अप ११ ५५
 त ४ ४६, ४ ४७, हेरू पा ४ ४६
 १ ३१, अप ११ ३२
 तस १ ३३, पा ३ ८
 तो ४ ४७, अप ११ ६४
 तोण ७ त
 तोणीर ७ त
 तोण्ड १ ७९
 तोसविअ ६ १९

तोसिअ सकरु अप ११ ३
 तोसिअ ६ १९
 त्र अप ११ ३२

थ

थवो ७ थ
 थभो ७ थ
 थाणू ७ थ
 थिण्ण ३ १२
 थी ७ थ
 थीण ३ १२, ७ थ
 थुई ३ २५
 थुणदि शौ प्रास ८ ४५
 थुन्नो ७ थ, ३ १२
 थूणा ७ थ
 थूणो ७ थ
 थूल शौ ८ ४४, ७ थ
 थेणो ७ थ
 थेरिअ ७ थ
 थेरो पा ३ ६, ७ थ
 थोअ ३ २५
 थोणा ७ थ
 थोत्त ३ २५
 थोरो ३ १२
 थोर ७ थ

द

दभालू २ १
 ददण अप ११ १४
 दद्वअ १ ८९
 दद्वच्च १ ८९

दहवज्जो ३ ५
 दहण १ ८९
 दहवण्ण ३ ५
 दहव ७ द, ३ १२
 दहव ३ १२, ७ द
 दहस्स शौ ८ ३४
 दउत्ति शौ ८ ४५
 दक्खिणो (वि) १ ५३, ७ द
 दट्ठो ७ द
 दडवड अप ११ ६४
 दड्ढ ७ द
 दणुअ वड्ढो ७ द
 दणु इन्दरुहिर० १ १०
 दणुवहो ७ द
 दडो ७ द
 दत्त (वि) १ ५४
 दद्ध ३ ३६
 दमदमाअइ ६ १
 दमदमाइ ६ १
 दभो ७ द
 दयालू प २ १
 दरिओ ७ द
 दरो ७ द
 दलिहो २ १८
 दवग्गी पा १ ६१
 दवो (वि) २ १
 दस ७ द, शौ ८ ४४
 दसण ७ द
 दसरहो शौ ८ ४४
 दसवतनो पै प्राप्र १० २१
 दसमुहो ७ द

दस्के मा प्राप्र ९ १६
 दह शौ ८ ४४, ७ द
 दहमुहु अप ११ ३
 दहमुहो ७ द
 दहि ४ ४१
 दहि ईसरो १ ९
 दहि ४ ४१
 दहीइ ४ ४१
 दहीइ ४ ४१
 दहीणि ४ ४१
 दहीसरो १ ९
 दहो ३ ४, पा ३ ४
 दाव शौ ८ ४
 दावग्गी पा १ ६१
 दाघो (वि) २ २०, ७ द
 दातून पै प्राप्र १० २१
 दाडिम (वि) २ ४
 दाढा ७ द
 दाणवो (वि) २ १
 दाणि शौ ८ १९
 दाण ४ ४६
 दाम १ ४०
 दार ७ द, (वि) ३ ३
 दालिम (वि) २ ४
 दाहिणो १ ५३
 दाहिणो ७ द
 दाहिमि ६ ९
 दाहो ७ द
 दाह ६ ९
 दि हेरू पा ४ ४७
 दिअरो ७ द

दिअहो २ १
 दिउओ १ ७१
 दिउणो १ ७१
 दिओ १ ७१, (वि) ३ ३
 दिअघो ७ द
 दिटो ३ ६ १ ८१, ३ १८
 दिट्ट १ ८१
 दिट्ट ति १ ५०
 दिण ७ द, १-५४
 दिण्ण २ ७
 दिवसो ७ द
 दिवहो ७ द
 दिवे अप ११ ६४
 दिसा० पा २ २४
 दिसा १ २४
 दिहा गय (वि) १ ७२
 दिही ७ द
 दीओ २ १५
 दीजो २ १५
 दीसइ (नि) ६ १५
 दीहर स्वाप्र ३ ४५
 दीहाउसो १ २५
 दीहाऊ १ २५, पा १ २५
 दीहो ७ द
 दुअल्ल ७ द
 दुआई (वि) ३ ३
 दुभार ७ द
 दुइअ १ ७३
 दुइओ १ ७१
 दुउणो १ ७१
 दुऊल ७ द

दुऊड ७ द
 दुऊर (वि) ३ १७
 दुऊख ७ द
 दुगुल्ल ७ द
 दुग्गा एवी ७ द
 दुग्गावी ७ द
 दुइ ३ १
 दुणि ४ ४८
 दुइभइ ६ २५
 दुय्यणे मा ९ ७, मा प्राप्र ९ १६
 दुरागद १ १९
 दुरुत्तर १ १९
 दुल्लहहो अप ११ १०
 दुल्लहो २ ३
 दुवअण १ ७१
 दुवरो ७ द
 दुवाई १ ७१
 दुवारिओ १ ९२
 दुवार ७ द
 दुवे १ ७१, ४ ४८
 दुसहो १ ७८
 दुस्सहो १ १८
 दुस्सहो विरहो (वि) १ ७८,
 दुहओ १ ७८, ७ द
 दुहा इअ १ ७२
 दुहा किज्जदि १ ७२
 दुहा वि० (वि) १ ७२
 दुहि ४ ४७
 दुहिआ ४ ३१, ७ द
 दुहिज्जइ ६ २५
 दुहिदिआ शौ प्रास ८ ४५

दुहितो ४ ४७
 दुहांअदि शौ प्रास ८ ४५ ७
 दहूँ अप (वि) ११ १२
 दुह ७ द
 दूरादु शौ ८ १८
 दूरादो शौ ८ १८
 दूसह ६ ३०
 दूसहो १ १८, १ ७८
 दूमासणो १ ५१
 दूहओ १ ७८
 दूहवो ७ द
 दे ४ ४६, ४ ४७, हेरू पा ४
 ४७, शौ ४ ४७, शौ ८ ४४
 देअरो ७ द, शौ ८ ४४
 देह (वि) ६ ३१
 देउल ७ द
 देउल्ल ६ ९
 देदि शौ ८ १५
 देमि शौ ८ ३४
 देर ७ द
 देव ४ १४
 देव उल ७ द
 देवत्तो ४ १४ ४ ११, ४ १२
 देव थुई ३ १०
 देव थुई ३ ११
 देवदत्त (वि) १ ५४
 देवस्स ४ १३, ४ १४
 देवा ४ १४, १ ४३, ४ ६, पा
 ४ ११
 देवाउ ४ ११, ४ १४, ४ १२
 देवाओ ४ ११, ४ १२, ४ १४

देवाण ४ ८, ४ १४
 देवाणि १ ४३
 देवाण ४ १४, ४ ८
 देवासुतो ४ १४
 देवाहि ४ ११, ४ १२, ४ १४
 देवाहित्तो ४ १४, ४ ११
 देवाहित्तो ४ १२, ४ १४
 देवीए पृथ १ १२
 देवे ४ १४
 देवेण ४ ८, ४ १४
 देवेण ४ १४
 देवेम्मि ४ १४
 देवेसु ४ ९, ४ १४
 देवेसु ४ १४
 देवेसुतो ४ १२
 देवेहि ४ १०, ४ १२, ४ १४
 देवेहिं ८ ९ ४ १४, ४ १०
 देवेहिं ४ १४, ४ १०
 देवेहित्तो ४ १४
 देवो (वि) २ १, ४ १४, ४ ५
 देव ४ १४, ४ ७, अप ११ ७४
 देव्व ७ द, शौ ८ ४४
 दो ४ ४८
 दोणि ४ ४८
 दोण्ण ४ ४८
 दोण्ह ४ ४८
 दोदुहिसुतो हेरू पा ४ ४७
 दोदुहिट्तो हेरू पा ४ ४७
 दोला ७ द
 दोवअण १ ७१
 दोसढा अप ११ ६५

दोसु ४ ४८
 दोहगा १ ९१
 दोहलो ७ द
 दोहा इअ १ ७२
 दोहा किज्जिदि १ ७२
 दोहि ४ ४८
 दोहि ४ ४८
 देहिंतो ४ ४८
 दोहो ३ ४
 दसण १ ३३
 द्रवक्क अप ११ ६४
 द्रहो ३ ४, पा ३ ४,
 द्रेहि अप ११ ६४
 द्रोहो ३ ४
 द्विरओ १ ७१
 ध
 धट्ठज्जणो ७ ध
 धट्ठो ७ ध
 धण अप ११ २
 धणवन्तो ३ ४४
 धणहे अप ११ २२
 धणाणि नौ ८ ३२
 धणिरो (वि) ३ ४४
 धणुद्धधरो पा १ २७
 धणुह ७ ध, १ २७
 धणू पा १ २७
 धणू १ २७, ७ ध
 धणज्जओ (वि) २ १
 धणज्जप्प मा ९ ८
 धत्ती ७ ध
 धत्थ ३ ३

धनुस्खण्ड मा ९ ४
 धम्मिल्ल १ ६८, शौ (वि) १ ३८
 धम्मेल्ल १ ६८
 धरहि अप ११ ४१
 धाअह ६ ३६
 धाह ६ ३६
 धाई ७ ध
 धारी ७ ध
 धावह ६ ३१
 धिह ७ ध
 धिई ७ ध
 धिई १ ८१
 धिज्ज ७ ध
 धिट्ठो ७ ध
 धिप्पह २ ७
 धिरत्थु ७ ध
 धीर ३ ९, ७ ध
 धुत्तो (वि) ३ २१
 धुरा १ २१
 धुरा पा १ २१
 धुवह ६ ३१
 धूआ ७ ध
 धूदा शौ प्रास ८ ४१
 धूलहिआ अप ११ ६७
 धेणु ४ ३७
 धेणु ४ ३७
 धेणू ४ ३३, ४ ३७
 धेणूअ ४ ३७
 धेणूआ ४ ३७
 धेणूह ४ ३७
 धेणूठ ४ ३३, ४ ३७

धेणू ४ ३७
 धेणूओ ४ ३३, ४ ३६
 धेणूण ४ ३७
 धेणूण ४ ३७
 धेणूदो ४ ३७
 धेणूसु ४ ३७
 धेणूसु ४ ३७
 धेणूसुतो ४ ३७
 धेणूहि ४ ३७
 धेणूहि ४ ३७
 धेणूहितो ४ ३७
 ध्रुव अप ११ ६४
 ध्रुव अप ११ ३२

न

नह ४ ३७
 नह गामो ३ १०
 नह गामो ३ १०
 नह ४ ३७
 नई २ १, २ ८, ४ ३७
 नईअ ४ ३७
 नईआ ४ ३७
 नईवू ४ ३७
 नईप ४ ३७, शौ ८ ४४
 नईओ ४ ३७
 नइण ४ ३७
 नईण ४ ३७
 नहदो ४ ३७
 नइसु ४ ३७
 नईसु ४ ३७
 नईसुतो ४ ३७

नईहि ४ ३७
 नईहि ४ ३७
 नईहि ४ ३७
 नईहितो ४ ३७
 नउ अप ११ ७६
 नओ पा २ १
 नकर पै (वि) पा २ १
 नक्कचरो (वि) पा २ १
 नक्खा ३ १२
 नगो ३ २
 न जुत्त ति १ ५०
 नणन्दा ४ ३१
 नत्तिओ ७ न
 नत्तुओ ७ न
 नत्तचरो (वि) पा २ १
 नत्थून पै १० १२
 नदून पै १० १२
 नमोकारो ७ न
 नम्म० पा १ ३९
 नम्मो १ ३९
 नयणा पा १ ४१
 नयणाइ पा १ ४१
 नयण पा २ १
 नयर पा २ १
 नरिन्दो १ ६७
 नरो २ ८
 नले मा ९ ३
 नवख अप ११ ६४
 नवखो स्वाप्र ३ ४५
 नस्स ६ ३८
 नहा ३ १२

नहुस्त्रिहणे आवन्धत्तीर्ण १ १२
 नहेण अप ११ ५
 नह १ ४०
 नह्य ४ ४७
 नाह् अप ११ ७६
 नाए पै, पा ४ ४६, पै १० २१
 नाढी (वि) २ ४
 नापिओ ७ न
 नारह्यो ७ न
 नालिउ अप ११ ६४
 नावह् अप ११ ७६
 नावा ७ न
 नासह् (वि) ६ ३१
 नाहि अप ११ ६४
 नाहो २ ३
 निउर ७ न
 निक्कम्म (वि) ३ १७
 निक्ख ३ १७
 निक्खट्ट अप ११ ६४
 निक्खलो ३ १
 निक्खिन्दो ओ ८ ३
 निक्ख ३ १९
 निउर्रो ७ न
 निट्ठुरो ३ १
 निण ३ २४
 निप्फेसो ३ २७
 निमिअ ६ ३२
 निम्बो ७ न
 निम्मल्ल १ ४७
 निरुत्तर १ १९
 निवत्तओ ३ २१

निवत्तण (वि) ३ २१
 निविड (वि) २ ४
 निवो १ ८१
 निसडो ७ न
 निसाअरो १ १३
 निसिआ अप ११ २
 निस्फल मा ९ ४
 निस्सह १ १८
 निहसो ७ न
 निहिओ ३ १२
 निहित्तो ३ १२
 निही १ ४४
 निही पा १ ४४
 नीच्चअ ७ न
 नीड ३ १२, ७ न
 नीमी ७ न
 नीमो ७ न
 नीला ४ २९
 नीली ४ २९
 नीलुप्पल १ ६७
 नीवी ७ न
 नीवो ७ न
 नीसहो १ ५१
 नीसह १ १८
 नीसासो पा ३ ८
 नीसो १ ५१
 नूउर ७ न
 नूण १ ३६
 नूण १ ३६
 नेह् ६ २९
 नेउर ७ न

नेड ३ १२
 नेड्ड ३ १२, ७ न
 नेति पै १० १७
 नेदि शौ ८ १
 नेन पै, पा ४ ४६, पै १० २१
 नेरड्डओ ७ न
 नोहलिआ ७ न
 न अप ११ ७६
 न्याय (वि) २ ८

प

पअ पा १ ३९
 पअट्ट ७ प
 पअड १ ५२
 पअरो १ ६२
 पआरो १ ६२
 पआवई २ १
 पइट्टा १ ४७, ७ प, (वि) २ ५
 पइट्टाण (वि) २ ५
 पइट्टि अप ११ २
 पइट्टिअ १ ४७
 पइण्णा (वि) २ ५, ७ ५
 पइव (वि) २ ५
 पइ अप ४ ४७, अप ११ ४०
 पई (वि) १ ९
 पईवो २ ९
 पईव ७ प
 पडअ १ ६१
 पडट्टो ७ प
 पडत्त ७ प
 पडत्ती १ ८३

पडम ७ प
 पडरिस १ ९३, ७ प
 पओ १ ३९
 पओट्टो शौ ८ ४४
 पक्क ७ प
 पखलो (वि) २ ३
 पगिगव अप ११ ६४
 पङ्को १ १, १ ३७
 पको १ ३७
 पत्ती १ ३२
 पच्चओ ३ १९
 पच्चच्छ ३ १९
 पच्चलिअ अप ११ ६४
 पच्चुसो ७ प
 पच्चुहो ७ प
 पच्चड्ड अप ११ ६४
 पच्छा ३ २२
 पच्छिम ३ २२
 पच्छ ३ २२
 पज्जन्तो पा १ ५७
 पज्जत्त ३ १
 पज्जन्तो ७ प
 पउज्जन्त ३ २३
 पउज्जा ३ ५
 पउज्जाठलो शौ ८ ८
 पउज्जाओ ३ २३
 पउज्जणो ३ २४
 पञ्चा ४ ५०
 पञ्चावण्णा ७ प
 पञ्चाहि ४ ५०
 पञ्जले मा ९ ८

पञ्जा पै १० २
 पञ्जाविशाले मा ९ ८
 पट्टण ७ प
 पट्टि अप ११ १
 पट्ट १ ८२
 पठिअ ६ १७
 पठित्तुत पै १० ११
 पठिउयते पै १० १४
 पडाआ शौ (वि) पा २ १
 पडाया ७ प
 पडायाण ७ प
 पडिप्फद्दी ३ २७
 पडिप्फद्दी १ ५२
 पडिमा २ ५
 पडिवआ १ ५२
 पडिवण २ ५
 पडिवद्दी २ ६
 पडिसरो २ ५
 पडिसिद्दी १ ५२
 पडिसुआ १ ३३
 पडिसुद् १ ३३
 पडसुआ ७ प
 पडई (वि) २ ९
 पडित्ता शौ ८ १३
 पडिदूण शौ ८ १३
 पढन्तो ६ १२
 पढमाणो ६ १२
 पढम ७ प
 पडिय शौ ८ १३
 पढुम पा २ ३
 पढुम ७ प

पण्णरह ७ प
 पण्णा ३ ५, ३ २४
 पण्णावण्णा ७ प
 पण्णासा ७ प
 पण्णो (वि) १ ५६
 पण्हा १ ४२
 पण्हो १ ४२, ३ २८
 पत्तल स्वाप्र ३ ४५
 पस्थरो पा १ ६१, ३ २५
 पस्थारो पा १ ६१
 पन्थो १ ३७
 पथो १ ३७
 पमुहेण २ ३
 पमुक्क (वि) ३ १०
 पम्मुक्क (वि) ३ १०
 पम्म ७ प
 पम्ह ७ प
 पम्हट्टो ६ ३९
 पयावई पा २ १
 पय्याकुलीकदग्धि शौ ८ ८
 पर अप ११ ६४
 परहुओ १ ८३
 परामुट्टो १ ८३
 परिट्टा १ ४७
 परिट्टिअ १ ४७
 परिठविअ १ ६१
 परिठाविअ १ ६१
 परित्तायध शौ ८ १०
 परोप्पर ७ प
 परोहो १ ५२
 परमुहो १ ३२

पलकखो ७ प
 पलबघणो (वि) २ ३
 पलिअको ७ प
 पलिअ ७ प
 पलिचये मा प्राप् ९ १६
 पलित्तो २ ७
 पलिल ७ प
 पलिविअ १ ७३
 पलीबेइ २ ७
 पल्लङ्को ७ प
 पल्लस्थ ७ प
 पल्लट्ट ७ प
 पल्लाण ७ प
 पवहाओ ३ ३१
 पवट्टो ७ प
 पवत्तओ (वि) ३ २१
 पवत्तण (वि) ३ २१
 पवसन्तेण अप ११५, अप ११ १४
 पवहो १६२, पा १ ६१
 पव्वर्ती पै १० ६
 पवासू १ ५०
 पवाहो १ ६२, पा १ ६१
 पवो (वि) ३ ३२
 पसडिल ७ प
 पसदि शौ प्राप् ८ ४५
 पसिअ १ ७३
 पसिडिल ७ प
 पसिद्धी १ ५२
 पसुत्त १ ५२
 पस्ते मा ९ ५
 पहरो पा १ ६१

पहारो पा १ ६१
 पहिहो ७ प
 पट्टुच्चइ अप ११ ४८
 पट्टुदि १ ८३
 पट्टुवी पा २ ३
 पट्टो ७ प
 पाअइ ६ २१
 पाअउ १ ५२
 पाअवडण ७ प
 पाअवीड ७ प
 पाआई ७ प
 पाआरो ७ प
 पाइ ६ २१
 पाइक्को ७ प
 पाउअ १ ६१, १ ८३
 पाउरण ७ प
 पाउस पा १ २४
 पाउसो १ २४, १ ३८, १ ८३,
 पा १ ३८
 पाओ (वि) १ ९
 पांगुरण ७ प
 पाडिप्फद्धी १ ५२
 पाडिविआ १ ५२
 पाडिवया (वि) १ २०
 पाडिसिद्धी १ ५२
 पाणिअ १ ७३
 पाणिणीआ (वि) ३ ३७
 पाणीअ (वि) १ ७३
 पारओ ७ प
 पारकेर ७ प
 पारक्क (वि) ३ ३७, ७ प
 पारद्धो ७ प

पाराओ (वि) पा. १ १९
 पाराकेर ७ प
 पारावओ (वि) पा. १ १९, ७ प
 पारिक्क ७ प
 पारेवओ ७ प
 पारो ७ प
 पारोहो १ ५२
 पालेवि अप ११ ७३, अप ११ ७४
 पावडण ७ प
 पावरण ७ प
 पाचारओ ७ प
 पावासू ७ प, १ ५२
 पावीड ७ प
 पावीसु अप ११ ५१
 पावो शौ ८ ४४
 पाव (वि) २ १, २ ९
 पासह १ ५१
 पासाणो शौ ८ ४४, ७ प
 पासिद्धी १ ५२
 पासुत्त १ ५२
 पासू १ ३६
 पास पा ३ ८
 पाहाणो ७ प
 पाहुड ७ प
 पाहुद १ ८३
 पिअ हेरू ४ २३
 पिअउ हेरू ४ २३
 पिअओ हेरू ४ २३
 पिअरम्मि ४ २३
 पिअरस्स ४ २३
 पिअरहितो ४ २३

पिअरा हेरू ४ २३, ४ २३
 पिअराण ४ २३
 पिअरादो ४ २३
 पिअरे हेरू ४ २३, ४ २३
 पिअरेण ४ ३, हेरू ४ २३
 पिअरेण हेरू ४ २३
 पिअरेसु ४ २३
 पिअरेहि हेरू ४ २३
 पिअरेहि हेरू ४ २३
 पिअरेहि ४ २३
 पिअरो ४ २३, हेरू ४ २३
 पिअर ४ २३, हेरू ४ २३
 पिअवो हेरू ४ २३
 पिआ ४ २३, हेरू ४ २३
 पिआपिअ १ ८
 पिउ अप ११ ५३
 पिउओ १ ८३
 पिउच्छा ७ प
 पिउणा हेरू ४ २३
 पिउणो हेरू ४ २३
 पिउ वण १ ८४
 पिउ सिआ ७ प
 पिऊ हेरू ४ २३
 पिऊहि हेरू ४ २३
 पिऊहि हेरू ४ २३
 पिऊहि हेरू ४ २३
 पिओत्ति १ ५०, (वि) १ ६९
 पिक्क पा १ ५४, १ २, ३ ३,
 ७ प
 पिच्छी ३ २०
 पिट्ट १ ६८, १ ८२

विट्ठि अप ११ १

विट्ठो ७ प

विण्ड १ ६८, शौ ८ ४४, शौ

(वि) १ ६८

विस्थी १ ८१

विदणा शौ ८ ४४, ४ २३

विदुणो ४ २३

विदुण ४ २३

विदुम्भि ४ २३

विदुसु ४ २३

विदुहितो ४ २३

विध ७ प

वियगमण (वि) २ १

विलुट्ट ३ ३२

विष पै प्राप १० २१

विश्चिले मा ९ १०

विसल्लो ७ प

विसाओ ७ प

विसाजी (वि) २ १

विहट्टो ७ प

विह १ ३१, ७ प

पीअल स्वा प्र ३ ४७, ७ प

पीअ ७ प

पीआपीअ १ ८

पीडिअ (वि) २ ४

पीठ ७ प

पीणआ (पा) (वि) ३ ३९

पीणत्तण ३ ३९

पीणिमा ३ ३९

पीवल स्वाप्र ३ ४५, ७ प

पुछ १ ३३

पुञ्जकम्मो पै १० ४

पुञ्जाह मा ९ ८, पै १० ४

पुट्टि अप ११ १

पुट्टो १ ४२

पुट्टो ३ १८

पुट्ट १ ४२, १ ८३

पुडो शौ ८ २८

पुढम ७ प

पुढवी ७ प

पुढुम ७ प

पुणु अप ११ ६४

पुण्णमतो (वि) ३ ४४

पुण्णामो ७ प

पुत्तो शौ ८ २८

पुध ७ प

पुप्फ (वि) २ ११, ३ २७

पुरओ १ ४६

पुरदरो (वि) २ १

पुरा १ २१

पुरिम ७ प

पुरिक्क (वि) ३ ४४

पुरिसो ७ प

पुरिसो त्ति (वि) १ ६९, १ ५०

पुरुषो शौ ८ ४४

पुलिशरश भा प्राप्र ९ १६

पुलिशाह मा प्राप्र ९ १६

पुलिशो मा ९ ३

पुलोमी १ ९२

पुव्वण्हो १ ६१, ३ २८

पुव्वण्हो १ ६१

पुश्व ७ प

पुहइ १ ८३
 पुहई ७ प
 पुहवी ७ प
 पुहवीसो १ ११
 पुहुवी १ १३, ३ ३३
 पुह ७ प
 पूसइ ६ ३०
 पूसो १ ५१
 पेअ २ १८
 पेउस ७ प
 पेकखदि शौ ८ ३७
 पेच्छदि शौ प्रास ८ ४५
 पेज २ १५
 पेद १ ६८
 पेह ७ प
 पेणह १ ६८
 पेम्म ३ ११
 पेरन्तो पा १ ५७, ७ प
 पेरन्त १ ५७
 पेस्कदि मा ९ १२
 पोक्खरणी शौ ८ ४४
 पोक्खरिणी ३ १७
 पोक्खर शौ ८ ४४, ३ १७, १ ७९
 पोत्थअ १ ७९
 पोप्पली ७ प
 पोप्पल ७ प
 पोम्म ७ प
 पोरो ७ प
 पसनो १ ६३
 पसुर पा १ ६१
 पसू १ ३६, १ ६३

प्रयाग जल (वि) २ १

प्रस्सदि अप ११ ४८

प्राइम्ब अप ११ ६४

प्राइव अप ११ ६४

प्राउ अप ११ ६४

प्रियेण अप ११ ५

फ

फकवती पै (वि) पा २ १

फणसो ७ ५

फणी (वि) २ ११

फन्दन १ ३

फन्दण ३ २७

फरुसो ७ फ

फलमवहरइ १ ३०

फलिहो ७ फ

फलिह ७ फ

फलिहा ७ फ

फल १ २८

फल अवहरइ १ ३०

फाडेइ (वि) २ ८, २ २०

फालिहहो ७ फ

फालेइ (वि) २ ४, २ १०

फासो पा ३ ८

फुड ६ ३९

फुसदि शौ प्रास ८ ४५

फोडओ शौ ८ ४४

फंसो १ ३३, ३ २७

ब

बइक्को ७ ब

बहुत्तणहो अप ११ ७१

बहुत्तणु अप ११ ७१

वधवो १ ३७
 वन्धवो १ ३७
 वन्धिज्जह ६ २६
 वग्मचेर (वि) ३ २९
 वग्मचेर ३ २९
 वग्महणो १ ६१, ३ २९
 वग्महा ३ २९
 वहिणा ७ व
 वहिणो शौ ८ ३०
 वाग्महणो १ ६१
 वारह ७ व
 वालहे अप ११ २२
 वालाए शौ ८ २४
 बाह अप ११ १
 बाहा अप ११ १
 बाहाए पा १ ४५
 बाहसु पा १ ४२
 बीआ (वि) १ ९
 बुद्धा ३ २०
 बुद्धि शौ प्राप्त ७ ४५
 बुद्धी १ ८३
 बुद्धि हेरु ४ ३७
 बुद्धि ४ ३७
 बुद्धितो हेरु ४ ३७
 बुद्धि ४ ३७, हेरु ४ ३७
 बुद्धी ४ ३७, हेरु ४ ३७, ४ ३३
 बुद्धि ४ ३४ हेरु ४ ३७
 बुद्धीआ ४ ३७ हेरु ४ ३७, ४ ३४
 बुद्धिह ४ ३७, हेरु ४ ३७, ४ ३४
 बुद्धीउ ४ ३३, ४ ३७, हेरु ४ ३७
 बुद्धीए ४ ३४, ४ ३७, हेरु ४ ३७

बुद्धीआ ४ ३३, ४ ३७, हेरु ४ ३७
 बुद्धीण ४ ७ हेरु ४ ३७
 बुद्धीण ४ ३७, हेरु ४ ३७
 बुद्धीसु ४ ३७, हेरु ४ ३७
 बुद्धीसु ४ ३७, हेरु ४ ३७
 बुद्धीसुनो हेरु ४ ३७
 बुद्धीहितो हेरु ४ ३७
 बुधो १ ३३
 बुहस्पदी मा ९ ४
 बोद्धणउ अप ११ ७५
 ब्रह्मजो शौ ८ ३०
 ब्रुवह अप ११ ४८
 ब्रोप्पिणु अप ११ ४८,

भ

भअव ४ ४२
 भइणी ७ भ
 भइरवा १ ८९
 भगवती पे १० ६
 भगव शौ ८ ७
 भगउ अप ११ २६
 भग्गो ३ २
 भज्जा ३ २३
 भज्जिउ अप ११ ७३
 भट्टा शौ प्राप्त ८ ४५
 भडो २ ४
 भणइ ६ ६
 भणए ६ ६
 भणह ६ ६
 भणन्ति ६ ६
 भणन्ते ६ ६

भणमि द द
 भणसि द द
 भणसे द द
 भणित्था द द
 भणिमो द द
 भणिरे द द
 भणेमो द द
 भणामो द द
 भणामि द द
 भत्तउ हेरू ४ २३
 भत्तओ हेरू ४ २३
 भत्तारम्भि ४ २३, हेरू ४ २३
 भत्तारस्स ४ २३ हेरू ४ २३
 भत्तारहितौ ४ २३
 भत्तारा ४ २३, हेरू ४ २३
 भत्ताराउ हेरू ४ २३
 भत्ताराओ हेरू ४ २३
 भत्ताराण हेरू ४ २३
 भत्ताराण ४ २३ हेरू ४ २३
 भत्तारादो ४ २३
 भत्तारासुतो हेरू ४ २३
 भत्ताराहि हेरू ४ २३
 भत्ताराहितो हेरू ४ २३
 भत्तारे ४ २३, हेरू ४ २३
 भत्तारेण ४ २३, हेरू ४ २३
 भत्तारेसु ४ २३ हेरू ४ २३
 भत्तारेसुतो हेरू ४ २३
 भत्तारेहि ४ २३ हेरू ४ २३
 भत्तारेहि हेरू ४ २३
 भत्तारेहितो हेरू ४ २३
 भत्तार ४ २३ हेरू ४ २३

भत्तारो ४ २३ हेरू ४ २३
 भत्तिव ता ३ ४४
 भत्तुणा ४ २३ हेरू ४ २३
 भत्तुणो ४ २३ हेरू ४ २३
 भत्तुण ४ २३
 भत्तुम्भि ४ २३ हेरू ४ २३
 भत्तुसु ४ २३
 भत्तुस्स हेरू ४ २३
 भत्तुहि ४ २३
 भत्तुहितो ४ २३
 भत्तू हेरू ४ २३
 भत्तूओ हेरू ४ २३
 भत्तूण हेरू ४ २३
 भत्तूण हेरू ४ २३
 भत्तूसु हेरू ४ २३
 भत्तूसुतो हेरू ४ २३
 भत्तूहि हेरू ४ २३
 भत्तूहि हेरू ४ २३
 भत्तूहितो हेरू ४ २३
 भत्त ३ १
 भदद ३ ४
 भद्र ३ ४
 भन्ते मा १ २
 भण्ण ७ भ
 भमया स्वाप्र ३ ४५
 भमाडह द १९
 भमाडेह द १९
 भमावह द १९
 भमिअ ३ ३६
 भमिरो ३ ३५
 भयफकइ ७ भ

नयव शौ ८ ६
 नयव शौ ८ ७
 नयस्सई ७ अ
 भरधो शौ (वि) पा २ १
 भरहो ७ अ
 भवओ (वि) १ ४६
 भवन्तो (वि) १ ४६, ७ अ
 भवँरू अप ११ ५०
 भवातिसो पै १० १६
 भविअ ७ अ
 भविय शौ ८ १३
 भविस्सिदि शौ ८ १७ शौ (वि)
 ८ ३३
 भव ४ ४८ शौ ८ ७
 भसरो ७ अ
 भसलो ७ अ
 भस्टालिका मा ९ ५
 भस्टिणी मा ९ ५
 भस्स ७ अ (वि) पा १ १९
 भाअदि शौ प्रास ८ ४५
 भाइरही २ १
 भाठओ १ ८३
 भाणओ शौ ८ ४४
 भाणुओ शौ ८ ४४
 भाण (वि) पा १ १९, ७ अ
 भादा शौ प्रास ८ ४५
 भादि शौ प्रास ८ ४५
 भाहुओ शौ प्रास ८ ४५
 भामिणी ७ अ
 भामेई ६ १९
 भारिया पै प्राप् १० २१ पै ७ अ

भारिया पै १० १३
 भिउडी ७ अ
 भिऊ १ ८१
 भिंगारो १ ८१
 भिंगो १ ८१
 भिण्डवालो ७ अ शौ ८ ४४
 भिन्दियालो शौ ८ ४४
 भिण्फो ७ अ शौ प्रास ८ ४४
 मि नलो ७ अ
 भिसअ १ २३
 भिसिणी २ १३
 भीमशेणस्म मा ९ १४
 भुई १ ८३
 भुअणह अप ११ ७४
 भुअणहि अप ११ ७४
 भुए ३१
 भुमया स्वाप् ३ ४५
 भुक्तया ७ अ
 भूद शौ प्रास ८ ४५
 भे हेरू पा ४ ४७ हेरू ४ ४७
 भेच्छ ६ ९
 भेडो ७ अ
 भेतुआण पा ३ ३६
 भाअणमेम (वि) १ ६६
 भोच्चा ३ २०
 भोच्छ ६ ९
 भोति पै १० १७
 भोत्तव्व ६ ३३
 भोत्ता शौ ८ १३
 भोत्तुआण ३ ३६
 भोत्तु ६ ३३

भोत्तूण ६ ३३	मऊहो ७ म
भोदि शौ ८ १, शौ ८ १५	मए ४ ४७ शौ ८ ४८, शौ
शौ प्रास ८ ४५	४७, हेरू पा ४ ४७
भोदी ४ ४३	मएसु ४ ५७
भोदूण शौ ८ १२	मओ ८०, २ १
भोमि शौ ८ ३३	मगओ १ ६
म	मग्गू १ १
मअगलो ७ म	मगोहि अप ११ ९९
मअङ्को २ १	मगो (वि) २
मअको (वि) १ ८३	मघोणो ७ म
मअणो २ १	मच्चू, ७ म
मआ ४ ४७	मच्छुरो ३ २२
मइ शौ ८ ४६, ४ ४७ शौ ४	मजारो पा १ ६१, ७ म
४७ हेरू पा ४ ४७, अप	मज्ज ३ २३
४ ४८	मज्झ हेरू पा ४ ४७
मइत्तो ४ ४७, हेरू पा ४ ४७	मज्झत्तो हेरू पा ४ ४७
मइदु हेरू पा ४ ४७	मज्झग्मि हेरू पा ४ ४७,
मइदो ४ ४७ हेरू पा ४ ४७	मज्झसु हेरू पा ४ ४७
महल ७ म	मज्झहे अप ११ १२
मइ शप ११ ४०	मज्झहो ७ म
मईअ पक्खे (वि) ३ ३७	मज्झाण हेरू पा ४ ४७
मउअ ७ म	मज्झाण हेरू पा ४ ४७
मउड १ ७५	मज्झिमो ७ म
मउण १ ९३	मज्झु अप ११ ४०
मउत्तण ७ म	मण्णसु हेरू पा ४ ४७
मउली १ ९३	मज्झ हेरू पा ४ ४७, ३ २४
मउलो २ १	मझ ३ ३०
मउल १ ७५	मज्जरो ७ म
मऊरो शौ ८ ४४	मट्ठिआ ७ म
मऊरो ७ म	मडअ ७ म
	मडे मा प्राप्र ९ १६

मङ्गिअ ७ म
मढा २ ४
मणअ स्वा प्र ३ ४५
मणस्सि शौ ८ ५
मणहर ७ म
मणाउ अप ११, ६४
मणासिला १ ५१
मणिअ स्वाप्र ३ ४५
मणोज्ज ३ ५
मणोण ३ ५
मणोरहो २ ३, ७ म
मणसिणी १ ३३ १ ५२
मणमिला १ ३३
मणसी १ ५२
मण्डलगा १ ४३
मण्डलगो १ ४३
महुक्को ३ ११
मणू ७ म
मतन परवमो पै १० ६
मत् शौ ८ ४४
मतौ हेरू पा ४ ४७, ४ ४७,
शौ ४ ४७ शौ ८ ४४
मधुरीअ पा १ ६१
मनूसो १ ५१
मन्तिदो शौ ८ २
मन्तू ७ म
मन्भीसा अप ११ ६४
मम ४ ४७ शौ ८ ४४
हेरू पा ४ ४७ शौ ४ ४७
ममप ४ ४७
हेरू पा ४ ४७

ममतो ४ ४७
हेरू पा ४ ४७
ममदुहि ४ ४७
मममि ४ ४७
हेरू पा ४ ४७
ममसु हेरू पा ४ ४७ ४ ४७
ममाद् ४ ४७ हेरू पा ४ ४७
ममाण हेरू पा ४ ४७
ममाण हेरू पा ४ ४७
ममातु पै १० २०
ममातो पै १० २०
ममादो शौ ८ ४४ शौ ४ ४७
ममासुतो ४ ४७ हेरू पा ४ ४७
ममार्हितो हेरू पा ४ ४७, ४ ४७
ममेसु ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
ममेसुतो ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
मम ४ ४७
मम्महो ३ २६
मयङ्को पा २ १
मयणो पा २ १
मयन्दो ७ म
मयि अप ४ ४८
मयुरो ७ म
मय्य मा ९ ७
मरगअ ७ म
मरलो पा १ ६१
मरहद ७ म
मरालो पा १ ६१
मरिण्वउ अप ११ ७२
मलिण ७, म
मल्ल ७ म

मल्ल (वि) ३ ३	महूणि ४ ४१
मसण ७ म	महेसु हेरू पा ४ ४७, २ २७
मसाण ७ म	महो २ ३
मसिण ७ म	मह हेरू पा ४ ४७, ४ २७
मस्कली मा ९ ४	मह्य ४ ४७, अप ४ ४८
मह हेरू पा ४ ४७, शौ ४ ४७, ४ ४७, शौ ८ ४४	मह्यत्तो ४ ४७
महत्तो ४ ४७, हेरू पा ४ ४७	मह्याण ४ ४७
महन्तो ७ म	मह्य अप २ ४१
महन्दो शौ ८ ३	मह्यलो ७ म
महम्मि ४ ४७, हेरू पा ४ ४७	माअ ४ ३७
महसु हेरू पा ४ ४७, ४ ४७	माअ ४ ३७
महाण हेरू पा ४ ४७	माआ ७ ३७
महाण ४ ४७, हेरू पा ४ ४७	माआअ ४ ३७
महारा अप ११ ६८	माआइ २ ३७
महिमा पा १ ४४	माआण २ ३७
महिवालो २ ९	माआण ४ ३७
महिविट्ट (वि) १ ८२	माआदे ४ ३७
महिहि अप ११ २४	माआसु ४ ३७
महु ४ ४१, अप ११ ४० अप ४ ४८	माआसु ४ २७
महु ४ ४१	माआसुतो ४ ३७
महुअरो २ ३	माआहितो ४ ४७
महुअ ७ म	माइणो (वि) १ ८५
महुइ १ १०	माइ मण्डल १ ८५
महुरिअ ७ म	माउअ ३ १२ ७ म
महुव ३ ४५	माउआ १ ८३
महुअ ७ म	माउक्क ३ १२, ७ म
महुइ ४ ४१	माउच्चा ७ म
महुइ ४ ४१	माउत्तण ७ म
महुओ ८ ४४	माउ मण्डल १ ८५, १ ८४
	माउ सिआ ७ म
	माउहर १ ८५, १ ८४

माऊ १ ८३
 माए ४ ३७
 माएहि ४ ३७
 माएहि ४ ३७
 माएहि ४ ३७
 माज्जारो पा १ ६१
 माणुसो २ ८
 माणसिणी १ ५२
 माणसी १ ५२
 माथत्रो पै प्राप्र १० २१
 मादु १ ८३
 मादर शौ ८ ४४
 मादुहर १ ८५, १ ८४
 मादुमण्डल १ ८४, १ ८५
 मारणउ अप ११ ७५
 मारणओ अप ११ ७५
 मारि अप १ ७३
 मारुदिणा शौ ८ २
 माला ४ ३३
 मालाउ ४ ३३
 मालओ शौ ८ ४४
 मालाओ ४ ३३
 माशे मा प्रा ९ १६
 मामल १ ३६
 मास १ ३६
 माहवीलदा २ ३
 माहण्पो १ ४१
 माहण्प १ ४१
 माहो २ ३
 मि ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
 मिओ ७ म

मिओ ७ म
 मिओअदि शौ प्रास ८ ४१
 मिइङ्गो पा १ ५४
 मिओ शौ ८ ४७
 मिचू ७ म
 मिच्छा ३ २२
 मिट्ट १ ८१
 मिमे ४ ४७
 मिम हेरू पा ४ ४७
 मिरिअ १ ५४
 मिलाण ३ ३२
 मि लउ अप (वि) ११ ४
 मिलिच्छो १ ६७
 मिसालिअ स्वाप्र ३ ४५
 मिहुण २ ३
 मी ४ ४७
 मुओको (वि) १ ८३
 मुइगो १ ५४, ७ म
 मुक्को ३ १२
 मुक्क ७ म
 मुक्खो ७ म
 मुग्गरो ३ १
 मुग्गो ३ १
 मुज्जाय (अ) गो १ ९२
 मुट्टो ३ १८
 मुडाल १ ८३
 मडडा ७ म
 मुडे १ ३३
 मुढा १ ३३
 मुत्ताहल २ ११
 मुत्ती (वि) ३ १२१

मुत्तो (वि) ३ २१
 मुत्त ३ १, ७ म
 मुद्रा ७ म
 मुद्राञ ४ ३४
 मुद्राङ् ४ ३४
 मुद्राण् ४ ३४ (वि) १ ९
 मुद्र ३ १
 मुनिदो १ ६७
 मुरुखो ७ म
 मुसल ७ म
 मुसा ७ म
 मुसावाभा ७ म
 मुहत्तो (वि) ३ २१
 मुह २ ३
 मूओ ३ १२
 मूमओ ७ म
 मूसल ७ म
 मूसा ७ म
 मे शौ ८ ४४ ४ ४७, हेरू पा
 ४७ शौ ४ ४७
 मेखो पै प्राप् २ २१
 मेही ७ म
 मेरा ७ म
 मेलि अप ११ ४६
 मेहला २ ३
 मेहो २ ३
 मेशे मा (वि) ४ ५
 मा ८ २
 मो हेरू पा ४ ४७
 मोच्छ ६ ९
 मोण्ड १ ७९

मोड (वि) २ ४
 मोत्तव्व ६ ३३
 मोत्ता १ ७९
 मोत्ती शो ८ ४४
 मोत्तुण ६ ३९
 मोत्तु ३ ३६, ६ ३३
 मोत्तूण ६ ३३
 मोरो ७ म
 मोल्ल ७ म
 मोसा ७ म
 मोहो ७ म
 म हेरू पा ४ ४७, ४ ४७
 शौ ४ ४७, अप ११ ६४
 मजारो १ ३३
 मसल १ ३६
 मसुल्लो ३ ४४
 मस १ ६३, शौ ८ ४४, १ ३६
 मस्सू ७ म
 मि हेरू पा ४ ४७
 ४ ४७
 म्हा ६ ६
 मिह ६ ६
 म्हो ६ ६
 य
 यणवदे मा ९ ७
 यदि मा ९ ७
 यति १ ५०
 यस्के मा पा ९ ११
 यस्के मा ९ ११
 यातिसो पै १० १६
 यादि मा ९ ७

आयदे मा प्राप् ९ १६
युग्हातिभ्यो पै १० १६
अयेव शौ ८ २२

र

रञ्ज (वि) २ ६
रञ्जो २ १
रञ्ज २ १, २ ६
रञ्ज ७ २ १
रञ्जो पा ३ ६
रञ्ज ३ २२
रञ्जा पै प्राप् १० २१
रञ्जो पै प्राप् १० २१
रञ्जा पै १० ३
रञ्जो पै १० ३
रण ७ २
रण्णा हेरू ४ ४१, ४ ४१
रणो ४ ४१
रणो हेरू ४ ४१
रण ७ २
रन्ती ७, २, ३ ३
रन्त ७ २
रन्ता शौ ८ १३
रन्तूण शौ ८ १३
रमणिज्ज २ १५
रमणीञ्ज २ १५
रमति पै १० १८
रमते पै १० १८
रमदि शौ ८ १६
रमदे शौ ८ १६
रमिञ्ज ३ ३६

रमिय शौ ८ १८
रमियते प १० १
रयणीञ्ज १ १३
रसा-अल १ १
रसा थल पा २ १
रसानो ३ ४४
रस्सी ३ २ (वि) २०
राञ्ज उल १ १५, ७ -
राञ्जफेर ७ २
राञ्जमि ४ ३१
राञ्जस्म ४ ४१
राञ्ज ४ ४१
राञ्जा ४ ४१
राञ्जाणो ४ ४१
राञ्जाण ४ ४१
राञ्जाण ४ ४१
राञ्जाद ४ ४१
राञ्जादो ४ ४१
राञ्जाहितो ४ ४१
राइक्क (वि) ३ ३७ -
राइणा हेरू ४ ४१, ४ ४१
राइणो ४ ४१ हेरू ५ ४१
राइण ४ ४१ हेरू ४ ४१
राइत्तो हेरू ४ ४१
राइम्मि हेरू ४ ४१, ५ ४१
राइहितो ४ ४१
राई ७ २
राईण हेरू ४ ४१
राईण हेरू ४ ४१
राईसु हेरू ४ ४१
राईसु हेरू ४ ४१

राईहि हेरु ४ ४१
 राईहि हेरु ४ ४१
 राईहि हेरु ४ ४१
 राउल १ १५ ७ ४
 राप ४ ४१
 राएण हेरु ४ ४१
 राएण हेरु ४ ४१
 राएसु हेरु ४ ४१, ४ ४१
 राएसु हेरु ४ ४१, ४ ४०
 राएहि हेरु ४ ४१
 राएहि हेरु ४ ४१
 राएहि हेरु ४ ४१, ४ ४१
 राओ ($\frac{१}{२}$) १ ६२
 राचा पै प्राप् १० २१
 राचिजा ऐ १० ३
 राचिजो प १० ३
 राचिना प प्राप् १० २१
 राचिनो पे प्राप् १० २१
 राजपधो जो ८ ९
 राजपहा जो ८ ९
 राय हेरु ४ ४१
 रायक ७ ४
 रायत्तो हेरु ४ ४१
 रायमि हेरु ४ ४१
 रायस्स हेरु ४ ४१
 राया हेरु ४ ४१
 रायाण हेरु ४ ४१
 रायाणो हेरु ४ ४१
 रायाण हेरु ४ ४१
 राये हेरु ४ ४१
 राय हेरु ४ ४१, शौ ८ ६

राहा २ ३
 रिज २ १, १ ८६, (वि) २ ९
 ७ ४
 रिखो ७ ४
 रिच्छो ७ ४
 रिज्जू १ ८६, ७ ४
 रिड्ढी ७ ४
 रिण १ ८६, ७ ४
 रिद्धी १ ८६, ७ ४
 रिसहो १ ८६, ७ ४
 रिसी १ ८६, ७ ४
 रुअसि अप ११ ४२
 रुअहि अप ११ ४२
 रुक्खा १ ४३
 रुक्खाइ १ ४३
 रुक्खो शौ ८ ४४ ७ ४
 रुक्खे मा (वि) ४ ५
 रुक्मी (वि) ३ १६
 रुदो ३ ४
 रुद्रो ३ ४
 रुण ७ ४
 रुप्पिणी ३ १६
 रुप्पी पा ३ ६
 रुप्प ३ १६
 रुवह ६ ३१
 रुसह ६ ३०
 रेभो २ ११
 रेसि अप ११ ६४
 रेसि अप ११ ६४
 रोअदि २ १
 रोचिरो ३ ३५

रोच्छ ६ ९
 रोत्तम्व ६ ३३
 रोत्तु ६ ३३
 रोत्तण ६ ३३
 रोददि शौ प्राप् ८ ४५
 रोवइ ६ ३१
 रोवति शौ प्राप् ८ ४५
 ल
 लभण ७ ल
 लक्खेहि अप ११ ७
 लखण ३ १३
 लग्ग ६ ३८
 लग्ग ३ २
 लङ्गण १ ३७
 लघण १ ३७
 लज्जिरो ३ ३५
 लङ्कण १ ३७
 लट्ठी ३ १८, ७ ल
 लदत्तो हेरु ४ ३७
 लदार्हितो ४ ३७
 लदा ४ ३७, हेरु ४ ३७
 लदाऊ ४ ३७, हेरु ४ ३७
 लदाह ७ ३७, हेरु ४ ३७
 लदाउ ४ ३७, हेरु ४ ३७
 लदाए ४ ३७, हेरु ४ ३७
 लदाभः ४ ३७, हेरु ४ ३७
 लदाण ४ ३७, हेरु ४ ३७
 लदाण ४ ३७, हेरु ४ ३७
 लदादो ४ ३७
 लदासु ४ ३७, हेरु ४ ३७
 लदासु ४ ३७, हेरु ४ ३७

लदासुनो हेरु ४ ३७
 लदाहि ४ ३७, हेरु ४ ३७
 लदाहि ४ ७, हेरु ४ ३७
 लदाहि ४ ३७, हेरु ४ ३७
 लदान्तिनो हेरु ४ ३७
 लद ४ ३७ हेरु ४ ३७
 लपति प १० १८
 लपते पे १० १८
 लवण शौ ८ ४४
 लस्करो मा पा ९ १६
 मा प्राप् ९ १६
 ल-करो मा ९ ११
 लहति अप ११ ४२
 लहहु अप ११ ४५
 लह २ ५
 लहुअ ८ ७
 लहुइ ३ १३
 लहुवो ३ ३३
 लाअण २ ५
 लाऊ ३ ल
 लावला ७ ७
 लागलो ७ ७
 लायण १ २ १
 लायण शौ ८ ४४
 लास २ ८
 ला-स २ ३
 लाहलो ७ ल
 लिच्छुइ २ २२
 लिमा ७ ७
 लिह अप ११ १
 लिहइ २ ५

लिही ० १ प्राप् ८ २	वइसालो ० ८९
लं ह अप ११ १	वइसाहो १ ८९
लुक्का ७ ल	वइसिओ १ ९०
लुगो ७ ल, ६ ३९	वइसाणओ १ ९०
लुणइ ६ २२	वइसाणरो १ ८९
लुपइ (वि) २ ३	वक्कल ३ ३
लइ (वि) ६ ३१	वक्खाण ३ ७
लेविणु अप ११ ७३, अण ११ ७४	वग्गा १ २
लेह अप ११ १	वग्गो ३ ३ (वि) २ १
लोअणो १ ४१, पा १ ४१	वक १ ३३
लोअणो पा १ ४१	वक्खुहु अप ११ ८
लोअण १ ४१	वक्खुहे ११ ८
लोओ २ १	वक्खाओ (वि) १ ९
लोण ७ ल	वक्खा चलन्ति १ ६
लोइओ १ ७९	वक्खेण १ ३४
लोहिआअइ ६ १	वक्खेण १ ३४
लोहिआइ ६ १	वक्खेसु १ ३४
व	वक्खेसु १ ३४
वअणो १ ४१	वक्खु १ २८
वअण २ १, २ ८, १ ४१,	वक्खो ३ २२, ७ व
वअर शौ ८ ४४	वज्ज ३ २३, ७ व
वअ शौ ८ ४४, ४ ४७ शौ ८ ४०	वज्जणीय १ ३
वइअअओ १ ८९	वचण १ ३२
वइआलिओ १ ९०	वज्जिअ १ ३७
वइआलीओ ८९	वजिअ १ ३७
वइएसा १ ८९	वज्जदि सा ९ ९
वइएहो १ ८९	वटिअपै प्राप् १० ३१
वइर ७ व	वट्टी ३ २१
वइर १ ९०	वट्टो ७ व
वइसवणो १ ९०	वट्ट ७ व
	वडआणलो २ १

वडि- (वि) २ ४

वड्डय ७ व

वड्ढी १ ८०

वढ अप ११ ६४

वणम्मि १ २९

वण ४ ३८

वणमि १ २९

वणस्सई ७ व

वणाणि शौ ८ ३२

वणिदा ७ व

वण्ही ३ २८

वत्ता ३ २१

वत्तिआ (वि) ३ २९

वत्तिओ (वि) ३ २१

वण्ण शौ (वि) पा २ १

वनप्फई ७ व

वन्दामि शौ ८ ४२

वन्दिता (वि) ३ ३६

वन्दित्त (वि) ३ ३६

वन्द ७ व

वण्णो शौ ८ ४४

वग्गह १ ३७

वग्गह १ ३७

वग्गचेर ७ व

वग्गहो ७ व

वग्गिओ १ ७३

वग्गो १ ३९

वग्गचेर ३ ९, ७ व

वयणा पा १ ४१

वयणाह पा १ ४१

वय शौ ४ ४७, हेरू पा ४ ४७,

(वि) १ ४०

वयसिअह अप ११ २३

वयसो १ ३३

वरिअ ७ व

वरिस (वि) ६ २८

वलआ १ ६१

वलयाणलो पा २ १

वलवासुह २ ४

वलही २ ४

वलाआ १ ६१

वलाहु अप ११ ४५

वल्सि (वि) २ ४

वल्स पा १ १७, ७ व

वसही ७ व

वसहो १ ८०, ७ व

वसुभाति पे १० १७

वसो (वि) १ ८१

वहप्फई ७ व

वहस्सई ७ व

वहिरो २ ३

वहिल्लउ अप ११ ६४

वहीअदि शौ ग्रास ८ ४५

वहु ४ ३७

वहुए शौ ८ ४४

वहुमुह १ ८

वहुहुत्त ३ ४३

वहु ४ ३७

वहु ४ ३३, ४ ३७

वहुअ ४ ३७

वहुआ ४ ३७

वहुई ४ ३७

वहुव ४ ३३

वहूण ८ ३७	वासेसी १ ९
वहूओ ४ ३३, ४ ३७, शौ ८ ४४	वाहइ २ ३
वहूण ८ ३७	वाहरिजइ ६ २६
वहूण ४ ३७	वाहिओ ३ १२
वहूदो ४ ३७	वाहित्तो ३ १२
वहूसुह १ ८	वाहित्त १ ८१
वहूसु ४ ३७	वाहिप्पइ ६ २६
वहूसु ८ ३७	वाहिर ७ व
वहूसुनो ४ ३७	वाहि ७ व
वहूहि ४ ३७	वाहो २ ३, ७ व
वहूहि ४ ३७	विअ शौ ३९, १ १०
वहूहि ८ ३७	विअहल ७ व
वहूहित्तो ४ ३७	विअडु ७ व
वहेहअडो ७ व	विअड्हो ७ व
वहूचरिअ ७ व	विअणा ७ व
वाअरण ७ व	विअणो पा १ ५४
वाआ १ २०	विअण १ ५४,
वाआच्छल पा १ २०	विअय वम्म शौ ८ ६
वाआ विहवो पा १ २०	वि अवयासो १ १०
वाउणा २ १	विआण २ १
वाउम्मि शौ ८ ४४	विआरिल्लो ३ ४४
वाउलो ३ १२, ७ व	विआरुल्लो ३ ४४
वाउल्लो ३ १२	विउणो (वि) ३ ३
वाणारसी ७ व	विउद २ ६
वाप्पो ७ व	विउल २ १
वारण ७ व	विउस्सग्गो ७ व
वार (वि०) ३ ३, ७ व	विओओ २ १
वावडो शौ ८ २८, ७ व	विओहो २ १
वास इसी १ ९	विकासरो १ ५१
वासा १ ५१	विक्रओ १ २
वासेण अप ११ ५२	विक्रवो ३ ३

विच्छि अप ११ ६४
 विच्छुडो ७ व
 विच्छुओ ७ व
 विच्छोह गरु अप ११ ४२
 विच्छोडि अप ११ ७३
 विज्जण (वि) २ १
 विज्जला स्वाप्र ३ ४५
 विज्जा ३ २३
 विज्जू (वि) १ २०
 विज्ज ३ २०
 विज्जुलो १ ८१
 विज्जिओ ७ व
 विज्जुओ ७ व
 विज्जातो प प्राप्र १० २१
 विज्जो शौ ८ ३०
 विज्ज्ञान पै १० २
 विट्ठाल अप ११ ६४
 विट्ठी ७ व
 विट्ठोए अप ११ २
 विट्ठ ७ व
 विडवो ३ ४
 विड्डा ३ ११
 विड्ढी १ ८१
 विटत्तच्छुरस पा १ २५
 विटत्त ६ ३९
 विटप्पइ ६ २६
 विटविज्जइ ६ २६
 विणि ४ ४८
 विणु अप ११ ६४
 विणठ ७ व
 विण्णाण (वि) ३ ५, ३२४

विण्णे शौ ८ ३०
 विण्हू १ ६८, ३ २
 विट्ठिण्हा ८१
 वित्तो १ ८१
 वित्त १ ८१
 विदुरो (वि) २ १
 विद्वाओ (वि) १ ७५
 विप्पस्स देहि १ ६
 विम्भलो ७ व ०
 विमृओ ३ २९
 वियले मा प्राप्र ९ १६
 विरयाहले मा ९ ७
 विरसमालक्खिमोण्हि १ १०
 विरहग्गी १ ६७
 विलम्बु अप ११ ४६
 विलया ७ व
 विलाशे मा प्राप्र ९ १६
 विलामणीओ अप ११ २१
 विलिअ १ ७३ १ ५४
 विस्स १ ६८
 वित्ठक्को ६ ३९
 विवइ अप ११ ५३
 विसडो ७ व
 विसमइओ १ ५५
 विसमओ १ ५५
 विसमा ७ व पै १० ८
 विमानो पै १० ८
 विसी १ ८१
 विसो (वि) १ ८१
 विस (वि) २ १३
 विसट्ठुक ७ व

विस्तु म ९ ४	वुजेपि अप ११ ४८
विस्मये सा ९ ४	वुजेपिण अप ११ ४८
विहफ्फ ७ व	वुद् ७ व
विहफ्फ ७ व	वुट्टी ७ व
विहलो ७ व, ३ ९	वुड्ढी ७ व
विहम्भि ६ २	वुड्ढो १ ८३, ७ व
विहा १ ८१	वुत्त अव ११ ६४
विहि ४ ४८	वुत्ताञ्जो १ ८३
विहिओ ३ १२	वुन्दारभा ७ व
विहित्तो ३ १२	वुदावण १ ८३
विहा १ ४४	वुद १ ८३
विहीणो ७ व	वुद्द ७ व
विहूणो ५ व	वुज्ज अप ११ ६४
विहेह (वि) ६ ३१	वुहफ्फ ७ व
विज्झा ३ २४	वुहस्सई ७ व
विज्ञा पा ३ ८	वेअणा ७ व शौ ८ ४४
विहिओ १ ८१	वेआलिओ १ ९०
वीण अप ११ १	वेहल्ल ७ व
वीरिअ ७ व	वेच्छ ६ ९
वीसथो ७ व	वेज्ज ३ २३
वीलहो ६ ३९	वेडिसो १ ५४, ७ व, पा १ ५४
वीसभो ७ व	वेण अप ११ १
वीसा १ ३५ ७ व	वेणि ४ ४८
वीसामो १ ५१	वेण्ट ७ व
वीसमइ १ ५१	वेण्ण ४ ४८
वीससइ १ ५१	वेण्हू १ ६८
वीसालो १ ५१	वेदसो शौ ८ ४४
वीसु १ ३१, १ ५१, ७ व	वेरुलिअ ७ व
वुच्चइ (वि) ६ १५	वेर १ ९०
वुच्चदि शौ प्रास ८ ४५	वेल् ७ व
वुज्ज अप ११ ४८	वेल् १ ६८

वेङ्गो पा १ ५७, ७ व, १ ५७

वेविरो ३ ३५

वेसिओ १ ९०

वेसवणो १ ९० वेसु ४ ४८

वेसु ४ ४८

वेसपाअणो १ ९०

वेह व १ ८

वेहितो ४ ४८

वैकुण्ठो (वि) २ ४

वो हरू पा ४ ४७, शो ८ ४४

वोक्कन्त १ ७९

वोण्ट ७ व

वोगी ७ व

वोर ७ व

वोलीणो ६ ३०

वोसट्टो ६ ३९

वोसिरण ७ व

वसिओ १ ६३

वद्यद् ६ २६

वासु० अप ११ ५२

व्व शौ ८ ४५

व्वावडो शौ (वि) पा २ १

श

शब्बजे मा ९ ८

शस्तवाहे मा ९ ६

शालसे मा ९ ३

शिआलके मा प्राप्र ९ १६

शिआले मा प्राप्र ९ १६

शुस्क दालु मा ९ ४

शुस्टु कद मा ९ ५

शुस्तिदे मा ९ ६ हरू पा ४ ४६

स

सअड ७ स

सअड २ १

सअण २ ८

सइ १ ६४, १ १

सई २ १

सउण (वि) २ १

सउणिह अप ११ १२

सउत्तले शौ (वि) ८ २

सउरा १ ९३

सउह १ ९३

सक ६ ३८

सकअ १ ३५

सकदि (ि) शो प्राप्त ८ ४१

सकारा १ ३५

सकुणादि शौ, प्राप्त ८ ४१

सको १ २, ७ स

सक्खिणो ७ स

सकख १ ३१

सक्का १ १

सङ्खो १ १, १ ३७

सकतो ३ ८

सकरो (वि) २ १

सखो १ ३७, (वि) २ ३

सगच्छ ६ ९

सगमो (वि) २ १

सगामो पे प्राप्र १० २१

सग ७ स

सघो (वि) २ ३

सचाव (वि) २ १

सच्च ३ १९

सज्जणो (वि) १ ०६
 सज्जो ३ १
 सज्जस ७ स
 सज्जाओ ३ २४
 सद्धो ३ ३०
 सन्हा १ ३७
 सज्जा पै १० २
 सद्धल अ ११ ६४
 सद्ध ७ स
 सद्धल ७ स
 सद्धो २ ४
 सणिअरो ७ स
 सणिअ स्वाप्र ३ ४५
 सणिद्ध ७ स
 सण्हो १ ३७
 सद्धो १ ३७
 सण्णा ३ ५
 सण्ह ३ ३, ३ ३८, ७ स
 सतन पै १० ६
 सत्तरह ७ स
 सत्तरी ७ स
 सत्तावीसा (वि) १ २, १ ७
 सत्तअ १ ३५
 सत्तगघो शौ प्रास ८ ४५
 सत्तो ७ स
 सद्धण ६ ३५
 सद्धाण ६ ३१
 सद्धो ३ ३
 सद्धा १ १७
 सनान पै, प्राप्र १० २१
 पै (वि) १० १३
 सनेहो पै, प्राप्र १० २१, पै
 (वि) १० १३

सन्तो (वि) १ ४६
 सप्पओ ३ १
 सप्फ ३ २७
 सबधु ११ ४९
 समरी २ ११
 सभलउ अप ११ ४९
 सभिव्खू (वि) १ १६
 समत्त ७ स, (वि) ३ २५
 समत्थो ७ स
 समरो ७ स
 समाणु अप ११ ६४
 समिद्धी १ ५२, १ ८१
 समुद्धो ३ ४
 समुद्धो ३ ४
 समुह १ ३६
 सम्म पा १ ४० (वि) १ ४०,
 १ ३१
 सम्मद्धो शौ ८ ४४
 सम्महो ३ २९
 सयढ पा २ १
 सयणो (वि) ३ ३४
 सरअ १ २३
 सरओ १ ३८, पा १ ३८, पा
 १ २३
 सरदो पा १ २३
 सरफस पै, प्राप्र १० २१
 सररह ७ स
 सरिआ १ २०
 सरिक्ख शौ ८ ४४
 सरिच्छो १ ८७, १ ५२
 सरिया (वि) १ २०

सरिसमिम शौ ८ २१

सरिसो १ ८७

सरिसणिम शौ ८ २१

सरेण पा १ ३९

सरो १ ३९, ३ २, पा ३ २,
(वि) ३ २९

सरोरूह ७ स

सर्वे (वि) ४ ४४

सलफो प, प्राप्र २१

सलाहा ७ स

सलिल पै १० ७

सवलो २ १२

सवहुमान (वि) २ १

सवहा २ ३, २ ९ २ २

सवओ १ ४६

सवङ्गाउ अप ११ २०

सवजो (वि) १ ५६, ३ ५

सवजो पै प्राप्र १० २१,
पै पा १५६

सववजो पै १० २

सववणू १ ५६, ३ ५

सववणी शौ पा १ ५६,
शौ ३१

सववत्तो ४ ४५

सववत्थ ४ ४५

सववदो ४ ४७

सववग्मि ४ ४५

स वशित्वा शौ ८ ४१

सववस्स ४ ४५

सववस्सि ४ ४५

सववहि ४ ४५

सववाण ४ ४५

सव्वु अप ११ ३८

सव्व ४ ४५

सव्वेण ४ ४५

सव्वेसि ४ ४५.

सव्वेसु ४ ४५

सव्वेसु ४ ४५

सव्वेहिता ४ ४५

म वो ४ ४५

सव्व ४ ४५, (वि) ३ ३

सव्वगिओ ७ स

ससा ४ ३१

ससिमण्डलचन्दिमण् अप ११ २१

ससी पै १० ८

सहआरो (वि) २ १

सहकारो (वि) २ १

सहचर (वि) २ १

सहरी २ ११

सहल शौ ८ ४४

सहहि अप ११ ४१

सल्लिसेअ सभमुग्गादो ४ ड, पा
१ १५

सहा २ ३

सहावो २ ३

सहिदाणि मा प्राप्र ९ १६

सही २ ३, ४ ३३

सहीउ ४ ३३

सहीओ ४ ३३

सहु अप ११ ६४

सहुउ अप ११ ७२

सा ४ ४७, ७ स

साओ २ १

साणो ७ स

सामञ्ज ७ स
 सामञ्ज ७ स
 सामञ्ज ७ स
 सामञ्ज अप ११ २
 सामिद्धी १ ५२
 सारग ७ स
 सारिच्छो १ ५२
 सालवाहनो ७ स
 सालाहणो (वि) १ १३
 साओ २ २, २ ९
 सासाअमि शौ ८ ४२
 साम १ ५१
 साहणा ४ २२
 साहणा ४ २८
 साहु अप ११ ३८
 साहु २ ३
 सि ६ ६
 सिभा ७ स
 सिगारो १ ८१
 सिग ७ स
 सिघो १ ३६, २ २० ७ स
 सिट्ठी १ ८१, ३ १८
 सिट्ठ १ ८१
 सिटिल ७ स
 सिणिद्धो ३ १
 सिणिद्ध ७ स
 सिण्ण ७ स
 सित्थ ३ १
 सिनात्त पै १० १३
 सिदूर १ ६८
 सिधव ७ स
 सिण्णह ६ २६

सिम्पी ७ स
 सिभा २ ११
 सिमिणो ७ स
 सिघालो १ ८१
 सिरइ ६ ३७
 सिर विअणा ७ स
 सिरिमता (वि) ३ ४४
 सिरिसो १ ७३
 सिरोवेअणा ७ स
 सिर १ १६, १ ४० पा १ ४०
 सिटिहु ३ ३२
 सिलोओ ३ ३२
 सिविणो १ ५४, पा १ ५४ ७ स
 सि ४ ४६ ४ ४७
 सिहदत्तो ७ स
 सिहाराओ ७ स
 सीअरा ७ स
 सीआण ७ स
 सीउआण ३ ३६
 सीभरो ७ स
 सोसइ ६ ३०
 सीसो १ ५१
 सीस पा ३ ८
 सीहरो ७ स
 सीहो १ ३६, २ २०, ७ स
 सुअणस्सु अप ११ १०
 सुअदि शौ प्रास ८ ४५
 सुआदि शौ प्रास ८ ४५
 सुइदी २ ६
 सुउमालो ७ स
 सुउरिसो (वि) १ १३, २ १
 सुकडआ ७ स

सुकिउ अप ११ १
 सुकिदु अप ११ १
 सुकमालो ७ स
 सुकुसुम (वि) २ १
 मुक्रदु अप ११ १
 सुक्कपक्खो (वि) ३ ३२
 सुक्क ७ स
 सुगदो (वि) २ १
 सुगन्धत्तण १ ९२
 सुधि अप ११ ४९
 सुद्ध ७ स
 मुज्जो पै (वि) १० १३
 मुणाउ ६ १४
 सुडो १ ९२
 सुण्हा ७ स
 सुण्ह ७ स
 सुतर (वि) २ १
 सुतार (वि) पा २ १
 सुत्त १
 सुनुमा पै (वि) १० १३
 सुन्दरिअ १ ९२
 सुन्दर पा १ ५७, १ ९२, १ ५७
 सुदेर ३ ९
 सुप्पणहा ४ २९
 सुप्पणही ४ २९
 सुमणाण (वि) पा १ ४०
 सुमण (वि) १ ४०
 सुमरदि शौ ८ ३७
 सुमरहि अप ११ ४६
 सुमरि अप ११ ४६
 सुमिणो आ पा १ ५४

सुटयो शौ ८ ८
 सुरग्घो (वि) ३ ३३
 सुवह १ ५९
 सुवओ ७ स
 सुवण्ण रेह अप ११ २
 सुवण्णिओ १ ९२
 सुवे कअ ३ ३४
 सुवे जना ३ ३४
 सुसा ७ स
 सुमाण ७ स •
 सुहवो ७ स
 सुहम आ ७ स
 सुहिआ शौ ८ ५
 सुट्टम आ (वि) ३ ३३
 सूअअ २ १
 सूआसो ७ स
 सूई २ १
 सुरिओ ७ स
 सुरिसो (वि) १ १३
 सूहवो ७ स
 से ४ ४६, ४ ४७, शौ पा ४ ४६
 सेच्च १ ८८
 सेज्जा १ ५७, पा १ ५७, ३ २३
 सेण्ण ७ स
 सेत्त १ ८८
 सेदूर १ ६८
 सभालिआ २ ११
 सेलो १ ८८
 सेलिफा ७ स
 सेलिम्हो ७ स
 सेवा ३ १२
 सेन्वा ३ १२

सेञ्ज (वि) ४ ४४	सोसिअ ६ १९
सेसो २ १९	सोइइ २ ३
सेहालिआ २ ११	सोहग्ग १ ९१
मो अप ११ ४, ४ ४६, हेरू पा ४ ४६	सोहण २ ३
सोअ (वि) २ १	सोहिल्लो ३ ४४
सोअमल्ल १ ७५	सौदामिणी शौ (वि) पा २ १
सोउआण (वि) ३ ३६	सौअरिअ पा १ १
सोएवा अप ११ ७२	सघारो २ ३०
मोच्चा ३ २०	सजत्तिओ १ ६३
सोच्छिह् ६ ९	सजदो २ ६
सोच्छिथा ६ ९	सजमो (वि) २ १४
सोच्छिन्ति ६ ९	सजा ३ ५
सोच्छिमि ६ ९	मजादो २ ६
सोच्छिमो ६ ९	सजोओ (वि) २ १४
सोच्छिसि ६ ९	सझा १ ३७, ३ ८, पा ३ ८
सोच्छिस्स ६ ९	सठाविअ १ ६१
सोच्छिहिह् ६ ९	सठाविअ १ ६१
सोच्छिहिन्नि ६ ९	सणा ३ २४
सोच्छिहिमो ६ ९	सदद्धो (वि) ३ १८
सोच्छिहिसि ६ ९	सपह् अप ११ ५३
सोच्छ ६ ९	सपई (वि) २ ५
मोडोर ७ स	सपअ (वि) २ ६
सोत्त ३ ११	सपआ १ २०
सोभति प १० ८	सपदि २ ६
सोभन प १० ८	सपथ अप ११ ५३
सोमालो ७ स	सपया (वि) १ २०
सोम्मो ३ २	सफासो १ ५१
सोरिअ ७ स	समड्डो ७ स
सोवह् १ ५९	समुहो १ ३
सोसविअ ६ १९	समुह १ ३६
	सरुधिजह् ६ २६

सरुवह् ६ २६
 सवट्टिअ ३ २१
 सवत्तओ (वि) ३ २१
 सवत्तण (वि) ३ २१
 सवरो (वि) २ १
 सयुदी २ ६
 सयुद १ ८३
 समारापु सुख अद्ध पा १ ६
 ससिद्धिओ १ ६३
 सहरह् (वि) १ ३७
 सहारो २ २०
 स्स शो (वि) ८ ३७
 ह
 हआमो (वि) २ ६
 हउ अप ४ ५८
 हउ अप ११ ४०
 हके मा ४ ४८ मा (वि) ९ १८,
 मा० प्राप्र ९ १६
 हगे मा ४ ४८, मा ८ १९ मा
 प्राप्र ९ १६
 हजे शौ ८ २३
 हडक्के मा प्राप्र ९ १६
 हडडई ७ ह
 हणुमन्तो ७ ह
 हत्थो ३ ६, ३ २५
 हदो २ ६, ४ ५
 हम्मह् ६ २४
 हरडई ७ ह
 हरिअदो ७ ह, ४ ५
 हरिआल
 हरिज्जर ६ २६

हरो ७ ह
 हलहा ४ ३०, २ १८ ७ ७
 हलही ७ ह ४ ३०
 हलिआरो ७ ह
 हलिओ १ ६१
 हलिही ७ ह
 हवह् ६ ३१
 हवहिह् पा ६ ८
 हविय शौ ८ १३०
 हविहिह् पा ६ ८
 हशिद मा प्राप्र ९ १
 हशिदि मा प्राप्र ९ १
 हशिदु मा प्राप्र ९ १
 हस ६ ९
 हसह् ६ १४ ६ २०
 हसउ ६ ९ ६ १४
 हसन्नु ६ ९
 हसन्तो ६ १२
 हसतो ६ १४
 हसमाणा ४ २९
 हसमाणो ० १९
 हसमाणी ४ २९
 हसमि ६ ५
 हससु ६ ९
 हससु ६ ९
 हसह ६ ९
 हसहि ६ ९
 हसामि ६ ९
 हसामो ६ ६ ६ ९
 हसिअह ६ १५
 हसिअव्व ६ १६

हसिअ व १७
 हसिउ व १६
 हसिऊण व १६
 हसिजइ व १५, ६, ६ २६
 हसितून पै १० ११
 हसिमु ८ ८
 हसिमो व ६
 हसिरो ३ ३५
 हसिस्सामो व / ८
 हसिस्स व ८
 हसिहामो व ८
 हसिहिइ व १६
 हसिहिथा व ८
 हसेअव्व व १६
 हसिहि व /
 हसिहिन्नि व ८
 हसिहिम्नि व ८
 हसेड व १४
 हसेउ व १४
 हसइ व १०
 हसेउ व १६
 हसेऊण व १२
 हसेउज व १०
 हसेउजसु व ९
 हसेउजटि व ९
 हसेउजा व १०
 हसेउजे व ९
 हसेन्तु व ९
 हसेतो व १४
 हसेमु व ६
 हसेमो व ६

हसेहिइ व १६
 हसना मा ९ ४
 हस्सइ व २६
 हालिओ १ ६१
 हिअ १ ८, ७ ह, शो (१८)
 पा २ १
 हिअ ७ ह, १ ८१
 हितअक प प्राप १० २१
 हितक पै १० ९
 हितय मा (वि) पा २ १
 हिवइ व ३१
 ही शौ ४ ४७
 हीणो ७ ह
 हीमाणहे शौ / १४
 हीरइ व २६
 हीरो ७ ह
 हीही शौ ८ २७
 हुणह व २२
 हुत्त ३ १२
 हुविस्था पा व ८
 हुविहिन्ति प व ८
 हुविहिस्ति पा व /
 हुविहिहि पा व /
 हुवेय्य पै १० १९
 हुदुरु अप ११ ६४
 हुआ ३ १२
 हुणो ७ ह
 हे कत्तार (वि) ४ २२
 हे कुल ४ ४१
 हे पिअ ४ २२, ४ २३
 हे पिअर ४ २२, ४ २३,

हे पिअरा ४ २२
 हे भत्तार ४ २३, हेरु ४ २३
 हे भत्ताग ४ २३, हेर ४ २३
 हे भभव ४ ४२
 हे भव ४ ४२
 हे लदाओ ४ ३७
 हे लदे ४ ३७, हेरु ४ ३७
 हलि अप १० ६२
 हे सव्व ४ ४२
 होइ इह १ १४
 होज पा ६ ८
 होजइ ६ ११
 होजा पा २ ८
 होजाइ ६ ११
 होजहिइ पा ६ ८
 होजाहिइ पा ६ ८
 होतु पै १ ६
 होत्ता शौ ८ १३
 होदि शौ ८ ११ शौ ग्राम ८ ४३
 शौ ८ १५
 होदूण शौ ८ १३
 होध शौ ८ १३
 होसइ पा २ ८, अप १८ ४७
 होस्स पा ६ ८
 होस्साम ६ ८
 होस्साम पा ६ ८
 होस्सामि ६ ८, पा ६ ८

होस्म सु पा ८ ८, ६ ८
 होस्सामो २ ८ पा २ ८
 होहाम ६ ८
 होहामि ६ ८ पा ८ ८
 होहामु ६ ८
 होहामा ६ ८ पा ६ ८
 होहिइ ६ ८ पा ६ ८, पा ६ ८
 होहिअ ६ ८
 होहिथ ६ ८
 होहि पा पा ६ ८
 होहिा त ६ ८ पा ६ ८
 होह त ६ ८
 होहिम ६ ८ पा ६ ८
 होहिमि पा ६ ८
 होहिमु ६ ८ पा ६ ८
 होहिमो पा ६ ८
 होहिरे ६ ८
 होहिमि ६ ८
 होहिस्स पा ८ ८
 होहिह ६ ८
 होहिहि पा ६ ८
 होहिहिसि पा ६ ८
 होहिह पा ८ ८
 होही पा ६ ८
 ह ४ ४७, हेरु पा ४ ४७
 हने मा १ ३
 ह्यामिअ ६ ३९

सहायक ग्रन्थ-सूची

- (१) सिद्धहेमशब्दानुशासन, अष्टम अध्याय (हेमचन्द्रकृत)
- (२) प्राकृतसर्वस्व
- (३) प्राकृत प्रकाश
- (४) प्राकृतमञ्जरी
- (५) कुमारपालचरित (प्राकृतद्वयाश्रय काव्य)
- (६) रावणवहो (सेतुबन्ध काव्य)
- (७) प्राकृत व्याकरण (हृषीकेश भट्टाचार्य विरचित) सस्कृत एवं
अंग्रेजी
- (८) अभिज्ञानशाकुन्तल (कालिदास विरचित)
- (९) विक्रमोर्वशीय (कालिदास विरचित)
- (१०) मुद्राराक्षस (विशाखदत्त विरचित)
- (११) पाणिनीयाष्टक (अष्टाध्यायीसूत्रपाठ)
- (१२) गण्डवहो

संस्कृत साहित्य का इतिहास

(बृहन् संस्करण)

श्री वाचस्पति गैरोला

इस ग्रन्थ को लिखते समय यह ध्यान रखा गया है कि पाठक परम्परा और पूर्वग्रह के मोह में न पड़कर प्रत्येक विवादग्रस्त प्रश्न का समाधान स्वयं कर सके। पाठक पर अपने विचार लादने का अपेक्षा उपयुक्त यह समझा गया है कि विभिन्न मतवादों की समीक्षा करके वह स्वयं ही विषय की सही ध्येय को ग्रहण कर सके। भारतीयता या विदेशीपन का पक्षपात त्याग कर किसी भी विद्वान् के स्वस्थ और सही विचारों को उधार लेने में सज्जोच नहीं किया गया है। पुस्तक का विषय सामग्री और उसकी रूप रेखा का गठन भी ऐसे ढङ्ग से किया गया है, जिससे संस्कृत भाषा की आधारभूत भावभूमि का परिचय प्राप्त होने के साथ साथ सम सामयिक परिस्थितियों का भी अध्ययन हो सके। आर्यों के आदि देश एवं आर्य भाषाओं के उद्भव म लेकर उन्नीसवीं सदी तक की सहस्राब्दियों में संस्कृत साहित्य की जिन विभिन्न विचार वीथियों का निर्माण हुआ और भारत के प्राचीन राजवंशों के प्रश्रय से संस्कृत भाषा को जो गति मिली, उसका भी समावेश पुस्तक में देखने को मिलेगा।

मूल्य २०-००

संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

(परीक्षोपयोगी संस्करण)

श्री वाचस्पति गैरोला

संस्कृत साहित्य के इतिहास का यह संक्षिप्त संस्करण इस उद्देश्य से लिखा गया है कि विभिन्न विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षाओं के पाठ्यक्रम में निर्धारित इतिहासविषयक ज्ञान के सवधनार्थ विद्यार्थीवर्ग का इससे लाभ हो सके। पाठ्यक्रम की दृष्टि से संस्कृत साहित्य के इतिहास पर राष्ट्रभाषा हिन्दी में जो अनेक अन्य पुस्तकें लिखी गई हैं वे या तो सर्वांगीण नहीं हैं अथवा उनमें छात्रों के उपयोगी इतिहास के प्रज्ञानिक अध्ययन की क्रमबद्ध रूपरेखा का अभाव है।

यह इतिहास पाठ्यक्रम की दृष्टि से तो लिखा ही गया है, किंतु संस्कृत के बृहद् वाङ्मय का आमूल ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत करने का भाव इसमें उद्योग किया गया है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि संस्कृत के छात्रों का वैज्ञानिक दृष्टि से संस्कृत साहित्य के इतिहास का अध्ययन कराया जाय, जिससे कि उनकी मेधाशक्ति का स्वतंत्र रूप से विकास हो सके और प्रस्तुत विषय पर उनके भाव विचारों को नई दिशा में अग्रसर होने का अवकाश मिल सके।

मूल्य ८-००